CHAPTERWISE SOLUTION

Based on **NCERT** Textbook

सामाजिक विज्ञान

कक्षा

10

Student Advisor
(Editorial Team)

विषय-सूची

भारत और समकालीन विश्व-2 (इतिहास)

1. यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय 3
2. भारत में राष्ट्रवाद 9
3. भूमंडलीकृत विश्व का बनना 15
4. औद्योगीकरण का युग 19
5. मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया 23

समकालीन भारत-2 (भूगोल)

1. संसाधन एवं विकास 29
2. वन एवं वन्य जीव संसाधन 33
3. जल संसाधन 35
4. कृषि 41
5. खनिज तथा ऊर्जा संसाधन 47
6. विनिर्माण उद्योग 53
7. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ 59

लोकतांत्रिक राजनीति (राजनीति विज्ञान)

1. सत्ता की साझेदारी 66
2. संघवाद 69
3. जाति, धर्म और लैंगिक मसले 74
4. राजनीतिक दल 79
5. लोकतन्त्र के परिणाम 84

आर्थिक विकास की समझ (अर्थशास्त्र)

1. विकास 89
2. भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक 93
3. मुद्रा और साख 104
4. वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था 109
5. उपभोक्ता अधिकार 115

© Publishers

All Rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopying and recording, or by any information storage and retrieval system, except as may be expressly permitted in writing by the publisher.
Every care has been taken to minimise the mistakes regarding printing and other aspects of the book. However, there is always a scope of improvement. Any suggestion for further improvement of this book would be greatly acknowledged.

Published and a product of Student Advisor Publication Pvt. Ltd. E-38, Industrial Area, Mathura (U.P.)

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व-2

खण्ड I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ

1 यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

संक्षेप में लिखें

प्रश्न 1. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए—
(क) ज्युसेपे मेत्सिनी, (ख) काउंट कैमिलो द कावूर, (ग) यूनानी स्वतन्त्रता युद्ध, (घ) फ्रैंकफर्ट संसद, (ङ) राष्ट्रवादी संघर्षों में महिलाओं की भूमिका।

उत्तर—(क) ज्युसेपे मेत्सिनी—ज्युसेपे मेत्सिनी इटली का एक युवा क्रान्तिकारी था। इसका जन्म सन् 1807 को जेनोआ में हुआ था। देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर वह कार्बोनारी के गुप्त संगठन का सदस्य बन गया। 24 वर्ष की आयु में लिगुरिया में क्रान्ति करने के कारण उसे बहिष्कृत कर दिया गया। इसके पश्चात् मेत्सिनी ने मार्सेई में यंग इटली एवं बर्न में 'यंग यूरोप' नामक दो भूमिगत संगठनों की स्थापना की जिसके सदस्य पोलैण्ड, फ्रांस, इटली एवं जर्मनी आदि राज्यों में समान विचार रखने वाले युवा थे। मेत्सिनी ने राजतन्त्र का घोर विरोध करके एवं प्रजातान्त्रिक गणतन्त्रों के अपने स्वप्न से रूढ़िवादियों को पराजित कर दिया।

(ख) काउंट कैमिलो द कावूर—काउंट कैमिलो द कावूर इटली के सार्डीनिया-पीडमॉण्ट राज्य का प्रमुख मंत्री था। वह न तो एक क्रांतिकारी था और न ही जनतंत्र में विश्वास रखने वाला व्यक्ति था। कावूर के प्रयत्नों से फ्रांस और सार्डिनिया-पीडमॉण्ट के बीच एक कूटनीतिक संधि हुई थी। फ्रांस से उसके घनिष्ठ सम्बन्ध थे जिसकी सहायता से सार्डिनिया-पीडमॉण्ट ने सन् 1859 में ऑस्ट्रिया को पराजित कर दिया था। इसने इटली के प्रदेशों को एकीकृत करने वाले आंदोलन का नेतृत्व किया।

(ग) यूनानी स्वतन्त्रता युद्ध—यूरोप में उदारवाद एवं राष्ट्रवाद के विकास के साथ क्रान्तियों का युग प्रारम्भ हुआ। 19वीं शताब्दी में यूनान का स्वतन्त्रता संग्राम भी राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित था। यूनान के स्वतन्त्रता संग्राम ने यूरोप के शिक्षित अभिजात वर्ग में राष्ट्रीय भावनाओं का संचार किया। 15वीं शताब्दी से ही यूनान पर ऑटोमन साम्राज्य का शासन था। यूरोप महाद्वीप में क्रान्तिकारी राष्ट्रवाद की प्रगति से यूनान के लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ। इसके परिणामस्वरूप सन् 1821 में यूनान की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष प्रारम्भ हो गया। यूनान से राष्ट्रवादी नेताओं को निष्कासित कर दिया गया।
कवियों और कलाकारों ने भी यूनान को यूरोपीय सभ्यता का पालना बताकर उसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की तथा ऑटोमन साम्राज्य के विरुद्ध यूनानी संघर्ष के लिए जनमत जुटाया। अत: सन् 1832 में कुस्तुनतुनिया की संधि ने यूनान को एक स्वतन्त्र राष्ट्र की मान्यता दी। इस तरह यूनान का स्वतन्त्रता संग्राम पूर्ण हुआ।

(घ) फ्रैंकफर्ट संसद—जर्मनी में राष्ट्रवादी नेताओं व राजनैतिक संगठनों द्वारा फ्रैंकफर्ट शहर में एक सर्व जर्मन नेशनल एसेंबली की स्थापना करने का निश्चय किया गया। यह फ्रैंकफर्ट संसद के नाम से जाना जाता है। इसके सदस्यों का चुनाव मताधिकार के द्वारा किया गया। इस संसद का प्रथम अधिवेशन 18 मई, 1848 में आयोजित किया गया। इसमें 831 निर्वाचित प्रतिनिधियों ने भाग लिया। यह संसद सेंट पाल चर्च में आयोजित की गई। इस अधिवेशन में जर्मन राष्ट्र के लिए एक संविदा का प्रारूप तैयार किया गया। यद्यपि फ्रैंकफर्ट संसद जर्मनी को एकीकृत करने में असफल रही परन्तु इसने जर्मनी में दूरगामी प्रभाव छोड़े।

(ङ) राष्ट्रवादी संघर्षों में महिलाओं की भूमिका—राष्ट्रवादी संघर्षों में सम्पूर्ण विश्व की महिलाओं ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। राष्ट्रवादी आन्दोलन के अन्तर्गत महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्रदान करने का मुद्दा विवाद का विषय बन चुका था। यद्यपि राष्ट्रवादी आन्दोलनों में बहुत पहले से ही बड़ी संख्या में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया था। महिलाओं ने अपने राजनीतिक संगठन तैयार किये, समाचार-पत्र शुरू किये तथा राजनैतिक बैठकों व प्रदर्शनों में भाग लिया लेकिन इसके बावजूद वे राजनीतिक अधिकारों से वंचित थीं।

प्रश्न 2. फ्रांसीसी लोगों के बीच सामूहिक पहचान का भाव पैदा करने के लिए फ्रांसीसी क्रान्तिकारियों ने क्या कदम उठाए ?

उत्तर—फ्रांसीसी लोगों के बीच सामूहिक पहचान का भाव पैदा करने के लिए फ्रांसीसी क्रान्तिकारियों ने निम्नलिखित कदम उठाये—(i) उन्होंने पितृभूमि और नागरिक जैसे विचारों पर बल दिया। (ii) इन विचारों ने एक संयुक्त समुदाय के विचार पर बल दिया जिसे एक संविधान के अन्तर्गत समान अधिकार प्राप्त थे। (iii) उन्होंने एक नया फ्रांसीसी झंडा-तिरंगा चुना, जिसने पहले के राष्ट्रध्वज का स्थान ले लिया। (iv) उन्होंने एस्टेट जनरल का चुनाव सक्रिय नागरिक समूहों द्वारा करवाया तथा उसका नाम बदलकर नेशनल एसेम्बली कर दिया गया। (v) उन्होंने नयी स्तुतियाँ रचीं, शपथें लीं, शहीदों का गुणगान किया और यह सब राष्ट्र के नाम पर हुआ। (vi) उन्होंने एक केन्द्रीय प्रशासनिक व्यवस्था लागू की जिसने अपने भू-भाग में रहने वाले समस्त नागरिकों के लिए एक

समान कानून बनाये। (vii) उन्होंने आयात-निर्यात शुल्क समाप्त कर दिये तथा भार व नाप की एक समान व्यवस्था लागू की। (viii) उन्होंने क्षेत्रीय बोलियों के स्थान पर फ्रेंच भाषा को ही राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित किया। (ix) फ्रांसीसी क्रान्तिकारियों ने यह भी घोषणा की कि फ्रांसीसी राष्ट्र का यह भाग्य और लक्ष्य है कि वह यूरोप के लोगों को निरंकुश शासकों से मुक्त कराये अर्थात् फ्रांस, यूरोप के अन्य लोगों को राष्ट्र के गठित होने में मदद देगा।

प्रश्न 3. मारीआन और जर्मेनिया कौन थे ? जिस तरह उन्हें चित्रित किया गया उसका क्या महत्त्व था ?

उत्तर—मारीआन—मारीआन फ्रांस राष्ट्र का नारी का प्रतीक रूपक था। फ्रांसीसी क्रान्ति के दौरान कलाकारों ने स्वतन्त्रता, न्याय एवं गणतन्त्र जैसे विचारों को व्यक्त करने के लिए नारी रूपकों का प्रयोग किया। फ्रांस में इसे लोकप्रिय ईसाई नाम 'मारीआन' दिया गया जिसने जन-राष्ट्र के विचारों को रेखांकित किया। उसके चिह्न भी स्वतन्त्रता एवं गणतन्त्र के थे—लाल टोपी, तिरंगा व कलगी।

जर्मेनिया—जर्मेनिया जर्मन राष्ट्र का नारी प्रतीक रूपक था। चाक्षुष अभिव्यक्तियों में जर्मेनिया बलूत वृक्ष के पत्तों का मुकुट पहनती है क्योंकि जर्मन बलूत वीरता का प्रतीक है।

जर्मेनिया की तलवार पर 'जर्मन तलवार, जर्मन राइन की रक्षा करती है', अंकित है। इस प्रकार नारी रूप में जर्मेनिया की तस्वीर स्वतन्त्रता, न्याय तथा गणतन्त्र जैसे विचारों को प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त करती है।

मारीआन व जर्मेनिया को इस प्रकार चित्रित किया गया था कि वे राष्ट्र-राज्य के विचार को प्रदर्शित करते थी। वे इस तरह अपने देश का प्रतिनिधित्व करते थे मानो वह एक व्यक्ति हों। इन्होंने राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

प्रश्न 4. जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया का संक्षेप में पता लगाएँ।

उत्तर—जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया का विवरण निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत किया गया है—

(i) जर्मन लोगों में सन् 1848 से पहले ही राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत हो चुकी थी। राष्ट्रीयता की सहभावना मध्यम वर्ग के जर्मन लोगों में बहुत अधिक थी। (ii) मध्यम वर्ग ने सन् 1848 में जर्मन महासंघ के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़कर एक निर्वाचित संसद द्वारा शासित राष्ट्र राज्य बनाने का प्रयास किया गया था। (iii) राष्ट्र निर्माण की इस उदारवादी विचारधारा को राजशाही तथा सेवा ने मिलकर समाप्त कर दिया। इन ताकतों का प्रशा के बड़े भूस्वामियों ने भी समर्थन किया। (iv) प्रशा ने राष्ट्रीय एकीकरण के इस आंदोलन का नेतृत्व सँभाला तथा इसे एक नई दिशा प्रदान की। (v) प्रशा का प्रमुख मंत्री ऑटो वॉन बिस्मार्क इस प्रक्रिया का जनक था जिसने प्रशा की सेना तथा नौकरशाही की सहायता ली। (vi) सात वर्ष में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क तथा फ्रांस से तीन युद्धों में प्रशा को विजय प्राप्त हुई। (vii) 18 जनवरी, 1871 को वर्साय में हुए एक समारोह में प्रशा के राजा विलियम प्रथम को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया। इस तरह जर्मनी के एकीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हुई।

प्रश्न 5. अपने शासन वाले क्षेत्रों में शासन व्यवस्था को ज्यादा कुशल बनाने के लिए नेपोलियन ने क्या बदलाव किए ?

उत्तर—अपने शासन वाले क्षेत्रों में शासन व्यवस्था को ज्यादा कुशल बनाने के लिए नेपोलियन ने निम्नलिखित बदलाव किए—

(i) नेपोलियन ने प्रशासनिक तंत्र में क्रान्तिकारी सिद्धान्तों का समावेश कर उसे अधिक तर्कसम्मत और प्रभावी बनाया।

(ii) उसने सन् 1804 में एक नागरिक संहिता (नेपोलियन संहिता या नेपोलियन कोड) बनाई। उसने जन्म पर आधारित विशेषाधिकार समाप्त कर दिए थे।

(iii) उसने कानून के समक्ष समानता एवं सम्पत्ति के अधिकार को सुरक्षित बनाया।

(iv) उसने प्रशासनिक विभाजनों को सरल बनाया, सामंती व्यवस्था को खत्म किया तथा किसानों को भू-दासत्व एवं जागीरदारी शुल्कों से मुक्ति दिलवायी।

(v) उसने शहरों में भी कारीगरों के श्रेणी संघों के नियन्त्रणों को हटा दिया था।

(vi) यातायात व संचार व्यवस्थाओं में सुधार किये।

(vii) एक समान कानून व्यवस्था एवं माप-तौल की एक जैसी प्रणाली लागू की।

(viii) सम्पूर्ण देश में एक राष्ट्रीय मुद्रा प्रचलित की गई।

चर्चा करें

प्रश्न 1. उदारवादियों की 1848 की क्रान्ति का क्या अर्थ लगाया जाता है ? उदारवादियों ने किन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचारों को बढ़ावा दिया ?

उत्तर—उदारवाद से आशय—उदारवाद यानि Liberalism शब्द लैटिन भाषा के मूल liber पर आधारित है जिसका अर्थ है—'आजाद'। यूरोप में 19वीं शताब्दी में मध्य वर्ग के लोगों एवं बुद्धिजीवियों द्वारा प्रोत्साहित वह विचारधारा, जिसमें उनको राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में अधिकाधिक अवसर प्राप्त हुए तथा उनकी हिस्सेदारी को महत्व प्रदान किया गया, उदारवाद कहलाया।

उदारवादियों की 1848 की क्रान्ति का अर्थ था—राजतंत्र का अन्त तथा गणतंत्र की स्थापना। वे स्वतन्त्र राष्ट्र-राज्य की स्थापना करना चाहते थे जहाँ क्रान्ति की स्वतन्त्रता एवं सभी लोगों के लिए समान कानून तथा स्वतन्त्रता हो।

उदारवादियों ने निम्नलिखित राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचारों को बढ़ावा दिया—

(i) सन् 1848 में खाद्य सामग्री का अभाव एवं बेरोजगारी की बढ़ती हुई समस्या के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त हो चुका था। इस संकट के समाधान के लिए उदारवादियों के द्वारा क्रान्ति एवं प्रदर्शन पर बल दिया गया।

(ii) सार्वजनिक मताधिकार पर आधारित जनप्रतिनिधि सभाओं (नेशनल एसेम्बली) के निर्माण की माँग बढ़ने लगी।

(iii) जर्मनी, इटली, पोलैण्ड, ऑस्ट्रिया व हंगरी आदि के उदारवादी मध्यम वर्ग के स्त्री-पुरुषों ने संविधानवाद की माँग को राष्ट्रीय एकीकरण की माँग से जोड़ दिया।

(iv) उदारवादियों ने जनता के असन्तोष का लाभ उठाया तथा एक राष्ट्र-राज्य के निर्माण की माँगों को आगे बढ़ाया। यह राष्ट्र-राज्य संविधान, प्रेस की स्वतन्त्रता एवं संगठन बनाने की स्वतन्त्रता जैसे संसदीय सिद्धान्तों पर आधारित था।

(v) भू-दासत्व एवं बँधुआ मजदूरी को समाप्त करने की माँग उदारवादी नेताओं द्वारा की जाने लगी।

प्रश्न 2. यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास में संस्कृति के योगदान को दर्शाने वाले तीन उदाहरण दें।

उत्तर—यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास में संस्कृति के योगदान को दर्शाने वाले तीन प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं—

(i) लोक संस्कृति—प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक योहना गॉटफ्रीड ने दावा किया कि रूमानी जर्मन संस्कृति उसके आम लोगों में निहित थी। उसने लोक संगीत, लोक काव्य एवं लोक नृत्यों के माध्यम से जर्मन राष्ट्र की भावना को प्रचारित व प्रसारित किया।

(ii) भाषा—राष्ट्रवाद के विकास में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिसका उदाहरण पोलैण्ड है। पोलैण्ड में राष्ट्रवाद के विकास में भाषा ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। पोलैण्ड के रूस के कब्जे वाले हिस्सों में पोलिश भाषा को विद्यालयों से बलपूर्वक हटाकर रूसी भाषा को जबरदस्ती लाद दिया गया। जब पादरियों और बिशपों ने रूसी बोलने से इन्कार कर दिया तो उन्हें सजा दी गयी। इस प्रकार पोलिश भाषा रूसी प्रभुत्व के विरुद्ध संघर्ष के प्रतीक के रूप में देखी जाने लगी।

(iii) संगीत—पोलैण्ड में परतन्त्रता की स्थिति में संगीत के द्वारा ही राष्ट्रीय भावना जाग्रत रखी गयी। कैरोल कुर्पिस्की नामक एक पोलिश नागरिक था जिसने राष्ट्रीय संघर्ष का अपने ऑपेरा व संगीत से गुणगान किया तथा पोलेनेस व माजुरका जैसे लोकनृत्यों को राष्ट्रीय प्रतीक में बदल दिया।

प्रश्न 3. किन्हीं दो देशों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए बताएँ कि उन्नीसवीं सदी में राष्ट्र किस प्रकार विकसित हुए ?

उत्तर—उन्नीसवीं सदी में यूरोप में अनेक राष्ट्र विभिन्न तरीकों से विकसित हुए, जिनमें से जर्मनी व इटली प्रमुख हैं—

1. जर्मनी—(i) जर्मनी में राष्ट्रवादी भावनाएँ मध्य वर्ग के लोगों में अधिक थीं। सन् 1848 में जर्मन महासंघ ने विभिन्न क्षेत्रों को जोड़कर एक निर्वाचित संसद (फ्रैंकफर्ट संसद) द्वारा शासित राष्ट्र राज्य बनाने का प्रयास किया था।

(ii) उदारवादी मध्यम वर्ग द्वारा राष्ट्र निर्माण के इन प्रयासों को राजशाही एवं सेना ने मिलकर दबा दिया। उनका प्रशा के बड़े भूस्वामियों ने भी समर्थन किया।

(iii) इसके पश्चात् प्रशा ने राष्ट्रीय एकीकरण के आन्दोलन का नेतृत्व सँभाला। प्रशा के प्रमुख मंत्री ऑटोवान बिस्मार्क ने इस कार्य में प्रशा की सेना व नौकरशाही की मदद ली। (iv) सात वर्ष के दौरान ऑस्ट्रिया, डेनमार्क एवं फ्रांस से तीन युद्धों में प्रशा को विजय प्राप्त हुई और जर्मनी के एकीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हुई।

(v) जर्मनी में राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया ने प्रशा राज्य की शक्ति के प्रभुत्व को दर्शाया है।

(vi) एकीकरण के पश्चात् नये जर्मन राज्य में मुद्रा, बैंकिंग, कानूनी तथा न्यायिक व्यवस्थाओं के आधुनिकीकरण पर बल दिया गया।

2. इटली—(i) जर्मनी की तरह इटली में भी राजनैतिक विखण्डन का एक लम्बा इतिहास रहा है।

(ii) इटली अनेक वंशानुगत राज्यों एवं बहुराष्ट्रीय हैब्सबर्ग साम्राज्य में बिखरा हुआ था। 19वीं शताब्दी के मध्य में इटली सात राज्यों में विभाजित था, जिनमें से केवल एक राज्य सार्डिनिया- पीडमॉण्ट में एक इतालवी राजघराने का शासन था। उत्तरी भाग ऑस्ट्रिया व हैब्सबर्ग के नियन्त्रण में था, मध्य भाग पर पोप का शासन था तथा दक्षिण भाग स्पेन के बूर्बो राजाओं के अधीन था।

(iii) सन् 1830 के दशक में ज्युसेपे मेत्सिनी ने एकीकृत इतालवी गणराज्य के लिए एक कार्यक्रम का निर्माण किया तथा अपने उद्देश्यों के प्रचार-प्रसार के लिए 'यंग इटली' नामक गुप्त संगठन भी बनाया।

(iv) सन् 1831 और 1848 में क्रान्तिकारी विद्रोहों की असफलता के पश्चात् युद्ध के द्वारा इतालवी राज्यों को संगठित करने का दायित्व सार्डिनिया-पीडमॉण्ट के शासक विक्टर इमेनुएल द्वितीय पर आ गया।

(v) इटली के प्रदेशों को एकीकृत करने वाले आन्दोलन का नेतृत्वकर्ता मंत्री प्रमुख कावूर ने फ्रांस और सार्डिनिया- पीडमॉण्ट के मध्य कूटनीतिक संधि करायी।

(vi) सन् 1859 में सार्डिनिया-पीडमॉण्ट ने ऑस्ट्रिया को पराजित किया। इस युद्ध में नियमित सैनिकों के अतिरिक्त ज्युसेपे मेत्सिनी एवं गैरीबॉल्डी के नेतृत्व में अनेक सशस्त्र स्वयंसेवकों ने भी भाग लिया था।

(vii) सन् 1860 में वे दक्षिण इटली एवं दो सिसिलियों के राज्यों में प्रवेश कर गये तथा स्पेनी शासकों को हटाने के लिए किसानों की मदद प्राप्त करने में सफल हुए।

(viii) सन् 1861 में इमेनुएल द्वितीय को एकीकृत इटली का राजा घोषित किया गया।

(ix) सन् 1866 में वेनेशिया को भी इटली में मिला दिया गया। सन् 1870 में फ्रांस तथा प्रशा के मध्य युद्ध हुआ। फ्रांस ने अपने सैनिक रोम से हटा लिए। इस अवसर का लाभ उठाकर इटली की सेनाओं ने रोम पर भी अधिकार कर लिया, मेपल राज्य भी इटली में सम्मिलित हो गया। इस प्रकार इटली का एकीकरण हुआ।

प्रश्न 4. ब्रिटेन में राष्ट्रवाद का इतिहास शेष यूरोप की तुलना में किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर—यूरोप में राष्ट्रवाद शक्तिशाली क्रान्तियों, युद्धों तथा सैन्य अभियानों के फलस्वरूप विकसित हुआ। इसका उदाहरण जर्मनी और इटली का एकीकरण है। लेकिन ब्रिटेन में राष्ट्र राज्य का निर्माण किसी क्रान्ति का परिणाम नहीं था बल्कि यह एक क्रमिक विकास के अन्तर्गत सम्भव हुआ। ब्रिटेन में राष्ट्रवाद के लिए कोई युद्ध नहीं लड़ा गया। अतः ब्रिटेन में राष्ट्रवाद का इतिहास शेष यूरोप से भिन्न है। ब्रिटेन में अंग्रेज, वेल्स, स्कॉटिश व आयरिश आदि जातीय समूह थे जिनकी पहचान नृजातीय थी। इन जातीय समूहों में से अंग्रेज धीरे-धीरे ताकतवर होते चले गए और उन्होंने अन्य जातीय समूहों पर प्रभुत्व जमाना प्रारम्भ कर दिया। सर्वप्रथम उन्होंने स्कॉटिश लोगों को अपने देश में सम्मिलित किया फिर उन पर प्रभुत्व स्थापित किया। इसके पश्चात् उन्होंने आयरिश लोगों पर नियन्त्रण किया

तथा आयरलैण्ड को बलपूर्वक ब्रितानी राज्य में सम्मिलित कर लिया। इस प्रकार 'यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन' का शांतिपूर्ण तरीके से गठन हुआ।

प्रश्न 5. बाल्कन प्रदेशों में राष्ट्रवादी तनाव क्यों पनपा ?

उत्तर—सन् 1871 के पश्चात् यूरोप में गंभीर राष्ट्रवादी तनाव का प्रमुख स्रोत बाल्कन क्षेत्र था। इस तनाव के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

(i) बाल्कन प्रदेश में अनेक जातीय समूह निवास करते थे।

(ii) इस क्षेत्र का अधिकांश हिस्सा ऑटोमन साम्राज्य के नियन्त्रण में था, जो पतन के कगार पर था।

(iii) 19वीं शताब्दी में ऑटोमन साम्राज्य ने आधुनिकीकरण एवं आंतरिक सुधारों के माध्यम से स्थिति में परिवर्तन लाने का प्रयास किया लेकिन कोई विशेष सफलता नहीं मिल पायी।

(iv) जैसे-जैसे विभिन्न स्लाव राष्ट्रीय समूहों में अपनी पहचान तथा स्वतन्त्रता का विकास हुआ वैसे-वैसे बाल्कन क्षेत्र में तनाव बढ़ता गया।

(v) बाल्कन क्षेत्र में बड़ी शक्तियों के मध्य अधिक-से-अधिक क्षेत्र हथियाने की प्रतिस्पर्धा होने लगी। इसी समय यूरोपीय शक्तियों के बीच व्यापार व उपनिवेशों के साथ नौ-सैनिक और सैन्य ताकतों के लिए गहरी प्रतिस्पर्धा थी।

(vi) रूस, जर्मनी, इंग्लैण्ड, ऑस्ट्रिया-हंगरी आदि बाल्कन क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास करने लगे जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में कई युद्ध हुए और अन्त में प्रथम विश्वयुद्ध जैसे परिणाम का सामना करना पड़ा।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. राष्ट्रवाद की पहली स्पष्ट अभिव्यक्ति 1789 में फ्रांसीसी क्रांति के साथ हुई। कथन की पुष्टि कीजिए।

अथवा

1789 में हुई फ्रांस की क्रांति के परिणामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—फ्रांस की 1789 ई. में होने वाली क्रान्ति को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है—

(1) फ्रांसीसी क्रान्ति के परिणामस्वरूप हुए परिवर्तन— 1789 ई. की फ्रांसीसी क्रान्ति के परिणामस्वरूप प्रभुसत्ता राजतंत्र से निकलकर फ्रांसीसी नागरिकों के समूह के हाथों में आ गयी। क्रांतिकारियों ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि अब लोगों के द्वारा राष्ट्र का गठन होगा एवं वे ही राष्ट्र का भाग्य निर्धारित करेंगे।

(2) फ्रांसीसी क्रान्तिकारियों द्वारा उठाये गये कदम—प्रारम्भ से ही फ्रांसीसी क्रान्तिकारियों ने ऐसे अनेक कदम उठाये जिनसे फ्रांसीसी लोगों में एक सामूहिक पहचान की भावना पैदा हुई—

(i) पितृभूमि एवं नागरिक जैसे विचारों ने एक संयुक्त समुदाय के विचार पर बल दिया जिसे एक संविधान के अन्तर्गत समान अधिकार प्राप्त थे।

(ii) एक नया फ्रांसीसी झंडा-तिरंगा चुना गया जिसने पहले के राष्ट्रध्वज का स्थान ले लिया।

(iii) एस्टेट जनरल का चुनाव सक्रिय नागरिकों के समूह द्वारा किया जाने लगा तथा उसका नाम परिवर्तित कर नेशनल एसेंबली कर दिया गया।

(iv) नवीन स्तुतियाँ रची गयीं, शपथें ली गयीं एवं शहीदों का गुणगान किया गया। यह सब राष्ट्र के नाम पर हुआ।

(v) एक केन्द्रीय प्रशासनिक व्यवस्था लागू की गयी जिसने अपने भू-भाग में निवास करने वाले समस्त नागरिकों के लिए एक समान कानून बनाये।

(vi) आन्तरिक आयात-निर्यात शुल्क समाप्त कर दिये गये।

(vii) तौलने एवं नापने के लिए एक तरह की व्यवस्था लागू की गयी।

(viii) क्षेत्रीय बोलियों के स्थान पर पेरिस की फ्रेंच भाषा ही राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित हुई।

(3) यूरोप पर फ्रांसीसी क्रान्ति का प्रभाव—फ्रांसीसी क्रान्ति का यूरोप पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा—

(i) फ्रांस की क्रान्ति ने राष्ट्रवाद के बीज बो दिये, जिससे यूरोप में राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना हुई।

(ii) फ्रांस की क्रान्ति ने सम्पूर्ण विश्व को लोकतंत्रीय सिद्धान्त प्रदान किया।

(iii) फ्रांस ने यूरोप के अन्य लोगों को राष्ट्रों के गठन में सहायता प्रदान की।

(iv) फ्रांसीसी क्रान्ति के पश्चात् यूरोप के विभिन्न देशों के छात्रों एवं शिक्षित मध्य वर्गों के लोगों ने जैकोबिन क्लबों की स्थापना करना प्रारम्भ कर दिया।

(v) जैकोबिन क्लबों की गतिविधियों एवं अभियानों ने उन फ्रांसीसी सेनाओं के लिए मार्ग प्रशस्त किया जो 1790 ई. के दशक में हॉलैण्ड, स्विट्जरलैण्ड एवं इटली के बड़े भू-भाग में प्रविष्ट हुई थीं।

(vi) फ्रांसीसी सेनाएँ राष्ट्रवाद के विचार को विदेशों में भी ले गयीं।

प्रश्न 2. यूरोप में राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

उत्तर—यूरोपीय राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया— 1830 ई. के दशक के पश्चात् यूरोपीय उदारवादी राष्ट्रवाद की कई विशेषताएँ पायी गयीं, जिन्होंने राष्ट्रवाद के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई—

(i) आजादी एवं कानून के समक्ष सबको समानता का अधिकार प्राप्त हो।

(ii) उदारवादी निजी सम्पत्ति के स्वामित्व की अनिवार्यता पर भी बल देते थे।

(iii) उदारवाद निरंकुश सरकार एवं पादरी वर्ग के विशेषाधिकारों की समाप्ति, संविधान तथा संसदीय प्रतिनिधि सरकार का पक्षधर था।

(iv) आर्थिक क्षेत्र में उदारवाद बाजारों की मुक्ति एवं चीजों तथा पूँजी के आवागमन पर राज्य द्वारा लगाये गये नियंत्रणों को समाप्त करने के पक्ष में था।

(v) आर्थिक हितों का राष्ट्रीय एकीकरण करना एवं व्यापक राष्ट्रवादी भावनाओं को आर्थिक राष्ट्रवाद की लहर से मजबूत बनाना।

(vi) उदारवादी राष्ट्रवादियों ने प्रेस की आजादी की आवश्यकता पर भी बल दिया।

प्रश्न 3. वियना संधि का वर्णन कीजिए।

उत्तर—नेपोलियन की पराजय के पश्चात् यूरोपीय शक्तियों ने वियना की संधि की। इस संधि के उद्देश्य नेपोलियाई युद्धों द्वारा लाये गये परिवर्तनों को समाप्त करना तथा यूरोप में एक नई रूढ़िवादी व्यवस्था स्थापित करना था।

वियना सम्मेलन के प्रमुख प्रस्ताव/वियना संधि की प्रमुख विशेषताएँ/महत्वपूर्ण परिवर्तन निम्नलिखित हैं—

(i) फ्रांसीसी क्रान्ति के दौरान हटाये गये बूर्बो राजवंश को सत्ता में बहाल किया गया तथा फ्रांस को नेपोलियन से हुए युद्धों के दौरान प्राप्त विभिन्न क्षेत्रों को लौटाना पड़ा।

(ii) भविष्य में फ्रांस द्वारा सम्भावित विस्तार को रोकने के लिए फ्रांस की सीमाओं पर कई नये राज्यों की स्थापना की गई। इस प्रकार उत्तर में नीदरलैण्ड का राज्य स्थापित किया गया जिसमें बेल्जियम सम्मिलित था और दक्षिण में पीडमॉण्ट में जेनोआ को सम्मिलित कर दिया गया।

(iii) प्रशा को उसकी पश्चिमी सीमाओं पर महत्वपूर्ण नये क्षेत्र दिये गये जबकि ऑस्ट्रिया को उत्तरी इटली का नियन्त्रण सौंपा गया।

(iv) नेपोलियन द्वारा स्थापित 39 राज्यों के जर्मन महासंघ को बरकरार रखा गया।

प्रश्न 4. उदारवाद क्या है? उदारवादी क्रांति का वर्णन कीजिए।

उत्तर—उदारवाद से आशय—उदारवाद यानि Liberalism शब्द लैटिन भाषा के मूल liber पर आधारित है जिसका अर्थ है। 'आजाद'। यूरोप में 19वीं शताब्दी में मध्य वर्ग के लोगों एवं बुद्धिजीवियों द्वारा प्रोत्साहित वह विचारधारा, जिसमें उनको राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में अधिकाधिक अवसर प्राप्त हुए तथा उनकी हिस्सेदारी को महत्व प्रदान किया गया, उदारवाद कहलाया।

उदारवादियों की 1848 की क्रान्ति का अर्थ था—राजतंत्र का अन्त तथा गणतंत्र की स्थापना। वे स्वतन्त्र राष्ट्र-राज्य की स्थापना करना चाहते थे जहाँ क्रान्ति की स्वतन्त्रता एवं सभी लोगों के लिए समान कानून तथा स्वतन्त्रता हो।

उदारवादियों ने निम्नलिखित राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचारों को बढ़ावा दिया—

(i) सन् 1848 में खाद्य सामग्री का अभाव एवं बेरोजगारी की बढ़ती हुई समस्या के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त हो चुका था। इस संकट के समाधान के लिए उदारवादियों के द्वारा क्रान्ति एवं प्रदर्शन पर बल दिया गया।

(ii) सार्वजनिक मताधिकार पर आधारित जनप्रतिनिधि सभाओं (नेशनल एसेम्बली) के निर्माण की माँग बढ़ने लगी।

(iii) जर्मनी, इटली, पोलैण्ड, ऑस्ट्रिया व हंगरी आदि के उदारवादी मध्यम वर्ग के स्त्री-पुरुषों ने संविधानवाद की माँग को राष्ट्रीय एकीकरण की माँग से जोड़ दिया।

(iv) उदारवादियों ने जनता के असन्तोष का लाभ उठाया तथा एक राष्ट्र-राज्य के निर्माण की माँगों को आगे बढ़ाया। यह राष्ट्र-राज्य संविधान, प्रेस की स्वतन्त्रता एवं संगठन बनाने की स्वतन्त्रता जैसे संसदीय सिद्धान्तों पर आधारित था।

(v) भू-दासत्व एवं बँधुआ मजदूरी को समाप्त करने की माँग उदारवादी नेताओं द्वारा की जाने लगी।

प्रश्न 5. जर्मनी या इटली के एकीकरण की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर—उन्नीसवीं सदी में यूरोप में अनेक राष्ट्र विभिन्न तरीकों से विकसित हुए, जिनमें से जर्मनी व इटली प्रमुख हैं—

1. जर्मनी—(i) जर्मनी में राष्ट्रवादी भावनाएँ मध्य वर्ग के लोगों में अधिक थीं। सन् 1848 में जर्मन महासंघ ने विभिन्न क्षेत्रों को जोड़कर एक निर्वाचित संसद (फ्रैंकफर्ट संसद) द्वारा शासित राष्ट्र राज्य बनाने का प्रयास किया था।

(ii) उदारवादी मध्यम वर्ग द्वारा राष्ट्र निर्माण के इन प्रयासों को राजशाही एवं सेना ने मिलकर दबा दिया। उनका प्रशा के बड़े भूस्वामियों ने भी समर्थन किया।

(iii) इसके पश्चात् प्रशा ने राष्ट्रीय एकीकरण के आन्दोलन का नेतृत्व सँभाला। प्रशा के प्रमुख मंत्री ऑटोवान बिस्मार्क ने इस कार्य में प्रशा की सेना व नौकरशाही की मदद ली।

(iv) सात वर्ष के दौरान ऑस्ट्रिया, डेनमार्क एवं फ्रांस से तीन युद्धों में प्रशा को विजय प्राप्त हुई और जर्मनी के एकीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हुई।

(v) जर्मनी में राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया ने प्रशा राज्य की शक्ति के प्रभुत्व को दर्शाया है।

(vi) एकीकरण के पश्चात् नये जर्मन राज्य में मुद्रा, बैंकिंग, कानूनी तथा न्यायिक व्यवस्थाओं के आधुनिकीकरण पर बल दिया गया।

2. इटली—(i) जर्मनी की तरह इटली में भी राजनैतिक विखण्डन का एक लम्बा इतिहास रहा है।

(ii) इटली अनेक वंशानुगत राज्यों एवं बहुराष्ट्रीय हैब्सबर्ग साम्राज्य में बिखरा हुआ था। 19वीं शताब्दी के मध्य में इटली सात राज्यों में विभाजित था, जिनमें से केवल एक राज्य सार्डिनिया-पीडमॉण्ट में एक इतालवी राजघराने का शासन था। उत्तरी भाग ऑस्ट्रिया व हैब्सबर्ग के नियन्त्रण में था, मध्य भाग पर पोप का शासन था तथा दक्षिण भाग स्पेन के बूर्बो राजाओं के अधीन था।

(iii) इस समय तक इतालवी भाषा ने भी साझा रूप हासिल नहीं किया था तथा अभी तक उसके विभिन्न क्षेत्रीय व स्थानीय रूप भी मौजूद थे।

(iv) सन् 1830 के दशक में ज्युसेपे मेत्सिनी ने एकीकृत इतालवी गणराज्य के लिए एक कार्यक्रम का निर्माण किया तथा अपने उद्देश्यों के प्रचार-प्रसार के लिए 'यंग इटली' नामक गुप्त संगठन भी बनाया।

(v) सन् 1831 और 1848 में क्रान्तिकारी विद्रोहों की असफलता के पश्चात् युद्ध के द्वारा इतालवी राज्यों को संगठित करने का दायित्व सार्डिनिया-पीडमॉण्ट के शासक विक्टर इमेनुएल द्वितीय पर आ गया।

(vi) इटली के प्रदेशों को एकीकृत करने वाले आन्दोलन का नेतृत्वकर्ता मंत्री प्रमुख कावूर ने फ्रांस और सार्डिनिया- पीडमॉण्ट के मध्य कूटनीतिक संधि करायी।

(vii) सन् 1859 में सार्डिनिया-पीडमॉण्ट ने ऑस्ट्रिया को पराजित किया। इस युद्ध में नियमित सैनिकों के अतिरिक्त ज्युसेपे मेत्सिनी

एवं गैरीबॉल्डी के नेतृत्व में अनेक सशस्त्र स्वयंसेवकों ने भी भाग लिया था।

(viii) सन् 1860 में वे दक्षिण इटली एवं दो सिसिलियों के राज्यों में प्रवेश कर गये तथा स्पेनी शासकों को हटाने के लिए किसानों की मदद प्राप्त करने में सफल हुए।

(ix) सन् 1861 में इमेनुएल द्वितीय को एकीकृत इटली का राजा घोषित किया गया।

(x) सन् 1866 में वेनेशिया को भी इटली में मिला दिया गया। सन् 1870 में फ्रांस तथा प्रशा के मध्य युद्ध हुआ। फ्रांस ने अपने सैनिक रोम से हटा लिए। इस अवसर का लाभ उठाकर इटली की सेनाओं ने रोम पर भी अधिकार कर लिया, मेपल राज्य भी इटली में सम्मिलित हो गया। इस प्रकार इटली का एकीकरण हुआ।

प्रश्न 6. राष्ट्रीयता के विकास में सहायक रही दशाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—राष्ट्रीयता के विकास में रूमानीवाद, लोक परम्परा एवं भाषा का बहुत अधिक महत्त्व रहा है, जो निम्नलिखित हैं—

(i) रूमानीवाद—रूमानीवाद, एक ऐसा सांस्कृतिक आंदोलन था जो एक विशेष प्रकार की राष्ट्रीय भावना का विकास करना चाहता था। साधारणतया रूमानी कलाकारों और कवियों ने तर्क-वितर्क व विज्ञान के महिमामंडन की आलोचना की तथा उसके स्थान पर भावनाओं, अन्तर्दृष्टि और रहस्यवादी भावनाओं पर बल दिया। उनका यह प्रयास था कि एक साझा सामूहिक विरासत की अनुमति तथा एक साझा सांस्कृतिक अतीत को राष्ट्र का आधार बनाया जाए।

(ii) लोक परम्पराएँ—जर्मन दार्शनिक योहान गॉटफ्रीड जैसे रूमानी चिंतकों ने दावा किया कि सच्ची जर्मन संस्कृति उसके आम लोगों में निहित थी। राष्ट्र की सच्ची आत्मा लोकगीतों, जन काव्य तथा लोक नृत्यों से प्रकट होती है इसलिए लोक संस्कृति के इन स्वरूपों को एकत्र और अंकित करना राष्ट्र के निर्माण की परियोजना के लिए आवश्यक था। स्थानीय बोलियों पर बल तथा स्थानीय लोक साहित्य को एकत्र करने का उद्देश्य मात्र प्राचीन राष्ट्रीय भावना को वापस लाना नहीं था बल्कि आधुनिक राष्ट्रीय संदेश को अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाना था जिनमें से अधिकांश निरक्षर थे। संगीत व भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय भावना जीवित रखी गयी। केरोल कुर्पिस्की ने राष्ट्रीय संघर्ष का अपने ऑपेरा व संगीत से गुणगान किया। पोलेनेस तथा माजुरका जैसे लोकनृत्यों को राष्ट्रीय प्रतीकों में बदल दिया गया।

(iii) भाषा—भाषा ने भी राष्ट्रीयता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रूसी कब्जे के पश्चात् पोलिश भाषा को स्कूलों से बलपूर्वक हटाकर रूसी भाषा को प्रत्येक जगह जबरदस्ती थोपा गया। 1831 ई. में रूस के विरुद्ध एक सशस्त्र विद्रोह हुआ जिसे आखिरकार कुचल दिया गया। इसके अनेक सदस्यों ने राष्ट्रवादी विरोध के लिए भाषा को एक हथियार बनाया। चर्च के आयोजनों तथा सम्पूर्ण धार्मिक शिक्षा में पोलिश भाषा का प्रयोग हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि बड़ी संख्या में पादरियों और बिशपों को जेल में डाल दिया गया। रूसी अधिकारियों ने उन्हें सजा देते हुए साइबेरिया भेज दिया क्योंकि उन्होंने रूसी भाषा का प्रयोग करने से इन्कार कर दिया था। पोलिश भाषा रूसी शासन के विरुद्ध एक संघर्ष के प्रतीक के रूप में देखी जाने लगी।

प्रश्न 7. ग्रेट ब्रिटेन के आदर्श राज्य बनने के कारणों का उल्लेख करें।

उत्तर—ग्रेट ब्रिटेन में आदर्श खण्ड राष्ट्र का निर्माण अचानक हुई किसी उथल-पुथल अथवा क्रान्ति का परिणाम नहीं था, बल्कि यह एक लम्बी चलने वाली प्रक्रिया का परिणाम था। ग्रेट ब्रिटेन के आदर्श राष्ट्र राज्य बनने के कारण निम्नलिखित थे—

(i) **अठारहवीं सदी से पूर्व ब्रिटिश राष्ट्र का न होना**—अठारहवीं सदी से पूर्व ब्रिटेन राष्ट्र नहीं था। ब्रिटिश द्वीप समूह में रहने वाले लोगों—अंग्रेज, वेल्स, स्कॉट या आयरिश की मुख्य पहचान नृजातीय थी। इन समस्त जातीय समूहों की अपनी सांस्कृतिक व राजनीतिक परम्परायें थीं, परन्तु जब आंग्ल राष्ट्र की शक्ति, जन सम्पत्ति एवं गौरव में वृद्धि होने लगी तो वह द्वीप समूह के अन्य राष्ट्रों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने में सफल हुआ।

(ii) **आंग्ल संसद द्वारा अपनी सर्वोच्चता स्थापित करना**—एक लम्बे संघर्ष के पश्चात् आंग्ल संसद ने 1688 ई. में राजतन्त्र से सत्ता छीन ली तथा अपनी सर्वोच्च सत्ता स्थापित कर ली। इस संसद के माध्यम से एक राष्ट्र राज्य का निर्माण हुआ, जिसके केन्द्र में इंग्लैण्ड था।

(iii) **यूनाइटेड किंग्डम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन की स्थापना**—1707 ई. में इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड के मध्य एक्ट ऑफ यूनियन के द्वारा 'यूनाइटेड किंग्डम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन' का गठन हुआ। इस एक्ट के माध्यम से इंग्लैण्ड को स्कॉटलैण्ड पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का अधिकार मिल गया।

(iv) **स्कॉटलैण्ड की संस्कृति का दमन**—ब्रिटिश संसद में आंग्ल (अंग्रेज) सदस्यों के दबदबे के कारण अब स्कॉटलैण्ड की संस्कृति एवं राजनीतिक संस्थाओं का दमन होने लगा। स्कॉटलैण्ड के लोगों को संसद में अपनी भाषा का प्रयोग करने एवं अपनी राष्ट्रीय पोशाक पहनने से मना कर दिया गया। इसके अतिरिक्त अनेक लोगों को देश छोड़ने के लिए मजबूर भी किया गया।

(v) **आयरलैण्ड में कैथोलिक धर्मावलम्बियों का दमन करना**—आयरलैण्ड कैथोलिक एवं प्रोटेस्टेंट धार्मिक गुटों में विभाजित था, परन्तु अधिकांश लोग कैथोलिक थे। इंग्लैण्ड ने कैथोलिकों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए प्रोटेस्टेंटों को समर्थन देना प्रारम्भ कर दिया। इंग्लैण्ड के इस कार्य के विरुद्ध कैथोलिक धर्म मानने वाले लोगों ने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। इस विद्रोह को बलपूर्वक दबा दिया गया।

(vi) **आयरलैण्ड को यूनाइटेड किंग्डम में सम्मिलित करना**—1801 ई. में आयरलैण्ड को बलपूर्वक यूनाइटेड किंग्डम में सम्मिलित कर लिया गया। इस प्रकार एक नवीन ब्रिटिश राष्ट्र का निर्माण हुआ।

❑❑

2 भारत में राष्ट्रवाद

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

व्याख्या करें—

(क) उपनिवेशों में राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया उपनिवेशवाद विरोधी आन्दोलन से जुड़ी हुई क्यों थी ?

(ख) पहले विश्वयुद्ध ने भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास में किस प्रकार योगदान दिया ?

(ग) भारत के लोग रॉलेट एक्ट के विरोध में क्यों थे ?

(घ) गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन को वापस लेने का फैसला क्यों लिया ?

उत्तर—(क) (i) भारत में वियतनाम एवं अन्य कई देशों की तरह आधुनिक राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया का उपनिवेश विरोधी आन्दोलन से घनिष्ठ रूप से सम्बन्ध रहा है।

(ii) उपनिवेश विरोधी आन्दोलन में सभी जाति, वर्ग एवं सम्प्रदायों के लोगों को विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए एकजुट किया गया। इस संगठित संघर्ष ने भी राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा दिया।

(iii) यूरोपीय शक्तियाँ अपनी संस्कृति को श्रेष्ठ समझती थीं। उन्होंने अपने उपनिवेशों में अपनी संस्कृति को जबरदस्ती लादना प्रारम्भ कर दिया जैसा कि फ्रांस ने वियतनाम में किया था। इससे भी राष्ट्रवाद की भावना को प्रेरणा मिली।

(iv) उपनिवेश विरोधी आन्दोलन ने राष्ट्रवादी एवं उदारवादी विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक मजबूत मंच प्रदान किया।

(ख) (i) प्रथम विश्वयुद्ध ने भारत में नई आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति पैदा कर दी।

(ii) प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारत में तेजी से कीमतों में वृद्धि हुई जिससे जनता के समक्ष कठिन स्थितियाँ उत्पन्न हो गईं।

(iii) ग्रामीणों को सेना में भर्ती होने के लिए बाध्य किया गया जिससे जनता में व्यापक रोष उत्पन्न हो गया।

(iv) देश के अधिकांश भागों में फसल खराब हो गई, जिसके कारण खाद्यान्नों की अत्यधिक कमी हो गई।

(v) सन् 1918 से 1921 ई. के मध्य देश को अकाल, सूखा एवं बाढ़ के कारण भयंकर संकट का सामना करना पड़ रहा था। चारों तरफ महामारी के कारण अनेक लोग मारे गये। ब्रिटिश शासन ने इस संकट की स्थिति में भारतीयों की कोई मदद नहीं की। अतः भारतीयों ने एकजुट होकर राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग दिया।

(ग) भारत में क्रान्तिकारी गतिविधियों को रोकने के लिए ब्रिटिश शासन ने 1919 ई. में रॉलेट एक्ट के नाम से कानून बनाया। इस कानून के तहत सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने एवं राजनीतिक कैदियों को दो वर्ष तक बिना मुकदमा चलाये जेलों में बन्द रखने का अधिकार मिल गया था। इसलिए भारत के लोग रॉलेट एक्ट के विरोधी थे।

(घ) गोरखपुर स्थित चौरी-चौरा नामक स्थान पर 5 फरवरी, 1922 की घटना के कारण गाँधीजी को असहयोग आन्दोलन को वापस लेने का फैसला लेना पड़ा। चौरी-चौरा में बाजार से गुजर रहा एक शान्तिपूर्ण जुलूस पुलिस के साथ हिंसक टकराव में बदल गया। जनता ने आवेश में आकर कई पुलिसकर्मियों की हत्या कर थाने को आग लगा दी। इस घटना के बारे में सुनते ही महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन रोकने का आह्वान किया।

प्रश्न 2. सत्याग्रह के विचार का क्या मतलब है ?

उत्तर—(i) सत्याग्रह जन आन्दोलन का एक नया तरीका था। (ii) सत्याग्रह के विचार में सत्य की शक्ति पर आग्रह एवं सत्य की खोज पर बल दिया जाता था। इसका अर्थ यह था कि यदि आपका उद्देश्य सच्चा है, यदि आपका संघर्ष अन्याय के विरुद्ध है तो उत्पीड़क से मुकाबला करने के लिए आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है। (iii) प्रतिशोध की भावना अथवा आक्रामकता का सहारा लिये बिना सत्याग्रही केवल अहिंसा के सहारे भी अपने संघर्ष में सफल हो सकता है। इसके लिए दमनकारी शत्रु की चेतना को झिंझोड़ना चाहिए। (iv) उत्पीड़क शत्रु को ही नहीं वरन् समस्त लोगों को हिंसा के माध्यम से सत्य को स्वीकार करने की बजाय सच्चाई को देखने एवं सहज भाव से स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। (v) इस संघर्ष में अंततः सत्य की ही विजय होनी है। गाँधीजी का दृढ़ विश्वास था कि अहिंसा का यह धर्म समस्त भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँध सकता है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पर अखबार के लिए रिपोर्ट लिखें—

(क) जलियाँवाला बाग हत्याकांड, (ख) साइमन कमीशन।

उत्तर—(क) 13 अप्रैल, 1919 ई. को जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ। इस दिन अमृतसर के आस-पास के कई गाँवों से लोग सालाना वैशाखी मेले में भाग लेने जलियाँवाला बाग मैदान में एकत्रित हुए। इनमें से कई लोग तो सरकार द्वारा लागू किये गये दमनकारी कानून रॉलेट एक्ट का विरोध करने के लिए एकत्रित हुए। अंग्रेज अफसर जनरल डायर अपने हथियारबन्द सैनिकों के साथ वहाँ पहुँचा और उसने मैदान से बाहर निकलने के समस्त रास्तों को बन्द करवा दिया। इसके पश्चात् जनरल डायर के आदेश पर सिपाहियों ने भीड़ पर अन्धाधुन्ध गोलियाँ चला दीं। इस हत्याकांड में सैकड़ों लोग मारे गये तथा अनेक घायल हुए, जलियाँवाला बाग हत्याकांड भारत के इतिहास की सर्वाधिक दर्दनाक घटना है। इस घटना ने समस्त भारत को अंग्रेज विरोधी बना दिया।

(ख) ब्रिटेन की गोरी सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक वैधानिक आयोग का गठन किया। राष्ट्रवादी आन्दोलन के जवाब में गठित किए गए इस आयोग को भारत में संवैधानिक व्यवस्था की कार्यशैली का अध्ययन करना था तथा उसके बारे में सुझाव प्रस्तुत करने थे। इस आयोग में एक भी भारतीय सदस्य नहीं था,

इसके समस्त सदस्य अंग्रेज थे। अतः सन् 1928 ई. में जब साइमन कमीशन भारत पहुँचा तो उसका स्वागत 'साइमन कमीशन वापस जाओ' (साइमन कमीशन गो बैक) के नारों के साथ किया गया। इस प्रदर्शन में कांग्रेस व मुस्लिम लीग सहित अन्य कई पार्टियों ने भी भाग लिया।

प्रश्न 4. इस अध्याय में दी गई भारत माता की छवि और अध्याय 1 में दी गई जर्मेनिया की छवि की तुलना कीजिए।

उत्तर—इस अध्याय में दी गई भारत माता की छवि और अध्याय 1 में दी गई जर्मेनिया की छवि की तुलना निम्न प्रकार से है—

भारत माता की छवि	जर्मेनिया की छवि
1. सन् 1905 ई. में अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने भारत माता की छवि को बनाया था।	1. 1848 ई. में चित्रकार फिलिट वेट ने जर्मेनिया की छवि को बनाया था।
2. इस चित्र में भारतमाता को शिक्षा, भोजन व कपड़े देते हुए एक संन्यासिनी के रूप में दर्शाया गया है। एक हाथ में माला उसके संन्यासी गुण को रेखांकित करती है।	2. जर्मेनिया को एक हाथ में तलवार व दूसरे हाथ में झंडा लिए हुए दर्शाया गया है।
3. दूसरी छवि में भारत माता के हाथ में त्रिशूल है और वह हाथी व शेर के बीच खड़ी है। दोनों ही शक्ति और सत्ता के प्रतीक हैं।	3. दूसरी छवि में जर्मेनिया को "गार्डिंग द राइन" अर्थात् नदी पर पहरा देती हुई दर्शाया गया है। जर्मेनिया के हाथ में तलवार, है और उस तलवार पर खुदा हुआ है "जर्मन तलवार, जर्मन राइन की रक्षा करती है।"
4. भारत माता को शांत, गम्भीर एवं आध्यात्मिक गुणों से युक्त दिखलाया गया है।	4. जर्मेनिया को एक वीर साहसी एवं देश की रक्षा करने वाली महिला के रूप में दर्शाया गया है।
5. भारत की मातृ छवि के प्रति श्रद्धा को राष्ट्रवाद में आस्था का प्रतीक माना जाने लगा।	5. जर्मेनिया की छवि भी राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति का प्रतीक बन गई।

चर्चा करें—

प्रश्न 1. 1921 में असहयोग आन्दोलन में शामिल होने वाले सभी सामाजिक समूहों की सूची बनाइए। इसके बाद उनमें से किन्हीं तीन को चुनकर उनकी आशाओं और संघर्षों के बारे में लिखते हुए यह दर्शाइए कि वे आन्दोलन में शामिल क्यों हुए ?

उत्तर—सन् 1921 ई. में असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित होने वाले सामाजिक समूह निम्नलिखित थे—

(i) शहरी मध्यम वर्ग का समूह (प्रधानाध्यापक, शिक्षक, विद्यार्थी, वकील आदि)। (ii) ग्रामीण क्षेत्र के किसानों का समूह। (iii) वन क्षेत्रों के आदिवासियों के समूह। (iv) बागानों में काम करने वाले मजदूरों का समूह। (v) नेता एवं कार्यकर्ता। (vi) खिलाफत समिति के कार्यकर्ता। (vii) व्यापारी एवं व्यवसायी समूह।

ऊपर लिखे समूहों में से निम्न तीन समूहों के असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित होने के कारण—

(i) शहरी मध्यम वर्ग का समूह—भारत के शहरी मध्यम वर्ग ने महात्मा गाँधी के स्वराज के आह्वान को स्वीकार कर लिया था। हजारों की संख्या में विद्यार्थियों ने विद्यालय-महाविद्यालय छोड़ दिए, प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिये तथा वकीलों ने मुकदमे लड़ना बन्द कर दिया। मद्रास (वर्तमान चेन्नई) के अतिरिक्त अधिकांश प्रान्तों में परिषद् चुनावों का बहिष्कार किया गया। मद्रास में गैर-ब्राह्मणों द्वारा बनाई गई जस्टिस पार्टी का मत था कि काउंसिल में प्रवेश के माध्यम से उन्हें वे अधिकार मिल सकते हैं जो सामान्य रूप से केवल ब्राह्मणों को मिल पाते हैं। इसलिए इस पार्टी ने चुनावों का बहिष्कार नहीं किया। आन्दोलन की शुरुआत शहरी मध्यम वर्ग की हिस्सेदारी से हुई जिसमें अध्यापक, वकील, व्यापारी आदि ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित हो गए।

(ii) वन क्षेत्रों के आदिवासी समूह—आन्ध्र प्रदेश के आदिवासी औपनिवेशिक सरकार की वन नीति से बहुत अधिक परेशान थे। अन्य वन क्षेत्रों की तरह यहाँ भी अंग्रेजी सरकार ने बड़े-बड़े जंगलों में लोगों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। आदिवासी लोग न तो जंगलों में मवेशी चरा सकते थे और न ही जलाने की लकड़ी व खाने के लिए फल इकट्ठा कर सकते थे, जिससे उनकी रोजी-रोटी पर प्रभाव पड़ रहा था तथा उनको लग रहा था कि उनके परम्परागत अधिकार भी छीने जा रहे हैं। जब अंग्रेज सरकार ने उन्हें सड़कों के निर्माण के लिए बेगार करने पर मजबूर किया तो उन्होंने विद्रोह कर दिया। उनके नेता अल्लूरी सीताराम राजू ने उनका नेतृत्व किया। राजू, गाँधीजी के प्रशंसक थे लेकिन अहिंसा के स्थान पर वह हिंसा के समर्थक थे। उनके नेतृत्व में आदिवासियों ने हिंसक रूप से अंग्रेजी सरकार का विरोध किया। उन्होंने हिंसा के साथ असहयोग एवं खिलाफत आन्दोलन में भाग लिया।

(iii) बागानों में काम करने वाले मजदूरों का समूह—महात्मा गाँधी के विचारों एवं स्वराज की अवधारणा के बारे में मजदूरों की अपनी समझ थी। असम के बागानों में कार्य

करने वाले मजदूरों के लिए आजादी का अर्थ यह था कि वे उन चारदीवारियों से जब चाहे आ-जा सकते हैं जिसमें वे अब तक कैद थे। उनके लिए आजादी का मतलब था कि वे अपने गाँवों से सम्पर्क रख पायेंगे। जब उन्होंने असहयोग आन्दोलन के बारे में सुना तो हजारों की संख्या में मजदूर अपने अधिकारियों के आदेशों की अवहेलना करने लगे। उन्होंने बागान छोड़ दिए तथा अपने घर को चल दिए। उनको यह लगने लगा कि अब गाँधी राज आ रहा है इसलिए अब सबको गाँव में जमीन मिलेगी। अत: उन्होंने भी असहयोग आन्दोलन में गाँधीजी का साथ दिया।

प्रश्न 2. नमक यात्रा की चर्चा करते हुए स्पष्ट करें कि यह उपनिवेशवाद के खिलाफ प्रतिरोध का एक असरदार प्रतीक था।

उत्तर—महात्मा गाँधी ने देश की एकता को एक सूत्र में बाँधने के लिए नमक को एक शक्तिशाली प्रतीक माना। 31 जनवरी, 1930 को इन्होंने वायसराय इरविन को एक पत्र लिखा। इस पत्र में उन्होंने 11 माँगों का उल्लेख किया था। इनमें से कुछ माँगें साधारण थीं जबकि कुछ माँगें उद्योगपतियों से लेकर किसानों तक विभिन्न वर्गों से जुड़ी हुई थीं। गाँधीजी इन माँगों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को अपने साथ जोड़ना चाहते थे ताकि सभी उनके अभियान में सम्मिलित हो सकें।

इन माँगों में सबसे महत्वपूर्ण माँग नमक कर को समाप्त करने से सम्बन्धित थी। नमक का उपयोग धनिक-निर्धन सभी वर्ग के लोग करते हैं। यह हमारे भोजन का एक अभिन्न हिस्सा है। अत: नमक पर कर एवं उसके उत्पादन पर राजकीय अंकुश को महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश शासन का सबसे दमनकारी पहलू बताया था।

गाँधीजी ने अपने इस पत्र के माध्यम से अंग्रेज सरकार को यह चेतावनी दी थी कि यदि 11 मार्च तक उनकी माँग पूरी नहीं हुईं तो कांग्रेस सविनय अवज्ञा आन्दोलन को शुरू कर देगी। इरविन द्वारा उनके प्रस्तावों को ठुकरा दिया गया तब गाँधीजी ने अपने 78 सहयोगियों के साथ नमक-यात्रा प्रारम्भ कर दी। यह यात्रा साबरमती में गाँधीजी के आश्रम से प्रारंभ होकर 240 किमी. दूर दांडी नामक स्थान पर 6 अप्रैल 1930 को समाप्त हुई।

गाँधीजी ने दांडी पहुँचकर समुद्र के पानी को उबालकर नमक बनाना प्रारम्भ कर दिया। यह कानून का उल्लंघन था।

इस तरह गाँधी ने औपनिवेशिक ब्रिटिश सरकार के कानून की शान्तिपूर्ण तरीके से अवज्ञा की। इस तरह कहा जा सकता है कि गाँधीजी की नमक यात्रा उपनिवेशवाद के खिलाफ प्रतिरोध का एक असरदार प्रतीक थी।

प्रश्न 3. कल्पना कीजिए कि आप सिविल नाफरमानी आन्दोलन में हिस्सा लेने वाली महिला हैं। बताइए कि इस अनुभव का आपके जीवन में क्या अर्थ होता ?

उत्तर—सिविल नाफरमानी आन्दोलन में अनेक महिलाओं के साथ मैंने भी भाग लिया। मैंने देखा कि गाँधीजी के सत्याग्रह के समय उनकी बातों को सुनने के लिए सभी महिलाएँ अपने-अपने घरों से बाहर आ जाती थीं। मैंने अन्य महिलाओं के साथ उस समय अनेक जुलूसों में भाग लिया, नमक बनाया, विदेशी कपड़ों एवं शराब की दुकानों की पिकेटिंग की। अनेक महिलाओं के साथ मैंने भी जेल-यात्राएँ कीं। मैंने इस आन्दोलन के दौरान पाया कि शहरी क्षेत्रों में अधिकांश उच्च वर्गीय महिलाएँ सक्रिय थीं जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पन्न कृषक परिवारों की महिलाएँ ही आन्दोलन में भाग ले रही थीं। गाँधीजी के आह्वान पर मैंने भी राष्ट्र सेवा को अपना प्रथम कर्त्तव्य स्वीकार किया। मुझे अन्य महिलाओं की तरह लगने लगा कि हमारे जीवन में बदलाव आने वाला है। घर चलाना, चूल्हा-चौका सँभालना, अच्छी माँ एवं पत्नी के अतिरिक्त हम महिलाएँ देश की सेवा में अपना दायित्व भली-भाँति निभा सकती हैं। अब मुझे लगने लगा था कि हमें भी पुरुषों के समान महत्त्व मिलने लगेगा।

प्रश्न 4. राजनैतिक नेता पृथक् निर्वाचिका के सवाल पर क्यों बँटे हुए थे ?

उत्तर—विभिन्न राजनैतिक नेता भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों एवं समुदायों का प्रतिनिधित्व करते थे। ये नेता विशेष राजनीतिक अधिकारों तथा पृथक् निर्वाचन क्षेत्रों की माँग कर अपने समर्थकों का जीवन स्तर ऊँचा उठाना चाहते थे। ऐसे नेताओं में प्रमुख रूप से डॉ. बी. आर. अम्बेडकर एवं मोहम्मद अली जिन्ना आदि थे। डॉ. अम्बेडकर भारत के दलित वर्गों का तथा मोहम्मद अली जिन्ना अनेक मुसलमान सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व करते थे। इसके विपरीत गाँधीजी इन नेताओं की माँग से सहमत नहीं थे। उनका मत था कि पृथक् निर्वाचन क्षेत्र भारत की एकता पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। उन्होंने आमरण अनशन किया। यही कारण था कि राजनीतिक नेता पृथक् निर्वाचन क्षेत्रों के सवाल पर बँटे हुए थे।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. प्रथम विश्व युद्ध भारत के लिए समस्याओं का कारण रहा था कैसे? किन्हीं पाँच समस्याओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में प्रथम विश्व युद्ध द्वारा थोपी गई पाँच प्रमुख समस्यायें निम्नलिखित थीं—

(i) **करों में वृद्धि**—प्रथम विश्व युद्ध के कारण रक्षा व्यय में बहुत अधिक वृद्धि हुई। इन खर्चों की पूर्ति हेतु सरकार ने करों में वृद्धि कर दी। सीमा शुल्क को बढ़ा दिया तथा आयकर नामक एक नया कर भी लगा दिया गया। इससे जनता दुखी हो गई।

(ii) **कीमतों में वृद्धि**—प्रथम विश्व युद्ध के दौरान वस्तुओं की कीमतें लगभग दो गुनी हो चुकी थीं। बढ़ती हुई कीमतों के कारण आम जनता की कठिनाइयाँ बढ़ गयीं और उनका जीवन निर्वाह करना भी कठिन हो रहा था।

(iii) **सैनिकों की बलपूर्वक भर्ती**—प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटिश सरकार को अधिक से अधिक सैनिकों की आवश्यकता थी। अत: गाँवों में भारतीय युवाओं को सेना में बलपूर्वक भर्ती किया गया। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आक्रोश फैल गया।

(iv) **दुर्भिक्ष और महामारी का प्रकोप**—वर्ष 1918-1920 व 1920-1921 में देश में खाद्य पदार्थों की भारी कमी हो गई। उसी समय देशभर में फ्लू की महामारी फैल गयी। दुर्भिक्ष व महामारी

के कारण 120-130 लाख भारतीय मौत के मुँह में समा गए।

(v) **जनता की आकांक्षाएँ पूरी न होना**—भारतीय जनता को यह आशा थी कि प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् उसके कष्टों एवं कठिनाइयों का अन्त हो जायेगा परन्तु उनकी आकांक्षाएँ पूरी नहीं हुईं। इस कारण भी भारतीयों में घोर असन्तोष फैला हुआ था।

प्रश्न 2. भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियाँ, पश्चिमी शिक्षा का प्रसार, संचार और परिवहन के साधनों का विकास (रेल, टेलीग्राफ), सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन (जैसे-आर्य समाज), प्रेस और साहित्य की भूमिका, विदेशी विचारधाराओं (फ्रांस/अमेरिका की क्रांति) का प्रभाव और राष्ट्रीय कांग्रेस (1885) की स्थापना शामिल थे, जिन्होंने भारतीयों में एकता और राजनीतिक चेतना जगायी।

भारत में राष्ट्रवाद के उदय के प्रमुख कारण—भारत में राष्ट्रवाद उदय के निम्नलिखित कारण थे—

1. अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियाँ—आर्थिक शोषण (धन का बहिर्वाह) और भारतीयों के राजनीतिक अधिकारों का हनन किया गया, जिससे असंतोष बढ़ गया। प्रशासनिक एकरूपता और नस्लीय भेदभाव ने भी विरोध को जन्म दिया।

2. आधुनिक शिक्षा और जागरूकता—पश्चिमी शिक्षा से समानता, स्वतंत्रता जैसे विचारों का प्रसार हुआ और भारतीयों की सोचने-समझने की शक्ति बढ़ी। इससे राष्ट्रवाद की भावना जगी और लोग एक साझा पहचान की ओर बढ़े।

3. परिवहन और संचार का विकास—रेलवे, डाक और टेलीग्राफ जैसी सुविधाओं ने देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों को जोड़ा, जिससे विचारों का आदान-प्रदान हुआ और राष्ट्रीय भावना मजबूत हुई।

4. सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन—राजा राजमोहन राय, स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती जैसे समाज सुधारकों ने भारतीयों को अपनी गौरवशाली विरासत से परिचय कराया, जिससे आत्मविश्वास और एकता बढ़ी।

5. प्रेस और साहित्य की भूमिका—अखबारों और पत्रिकाओं (जैसे-'अमृत बाजार पत्रिका', 'केसरी') ने राजनीतिक स्थितियों की जानकारी लोगों को दी और जनता की राय बनाई, जिससे राजनीतिक चेतना फैली।

6. विदेशी विचारधाराओं का प्रभाव—फ्रांस और अमेरिका के स्वतंत्रता संग्रामों की खबरों ने भारत में भी आजादी की इच्छा जगायी।

7. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885)—इसने भारतीयों को एक मंच प्रदान किया, जिससे राजनीतिक जागरूकता बढ़ी और एकजुट होकर अपनी माँगें रखने का अवसर मिला।

8. सांस्कृतिक पुनर्जागरण और गौरवपूर्ण अतीत—विद्वानों ने भारत के समृद्ध इतिहास और संस्कृति को उजागर किया, जिससे भारतीयों में अपनी पहचान और गौरव की भावना विकसित हुई।

इन सभी कारकों ने मिलकर भारत में एक मजबूत राष्ट्रवादी भावना को जन्म दिया, जिसने अंततः स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखी।

प्रश्न 3. सत्याग्रह क्या है? गांधीजी द्वारा किये गये सत्याग्रहों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—महात्मा गाँधी जनवरी, 1915 दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे। गाँधीजी ने एक नए तरह के आन्दोलन पर चलते हुए दक्षिण अफ्रीका की नस्लभेदी सरकार से सफलतापूर्वक लोहा लिया था। इस पद्धति को वह सत्याग्रह कहते थे। सत्याग्रह के विचार में सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज पर ज़ोर दिया जाता था।

सत्याग्रह का अर्थ यह था कि यदि आपका उद्देश्य सच्चा है, आपका संघर्ष अन्याय के खिलाफ है, तो उत्पीड़क से मुकाबला करने के लिए आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है। प्रतिशोध की भावना या आक्रामकता का सहारा लिए बिना सत्याग्रही केवल अहिंसा के सहारे भी अपने संघर्ष में सफल हो सकता है। सत्याग्रह के लिए दमनकारी शत्रु की चेतना को झिंझोड़ना चाहिए। उत्पीड़क शत्रु को हिंसा के जरिए सत्य को स्वीकार करने पर विवश करने की बजाए सच्चाई को देखने और सहज भाव से स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इस संघर्ष में अन्ततः सत्य की जीत होती है। गाँधीजी का विश्वास था कि अहिंसा का यही मार्ग सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँध सकता है। गाँधीजी के अहिंसावादी गुणों के कारण उनके साथ विद्यार्थी, शिक्षक, वकील, किसान, उद्योगपति, श्रमिक व सभी जाति, धर्मों के लोग जुड़ गये और उनके आन्दोलन ने जन आन्दोलन का रूप ले लिया।

प्रश्न 4. रॉलेट एक्ट क्या था? इसके विरोध के कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—**रॉलेट एक्ट**—देश में गाँधीजी के नेतृत्व में संचालित राष्ट्रीय आन्दोलन की बढ़ती हुई लोकप्रियता से ब्रिटिश सरकार चिन्तित थी। अतः उसने आन्दोलन के दमन के लिए एक कठोर कानून बनाने का निश्चय किया। मार्च 1919 में भारतीय सदस्यों के भारी विरोध के बावजूद इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल ने जल्दबाजी में एक कानून पारित किया जिसे रॉलेट एक्ट के नाम से जाना गया। इस कानून के तहत भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार को राजनीतिक गतिविधियों का दमन करने एवं राजनीतिक कैदियों को दो वर्ष तक बिना मुकदमा चलाये जेल में बन्द करने का अधिकार मिल गया था।

गाँधीजी द्वारा रॉलेट एक्ट का विरोध—गाँधीजी रॉलेट एक्ट जैसे अन्यायपूर्ण कानून के विरुद्ध अहिंसात्मक ढंग से नागरिक अवज्ञा चाहते थे। अतः उन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन चलाने का निश्चय किया। उन्होंने 6 अप्रैल, 1919 को देशभर में एक हड़ताल करने का आह्वान किया। गाँधीजी के आह्वान पर देश के विभिन्न शहरों में रैली-जुलूसों का आयोजन किया गया। रेलवे वर्कशॉप में श्रमिक हड़ताल पर चले गये। दुकानों को बन्द कर दिया गया।

ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीति—गाँधीजी के आह्वान पर रॉलेट एक्ट के विरोध में लोगों द्वारा किये गये आन्दोलन को कुचलने

के लिए ब्रिटिश सरकार ने दमनकारी नीति अपनाई। अमृतसर में अनेक नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। गाँधीजी के दिल्ली में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

10 अप्रैल, 1919 को अमृतसर में रॉलेट एक्ट के विरोध में एक शान्तिपूर्ण जुलूस का आयोजन किया गया। पुलिस ने इस शान्तिपूर्ण जुलूस पर गोलियाँ चला दीं। ब्रिटिश सरकार के इस दमनकारी कदम के विरोध में उत्तेजित होकर लोगों ने बैंकों, डाकखानों एवं रेलवे स्टेशनों पर हमला करना प्रारम्भ कर दिया। ऐसी स्थिति में ब्रिटिश सरकार ने अमृतसर में मार्शल लॉ लागू कर दिया तथा जनरल डायर ने सेना की कमान सम्भाल ली।

13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियाँवाला बाग में वार्षिक वैशाखी मेले का आयोजन किया गया जिसमें अनेक लोग एक्ट का शान्तिपूर्ण विरोध करने के लिए भी एकत्रित हुए। शान्तिपूर्ण सभा कर रहे लोगों पर जनरल डायर के निर्देश पर सैनिकों ने अन्धाधुन्ध गोलाबारी कर दी जिसमें सैकड़ों लोग मारे गये व हजारों की संख्या में घायल हो गये।

प्रश्न 5. असहयोग-खिलाफत आंदोलन के प्रमुख कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—असहयोग-खिलाफत आन्दोलन प्रारम्भ होने के पीछे निम्नलिखित परिस्थितियाँ जिम्मेदार थीं—

(i) प्रथम विश्वयुद्ध द्वारा पैदा की गई परिस्थितियाँ—प्रथम विश्वयुद्ध 1914 ई. से 1918 ई. के मध्य लड़ा गया। इस युद्ध के कारण रक्षा व्यय में बहुत अधिक वृद्धि हुई, इन खर्चों की भरपाई के लिए करों में वृद्धि की गयी। युद्ध के कारण कीमतों में तेजी से वृद्धि हुई, सीमा शुल्क बढ़ा दिया गया तथा आयकर शुरू कर दिया गया। इन सब कारणों से लोगों की मुश्किलें बढ़ गयीं। ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को जबरन सेना में भर्ती करने के कारण बहुत अधिक रोष व्याप्त था। सन् 1918-19 एवं 1920-21 में देश के अधिकांश भागों में फसल खराब हो गयी थी, जिसके कारण खाद्य पदार्थों का भारी अभाव उत्पन्न हो गया था। दुर्भिक्ष एवं फ्लू की महामारी के कारण अनेक लोग मारे गये। लोगों को ऐसी उम्मीद थी कि विश्वयुद्ध की समाप्ति से उनकी मुसीबत कम होगी लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

(ii) गाँधीजी की दक्षिण अफ्रीका से वापसी एवं सत्याग्रह—महात्मा गाँधी जनवरी 1915 ई. में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में अहिंसा एवं सत्याग्रह का नया तरीका अपनाकर वहाँ की औपनिवेशिक सरकार से सरलतापूर्वक टक्कर ली। भारत में भी उन्होंने अनेक स्थानों; जैसे—चंपारन (बिहार), खेड़ा (गुजरात) एवं अहमदाबाद (गुजरात) आदि में सफलतापूर्वक सत्याग्रह का आयोजन किया। इन सत्याग्रहों ने असहयोग आन्दोलन को आधार प्रदान किया।

(iii) रॉलेट एक्ट—भारतीय सदस्यों के भारी विरोध के बावजूद इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउन्सिल ने रॉलेट एक्ट कानून को पारित कर दिया। इस एक्ट के तहत पुलिस के अधिकारों में बहुत अधिक वृद्धि हुई। इस कानून के तहत सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने के लिए तथा राजनीतिक कैदियों को दो साल तक बिना मुकदमा चलाये जेल में बन्द रखने का अधिकार मिल गया था। अतः गाँधी जी ने इस एक्ट के खिलाफ राष्ट्रव्यायी सत्याग्रह आन्दोलन चलाने का फैसला लिया।

(iv) जलियाँवाला बाग की घटना—जलियाँवाला बाग की घटना ने भारतीयों को ब्रिटिश शासन का और अधिक विरोधी बना दिया। पहले से ही रॉलेट एक्ट के विरुद्ध आन्दोलन हो रहे थे। जलियाँवाला बाग में लोग वैशाखी मेले के साथ-साथ इस एक्ट का विरोध करने के लिए एकत्रित हुए। जनरल डायर ने वहाँ पहुँचकर निहत्थी भीड़ को गोलियों से भून दिया। इस हत्याकांड में अनेक लोग मारे गये व अनेक घायल हुए। जैसे ही इस हत्याकांड की खबर देश की जनता में फैली, लोग अंग्रेज सरकार के विरुद्ध सड़कों पर उतर पड़े।

आन्दोलन वापस लेने के कारण निम्नलिखित थे—

(i) गोरखपुर स्थित चौरी-चौरा के बाज़ार से गुज़र रहा एक शान्तिपूर्ण जुलूस पुलिस के साथ हिंसक टकराव में बदल गया। इस घटना के बारे में सुनते ही महात्मा गाँधी ने असहयोग आन्दोलन रोकने का आह्वान किया।

(ii) फरवरी, 1922 में महात्मा गाँधी ने असहयोग आन्दोलन वापस लेने का फैसला कर लिया क्योंकि उनको लगता था कि आन्दोलन हिंसक होता जा रहा है और सत्याग्रहियों को व्यापक प्रशिक्षण की ज़रूरत है।

(iii) आन्दोलन वापस लेने का एक कारण यह भी था कि कांग्रेस के कुछ नेता इस तरह के जनसंघर्षों से थक चुके थे तथा वे प्रान्तीय परिषदों के चुनाव में हिस्सा लेना चाहते थे जिससे कि वे ब्रिटिश नीतियों का विरोध कर सकें।

प्रश्न 6. सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—सविनय अवज्ञा आन्दोलन एवं नमक आन्दोलन निम्न परिस्थितियों में चलाया गया—

(i) साइमन कमीशन की असफलता—भारत में राष्ट्रवादियों की बढ़ती हुई गतिविधियों को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक वैधानिक आयोग का गठन कर दिया। इस आयोग का प्रमुख कार्य भारत में संवैधानिक कार्य शैली का अध्ययन कर उसके बारे में सुझाव देना था। इस आयोग में एक भी भारतीय सदस्य न होने के कारण 1928 ई. में इस कमीशन के भारत पहुँचने पर उसका स्वागत साइमन कमीशन वापस जाओ (साइमन कमीशन गो बैक) के नारों से किया गया। इस तरह यह कमीशन भारतीय लोगों एवं नेताओं की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा।

(ii) पूर्ण स्वराज की माँग—दिसम्बर, 1929 ई. में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन आयोजित किया गया। इस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज की माँग को औपचारिक रूप से मान लिया गया। इस अधिवेशन में 26 जनवरी, 1930 ई.

को स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाये जाने का निर्णय किया गया। उस दिन लोग पूर्ण स्वराज के लिए संघर्ष की शपथ लेंगे। परन्तु इस उत्सव की ओर बहुत ही कम लोगों का ध्यान गया। अतः महात्मा गाँधी को स्वतन्त्रता के इस अमूर्त विचार को दैनिक जीवन के ठोस मुद्दे से जोड़ने के लिए कोई और रास्ता ढूँढ़ना था।

(iii) गाँधीजी की 11 माँगें—31 जनवरी, 1930 ई. को गाँधीजी ने भारतीय जनता के साथ हो रहे अन्याय को समाप्त करने के लिए अंग्रेज वायसराय लॉर्ड इरविन के समक्ष 11 माँगों को प्रस्तुत करते हुए एक पत्र लिखा। इनमें एक प्रमुख माँग थी—नमक पर लगाए कर को समाप्त करना। महात्मा गाँधी का यह पत्र एक चेतावनी की तरह था। यदि 11 मार्च, 1930 तक उनकी माँगें नहीं मानी गईं तो कांग्रेस सविनय अवज्ञा आन्दोलन छेड़ देगी। लॉर्ड इरविन ने गाँधीजी की शर्तें मानने से इन्कार कर दिया फलस्वरूप गाँधीजी ने अपने विश्वासपात्र 78 स्वयंसेवकों के साथ साबरमती स्थित अपने आश्रम से दांडी तक यात्रा की। गाँधीजी ने दांडी पहुँचकर समुद्र का पानी उबालकर नमक बनाना प्रारम्भ कर दिया। यह सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत थी।

(iv) आर्थिक कारण—1929 ई. की आर्थिक महामंदी का भारतीय अर्थव्यवस्था विशेषकर कृषि पर बहुत अधिक दुष्प्रभाव पड़ा। कृषि उत्पादों की कीमतें बहुत अधिक गिर गयीं वहीं दूसरी ओर औपनिवेशिक सरकार ने लगानों में वृद्धि कर दी जिससे किसानों को अपनी उपज बेचकर लगान चुकाना भी कठिन हो गया। व्यापारी वर्ग औपनिवेशिक सरकार के व्यापार नियमों से परेशान थे। इन सब कारणों ने आन्दोलन करने के मार्ग को प्रशस्त किया।

प्रश्न 7. भारतीय राष्ट्रवाद में सहायक तत्वों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में राष्ट्रवाद के विकास में विभिन्न सहायक तत्वों के योगदान का विवेचन निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है—

(i) चित्र—किसी भी राष्ट्र की पहचान सबसे अधिक किसी चित्र में अंकित की जाती है। इससे लोगों को एक ऐसी छवि निर्मित करने में सहायता मिलती है जिसके माध्यम से वे राष्ट्र को पहचान सकते हैं। स्वदेशी आन्दोलन की प्रेरणा से सन् 1905 में अबनीन्द्रनाथ द्वारा बनाए चित्र में भारत माता को एक संन्यासिनी के रूप में चित्रित किया गया, इस चित्र में वह शान्त, गम्भीर, दैवीय और आध्यात्मिक गुणों से युक्त दिखाई देती हैं। इस छवि में भारत माता को शिक्षा, भोजन व कपड़े देती हुई दर्शाया गया है। इस मातृ छवि के प्रति श्रद्धा को राष्ट्रवाद की आस्था का प्रतीक माना जाने लगा।

(ii) चिह्न एवं प्रतीक—भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रसार के साथ-साथ राष्ट्रवादी नेता लोगों को एकजुट करने एवं उनमें राष्ट्रवाद की भावना उत्पन्न करने के लिए विभिन्न चिह्नों एवं प्रतीकों का भरपूर उपयोग होने लगा। बंगाल में स्वदेशी आन्दोलन के दौरान एक तिरंगा झंडा तैयार किया गया जिसमें हरा, पीला व लाल रंग थे। इस तिरंगे झण्डे में ब्रिटिश भारत के आठ प्रान्तों का प्रतिनिधित्व करते कमल के आठ फूल तथा हिन्दुओं व मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करता हुआ एक अर्धचन्द्र दर्शाया गया था।

1921 ई. तक गाँधीजी ने भी स्वराज का एक झण्डा तैयार कर लिया था, यह भी तिरंगा था, इसमें सफेद, हरा व लाल रंग था। इस झण्डे के मध्य में गाँधीवादी प्रतीक चरखे को जगह दी गई थी जो स्वावलम्बन का प्रतीक था। जुलूसों में यह झण्डा थामे चलना शासन के प्रति अवज्ञा का संकेत था।

(iii) लोक कथाएँ एवं गीत—भारतीय लोक कथाओं को पुनर्जीवित करने में आन्दोलन ने भी राष्ट्रवाद के विकास में पर्याप्त योगदान दिया। 19वीं सदी में अन्त में राष्ट्रवादियों ने भाटों एवं चारणों द्वारा गाई-सुनाई जाने वाली लोक कथाओं का संग्रह करना प्रारम्भ कर दिया। वे लोकगीतों व जनश्रुतियों को एकत्रित करने के लिए गाँव-गाँव घूमने लगे। उनकी मान्यता थी कि ये लोक कथाएँ हमारी उस परम्परागत संस्कृति की सही तस्वीर प्रस्तुत करती हैं जो बाहरी शक्तियों के प्रभाव से भ्रष्ट व दूषित हो चुकी हैं। बंगाल में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लोक कथा गीतों, बाल गीतों एवं मिथकों का संग्रह करने का प्रयास किया। उन्होंने लोक कथाओं को पुनर्जीवित करने वाले आन्दोलन का नेतृत्व किया। मद्रास में नटेसा शास्त्री ने 'द फोकलोर्स ऑफ सदर्न इण्डिया' के नाम से तमिल लोक कथाओं का विशाल संग्रह चार खण्डों में प्रकाशित किया। उनका मत था कि लोक कथाएँ राष्ट्रीय साहित्य होती हैं। यह लोगों के वास्तविक विचारों एवं विशिष्टताओं की सबसे विश्वसनीय अभिव्यक्ति हैं।

(iv) इतिहास की पुनर्व्याख्या—राष्ट्रवाद के विकास के लिए इतिहास की पुनर्व्याख्या को साधन बनाया गया। 19वीं शताब्दी के अन्त तक समस्त भारतीय यह महसूस करने लगे कि राष्ट्र के प्रति गर्व का भाव जगाने के लिए भारतीय इतिहास को अलग ढंग से पढ़ाया जाना चाहिए। अंग्रेज भारतीयों को पिछड़ा तथा आदिम मानते थे जो अपना शासन स्वयं नहीं चला सकते थे। इसके जवाब में भारत के लोग अपनी महान उपलब्धियों की खोज में अतीत की ओर देखने लगे। उन्होंने प्राचीन समय के गौरवपूर्ण विकास के बारे में लिखा जब भारत में कला, वास्तुशिल्प, विज्ञान एवं गणित, धर्म और संस्कृति, कानून एवं दर्शन, हस्तकला एवं व्यापार उन्नत अवस्था में थे। उनका मानना था कि इस महान युग के पश्चात् पतन का समय आया और भारत को गुलाम बना लिया गया। अतः राष्ट्रवादी इतिहास में भारत की महानता एवं उनकी उपलब्धियों पर गर्व का आह्वान किया गया था। ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत देश की दुर्दशा से मुक्ति के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाने के लिए लोगों को प्रेरित किया गया।

❑❑

खण्ड II : जीविका, अर्थव्यवस्था एवं समाज

3 भूमंडलीकृत विश्व का बनना

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

संक्षेप में लिखें—

प्रश्न 1. सत्रहवीं सदी से पहले होने वाले आदान-प्रदान के दो उदाहरण दीजिए। एक उदाहरण एशिया से और एक उदाहरण अमेरिका महाद्वीपों के बारे में चुनें।

उत्तर—सत्रहवीं शताब्दी से पहले एशिया और अमेरिका में होने वाले आदान-प्रदान के उदाहरण निम्नलिखित हैं—

(i) एशिया महाद्वीप—रेशम मार्ग से चीनी रेशम एवं चीनी पॉटरी तथा भारत व दक्षिण-पूर्व एशिया के कपड़े व मसाले विश्व के विभिन्न देशों में पहुँचते थे। वापसी में सोने-चाँदी जैसी कीमती धातुएँ यूरोप से एशिया पहुँचती थीं।

(ii) अमेरिका महाद्वीप—आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व आलू, मूँगफली, सोयाबीन, टमाटर, मिर्च, शकरकंद जैसे अनेक खाद्य पदार्थ हमारे पास उपलब्ध नहीं थे। परन्तु क्रिस्टोफर कोलम्बस द्वारा अमेरिका की खोज के पश्चात् ये खाद्य पदार्थ अमेरिका से यूरोप एवं एशिया के देशों में पहुँचे।

प्रश्न 2. बताएँ कि पूर्व आधुनिक विश्व में बीमारियों के वैश्विक प्रसार ने अमेरिकी भूभागों के उपनिवेशीकरण में किस प्रकार मदद दी ?

उत्तर—लाखों वर्षों से समस्त विश्व से अलग-थलग रहने के कारण अमेरिका के लोगों के शरीर में चेचक से बचने की रोग प्रतिरोधक क्षमता का अभाव था। इस बीमारी का प्रसार यूरोप महाद्वीप से हुआ। जब यूरोपीय शक्तियों ने अमेरिका में अपने उपनिवेश स्थापित किये तब चेचक नामक बीमारी फैल गयी। इस प्रकार यूरोपीय उपनिवेशवादी शक्तियों को अमेरिका के लोगों को जीतने के लिए सैन्य अस्त्रों का उपयोग नहीं करना पड़ा। समस्त अमेरिका में फैली इस घातक बीमारी ने अनेक लोगों को मौत के घाट उतार दिया। इस प्रकार बीमारियों ने अमेरिकी भू-भागों के उपनिवेशीकरण में सहायता दी।

प्रश्न 3. निम्नलिखित के प्रभावों की व्याख्या करते हुए संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखें—

(क) कॉर्न लॉ के समाप्त करने के बारे में ब्रिटिश सरकार का फैसला।

(ख) अफ्रीका में रिंडरपेस्ट का आना।

(ग) विश्वयुद्ध के कारण यूरोप में कामकाजी उम्र के पुरुषों की मौत।

(घ) भारतीय अर्थव्यवस्था पर महामन्दी का प्रभाव।

(ङ) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा अपने उत्पादन को एशियाई देशों में स्थानान्तरित करने का फैसला।

उत्तर—(क) (i) ब्रिटेन की सरकार द्वारा कॉर्न लॉ समाप्त करने के पश्चात् बहुत ही कम मूल्य पर खाद्य पदार्थों का आयात किया जाने लगा। (ii) आयात किये जाने वाले खाद्य पदार्थों की लागत ब्रिटेन में पैदा होने वाले खाद्य पदार्थों से भी कम थी। (iii) फलस्वरूप ब्रिटेन के किसानों की हालत बिगड़ने लगी क्योंकि वे आयातित माल की कीमत का मुकाबला नहीं कर सकते थे। (iv) विशाल भूभागों पर कृषि कार्य बन्द हो गया। हजारों की संख्या में लोग बेरोजगार हो गये। (v) गाँवों से निकलकर वे या तो शहरों अथवा अन्य देशों की ओर पलायन करने लगे।

(ख) रिंडरपेस्ट का रोग एशियाई मवेशियों से अफ्रीकी मवेशियों में फैला। मवेशियों में प्लेग की तरह फैलने वाली इस बीमारी ने लोगों की आजीविका व अर्थव्यवस्था पर बहुत अधिक प्रभाव डाला। इस बीमारी से हजारों की संख्या में मवेशी मर गये। इसने अफ्रीकी अर्थव्यवस्था को नष्ट कर दिया जो मवेशियों व जमीन पर आधारित थी। इससे बेरोजगारी में वृद्धि हुई तो अफ्रीकी लोगों को यूरोपीय बागानों एवं खानों में काम करने के लिए बाध्य किया गया।

(ग) प्रथम विश्वयुद्ध में यूरोप की ओर से लड़ने वाले अधिकांश लोग कामकाजी उम्र के थे। युद्ध में इनकी मृत्यु अधिक मात्रा में हुई तथा ये घायल भी अधिक हुए। इस विनाश के कारण यूरोप में कामकाज के लायक लोगों की संख्या बहुत कम रह गयी। परिवार के सदस्यों की संख्या घट जाने के कारण युद्ध के पश्चात् परिवारों की आमदनी भी कम हो गयी।

(घ) भारतीय अर्थव्यवस्था पर महामन्दी का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। महामन्दी के दौरान देश का आयात घटकर आधा रह गया। भारत में कृषि उत्पादनों के मूल्यों में भारी में गिरावट आयी। इसके बावजूद सरकार ने लगान वसूली में छूट नहीं दी। विश्व बाजार के लिए खेती करने वाले किसानों को सर्वाधिक हानि उठानी पड़ी।

(ङ) 1970 ई. के दशक के बीच बेरोजगारी बढ़ने लगी। इस समय बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने एशिया के ऐसे देशों में उत्पादन केन्द्रित किया जहाँ वेतन कम दिया जाता था। चीन में वेतन अन्य देशों की तुलना में कम था। विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने यहाँ पर्याप्त धन का निवेश किया। इसका प्रभाव चीनी अर्थव्यवस्था पर दिखाई दिया है।

प्रश्न 4. खाद्य उपलब्धता पर तकनीक के प्रभाव को दर्शाने के लिए इतिहास से दो उदाहरण दें।

उत्तर—खाद्य उपलब्धता पर तकनीक के प्रभाव को दर्शाने के लिए इतिहास के दो उदाहरण निम्नलिखित हैं—

(i) तीव्र गति से चलने वाली रेलगाड़ियाँ बनीं, बोगियों का भार कम किया गया, जलपोतों का आकार बढ़ा, जिससे किसी भी उत्पाद को खेतों से दूर के बाजारों में कम लागत पर और आसानी से पहुँचाया जा सका।

(ii) पानी के जहाजों में रेफ्रिजरेशन की तकनीक स्थापित होने से खाने-पीने के सामानों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने में आसानी हो गयी। शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं को भी रेफ्रिजरेशन की तकनीक से लम्बी यात्राओं पर ले जाया जाने लगा।

प्रश्न 5. ब्रेटन वुड्स समझौते का क्या अर्थ है ?

उत्तर—युद्धोत्तर अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं पूर्ण रोजगार को बनाए रखना था। इसके अनुरूप जुलाई 1944 ई. में अमेरिका स्थित न्यू हैम्पशर के ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन में सहमति बनी थी। सदस्य देशों के विदेश व्यापार में लाभ और घाटे से निपटने के लिए ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में ही अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना की गयी। युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए धन की व्यवस्था करने को अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक अर्थात् विश्व बैंक का गठन किया गया। इसलिए विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष को ब्रेटन वुड्स ट्विन (जुड़वाँ संतानें) भी कहा जाता है। इसी युद्धोत्तर आर्थिक व्यवस्था को ब्रेटन वुड्स व्यवस्था कहा गया है।

ब्रेटन वुड्स व्यवस्था निश्चित विनिमय दरों पर आधारित थी। इस व्यवस्था में राष्ट्रीय मुद्राएँ एक निश्चित विनिमय दर में बँधी हुई थीं। उदाहरण के रूप में, एक डॉलर के बदले में रुपयों की संख्या निश्चित थी। डॉलर का मूल्य भी सोने से बँधा हुआ था। एक डॉलर का मूल्य 35 औंस सोने के बराबर था।

चर्चा करें—

प्रश्न 6. कल्पना कीजिए कि आप कैरीबियाई क्षेत्र में काम करने वाले गिरमिटिया मजदूर हैं। इस अध्याय में दिए गए विवरणों के आधार पर अपने हालात और अपनी भावनाओं का वर्णन करते हुए अपने परिवार के नाम एक पत्र लिखें।

उत्तर—आदरणीय माताजी एवं पिताजी,

सादर चरण स्पर्श व प्रणाम।

आप लोगों की इच्छा के विरुद्ध यहाँ आकर मुझे बहुत दु:ख का अनुभव हो रहा है। जैसा मैं अपने देश से सुखद भविष्य को सोचकर यहाँ आया था वैसा यहाँ कुछ भी नहीं है। एजेंट ने हमें धोखा दिया है। यहाँ का जीवन एवं कार्य-परिस्थितियाँ बहुत कठोर हैं। हमें यहाँ दिन-रात कठोर परिश्रम करना पड़ता है। यदि हम कार्य को समय पर सही ढंग से पूरा नहीं कर पाते तो हमारा वेतन काट लिया जाता है। कई बार कठोर दण्ड भी दिया जाता है। यहाँ मजदूरों को अपने अनुबन्ध की अवधि में भारी कठिनाइयों एवं कष्टों का सामना करना पड़ता है। यहाँ की स्थिति देखकर मुझ जैसे अनेक मजदूरों की आशाएँ मिट्टी में मिल गयीं। मैं अपने अनुबन्ध की अवधि पूरी होने के बाद यहाँ एक मिनट भी नहीं रुकना चाहता। अपनी कुशलता के समाचार देना।

आपका पुत्र

रमेशचंद

प्रश्न 7. अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमयों में तीन तरह की गतियों या प्रवाहों की व्याख्या करें। तीनों प्रकार की गतियों के भारत और भारतीयों से सम्बन्धित एक-एक उदाहरण दें और उनके बारे में संक्षेप में लिखें।

उत्तर—अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमयों में तीन तरह की गतियाँ या प्रवाह निम्नलिखित थे—

(क) पहला प्रवाह व्यापार का होता है। यह 19वीं शताब्दी में मुख्य रूप से कपड़ा, गेहूँ आदि के व्यापार तक ही सीमित था।

(ख) दूसरा प्रवाह श्रम का होता है। इसमें लोग काम अथवा रोजगार की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते थे।

(ग) तीसरा प्रवाह पूँजी का होता है। इसमें छोटी तथा कम लम्बी अवधि के लिए पूँजी का दूर-दराज के क्षेत्रों में निवेश कर दिया जाता है।

तीनों प्रकार की गतियों से भारत एवं भारतीयों से सम्बन्धित उदाहरण निम्नलिखित हैं—

(क) भारत से वस्तुओं के व्यापार का प्रवाह—भारत से गेहूँ तथा समस्त प्रकार के कपड़े (सूती, ऊनी, रेशमी) आदि ब्रिटेन भेजे जाते थे। कपड़ों की रँगाई के लिए नील का भी व्यापार बड़े पैमाने पर होता था।

(ख) श्रम का प्रवाह—19वीं शताब्दी में भारत के मजदूरों को बागानों, खदानों, सड़कों एवं रेलवे परियोजनाओं में काम करने के लिए दूर-दूर ले जाया गया। भारतीय अनुबन्धित मजदूरों को अनुबन्ध के आधार पर बाहर ले जाया जाता था। इन अनुबन्धों में यह शर्त रखी जाती थी कि पाँच वर्ष तक बागानों में काम कर लेने के बाद ही वे स्वदेश लौट सकते थे। भारत के अनुबन्धित श्रमिक मुख्यत: कैरीबियाई द्वीप के गुयाना, त्रिनिदाद, सूरीनाम, मॉरीशस, फिजी, मलाया आदि में कार्य करने हेतु जाते थे।

(ग) पूँजी का प्रवाह—भारतीय साहूकार एवं महाजनों ने एक देशी विनिमय व्यवस्था बना ली थी। ये न केवल भारत में ही पूँजी निवेश करते थे बल्कि अफ्रीका व यूरोपीय उपनिवेशों में भी करते थे। भारत के प्रमुख पूँजीपतियों में शिकारीपुरी श्राफ, नटटूकोट्टई चेट्टियार तथा हैदराबादी सिन्धी व्यापारी आदि थे।

प्रश्न 8. महामन्दी के कारणों की व्याख्या करें।

उत्तर—महामन्दी के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

(क) कृषि में अत्यधिक उत्पादन—कृषि के क्षेत्र में अत्यधिक उत्पादन की समस्या बनी हुई थी इससे कृषि वस्तुओं की कीमतों में बहुत अधिक कमी आयी। कीमतें घटने से कृषि सम्बन्धी आय भी घट गयी जिसके कारण किसानों ने अपना उत्पादन बढ़ाने की कोशिश की ताकि वे कम कीमत पर ही ज्यादा माल बनाकर अपनी आय का स्तर बनाये रख सकें। इससे बाजार में कृषि उत्पादों की अधिकता के कारण कीमतों में गिरावट आयी। क्रेताओं के अभाव में कृषि उपज बढ़ने लगी।

(ख) ऋणों की कमी—1920 ई. के दशक के मध्य में अनेक देशों ने अमेरिका से ऋण लेकर अपनी निवेश सम्बन्धी जरूरतों को पूरा किया था। जब स्थिति ठीक थी तो अमेरिका से ऋण

जुटाना सरल था लेकिन संकट का संकेत मिलते ही अमेरिकी उद्यमियों में घबराहट पैदा हो गयी। 1928 से पहले छः माह तक विदेशों से अमेरिका का ऋण एक अरब डॉलर था। वर्षभर के भीतर यह ऋण घटकर केवल एक-चौथाई रह गया था जो देश अमेरिकी दलालों पर सबसे ज्यादा निर्भर थे, उनके समक्ष गहरा संकट उत्पन्न हो गया।

प्रश्न 9. जी-77 देशों से आप क्या समझते हैं ? जी-77 को किस आधार पर ब्रेटन वुड्स की जुड़वाँ सन्तानों की प्रतिक्रिया कहा जा सकता है ?

उत्तर—जी-77 विश्व के विभिन्न विकासशील देशों का एक ऐसा समूह है जो नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली (NIEO) प्राप्त करने के लिए सामूहिक रूप से कार्य करता है।

1944 ई. में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (विश्व बैंक) की स्थापना की गयी थी। इन्हें ब्रेटन वुड्स संस्थान अथवा ब्रेडन वुड्स की जुड़वाँ सन्तान कहा जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष एवं विश्व बैंक (ब्रेटन वुड्स के दोहरे समझौते) की असन्तोषप्रद सेवाओं के कारण नये स्वतन्त्र हुए देशों ने जी-77 का संगठन किया। इन देशों की स्वतन्त्रता के पश्चात् ब्रेटन वुड्स की संस्थाओं ने निर्धन देशों की सहायता का प्रस्ताव रखा लेकिन इसके बदले में इन संस्थाओं ने उन देशों के प्राकृतिक संसाधनों को गारण्टी के रूप में अपने नियन्त्रण में ले लिया। इस प्रकार विकासशील देश जो विकसित देशों की तरह ही औद्योगिक विकास के पथ पर चलना चाहते थे, ब्रेटन वुड्स की संस्थाओं ने उनके मार्ग में व्यवधान उत्पन्न किया। जिस कारण जी-77 अस्तित्व में आ गया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. भूमंडलीकृत विश्व के विकास में सहायक रही दशाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—आधुनिक युग से पहले भूमण्डलीकृत विश्व बनाने की प्रक्रिया में विजय अभियान, बीमारी एवं व्यापार ने निम्न प्रकार से पृष्ठभूमि का निर्माण किया—

(1) विजय अभियान—सोलहवीं शताब्दी के मध्य तक आते-आते पुर्तगाली व स्पेनिश सेनाओं की विजय का अभियान प्रारम्भ हो चुका था। उन्होंने अमेरिका को उपनिवेश बनाना शुरू कर दिया था। इसके अतिरिक्त अन्य यूरोपीय देश; जैसे—इंग्लैण्ड आदि भी एशिया व अफ्रीका आदि क्षेत्रों में अपने उपनिवेश स्थापित करने में लगे हुए थे।

(2) बीमारी—यूरोपीय सेनाएँ केवल अपने सैनिक बल पर ही नहीं जीतती थीं। स्पेनिश सेनाओं के सबसे शक्तिशाली हथियारों में परम्परागत किस्म के सैनिक हथियार कोई नहीं थे बल्कि ये हथियार चेचक जैसे कीटाणु थे जो स्पेनिश सैनिकों व अफसरों के साथ अमेरिका पहुँचे। अमेरिका जो लाखों वर्षों से शेष विश्व से अलग-थलग था उसके निवासियों के शरीर में यूरोप से आने वाली इन बीमारियों से बचने की कोई रोग निरोधक क्षमता नहीं थी। फलस्वरूप इस नये स्थान पर चेचक बहुत भयंकर सिद्ध हुआ। एक बार संक्रमण हो जाने के पश्चात् यह बीमारी सम्पूर्ण महाद्वीप में फैल गयी। जहाँ यूरोपीय लोग नहीं पहुँचे वहाँ भी इस बीमारी के चपेट में लोग आने लगे। इस बीमारी से पूरा का पूरा समुदाय ही समाप्त हो गया। इस तरह यूरोपियनों की जीत का रास्ता आसान हो गया।

(3) व्यापार—पेरू तथा मैक्सिको की खानों से निकलने वाली कीमती धातुओं विशेषकर चाँदी ने भी यूरोप की सम्पदा को बढ़ाया और पश्चिमी एशिया के साथ होने वाले व्यापार को गति प्रदान की। सत्रहवीं शताब्दी तक सम्पूर्ण यूरोप में दक्षिण अमेरिका की धन-सम्पदा के बारे में विभिन्न प्रकार की किस्से-कहानियाँ बनने लगे थे, इन्हीं किंवदंतियों की बदौलत वहाँ के लोग एल डोराडो को सोने का शहर मानने लगे और उसकी खोज में अनेक खोजी अभियान शुरू किये गये।

प्रश्न 2. 19वीं सदी के अन्त में उपनिवेशवाद की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर—(1) 1920 के दशक की अमेरिकी अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता थी—वृहत् उत्पादन का चलन। इसकी शुरुआत कार निर्माता हेनरी फोर्ड द्वारा की गयी। वृहत उत्पादन की प्रक्रिया 19वीं शताब्दी के अन्त में प्रारम्भ हो चुकी थी लेकिन 1920 के दशक में यह अमेरिकी औद्योगिक उत्पादन की विशेषता ही बन गया था।

(2) अमेरिका के विख्यात कार निर्माता वृहत उत्पादन के प्रणेता थे। उन्होंने शिकागो के एक बूचड़खाने की असेंबली लाइन की तर्ज पर डेट्रॉयट के अपने कार कारखाने में भी आधुनिक असेंबली लाइन स्थापित की थी।

(3) इस प्रकार की व्यवस्था का यह परिणाम हुआ कि हेनरी फोर्ड के कारखाने की असेंबली लाइन में प्रत्येक तीन मिनट में एक कार तैयार होकर निकलने लगी। इससे पहले की पद्धतियों के मुकाबले यह गति कई गुना अधिक थी। टी मॉडल नामक कार वृहत उत्पादन पद्धति से बनी प्रथम कार थी।

(4) प्रारम्भ में कम्पनी के श्रमिकों को असेम्बली लाइन से उत्पन्न होने वाली थकान का सामना करना पड़ा क्योंकि वे उसकी गति पर नियन्त्रण नहीं रख पा रहे थे। अनेक श्रमिकों ने कार्य छोड़ दिया। इस चुनौती से निपटने के लिए फोर्ड ने जनवरी 1914 में श्रमिकों का वेतन दोगुना अर्थात् 5 डॉलर प्रतिदिन कर दिया। साथ ही अपने कारखानों में ट्रेड यूनियन गतिविधियों पर भी पाबंदी लगा दी।

(5) सन् 1919 में अमेरिका में 20 लाख कारों का उत्पादन होता था जो 1929 ई. में बढ़कर 50 लाख प्रतिवर्ष से भी अधिक हो गया। इसके साथ ही अनेक लोग फ्रिज, वाशिंग मशीन, रेडियो, ग्रामोफोन, प्लेयर्स आदि को क्रय करने लगे। ये समस्त वस्तुएँ 'हायर परचेज' व्यवस्था के तहत खरीदी जाती थीं अर्थात् लोग इन सब वस्तुओं को कर्ज पर खरीदते थे और उनकी कीमत साप्ताहिक, मासिक किस्तों में चुकाते थे।

(6) मकानों के निर्माण और निजी मकानों की संख्या में वृद्धि से भी फ्रिज, वाशिंग मशीन आदि उपकरणों की माँग में वृद्धि हुई। घरों का निर्माण अथवा खरीददारी भी कर्ज पर ही की जाती थी।

(7) 1920 के दशक में आवास एवं निर्माण क्षेत्र में वृद्धि अमेरिकी सम्पन्नता का आधार बन गयी। बढ़ते उपयोग के लिए और अधिक

निवेश की जरूरत थी, जिससे नये रोजगार तथा आमदनी में वृद्धि होने लगी।

प्रश्न 3. आर्थिक महामंदी क्या थी? इसके प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—आर्थिक महामंदी का अभिप्राय किसी देश की ऐसी आर्थिक दशा से है जब उत्पादन में भारी वृद्धि तथा क्रय शक्ति में तीव्र गिरावट एवं मुद्रा के वास्तविक मूल्य में कमी आ जाती है। ऐसी आर्थिक महामंदी 1929 ई. में अमेरिका में आयी थी और इसने समस्त विश्व को अपने चंगुल में ले लिया जिसके कारण इसे महामंदी कहा जाता है।

आर्थिक महामंदी का प्रभाव/परिणाम—(1) औद्योगिक देशों में आर्थिक महामंदी का सबसे बुरा प्रभाव अमेरिका को ही झेलना पड़ा। कीमतों में कमी एवं मंदी की आशंका को देखते हुए अमेरिकी बैंकों ने घरेलू कर्ज देना बन्द कर दिया। इसके अतिरिक्त जो कर्जे दिये जा चुके थे, उनकी वसूली तेज कर दी गई।

(2) किसान उपज नहीं बेच पा रहे थे। उनके कारोबार समाप्त हो गये, जिससे उनके परिवार तबाह हो गये।

प्रश्न 4. ब्रेटन वुड्स प्रणाली का वैश्विक अर्थव्यवस्था के निर्माण में क्या योगदान रहा है? समझाइए।

उत्तर—ब्रेटन वुड्स प्रणाली के समाप्त होने के लिए उत्तरदायी कारक निम्नलिखित हैं—

(1) अमेरिकी मुद्रा में गिरावट—1960 ई. के दशक के पश्चात् अमेरिका का आर्थिक शक्ति के रूप में पहले जैसा वर्चस्व नहीं रहा। अमेरिकी डॉलर अब विश्व की प्रधान मुद्रा के रूप में पहले जितना सम्मानित एवं निर्विवाद नहीं रह गया था। सोने की तुलना में डॉलर की कीमत गिरने लगी थी।

(2) पश्चिमी व्यावसायिक बैंकों का उदय—1970 ई. के मध्य से अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों की नीति में भी बहुत अधिक परिवर्तन आ चुके थे। पहले विकासशील देश ऋण एवं विकास सम्बन्धी सहायता के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की सहायता ले सकते थे लेकिन अब उन्हें पश्चिम के व्यावसायिक बैंकों और निजी ऋणदाता संस्थानों से ऋण न लेने के लिए विवश किया जाने लगा। विकासशील विश्व में समय-समय पर ऋण संकट उत्पन्न होने लगा जिससे आय में गिरावट आती थी एवं निर्धनता में वृद्धि होने लगती थी। यह समस्या अफ्रीका व लैटिन अमेरिका में सर्वाधिक दिखाई दी।

(3) बेरोजगारी की समस्या—औद्योगिक विश्व भी बेरोजगारी की समस्या से ग्रसित होने लगा था। 1970 के दशक के मध्य से बेरोजगारी बढ़ने लगी। 1990 के दशक के प्रारम्भिक वर्षों तक बहुत अधिक बेरोजगारी रही। 1970 के दशक के अन्तिम वर्षों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी एशिया के ऐसे देशों में उत्पादन केन्द्रित करने लगीं जहाँ वेतन कम थे।

(4) चीन में अल्प लागत अर्थव्यवस्था—अल्प लागत अर्थव्यवस्था के कारण चीनी अर्थव्यवस्था एक नयी महाशक्ति के रूप में उभरी। चीन जैसे देश में वेतन अपेक्षाकृत कम थे। अत: विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने चीन में पर्याप्त निवेश करना प्रारम्भ कर दिया।

प्रश्न 5. ब्रेटन वुड्स प्रणाली के समाप्त होने के कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—वैश्विक अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण में ब्रेटन वुड्स संस्थान की भूमिका को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) युद्धोत्तर आर्थिक अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य यह था कि औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं पूर्ण रोजगार बनाये रखा जाये। इस फ्रेमवर्क पर जुलाई 1944 ई. में अमेरिका में स्थित न्यू हैम्पशर के ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन में सहमति हुई थी।

(2) सदस्य देशों के विदेशी व्यापार में लाभ और घाटे से निपटने के लिए ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में ही अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई. एम. एफ.) की स्थापना की गयी।

(3) युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए धन की व्यवस्था करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक का गठन किया गया। इसे विश्व बैंक के नाम से भी जाना जाता है। इसी कारण विश्व बैंक एवं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष को ब्रेटन वुड्स संस्थान या ब्रेटन वुड्स ट्विन (ब्रेटन वुड्स की जुड़वाँ संस्था) भी कहा जाता है।

(4) विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने 1947 ई. में औपचारिक रूप से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। इन संस्थानों की निर्णय प्रक्रिया पर पश्चिमी औद्योगिक देशों का नियन्त्रण रहता है। अमेरिका विश्व बैंक व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के किसी भी फैसले को 'वीटो' कर सकता है।

(5) अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था राष्ट्रीय मुद्राओं और मौद्रिक व्यवस्थाओं को एक-दूसरे से जोड़ने वाली व्यवस्था है। ब्रेटन वुड्स व्यवस्था निश्चित विनिमय दरों पर आधारित होती थी। इस व्यवस्था में राष्ट्रीय मुद्राएँ, जैसे—भारतीय मुद्रा-रुपया-डॉलर के साथ एक निश्चित विनिमय दर में बँधा हुआ है। एक डॉलर के बदले में कितने रुपये प्राप्त होंगे, यह स्थिर रहता था। डॉलर का मूल्य भी सोने से बँधा हुआ था। एक डॉलर की कीमत 35 औंस सोने के बराबर निर्धारित की गई थी।

(3) आय में कमी आने पर अमेरिका के बहुत से परिवार कर्जा चुकाने में असफल हो गये जिसके कारण उनके मकान, कार और समस्त आवश्यक वस्तुएँ कुर्क कर ली गयीं।

(4) 1920 के दशक में जो उपभोक्तावादी सम्पन्नता दिखाई दे रही थी, वह अचानक गायब हो गई।

(5) बेरोजगारी में तीव्र गति से वृद्धि होने लगी। लोग काम की तलाश में इधर-उधर भटकने लगे।

(6) अमेरिकी बैंकिंग व्यवस्था धराशायी हो गयी। निवेश से अपेक्षित लाभ नहीं मिलने के कारण, कर्जे की वसूली न होने एवं जमाकर्त्ताओं की जमा पूँजी नहीं लौटा पाने के कारण हजारों की संख्या में बैंक दिवालिया हो गये और बन्द कर दिये गये। एक अनुमान के अनुसार 1933 ई. तक 4000 से ज्यादा बैंक बन्द हो चुके थे तथा 1929 से 1932 के मध्य लगभग 1,10,000 कम्पनियाँ चौपट हो चुकी थीं।

(7) अमेरिकी सरकार अपनी अर्थव्यवस्था को इस महामंदी से बचाने के लिए आयातित पदार्थों पर दोगुना सीमा शुल्क लगाकर वसूल करने लगी। इस फैसले ने तो विश्व व्यापार की कमर ही तोड़ दी।

❑ ❑

4 औद्योगीकरण का युग

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

संक्षेप में लिखें—

प्रश्न 1. निम्नलिखित की व्याख्या करें—

(क) ब्रिटेन की महिला कामगारों ने स्पिनिंग जेनी मशीनों पर हमले किए।

(ख) सत्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों में किसानों और कारीगरों से काम करवाने लगे।

(ग) सूरत बंदरगाह अठारहवीं सदी के अन्त तक हाशिये पर पहुँच गया था।

(घ) ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत में बुनकरों पर निगरानी रखने के लिए गुमाश्तों को नियुक्त किया था।

उत्तर—(क) ब्रिटेन की महिला कामगारों ने स्पिनिंग जेनी मशीनों पर हमले किए क्योंकि यह मशीन एक ही पहिए से कई तकलियों को घुमा सकती थी। इससे जहाँ एक ओर उत्पादन बढ़ा, वहीं हाथ से पहियों को घुमाकर ऊन कातने वाली महिलाओं का रोजगार छिन गया। इसलिए नाराज महिलाओं ने स्पिनिंग जेनी मशीनों पर हमले कर दिए।

(ख) यूरोपीय शहरों के सौदागर किसानों एवं कारीगरों को पैसा देते थे तथा उनसे अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के लिए उत्पादन करवाते थे। सत्रहवीं शताब्दी में विश्व व्यापार के विस्तार और दुनिया के विभिन्न भागों में उपनिवेशों की स्थापना के कारण वस्तुओं की माँग बढ़ने लगी। इस माँग को पूरा करने के लिए शहरों में उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सकता था क्योंकि शहरों में शहरी दस्तकार और व्यापारिक गिल्ड्स प्रभावशाली थे। व्यापारिक गिल्ड्स बाजार, कच्चे माल, कारीगरों एवं उत्पादनों पर नियन्त्रण रखते थे। प्रतिस्पर्धा व मूल्य तय करते थे तथा व्यवसाय में नये लोगों को आने से रोकते थे। शासकों ने भी विभिन्न गिल्ड्स को विशेष उत्पादों के उत्पादन और व्यापार का एकाधिकार दिया हुआ था फलस्वरूप नये व्यापारी शहरों में व्यापार नहीं कर सकते थे इसलिए वे गाँवों की तरफ जाने लगे तथा वहाँ किसानों एवं कारीगरों से काम करवाने लगे।

(ग) भारत में यूरोपीय कम्पनियों की ताकत बढ़ती जा रही थी। व्यापार के माध्यम सूरत व हुगली दोनों पुराने बन्दरगाह कमजोर पड़ गये। सत्रहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में सूरत बन्दरगाह से होने वाले व्यापार का कुल मूल्य 1.6 करोड़ रुपये था। 1740 ई. के दशक तक यह गिरकर केवल 30 लाख रुपये रह गया। सूरत व हुगली कमजोर पड़ रहे थे तथा बम्बई व कलकत्ता की स्थिति सुधर रही थी। उन्होंने नये बन्दरगाहों के माध्यम से व्यापार पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया था। अत: 18वीं शताब्दी के अन्त तक सूरत बन्दरगाह से समुद्री व्यापार धराशायी हो गया और वह हाशिये पर पहुँच गया।

(घ) भारत के बुनकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ-साथ तथा फ्रांसीसी, डच और पुर्तगाली कम्पनियों के लिए भी कपड़ा बुनते थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी कपड़ा उत्पादन संघ व्यापार पर अपना एकाधिकार करना चाहती थी। फलस्वरूप कम्पनी ने बुनकरों पर निगरानी रखने, माल इकट्ठा करने एवं कपड़ों की गुणवत्ता जाँचने के लिए वेतन पर कर्मचारी नियुक्त किये जिन्हें गुमाश्ता कहा जाता था।

प्रश्न 2. प्रत्येक वक्तव्य के आगे 'सही' या 'गलत' लिखें—

(क) उन्नीसवीं सदी के आखिर में यूरोप की कुल श्रम शक्ति का 80 प्रतिशत तकनीकी रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम कर रहा था।

(ख) अठारहवीं सदी तक महीन कपड़े के अन्तर्राष्ट्रीय बाजार पर भारत का दबदबा था।

(ग) अमेरिकी गृह युद्ध के फलस्वरूप भारत के कपास निर्यात में कमी आयी।

(घ) फ्लाई शटल के आने से हथकरघा कामगारों की उत्पादकता में सुधार हुआ।

उत्तर—(क) गलत, (ख) सही, (ग) गलत, (घ) सही।

प्रश्न 3. पूर्व-औद्योगीकरण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर—इंग्लैण्ड और यूरोप में कारखानों की स्थापना से पहले ही अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन होने लगा था। यह उत्पादन कारखानों में नहीं होता था। आदि या पूर्व किसी वस्तु की पहली या प्रारम्भिक अवस्था या संकेत है। अत: अनेक इतिहासकारों ने औद्योगीकरण के इस चरण को आदि या पूर्व-औद्योगीकरण का नाम दिया। आदि-औद्योगिक काल में औद्योगिक बाजार के लिए उत्पाद कारखानों की बजाय घरों पर हाथों से बनाये जाते थे।

चर्चा करें—

प्रश्न 1. उन्नीसवीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपति मशीनों की बजाय हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता क्यों देते थे ?

उत्तर—उन्नीसवीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपति निम्नलिखित कारणों से मशीनों की बजाय हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता देते थे—

(1) विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में मानव श्रम की कोई कमी नहीं थी। इसलिए कुछ उद्योगपति मशीनों की बजाय हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता देते थे।

(2) कुछ उद्योगपति बड़ी-बड़ी मशीनों पर बहुत अधिक खर्च करने से हिचकिचाते थे क्योंकि मशीनें लगाने से यह जरूरी नहीं था कि उनको ऐसा करने से लाभ ही हो।

(3) बहुत से उद्योगों में श्रमिकों की माँग मौसमी आधार पर घटती-बढ़ती रहती थी, जैसे—गैसघरों, शराबखानों, बुक बाइंडरों, प्रिंटरों, बन्दरगाहों में जहाजों की मरम्मत, साफ-सफाई व सजावट के काम में आदि। ऐसे उद्योगों में उद्योगपति मशीनों की बजाय मजदूरों को ही काम पर रखना पसन्द करते थे।

(4) बाजार में अक्सर बारीक डिजाइन एवं विशेष आकार वाली वस्तुओं की बहुत अधिक माँग रहती थी। इन्हें बनाने के लिए मशीनी तकनीक की बजाय मानवीय निपुणता की आवश्यकता पड़ती थी।

(5) अनेक वस्तुएँ केवल हाथ से ही बनायी जा सकती थीं। मशीनों से एक जैसे निश्चित किस्म की वस्तुएँ नहीं बनायी जा सकती थीं।

(6) विक्टोरियाकाल में ब्रिटेन के उच्च वर्ग के लोग कुलीन और पूँजीपति वर्ग हाथों से निर्मित वस्तुओं को अधिक महत्त्व देते थे। हस्तनिर्मित वस्तुओं को परिवार और सुरुचि का प्रतीक माना जाता था। उनकी फिनिशिंग अच्छी होती थी। उनको एक-एक करके बनाया जाता था। अत: सबका डिजाइन अलग-अलग और अधिक अच्छा होता था।

प्रश्न 2. ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारतीय बुनकरों से सूती और रेशमी कपड़े की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए क्या किया ?

उत्तर—ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारतीय बुनकरों से सूती और रेशमी कपड़े की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित कार्य किये—

(1) गुमाश्तों की नियुक्ति—ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने कपड़ा व्यापार में सक्रिय व्यापारियों एवं दलालों को समाप्त करने तथा बुनकरों पर निगरानी रखने, उन्हें माल उपलब्ध कराने एवं कपड़ों की गुणवत्ता जाँचने के लिए वेतनभोगी कर्मचारी नियुक्त किये, जिन्हें गुमाश्ता कहा जाता था।

(2) बुनकरों पर पाबन्दियाँ—कम्पनी को माल बेचने वाले बुनकरों पर अन्य खरीददारों के साथ कारोबार करने पर पाबन्दी लगा दी। इसके लिए उन्हें पेशगी रकम दी जाती थी।

(3) बुनकरों को ऋण उपलब्ध कराना—कार्य का आदेश मिलने पर कम्पनी द्वारा बुनकरों को कच्चा माल खरीदने के लिए ऋण उपलब्ध करा दिया जाता था। ऋण लेने वाले बुनकरों को अपना बनाया हुआ कपड़ा गुमाश्ता को ही देना पड़ता था। वे अन्य किसी व्यापारी को नहीं बेच सकते थे।

(4) बुनकरों का शोषण—गुमाश्ते बुनकरों के साथ अपमानजनक व्यवहार करने लगे। गुमाश्ते बाहर के लोग थे उनका गाँवों से पुराना सामाजिक सम्बन्ध नहीं था, वे दंभपूर्ण व्यवहार वाले थे। वे सिपाहियों व चपरासियों को लेकर आते थे तथा माल समय पर तैयार न होने की स्थिति में बुनकरों को सजा के तौर पर पीटा जाता था व कोड़े बरसाये जाते थे फलस्वरूप बुनकरों की दशा अत्यन्त दयनीय हो गयी। अब वे न तो दाम पर मोलभाव कर सकते थे और न ही किसी और को माल बेच सकते थे। उन्हें कम्पनी से जो कीमत मिलती थी वह बहुत कम थी परन्तु वे ऋण के कारण कम्पनी के लिए काम करने को मजबूर थे।

प्रश्न 3. कल्पना कीजिए कि आपको ब्रिटेन तथा कपास के इतिहास के बारे में विश्वकोश (Encyclopaedia) के लिए लेख लिखने को कहा गया। इस अध्याय में दी गई जानकारियों के आधार पर अपना लेख लिखिए।

उत्तर—**ब्रिटेन का इतिहास**—(1) ब्रिटेन में 1730 ई. के दशक में कारखाने खुले लेकिन इनकी संख्या में तीव्र गति से वृद्धि 18वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में हुई।

(2) सन् 1760 ई. में ब्रिटेन अपने कपास उद्योग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 25 लाख पौंड कच्चे कपास का आयात करता था। 1787 ई. में यह आयात बढ़कर 220 लाख पौंड तक पहुँच गया।

(3) 1840 ई. के दशक तक औद्योगीकरण के प्रथम चरण में सूती उद्योग एवं कपास उद्योग ब्रिटेन का सबसे बड़ा उद्योग बन चुका था।

(4) ब्रिटेन के लंकाशायर में एक कॉटन मिल की स्थापना की गयी।

(5) 1830 ई. में एक कताई कारखाने की स्थापना की गयी जिसमें भाप की सहायता से चलने वाले विशाल पहिये एक साथ सैकड़ों तकलियों को घुमाने लगते थे।

(6) जेम्स हरग्रीव्ज ने कताई की प्रक्रिया को तेज करने वाली एक मशीन 'स्पिनिंग जेनी' का निर्माण किया।

(7) ब्रिटेन ने मैनचेस्टर निर्मित सूती कपड़े को बेचने के लिए अपने समस्त उपनिवेशों में बाजार बना लिये थे। मशीनों द्वारा निर्मित ये कपड़े हाथ से बने कपड़ों से सस्ते पड़ते थे।

(8) यूरोप में बारीक भारतीय कपड़ों की माँग थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारतीय बुनकरों को कर्ज देती थी और गुमाश्तों से उनकी निगरानी करवाती थी जिससे कि ब्रिटेन से मोटे और बारीक कपड़े की नियमित आपूर्ति मिलती रहे।

इस कपास के व्यापार एवं सूती वस्त्र उद्योग पर कई शताब्दियों तक ब्रिटेन का आधिपत्य बना रहा।

प्रश्न 4. पहले विश्वयुद्ध के समय भारत का औद्योगिक उत्पादन क्यों बढ़ा ?

उत्तर—पहले विश्वयुद्ध के समय निम्नलिखित कारणों से भारत का औद्योगिक उत्पादन बढ़ा—

(1) प्रथम विश्वयुद्ध तक औद्योगिक विकास धीमा रहा। युद्ध ने एक नई स्थिति उत्पन्न कर दी थी।

(2) ब्रिटिश कारखाने सेना की जरूरतों को पूरा करने के लिए युद्ध सम्बन्धी उत्पादन में व्यस्त थे इसलिए भारत में मैनचेस्टर के माल का आयात कम हो गया।

(3) भारतीय उद्योगों के लिए यह एक सुअवसर था उन्हें रातों-रात एक विशाल देशी बाजार मिल गया। इस प्रकार औद्योगिक उत्पादन में भी वृद्धि हुई।

(4) युद्ध लम्बे समय तक चला जिसके परिणामस्वरूप भारतीय कारखानों में भी सैनिकों के लिए जूट की बोरियाँ, सैनिकों के लिए वर्दी के कपड़े, टैण्ट और चमड़े के जूते, फोर्ड की जीन एवं अन्य अनेक प्रकार के सामान बनने लगे।
(5) माँग में वृद्धि होने से नये-नये कारखानों की स्थापना होने लगी तथा पुराने कारखानों में भी उत्पादन बढ़ाने के लिए कई पालियों में काम होने लगा।
(6) उत्पादन में वृद्धि करने के लिए पर्याप्त मात्रा में श्रमिकों को काम पर रखा गया। प्रत्येक श्रमिक को पहले की तुलना में अधिक कार्य करना पड़ता था।
यही कारण था कि प्रथम विश्वयुद्ध के समय भारत का औद्योगिक उत्पादन बढ़ गया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. औद्योगिकीकरण क्या है? इंग्लैंड में औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया के प्रारम्भ होने के कारणों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर—औद्योगीकरण यानी उद्योगों की वृहत रूप से स्थापना उस औद्योगिक क्रांति की देन है जिसमें वस्तुओं का उत्पादन मशीनों द्वारा किया जाता है, मानव श्रम द्वारा नहीं। उत्पादन बड़े स्तर पर होने के कारण उसकी खपत के लिए बड़े बाजार की आवश्यकता होती है।
औद्योगीकरण का प्रारंभ इंग्लैण्ड से ही होने के निम्नलिखित कारण थे —
(i) इंग्लैण्ड की भौगोलिक स्थिति—इंग्लैण्ड की भौगोलिक स्थिति उद्योग-धंधों के विकास के लिए अनुकूल थी। इंग्लैण्ड बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित था तथा इसके पास अच्छे बंदरगाह थे, जो औद्योगीकरण के आवश्यक तत्व हैं।
(ii) खनिज पदार्थों की उपलब्धता—इंग्लैण्ड के पास प्राकृतिक साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। इंग्लैण्ड के उत्तरी और पश्चिमी भाग में लोहे और कोयले की खानें उपलब्ध थीं, जिनसे आवश्यक सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती थी।
(iii) नयी-नयी मशीनों का आविष्कार—औद्योगिक क्रांति के लिए इंग्लैण्ड के वैज्ञानिकों ने नयी-नयी मशीनों का आविष्कार किया, जिनसे वस्त्र उद्योग, परिवहन, संचार व्यवस्था एवं खनन उद्योगों की प्रगति हुई।
(iv) मजदूरों की उपलब्धता—बाड़ाबंदी कानून से छोटे किसान अपनी भूमि से बेदखल हो गए। अब उनके सामने रोजी-रोटी का प्रश्न उठ खड़ा हुआ। ये लोग कारखानों में काम करने के लिए विवश हो गए। इसलिए इंग्लैण्ड में कल-कारखानों के लिए सस्ते मजदूर सुलभ हो गए।
(v) परिवहन की सुविधा—कारखानों में उत्पादित वस्तुओं तथा कारखानों तक कच्चा माल पहुँचाने के लिए आवागमन के साधनों का विकास किया गया। सड़कों एवं जहाजरानी का विकास हुआ। बाद में रेलवे का भी विकास हुआ, जिससे औद्योगीकरण में सुविधा आई।
इस प्रकार इंग्लैण्ड में अन्य यूरोपीय देशों की तुलना में ऐसी परिस्थितियाँ विद्यमान थीं जिनसे औद्योगिक क्रांति हुई।

प्रश्न 2. यूरोप में औद्योगिकीकरण की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
उत्तर—उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप में औद्योगीकरण की प्रक्रिया की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—
(i) मुख्य उद्योग—ब्रिटेन के प्रमुख उद्योगों में सूती उद्योग एवं कपास उद्योग दोनों सबसे अधिक विकसित उद्योग थे। कपास उद्योग सन् 1840 ई. तक औद्योगीकरण के प्रथम चरण में सबसे बड़ा उद्योग बन चुका था। इसके पश्चात् लोहा इस्पात उद्योग आगे निकल गया। 1840 ई. के दशक में इंग्लैण्ड में तथा 1860 ई. के दशक में उसके उपनिवेशों में रेलवे का विस्तार तीव्र गति से होने लगा। रेलवे के प्रसार के कारण लोहे व स्टील की माँग तेज गति से बढ़ी। सन् 1873 ई. तक ब्रिटेन के लोहा और स्टील निर्यात का मूल्य लगभग 7.7 करोड़ पौंड हो गया। यह राशि इंग्लैण्ड के कपास निर्यात के मूल्य से दोगुनी थी।
(ii) परम्परागत उद्योगों का आधिपत्य—नये उद्योग परम्परागत उद्योगों को इतनी आसानी से हाशिये पर नहीं पहुँचा सकते थे। 19वीं शताब्दी के अन्त में प्रौद्योगिकीय रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों की संख्या कुल श्रमिकों की 20 प्रतिशत से अधिक नहीं थी। कपड़ा उद्योग एक गतिशील उद्योग था लेकिन इसके उत्पादन का एक बड़ा भाग कारखानों में न होकर घरेलू इकाइयों में बनता था।
(iii) विकास के लिए आधार—यद्यपि परम्परागत उद्योगों में परिवर्तन की गति माप से संचालित होने वाले सूती व धातु उद्योगों से निश्चित नहीं हो पा रही थी लेकिन ये परम्परागत उद्योगों पूरी तरह ठहराव की अवस्था में भी नहीं थे। खाद्य प्रसंस्करण, निर्माण, पॉटरी, काँच के काम, चर्म शोधन, फर्नीचर तथा औजारों के उत्पादन जैसे अनेक गैर-मशीनी क्षेत्र में तीव्र गति से विकास का कारण साधारण व छोटे-छोटे आविष्कारों का अधिक होना था।
(iv) प्रौद्योगिकीय बदलावों की धीमी गति—ब्रिटेन में कई प्रौद्योगिकीय बदलाव हुए परन्तु उनकी गति बहुत धीमी थी। औद्योगिक भूदृश्य पर ये परिवर्तन तीव्र गति से नहीं फैले। नवीन प्रौद्योगिकी बहुत महँगी थी जिस कारण सौदागर व व्यापारी इसके प्रयोग के प्रश्न पर फूँक-फूँककर कदम रखते थे। मशीनें प्रायः खराब हो जाती थीं तो उनकी मरम्मत पर बहुत अधिक व्यय आता था। नवीन मशीनें उनके आविष्कारों एवं निर्माताओं के दावे के अनुरूप उतनी अच्छी भी नहीं थीं।

प्रश्न 3. औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया में तकनीक/श्रमिकों के महत्व का वर्णन कीजिए।
उत्तर—औद्योगिकीकरण में तकनीक ने उत्पादन की गति और सटीकता बढ़ाकर मशीनीकृत कारखानों (जैसे—स्पिनिंग जेनी) का मार्ग प्रशस्त किया, जिससे बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव हुआ। वहीं, श्रमिक (श्रम-शक्ति) औद्योगिक विकास के आधार हैं, जो उत्पादन प्रक्रिया में गतिशीलता, विशेषज्ञता और क्रियान्वयन सुनिश्चित करते हैं, भले ही मशीनों के आगमन से उनके रोजगार के अवसर और कार्य-स्थितियाँ शुरू में चुनौतीपूर्ण रही हों।
औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया में तकनीक का महत्व—
(i) उत्पादन में गति और दक्षता—उन्नत मशीनों (जैसे—वॉटरफ्रेम,

स्पिनिंग म्यूल) ने हाथ से होने वाले काम को मशीनीकृत कर दिया, जिससे उत्पादन कई गुना बढ़ गया। **(ii) कारखानों का उदय**—शुरुआती तकनीक और मशीनों (जैसे—स्पिनिंग जेनी) के कारण उत्पादन की घरों से निकालकर बड़े कारखानों में लाना अनिवार्य हो गया। **(iii) गुणवत्ता में सुधार**—नई तकनीकों के प्रयोग से उत्पादों की गुणवत्ता और सटीकता में सुधार हुआ।

औद्योगिकीकरण में श्रमिकों का महत्व— (i) उत्पादन के मुख्य प्रेरक—मशीनें होने के बावजूद, उन मशीनों को संचालित करने, धागे कातने और कारखानों के अन्य कार्यों के लिए श्रमिकों (विशेषकर बच्चों और महिलाओं) की अत्यधिक आवश्यकता थी। **(ii) कुशल कारीगरी**—मशीनों के शुरुआती दौर में खराब होने या लचीलेपन की कमी के कारण कुशल कारीगरों द्वारा की गई मैन्युअल फिनिशिंग महत्वपूर्ण बनी रही। **(iii) आधारभूत ढाँचा**—देश में औद्योगिक विकास को संचालित करने के लिए श्रम शक्ति एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो उत्पादन के विभिन्न चरणों को पूरा करती है।

निष्कर्ष— औद्योगिकीकरण ने तकनीक के माध्यम से उत्पादन को आधुनिक बनाया, लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में मानवीय श्रम (श्रमिकों) की भूमिका केन्द्रीय रही, जो मशीन-संचालन से लेकर अंतिम उत्पाद बनाने तक आवश्यक बने रहे, यद्यपि उन्हें कम वेतन और कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा।

प्रश्न 4. भारत में औद्योगिकीरण की प्रक्रिया का वर्णन करें।

उत्तर—भारत में औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया औपनिवेशिक शासन के तहत धीमी और असमान रही, जो मुख्य रूप से ब्रिटिश हितों के लिए की गई थी। 1850 के दशक (जैसे 1854 में सूती मिल) में शुरुआत के बाद, यह उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में सूती वस्त्र और जूट उद्योगों के साथ तेज हुई। यह प्रक्रिया पारंपरिक हस्तशिल्प के पतन (वि-औद्योगिकीकरण) और 1914 के बाद स्वदेशी के उदय के बीच फँसी रही।

औपनिवेशिक शासन के तहत औद्योगिकीकरण के बिन्दु—

(i) वि-औद्योगिकीकरण—ब्रिटिश शासन ने भारत को केवल कच्चे माल का निर्यातक और मैनचेस्टर निर्मित सामानों का बाजार बना दिया, जिससे पारंपरिक भारतीय हथकरघा और हस्तशिल्प उद्योग का पतन हो गया। **(ii) प्रारंभिक चरण (औपनिवेशिक काल)**—शुरुआती कारखाने 1850-1860 के दशक में स्थापित किए गए, जैसे बम्बई में सूती मिलें (1854) और बंगाल में जूट मिलें (1855)। ये मुख्य रूप से यूरोपीय कंपनियों द्वारा स्थापित थे। **(iii) भारतीय उद्यमी**—19वीं सदी के अंत में, द्वारकानाथ टैगोर और जमशेदजी टाटा जैसे भारतीय व्यापारियों ने उद्योगों में निवेश शुरू किया, लेकिन ब्रिटिश प्रतिबंधों का सामना किया। **(iv) प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918)**— युद्ध के दौरान ब्रिटिश कारखाने युद्ध सामग्री में व्यस्त थे, जिससे भारतीय मिलों को घरेलू बाजार और युद्ध आपूर्ति (जैसे जूट) के लिए उत्पादन बढ़ाने का बड़ा मौका मिला। **(v) श्रमिकों की स्थिति**—काम घंटे बहुत लंबे थे, वेतन बहुत कम था और नौकरी की सुरक्षा नहीं थी। जॉबर (पुरानी भर्ती करने वाले) के माध्यम से कामगारों की भर्ती की जाती थी। **(vi) मशीनीकरण का विरोध**—चूँकि भारत में श्रम सस्ता था, उद्योगपति नई मशीनों (जैसे-स्पिनिंग जेनी) को अपनाने में हिचकिचाते थे जिससे हस्तशिल्प का काम जारी रहा।

निष्कर्ष— भारत में औद्योगिकीकरण अंग्रेजों के लिए मुनाफे की प्रक्रिया थी, जिसने शुरुआती दौर में भारतीय कारीगरों की आजीविका को नष्ट कर दिया, लेकिन बाद में स्वदेशी औद्योगिक आधार तैयार किया।

प्रश्न 5. औद्योगिकीरण/तकनीकी विकास, श्रमिकों के लिए किस प्रकार हानिकारक रहा है? समझाइए।

उत्तर—19वीं शताब्दी में बाजार में श्रम की अधिकता ने ब्रिटेन के कामगारों की जिंदगी को निम्न प्रकार से प्रभावित किया—

(i) माँग की तुलना में श्रमिकों की अधिकता—19वीं शताब्दी में बाजार में आवश्यकता से अधिक श्रमिक उपलब्ध थे इससे श्रमिकों के जीवन पर बहुत अधिक बुरा प्रभाव पड़ा। काम की कमी के कारण अधिकांश श्रमिकों को काम नहीं मिलता था। अत: वे कम वेतन पर काम करने को तैयार हो जाते थे। कुछ लोग वापस अपने गाँव लौट जाते थे।

(ii) मौसमी काम—कई उद्योगों में वर्ष भर श्रमिकों को काम नहीं मिल पाता था। अनेक उद्योगों में मौसमी काम की वजह से श्रमिकों को बीच-बीच में बहुत समय तक खाली बैठना पड़ता था। जब काम का मौसम समाप्त हो जाता था तो श्रमिक पुन: सड़क पर आ जाते थे। कुछ श्रमिक सर्दियों के पश्चात् गाँव चले जाते थे जहाँ हर समय काम निकलने लगता था। लेकिन अधिकांश श्रमिक शहरों में ही रहकर छोटा-मोटा कोई काम ढूँढ़ने की कोशिश करते थे जो उन्नीसवीं सदी के मध्य तक कोई आसान काम नहीं था।

(iii) कम वास्तविक वेतन—यद्यपि 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में श्रमिकों के वेतन में कुछ वृद्धि की गयी लेकिन इससे श्रमिकों की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। कीमतों में वृद्धि के कारण वेतन में हुई वृद्धि निरर्थक हो गयी। श्रमिकों की औसत दैनिक आय का निर्धारण इस बात से होता था कि उन्होंने कितने दिन काम किया है।

(iv) निर्धनता तथा बेरोजगारी—19वीं शताब्दी के मध्य में सबसे अच्छे समय में भी लगभग 10 प्रतिशत शहरी जनसंख्या अति निर्धन थी। सन् 1830 ई. के दशक में आयी आर्थिक मंदी में बेरोजगारों की संख्या बढ़कर विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 35 से 75 प्रतिशत तक पहुँच गयी थी।

प्रश्न 6. भारतीय औद्योगिक विकास में स्थानीय उद्योगपतियों की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत के प्रारंभिक उद्यमियों में द्वारकानाथ टैगोर, डिनशॉ पेटिट, जमशेदजी नुसरवानजी टाटा, तथा सेठ हुकुमचंद का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 18वीं सदी के अंत में अंग्रेजों ने भारतीय अफीम का चीन को निर्यात शुरू कर दिया था। बदले में अंग्रेज इंग्लैंड ले जाने के लिए चीन से चाय खरीदते थे। इस व्यापार में बहुत-से भारतीय कारोबारियों ने सहायक के तौर पर प्रवेश किया। वे पैसा उपलब्ध कराना, आपूर्ति सुनिश्चित करना तथा माल को जहाजों में लदवाकर रवाना करवाने जैसे कार्य करते थे। उनमें से कुछ व्यवसायी पैसा कमाकर भारत में औद्योगिक

उद्यम स्थापित करने की इच्छा रखते थे। बंगाल में द्वारकानाथ टैगोर ने चीन में व्यापार कर खूब पैसा कमाया तथा उद्योगों में निवेश करने लगे। उन्होंने 1830-1840 के दशक के दौरान 6 संयुक्त उद्यम कंपनियाँ लगाने में सफलता हासिल की। हालाँकि 1840 के दशक में आए व्यापक व्यावसायिक संकटों में बाकी व्यवसायियों की तरह उनके उद्यम भी डूब गए।

19वीं सदी में चीन के साथ व्यापार करने वाले बहुत-से व्यवसायी सफल उद्योगपति बनने में सफल रहे। बंबई में डिनशॉ पेटिट तथा जमशेदजी नुसरवानजी टाटा (जिन्होंने बाद में देश में विशाल औद्योगिक साम्राज्य स्थापित किया) जैसे पारसियों ने चीन को आंशिक रूप से निर्यात कर तथा इंग्लैंड को कच्ची कपास आंशिक रूप से निर्यात कर पर्याप्त पैसा कमाया। मारवाड़ी व्यवसायी सेठ हुकुमचंद (1917 में कलकत्ता में देश की पहली जूट मिल के संस्थापक) ने भी चीन के साथ व्यापार किया। प्रसिद्ध उद्योगपति जी.डी.बिड़ला के पिता व दादा ने भी यही काम किया।

प्रश्न 7. विज्ञापनों की भूमिका का बाजार के फैलाव में योगदान स्पष्ट करें।

उत्तर—उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश उत्पादकों द्वारा बाजार के फैलाव के लिए प्रयुक्त विधियाँ निम्नलिखित हैं—

(i) विज्ञापन—बाजार के फैलाव व नये उपभोक्ताओं को अपने माल से जोड़ने के लिए उत्पादक, समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं, होर्डिंग्स आदि के माध्यम से विज्ञापन देते थे। विज्ञापनों ने विभिन्न उत्पादनों के बाजार को विस्तार प्रदान करने एवं नयी उपभोक्ता संस्कृति का निर्माण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। विज्ञापनों ने उत्पादों को अति आवश्यक एवं वांछनीय बना दिया था।

(ii) लेबल लगाना—अपने उत्पादों के बाजार को फैलाने के लिए उत्पादक लेबल लगाने की विधि का प्रयोग करते थे। जब मैनचेस्टर के उद्योगपतियों ने भारत में कपड़ा बेचना प्रारम्भ किया तो वे कपड़ों के बण्डलों पर लेबल लगाते थे। लेबल लगाने का यह लाभ होता था कि क्रेताओं को निर्माता कम्पनी का नाम व उत्पादन के स्थान के बारे में जानकारी प्राप्त हो जाती थी। लेबल ही वस्तुओं की गुणवत्ता का प्रतीक भी होता था। जब किसी वस्तु के लेबल पर मोटे अक्षरों में 'मेड इन मैनचेस्टर' लिखा दिखाई देता तो खरीददारों को कपड़ा खरीदने में किसी भी प्रकार का कोई डर नहीं रहता था। लेबलों पर केवल शब्द व अक्षर ही नहीं होते थे बल्कि उन पर मुख्यत: भारतीय देवी-देवताओं की तस्वीरें बनी होती थीं।

(iii) कैलेण्डर—उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में निर्माता उत्पादों को बेचने के लिए कैलेण्डर अपनाने लगे थे। समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं को तो शिक्षित लोग ही समझ सकते थे लेकिन कैलेण्डर निरक्षरों की समझ में भी आ जाते थे। उन्हें पान की दुकान, दफ्तरों व मध्यमवर्गीय घरों में लटकाया जाता था। जो लोग इन कैलेण्डरों को लगाते थे वे विज्ञापनों को भी सम्पूर्ण वर्ष देखते थे। इन कैलेण्डरों में भी नये उत्पादों को बेचने के लिए देवताओं के चित्र प्रयुक्त किये जाते थे।

(iv) महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के चित्र—देवी-देवताओं के चित्रों के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों, सम्राटों व नबावों के चित्र भी विज्ञापनों व कैलेण्डरों में बहुत अधिक प्रयोग किये जाते थे। इनका प्राय: यह संदेश होता था कि यदि आप इस शाही व्यक्ति का सम्मान करते हैं तो इस उत्पाद का भी सम्मान कीजिए। यदि इस उत्पाद को महत्त्वपूर्ण व्यक्ति, सम्राट या नबाव प्रयोग करते हैं तो इसकी गुणवत्ता पर प्रश्न-चिह्न नहीं लगाया जा सकता था।

❑❑

खण्ड III : रोजाना की जिंदगी, संस्कृति और राजनीति

5 मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

संक्षेप में लिखें—

प्रश्न 1. निम्नलिखित के कारण दें—

(क) वुडब्लॉक प्रिन्ट या तख्ती की छपाई यूरोप में 1295 के बाद आई।

(ख) मार्टिन लूथर मुद्रण के पक्ष में था और उसने इसकी खुलेआम प्रशंसा की।

(ग) रोमन कैथोलिक चर्च ने सोलहवीं सदी के मध्य से प्रतिबन्धित किताबों की सूची रखनी शुरू कर दी।

(घ) महात्मा गाँधी ने कहा कि स्वराज की लड़ाई दरअसल अभिव्यक्ति, प्रेस और सामूहिकता के लिए लड़ाई है।

उत्तर—(क) चीन के पास वुडब्लॉक प्रिन्ट या तख्ती की छपाई की तकनीक पहले से ही मौजूद थी। 1295 ई. में मार्कोपोलो नामक महान खोजी यात्री चीन में कई वर्ष तक खोज करने के पश्चात् अपने देश इटली वापस लौटा। वह अपने साथ वुडब्लॉक प्रिन्ट तकनीक को भी ले गया। अत: 1295 ई. के पश्चात् इटली सहित सम्पूर्ण यूरोप में भी वुडब्लॉक प्रिन्ट तकनीक का प्रयोग किया जाने लगा। यहाँ तख्ती की छपाई से पुस्तकें छपने लगीं।

(ख) मार्टिन लूथर मुद्रण के पक्ष में था और उसने इसकी खुलेआम प्रशंसा की। धर्म सुधारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथोलिक चर्च

की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी पिच्चानवे स्थापनाएँ लिखीं। इसकी एक छपी प्रति विटेनबर्ग के गिरजाघर पर टाँगी गई। उसने न्यूटेस्टामेन्ट का अनुवाद किया जिसकी अल्प समय में 5,000 प्रतियाँ बिक गयीं और तीन महीने के अन्दर दूसरा संस्करण निकालना पड़ा। लूथर ने मुद्रण की प्रशंसा करते हुए कहा कि "मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है और सबसे बड़ा तोहफा है।"

(ग) रोमन कैथोलिक चर्च ने सोलहवीं सदी के मध्य से प्रतिबन्धित किताबों की सूची रखना प्रारम्भ कर दिया था क्योंकि छपे हुए लोकप्रिय साहित्य के बल पर शिक्षित लोग धर्म की अलग-अलग व्याख्याओं से परिचित हुए। इटली की आम जनता ने किताबों के आधार पर बाइबिल के नए अर्थ लगाने प्रारम्भ कर दिए। ये पुस्तकों के माध्यम से ईश्वर और सृष्टि के सही अर्थ समझ पाए। इससे रोमन कैथोलिक चर्च में बहुत अधिक प्रतिक्रिया हुई। ऐसे धर्मविरोधी विचारों पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिए रोमन चर्च ने इन्क्वीजीशन यानि धर्मद्रोहियों को सुधारना आवश्यक समझा। अत: रोमन चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं पर कई तरह की पाबन्दियाँ लगाईं और 1558 ई. से प्रतिबन्धित किताबों की सूची रखने लगे।

(घ) महात्मा गाँधी ने कहा कि स्वराज की लड़ाई दरअसल अभिव्यक्ति, प्रेस और सामूहिकता के लिए लड़ाई है। ये तीनों अभिव्यक्तियाँ जनता के विचारों को व्यक्त करने व बचाने का एक शक्तिशाली हथियार हैं। स्वराज, खिलाफत और असहयोग की लड़ाई में सबसे पहले इन तीनों संकटग्रस्त आजादियों की लड़ाई है। महात्मा गाँधी ने इन तीनों—अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, प्रेस की स्वतन्त्रता और सामूहिकता की स्वतन्त्रता को अधिक आवश्यक बताया।

प्रश्न 2. छोटी टिप्पणी में इनके बारे में बताएँ—

(क) गुटेन्बर्ग प्रेस, (ख) छपी किताब को लेकर इरैस्मस के विचार,

(ग) वर्नाक्युलर या देशी प्रेस एक्ट

उत्तर—(क) गुटेन्बर्ग प्रेस—स्ट्रॉसबर्ग के योहान गुटेन्बर्ग ने 1448 ई. में प्रिन्टिंग प्रेस का निर्माण किया। इस प्रेस में स्क्रू से लगा एक हैंडल होता था। हैंडल की सहायता से स्क्रू को घुमाकर प्लेटैन को गीले कागज पर दबा दिया जाता था। गुटेन्बर्ग ने रोमन वर्णमाला के समस्त 26 अक्षरों के लिए टाइप बनाए। इसमें यह प्रयास किया गया था कि इन्हें इधर-उधर मूव कराकर या घुमाकर शब्द बनाए जा सकें इसलिए इसे मूवेबल टाइप मशीन के नाम से भी जाना गया और यह आगामी 300 वर्षों तक छपाई की बुनियादी तकनीक बनी रही। यह प्रेस एक घण्टे में एकतरफा 250 पन्ने छाप सकती थी।

इसमें छपने वाली प्रथम पुस्तक 'बाइबिल' थी। गुटेन्बर्ग ने तीन वर्षों में बाइबिल की 180 प्रतियाँ छापीं जो उस समय के हिसाब से बहुत तेज छपाई थी।

(ख) छपी किताब को लेकर इरैस्मस के विचार—इरैस्मस एक लैटिन विद्वान एवं कैथोलिक धर्म सुधारक था। इन्होंने कैथोलिक धर्म की ज्यादतियों की आलोचना की लेकिन इन्होंने मार्टिन लूथर से भी एक दूरी बनाकर रखी। उसने किताबों की छपाई की आलोचना की। 1508 ई. में उन्होंने एडेजेज़ में लिखा कि किताबें भिनभिनाती मक्खियों की तरह हैं जो समस्त विश्व में पहुँच जाती हैं। इन पुस्तकों का अधिकांश हिस्सा तो विद्वता के लिए हानिकारक ही है। किताबें बेकार ढेर हैं क्योंकि अच्छी वस्तुओं की अति भी हानिकारक ही होती है, इनसे बचना चाहिए। मुद्रक विश्व को मात्र तुच्छ लिखी हुई पुस्तकों से ही नहीं पाट रहे बल्कि बकवास, बेवकूफ, सनसनीखेज, धर्मविरोधी, अज्ञानी और षड्यन्त्रकारी पुस्तकें छापते हैं और उनकी संख्या इतनी है कि मूल्यवान साहित्य का मूल्य ही नहीं रह जाता।

(ग) वर्नाक्युलर या देशी प्रेस एक्ट—भारत की ब्रिटिश सरकार ने 1857 ई. की क्रान्ति के पश्चात् प्रेस की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। अंग्रेजों ने देसी प्रेस को बन्द करने की माँग की। जैसे-जैसे भाषाई समाचार-पत्र राष्ट्रवाद की भावना को जाग्रत करने लगे वैसे-वैसे ही औपनिवेशिक सरकार में कठोर नियन्त्रण के प्रस्तावों पर बहस तेज होने लगी।

आयरिश प्रेस कानून की तर्ज पर 1878 ई. में वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट लागू कर दिया गया। इससे सरकार को भाषायी प्रेस में छपी रपट तथा सम्पादकीय को सेंसर करने का व्यापक अधिकार मिल गया। ब्रिटिश सरकार विभिन्न प्रदेशों में छपने वाले भाषायी समाचार-पत्रों पर नियमित रूप से नजर रखने लगी। यदि किसी रपट को बागी करार दिया जाता था तो अखबार को पहले चेतावनी दी जाती थी और यदि चेतावनी की अनसुनी हुई तो अखबार को जब्त किया जा सकता था तथा छपाई की मशीनें छीनी जा सकती थीं।

प्रश्न 3. उन्नीसवीं सदी में भारत में मुद्रण संस्कृति के प्रसार का इनके लिए क्या मतलब था ?

(क) महिलाएँ, (ख) गरीब जनता, (ग) सुधारक।

उत्तर—(क) महिलाएँ—उन्नीसवीं सदी में महिलाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। मुद्रण संस्कृति के प्रसार से महिला लेखिकाओं ने औरतों के बारे में लिखा और उनमें जाग्रति पैदा की, जिससे उनमें अपनी स्थिति को सुधारने की हिम्मत आयी। उदारवादी परिवारों ने महिलाओं की शिक्षा का समर्थन किया, वहीं रूढ़िवादी परिवारों ने महिला शिक्षा का विरोध किया, फिर भी अनेक महिलाओं ने चोरी-छिपे (रसोईघरों में) पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। बाद में उन्होंने अपनी जीवन-गाथा को आत्मकथाओं के रूप में लिखा एवं प्रकाशित करवाया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मुद्रण संस्कृति ने भारतीय महिलाओं में आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न कर दी।

(ख) गरीब जनता—गरीब जनता की पहुँच से किताबें बहुत दूर थी, क्योंकि उनका मूल्य अत्यधिक होता था किन्तु मुद्रण के प्रसार से किताबें सस्ती हो गयीं और जनता की पहुँच में आ गयीं। बीसवीं सदी के आरम्भ से शहरों व कस्बों में सार्वजनिक पुस्तकालय खुलने लगे थे जहाँ गरीब जनता भी जाकर पुस्तकें पढ़ सकती थी। बंगलौर सूती मिल मजदूरों ने स्वयं को शिक्षित करने के विचार से पुस्तकालय स्थापित किये। इस प्रकार भारत में मुद्रण संस्कृति के विकास से गरीब जनता बहुत अधिक लाभान्वित हुई।

(ग) सुधारक—मुद्रण संस्कृति के प्रसार से सुधारक अपने विचारों को लिखकर जनता तक पहुँचाने लगे और लोगों में उनके विचारों का असर होने लगा। वे समाज में होने वाले अत्याचार और अन्धविश्वास से जनता को जागरूक करने लगे। मुद्रण संस्कृति ने उन्हें धार्मिक अन्धविश्वासों को तोड़ने तथा आधुनिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों को फैलाने का मंच प्रदान किया।

चर्चा करें—

प्रश्न 1. अठारहवीं सदी के यूरोप में कुछ लोगों को क्यों ऐसा लगता था कि मुद्रण संस्कृति से निरंकुशता का अन्त, और ज्ञानोदय होगा ?

उत्तर—अठारहवीं सदी के मध्य तक यह आम विश्वास बन चुका था कि किताबों के जरिए प्रगति और ज्ञानोदय होता है। लोगों का मानना था कि वे निरंकुशवाद और राजसत्ता से समाज को मुक्ति दिलाकर ऐसा दौर लायेंगे जब विवेक और बुद्धि का राज होगा। अठारहवीं सदी में फ्रांस के एक उपन्यासकार लुई सेबेस्तिए मर्सिए ने घोषणा की, "छापाखाना प्रगति का सबसे बड़ा ताकतवर औजार है, इससे बन रही जनमत की आँधी में निरंकुशवाद उड़ जाएगा।" मर्सिए के उपन्यासों में नायक सामान्यतया किताबें पढ़ने में बदल जाते हैं। वे किताबें घोंटते हैं, किताबों की दुनिया में जीते हैं और इसी क्रम में ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। ज्ञानोदय को लाने और निरंकुशवाद के आधार को नष्ट करने में छापेखाने की भूमिका के बारे में आश्वस्त मर्सिए ने कहा, "हे निरंकुशवादी शासक, अब तुम्हारे काँपने का वक्त आ गया है! आभासी लेखक की कलम के जोर के आगे तुम हिल उठोगे!"

प्रश्न 2. कुछ लोग किताबों की सुलभता को लेकर चिन्तित क्यों थे ? यूरोप और भारत से एक-एक उदाहरण लेकर समझाएँ।

उत्तर—कुछ लोग किताबों को लेकर चिन्तित इसलिए थे क्योंकि वे मानते थे, किताबों में लिखा हुआ पढ़ने से लोग बागी हो जायेंगे, सत्ता का विरोध करेंगे, विरोध करने के लिए वे छपाई का दुरुपयोग करेंगे, लोग अधार्मिक प्रवृत्ति के हो जायेंगे, धर्म के प्रति उनका लगाव कम हो जायेगा, वे अनुशासनहीन हो जायेंगे, महिलाएँ अपने स्वाभाविक कार्यों को छोड़कर पढ़ी हुई बातों का अनुसरण करने लगेंगी, जिससे सामाजिक अव्यवस्था फैल जायेगी।

यूरोप का एक उदाहरण—रोमन कैथोलिक चर्च ने धर्म विरोधी विचारों को दबाने के लिए इन्क्वीजीशन शुरू किया तथा प्रकाशकों व पुस्तक विक्रेताओं पर कई प्रकार की पाबन्दियाँ लगाईं और 1558 ई. से प्रतिबन्धित किताबों की सूची रखने लगे।

भारत का उदाहरण—1857 ई. की क्रान्ति से भारत में प्रेस की स्वतन्त्रता के प्रति ब्रिटिश सरकार का रवैया बदल गया। औपनिवेशिक सरकार ने राष्ट्रवाद के समर्थक भाषायी समाचार पत्रों पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिए 1878 ई. में आयरिश प्रेस कानून की तर्ज पर वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट लागू कर दिया। इस एक्ट के माध्यम से ब्रिटिश सरकार ने राष्ट्रवादी गतिविधियों को रोकने के लिए अनेक स्थानीय अखबारों पर प्रतिबन्ध लगा दिया तथा उनसे छपाई की मशीनें छीन ली गयीं।

प्रश्न 3. उन्नीसवीं सदी में भारत में गरीब जनता पर मुद्रण संस्कृति का क्या असर हुआ ?

उत्तर—उन्नीसवीं सदी में भारत में गरीब जनता पर मुद्रण संस्कृति का निम्नांकित असर हुआ—(i) देश के अनेक लोगों को छापेखानों में काम मिलने लगा। (ii) भाषायी प्रेस ने गरीब लोगों के मन-मस्तिष्क में राष्ट्रवादी विचारों का रोपण किया। (iii) सस्ती मुद्रण सामग्री से गरीब लोगों को राष्ट्रीय, स्थानीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों की समाचार-पत्रों के माध्यम से जानकारी मिलने लगी। (iv) मुद्रण संस्कृति के कारण जातिभेद के बारे में विभिन्न प्रकार की पुस्तिकाओं व निबन्धों को लिखा जाने लगा। (v) मुद्रण संस्कृति द्वारा गरीबों में नशाखोरी कम करने तथा हिंसा को समाप्त करने का सन्देश पहुँचाया गया।

प्रश्न 4. मुद्रण संस्कृति ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में क्या मदद की ?

उत्तर—मुद्रण संस्कृति ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में निम्न प्रकार से मदद की—

(i) मुद्रण संस्कृति द्वारा देश में राष्ट्रवाद का प्रचार-प्रसार किया जाता था। (ii) स्थानीय भाषायी समाचार पत्रों के माध्यम से औपनिवेशिक सरकार के शोषण के तरीकों की आम जनता को जानकारी दी जाती थी। (iii) मुद्रण संस्कृति के माध्यम से शिक्षा का प्रचार-प्रसार होता था। (iv) मुद्रण संस्कृति से स्थानीय भाषाओं में धार्मिक शिक्षा को बढ़ावा मिला। (v) राष्ट्रवादी राष्ट्रीय व स्थानीय समाचार-पत्रों द्वारा हमेशा भारतीय जनता के दृष्टिकोण को प्रचारित किया जाता था। (vi) ब्रिटिश सरकार के गलत नियमों, राष्ट्रवादी भावनाओं को फैलने से रोकने आदि के प्रयासों, दमनकारी नीतियों एवं प्रेस की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध आदि की जानकारी विस्तार से प्रकाशित की जाती थी। (vii) भारत के विभिन्न समाज सुधारकों के विचारों को आम जनता तक पहुँचाया जाता था तथा समाज सुधार के प्रयास किये जाते थे।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. चीन में मुद्रण के इतिहास का वर्णन कीजिए।

उत्तर—चीन में मुद्रण के इतिहास को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) मुद्रण की सबसे पहली तकनीक चीन, जापान व कोरिया देश में विकसित हुई। यह छपाई हाथ से होती थी। (ii) लगभग 594 ई. से चीन में स्याही लगे काठ के ब्लॉक या तख्ती पर कागज को रगड़कर पुस्तकें छापा जाना प्रारम्भ किया गया। (iii) चूँकि पतले, छिद्रित कागज के दोनों ओर छपाई संभव नहीं थी इसलिए पारम्परिक चीनी पुस्तकें एकॉर्डियन शैली में किनारों को मोड़ने के पश्चात् सिलकर बनायी जाती थीं। (iv) चीन में पुस्तकों को सुलेखन करने वाले लोग दक्ष सुलेखक या खुशनवीसी होते थे जो हाथ से बड़े-बड़े सुन्दर सुडौल अक्षरों में सही-सही कलात्मक लिखाई करते थे। (v) एक लम्बे समय तक मुद्रित सामग्री का सबसे बड़ा उत्पादक चीनी राजतंत्र रहा था। सिविल सेवा परीक्षा में नियुक्त चीन की नौकरशाही भी विशाल थी। चीनी राजतंत्र इन परीक्षाओं के लिए बड़ी संख्या में पुस्तकें छपवाता था। (vi) 16वीं शताब्दी में सिविल सेवा परीक्षा देने वाले लोगों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई। अत:

पुस्तकें भी उसी अनुपात में अधिक संख्या में छापी गयीं। (vii) 17वीं शताब्दी तक आते-आते चीन में नगरीय संस्कृति के विस्तार से छपाई के उपयोग में भी विविधता आयी। अब मुद्रित सामग्री के उपभोक्ता केवल विद्वान एवं अधिकारी हीं नहीं थे बल्कि व्यापारी भी अपने कारोबार की दैनिक जानकारी लेने के लिए मुद्रित सामग्री का प्रयोग करने लगे। (viii) चीन में पढ़ना एक शौक बन गया था। नए पाठक वर्ग को काल्पनिक किस्से, कविताएँ, शास्त्रीय, साहित्यिक कृतियों के संकल्प एवं रूमानी नाटक पसंद थे। (ix) धनिक वर्ग की महिलाओं ने पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। कुछ महिलाओं ने स्वरचित काव्य और नाटक भी छापे। (x) चीन में पढ़ने की एक नई संस्कृति, एक नई तकनीक के साथ आई। 19वीं सदी के अन्त में पश्चिमी शक्तियों द्वारा अपनी चौकियाँ स्थापित करने के साथ ही पश्चिमी मुद्रण तकनीक और मशीन प्रेस का भी आयात हुआ। (xi) पश्चिमी शैली के विद्यालयों की जरूरतों को पूरा करने वाला शंघाई प्रिंट संस्कृति का नया केन्द्र बन गया। हाथ की छपाई के स्थान पर अब धीरे-धीरे मशीनी या यांत्रिक छपाई का विकास होना प्रारम्भ हो गया। (xii) चीनी बौद्ध प्रचारकों ने इस छपाई की तकनीक को जापान सहित अन्य देशों में फैलाया।

प्रश्न 2. यूरोप में मुद्रण के विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर—यूरोप में मुद्रण संस्कृति के विस्तार को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) चीन से कागज का आगमन—वर्षों से चीन से रेशम और मसाले, रेशम मार्ग से यूरोप को भेजे जाते थे। 11वीं सदी में चीनी कागज रेशम मार्ग से यूरोप पहुँचा। **(ii) यात्रियों तथा खोजकर्ताओं की भूमिका**—1295 ई. में मार्कोपोलो नामक महान खोजी यात्री चीन में कई वर्षों तक खोज करने के पश्चात् चीन से वुडब्लॉक (काठ की तख्ती) वाली छपाई की तकनीक को साथ लेकर इटली लौटा। अब इटली के लोग भी तख्ती की छपाई से पुस्तकें छापने लगे। छपाई की यह तकनीक यूरोप के अन्य भागों में भी प्रचलित हो गयी। **(iii) वुडब्लॉक प्रिंटिंग (तख्ती की छपाही)**—पुस्तकों की माँग बढ़ने के साथ-साथ समस्त यूरोप के पुस्तक विक्रेता विभिन्न देशों में इनका निर्यात करने लगे। जगह-जगह पुस्तक मेलों का आयोजन होने लगा, लेकिन पुस्तकों की बढ़ती हुई माँग की पूर्ति होना हस्तलिखित पांडुलिपियों से सम्भव नहीं था। इनके लाने-ले-जाने व रखरखाव में अनेक मुश्किलें थीं। अत: वुडब्लॉक प्रिंटिंग लोकप्रिय होने लगी। पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में यूरोप में कपड़ा छापने, ताश के पत्ते छापने एवं संक्षिप्त टिप्पणियों के साथ धार्मिक चित्र छापने के लिए वुडब्लॉक मुद्रण का व्यापक रूप से प्रयोग होने लगा। **(iv) योहान गुटेनबर्ग एवं प्रिंटिंग प्रेस**—यूरोप में अधिक मात्रा में पुस्तकें छापने के लिए इससे भी तेज और सस्ती मुद्रण तकनीक की आवश्यकता थी। ऐसी छपाई करना एक नई तकनीक के आविष्कार से ही सम्भव था। स्ट्रॉसबर्ग के योहान गुटेनबर्ग ने 1448 ई. में अपने ज्ञान और अनुभव का प्रयोग करके जैतून प्रेस का निर्माण किया जो प्रिंटिंग प्रेस का मॉडल बना। गुटेनबर्ग ने अपनी प्रेस में सर्वप्रथम बाइबिल छापी। बाइबिल की 180 प्रतियों के निर्माण में उसे तीन वर्ष लगे। यह उस समय के हिसाब से एक तीव्र उपलब्धि थी।

(v) छापेखानों की संख्या में वृद्धि—1450 से 1550 ई. के मध्य यूरोप के अधिकांश देशों में छापेखानों की स्थापना की जा चुकी थी। जर्मनी के प्रिंटर या मुद्रक दूसरे देशों में जाकर नए छापेखाने खुलवाया करते थे। छापेखानों की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ पुस्तक उत्पादन में भी तीव्र गति से वृद्धि हुई और यह वृद्धि आगामी वर्षों में होती ही चली गयी। हाथ की छपाई के स्थान पर यांत्रिक मुद्रण के आने पर ही मुद्रण क्रान्ति सम्भव हुई।

प्रश्न 3. मुद्रण क्रांति में योहान गुटेन्बर्ग के योगदान की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—योहान गुटेनबर्ग स्ट्रॉसबर्ग का निवासी था। इनके पिता एक व्यापारी थे। गुटेनबर्ग खेती की एक बड़ी रियासत में पलकर बड़ा हुआ। वह बचपन से ही जैतून से तेल निकालने की मशीन को देखा करता था। आगे चलकर गुटेनबर्ग ने पत्थर पर पॉलिश करने की कला सीखी तथा अंत में उसने शीशे को मनवांछित आकृतियों में गढ़ने की कला को सीखा।

मुद्रण क्रान्ति में गुटेनबर्ग का योगदान—(i) योहान गुटेन्बर्ग ने अपने ज्ञान और अनुभव का उपयोग करके नवीन आविष्कार किया, जैतून प्रेस ही प्रिंटिंग प्रेस का मॉडल या आदर्श बना और साँचे का उपयोग अक्षरों की धातुई आकृतियों को गढ़ने के लिए किया।

(ii) गुटेनबर्ग ने 1448 ई. में अपने इस यंत्र को पूर्ण कर लिया था। इस यंत्र से उसने सर्वप्रथम बाइबिल का प्रकाशन किया। बाइबिल की लगभग 180 प्रतियाँ बनाने में उसे तीन वर्ष लगे जो उस समय के हिसाब से बहुत अधिक तीव्र कार्य था। गुटेनबर्ग प्रेस एक घंटे में एक तरफा 250 पन्ने छाप सकती थी।

प्रभाव—(i) गुटेनबर्ग प्रेस द्वारा पुस्तकें छापने की यह नई तकनीक हाथ से पुस्तकें छापने की तकनीक की जगह नहीं ले पाई।

(ii) 1450 से 1550 ई. के मध्य यूरोप के अधिकांश देशों में छापेखाने लग गये थे।

(iii) जर्मनी के प्रिंटर या मुद्रक दूसरे देशों में जाकर नए छापेखाने खुलवाने लगे। छपाईखानों की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ पुस्तकों के उत्पादन में तीव्र गति से वृद्धि हुई।

(iv) 15वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में यूरोप के बाजारों में 2 करोड़ मुद्रित पुस्तकें आयीं। यह संख्या सोलहवीं शताब्दी में बढ़कर 20 करोड़ तक पहुँच गयी।

(v) हाथ की छपाई के स्थान पर यांत्रिक मुद्रण के आने पर ही मुद्रण क्रान्ति सम्भव हुई।

प्रश्न 4. मुद्रण क्रांति और इसके प्रभाव का वर्णन कीजिए।

उत्तर—**मुद्रण क्रान्ति से अभिप्राय**—छापेखाने के आविष्कार से बड़े पैमाने पर पुस्तकों का छपना प्रारम्भ हो गया। छपाई से पुस्तकों की कीमतें गिरीं। पुस्तकों के उत्पादन में लगने वाले समय व श्रम में कमी आयी। बाजार में पुस्तकों की उपलब्धता में तीव्र गति से वृद्धि हुई तथा पाठक वर्ग भी बढ़ गया। इसे ही मुद्रण क्रांति कहा जाता है। छापेखाने का आविष्कार केवल तकनीकी दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का सूचक नहीं था। पुस्तक उत्पादन के नये तरीकों ने लोगों की जिन्दगी बदल दी। इसके परिणामस्वरूप सूचना और ज्ञान से संस्था और सत्ता से उनका सम्बन्ध ही परिवर्तित हो गया। इससे लोक-चेतना बदली और वस्तुओं को देखने का दृष्टिकोण भी परिवर्तित हो गया।

मुद्रण क्रान्ति का प्रभाव—मुद्रण क्रान्ति के प्रभाव को अग्रलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट कर सकते हैं—

(i) नये पाठक वर्ग का उदय—छापेखाने के आगमन से एक नये पाठक वर्ग का उदय हुआ। छापेखाने के आविष्कार के कारण बड़े पैमाने पर पुस्तकों का छापना सम्भव हो गया। बाजार में पुस्तकों की भरमार हो गयी तथा पाठक वर्ग की संख्या बढ़ती गई। पुस्तकों तक पहुँचना आम जनता के लिए आसान हो गया था। पढ़ने की एक नई संस्कृति विकसित हुई। अब तक सामान्य लोग मौखिक संसार में जीते थे। वे धार्मिक पुस्तकों का वाचन सुनते थे। गाथा-गीत उनको पढ़कर सुनाये जाते थे। ज्ञान का मौखिक लेन-देन भी होता था। अब पुस्तकें समाज के अधिकाधिक लोगों तक पहुँच सकती थीं। यदि पहले की जनता श्रोता थी तो कह सकते हैं कि अब पाठक जनता अस्तित्व में आ गई थी।

(ii) विचारों का व्यापक प्रचार-प्रसार—छापेखाने के आविष्कार से लोगों के विचारों का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ तथा विभिन्न विषयों पर तर्क-वितर्क के द्वार खुले, अब लोग विभिन्न विषयों पर आसानी से वाद-विवाद कर सकते थे। स्थानीय सत्ता के विचारों से असहमति व्यक्त करने वाले लोग भी अपने विचारों को छापकर उन्हें फैला सकते थे। छपे हुए सन्देशों के माध्यम से वे लोगों को अलग ढंग से सोचने के लिए तैयार कर सकते थे अथवा कोई कार्यवाही करने के लिए भी प्रेरित कर सकते थे। मार्टिन लूथर ने मुद्रण क्रान्ति की प्रशंसा की तथा कहा कि "मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन और सबसे बड़ा तोहफा है।" कई इतिहासकारों के अनुसार मुद्रण ने एक नया बौद्धिक माहौल बनाया है तथा इससे ध र्म-सुधार आन्दोलन के नये विचारों के प्रसार में सहायता प्राप्त हुई।

(iii) धर्म की अलग-अलग व्याख्याओं से परिचित होना—छपे हुए लोकप्रिय साहित्य के बल पर ही कम शिक्षित लोग धर्म की अलग-अलग व्याख्याओं से परिचित हुए। कई लोगों ने अपने-अपने क्षेत्रों में उपलब्ध किताबों को पढ़कर बाइबिल के नये अर्थ लगाने शुरू कर दिये तथा उन्होंने ईश्वर व सृष्टि के बारे में नये-नये विचार बनाये।

प्रश्न 5. मुद्रण ने फ्रांसीसी क्रांति को किस प्रकार आधार प्रदान करने का कार्य किया था?

उत्तर—कई इतिहासकारों का यह मानना है कि मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रान्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित कीं। इस कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

(i) ज्ञानोदय के चिन्तकों के विचारों का प्रसार—मुद्रण संस्कृति के कारण फ्रांसीसी जनता में ज्ञानोदय के चिन्तकों के विचारों का प्रसार हुआ। उन्होंने अपने लेखन में परम्पराओं, अन्धविश्वासों एवं निरंकुशवाद की भरपूर आलोचना की। उन्होंने रूढ़िवादी रीतिरिवाजों के स्थान पर विवेक के शासन पर बल दिया। उन्होंने माँग की कि प्रत्येक बात को तर्क एवं विवेक की कसौटी पर परखा जाये। उन्होंने चर्च की धार्मिक सत्ता एवं राज्य की निरंकुश सत्ता पर प्रहार किया तथा परम्परा पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को कमजोर कर दिया।

रूसो व वाल्टेयर जैसे चिन्तकों के विचारों से प्रभावित होकर पाठक एक नवीन आलोचनात्मक व तार्किक दृष्टिकोण से सम्पूर्ण विश्व को देखने लगे थे।

(ii) वाद-विवाद संवाद की एक नयी संस्कृति का जन्म—मुद्रण ने वाद-विवाद संवाद की एक नई संस्कृति को जन्म दिया। समस्त पुराने मूल्य, संस्थाओं एवं नियमों पर आम जनता के मध्य चर्चा शुरू हो गयी तथा उनके पुनर्मूल्यांकन का सिलसिला प्रारम्भ हो गया। मुद्रण संस्कृति के माध्यम से सामाजिक क्रान्ति के नये विचारों का जन्म भी हुआ।

(iii) राजशाही और उसकी नैतिकता का मजाक उड़ाने वाले साहित्य का प्रकाशन—1780 के दशक तक राजशाही और उसकी नैतिकता का मजाक उड़ाने वाले साहित्य का पर्याप्त प्रकाशन हो चुका था। इस साहित्य में पारम्परिक, सामाजिक व्यवस्था पर भी प्रश्न उठाये गये। तत्कालीन समय के व्यंग्य चित्रों व कार्टूनों में यह संदेश छिपा हुआ था कि राजशाही विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत कर रही है वहीं दूसरी ओर आम जनता घोर कठिनाइयों में फँसी हुई है। राजशाही के विरुद्ध सन्देशों से भरे हुए इन साहित्यों को गोपनीय तरीकों से लोगों तक पहुँचाया गया। इससे जनता अवगत हुई तथा उनमें राजशाही के विरुद्ध विद्रोह की भावना विकसित हुई।

प्रश्न 6. भारत में मुद्रण के इतिहास का वर्णन कीजिए।

उत्तर—जोहान्स गुटेनबर्ग ने 1454-55 ई. में जर्मनी के मेज में मुद्रण यंत्र का आविष्कार किया, जिससे आधुनिक मुद्रण कला का जन्म हुआ। इसके सौ वर्ष बाद, 1556 ई. में गोवा में ईसाई मिशनरियों के प्रयासों से मुद्रण कला विकसित हुई, जो स्थानीय भाषाओं में धार्मिक ग्रंथों का प्रकाशन करना चाहते थे।

भारत में मुद्रण का इतिहास 16वीं सदी के मध्य में पुर्तगालियों द्वारा गोवा में प्रिंटिंग प्रेस लाने से शुरू हुआ, जिसका उपयोग धार्मिक ग्रंथों के लिए हुआ और बाद में 1770 के दशक में 'बंगाल गजट' के साथ अंग्रेजी प्रेस और समाचार पत्रों का उदय हुआ, जिसने शिक्षा, साहित्य और राजनीतिक आंदोलनों को बढ़ावा दिया तथा भारतीय भाषाओं में प्रकाशनों के साथ एक सार्वजनिक क्षेत्र और आधुनिक नागरिक समाज के निर्माण महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

1. प्रारंभिक आगमन (16वीं सदी)—(i) **पुर्तगाली प्रभाव**—भारत में प्रिंटिंग प्रेस का पहला आगमन 16वीं सदी के मध्य पुर्तगाली मिशनरियों द्वारा हुआ, जिन्होंने गोवा में प्रेस स्थापित किया। (ii) **पहला उपयोग**—शुरुआत में इसका उपयोग लैटिन और पुर्तगाली में धार्मिक ग्रंथों को छापने के लिए किया गया। (iii) **भारतीय भाषाओं में शुरुआत**—1579 में कैथोलिक पादरियों ने कोचीन में तमिल में पहली किताब छापी; कोंकणी और मलयालम भी जल्द ही शामिल हो गए।

2. अंग्रेजी प्रेस और समाचार पत्रों का उदय (18वीं सदी)—(i) बंगाल गजट-1780 ई. में जेम्स ऑगस्टस हिकी ने 'बंगाल गजट' नामक पहला अंग्रेजी साप्ताहिक शुरू किया, जो औपनिवेशिक अधिकारियों की आलोचना करता था। (ii) **व्यापक प्रसार**—18वीं सदी के अंत तक, समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं की संख्या में काफी वृद्धि हुई।

3. भारतीय भाषाओं और जनता की भागीदारी (19वीं सदी)—(i) **भारतीयों का योगदान**—भीम जी पारेख जैसे भारतीयों ने 17वीं सदी में दीव में प्रेस शुरू किया और 1811 के आसपास भाप से चलने वाले रोटरी प्रेस जैसे विकास हुए। (ii) **सामाजिक राजनीतिक प्रभाव**—प्रिंटिंग प्रेस ने धार्मिक ग्रंथों को आम लोगों तक पहुँचाया, वाद-विवाद और सार्वजनिक बहस को बढ़ावा दिया और औपनिवेशिक नीतियों की आलोचना करने वाले साहित्य के

माध्यम से सामाजिक और राष्ट्रीय पहचान बनाने में मदद की।

4. आधुनिक युग में विकास—(i) **तकनीकी प्रगति**—19वीं सदी के अंत तक बिजली से चलने वाले प्रेस और लिथोटाइप मशीनों के आने से प्रकाशन तेज और सस्ता हो गया, जिससे सचित्र अखबारों का दौर शुरू हुआ। (ii) **सार्वजनिक क्षेत्र का निर्माण**—प्रिंट मीडिया ने एक 'सार्वजनिक क्षेत्र' बनाया, जहाँ तर्क और आलोचना के माध्यम से नागरिक समाज का विकास हुआ और इसने राष्ट्रवादी आंदोलनों को आकार दिया।

प्रश्न 7. मुद्रण का भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है? उल्लेख कीजिए।

उत्तर—भारत में विभिन्न समुदायों ने अपने धार्मिक संदेशों को जनता तक पहुँचाने के लिए मुद्रण का निम्नलिखित प्रकार से उपयोग किया—

(i) मुद्रण और मुस्लिम—उत्तर भारत में उलेमा मुस्लिम राजवंशों के पतन को लेकर चिंतित थे। उन्हें यह डर था कि कहीं औपनिवेशिक शासन धर्मान्तरण को बढ़ावा न दे अथवा मुस्लिम कानून को ही न बदल डाले। इससे निपटने के लिए उन्होंने सस्ती लिथोग्राफी प्रेस का उपयोग करते हुए धर्मग्रन्थों के फारसी व उर्दू अनुवाद छापे तथा धार्मिक अखबार व गुटकों का भी प्रकाशन किया। 1867 ई. में स्थापित देवबंद सेमिनरी ने मुस्लिम पाठकों को दैनिक जीवन जीने के तरीके एवं इस्लामी सिद्धान्तों का अर्थ समझाते हुए हजारों की संख्या में फतवे जारी किये। 19वीं सदी के दौरान कई इस्लामी सम्प्रदायों व सेमिनरी का जन्म हुआ, जिन्होंने धर्म को लेकर अपनी-अपनी व्याख्याएँ प्रस्तुत कीं। हर कोई अपने सम्प्रदाय का विस्तार करना चाहता था तथा दूसरे सम्प्रदायों के प्रभाव को कम कराना चाहता था।

(ii) मुद्रण तथा हिन्दू—हिन्दू समुदाय को भी छपाई से विशेष लाभ मिला, विशेषकर स्थानीय भाषाओं में धार्मिक शिक्षण को पर्याप्त बल मिला। तुलसीदास की 16वीं शताब्दी की पुस्तक 'रामचरितमानस' का प्रथम मुद्रित संस्करण 1810 ई. में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। 19वीं सदी के मध्य तक सस्ते लिथोग्राफी संस्करणों की उत्तर भारत के बाजारों में भरमार हो गयी। नवलकिशोर प्रेस (लखनऊ) एवं श्री वेंकटेश्वर प्रेस (बंबई) ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनेक धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन किया। छपी पुस्तकों को लाने-ले जाने में सुगमता होने के कारण आस्थावान व्यक्ति पुस्तकों को कहीं भी व किसी भी समय पढ़ सकते थे। इन्हें पढ़कर निरक्षर जनसमुदाय को भी सुनाया जा सकता था। धार्मिक पुस्तकें बड़ी संख्या में व्यापक जनसमुदाय तक पहुँच रही थीं जिसके चलते विभिन्न धर्मों के मध्य व उनके अन्दर वाद-विवाद और तर्क-वितर्क की नई स्थिति उत्पन्न हो रही थी।

❑❑

1 संसाधन एवं विकास

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

वैकल्पिक प्रश्न

1. (i) पंजाब में भूमि निम्नीकरण का निम्नलिखित में से मुख्य कारण क्या है?

(क) गहन खेती (ख) अधिक सिंचाई
(ग) वनोन्मूलन (घ) अति पशुचारण

(ii) निम्नलिखित में से किस प्रांत में सीढ़ीदार (सोपानी) खेती की जाती है?

(क) पंजाब (ख) उत्तर प्रदेश के मैदान
(ग) हरियाणा (घ) उत्तराखण्ड

(iii) इनमें से किस राज्य में काली मृदा मुख्य रूप से पाई जाती है?

(क) जम्मू और कश्मीर (ख) राजस्थान
(ग) महाराष्ट्र (घ) झारखण्ड

उत्तरमाला–(i) (ख), (ii) (घ), (iii) (ग)।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए :

(i) तीन राज्यों के नाम बताएँ जहाँ काली मृदा पाई जाती है। इस पर मुख्य रूप से कौन-सी फसल उगाई जाती है?

उत्तर–वे तीन राज्य निम्नलिखित हैं जहाँ काली मृदा पाई जाती है–

(i) महाराष्ट्र, (ii) मध्य प्रदेश (iii) छत्तीसगढ़। इस मृदा पर मुख्य रूप से कपास की फसल उगाई जाती है।

(ii) पूर्वी तट के नदी डेल्टाओं पर किस प्रकार की मृदा पाई जाती है? इस प्रकार की मृदा की तीन मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर–पूर्वी तट के नदी डेल्टाओं पर जलोढ़ मृदा पाई जाती है। इस प्रकार की मृदा (जलोढ़ मृदा) की तीन प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) यह मृदा बहुत अधिक उपजाऊ होती है। (2) इस मृदा में रेत, सिल्ट एवं मृत्तिका के विभिन्न अनुपात पाए जाते हैं। (3) ये मृदाएँ पोटाश, फास्फोरस एवं चूनायुक्त होती हैं।

(iii) पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा अपरदन की रोकथाम के लिए क्या कदम उठाने चाहिए ?

उत्तर–पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा अपरदन की रोकथाम के लिए निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए–

(i) अतिरिक्त ढाल वाली भूमि पर समोच्च रेखाओं के समान्तर जुताई की जानी चाहिए।

(ii) पहाड़ी क्षेत्रों में सीढ़ीदार खेत बनाकर कृषि की जानी चाहिए।

(iii) पहाड़ी ढालों पर वृक्षों को कतारों में लगाकर रक्षक मेखला का विकास किया जाना चाहिए।

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए :

(i) भारत में भूमि उपयोग प्रारूप का वर्णन करें। वर्ष 1960–61 से वन के अन्तर्गत क्षेत्र में महत्वपूर्ण वृद्धि नहीं हुई, इसका क्या कारण है?

उत्तर–भारत में भूमि उपयोग प्रारूप–भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किलोमीटर है लेकिन वर्तमान में इसके 93 प्रतिशत भूभाग के ही भूमि उपयोग आँकड़े उपलब्ध हैं। असम को छोड़कर बाकी पूर्वोत्तर राज्यों के भूमि उपयोग के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं है। जम्मू और कश्मीर में पाकिस्तान व चीन अधिकृत क्षेत्रों के भूमि उपयोग का सर्वेक्षण न होने के कारण इनके भी आँकड़े प्राप्त नहीं हैं।

उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत में भूमि उपयोग सन्तुलित नहीं है। वर्ष 2014–15 के आँकड़ों से स्पष्ट है कि भूमि का सर्वाधिक 45.5 प्रतिशत उपयोग शुद्ध बोए गए क्षेत्र के अन्तर्गत एवं सबसे कम उपयोग 1.0 प्रतिशत विविध वृक्षों, वृक्ष, फसलों एवं उपवनों के अन्तर्गत है। इसके अतिरिक्त वनों के अन्तर्गत 23.3 प्रतिशत क्षेत्र है। स्थायी चारागाहों के अन्तर्गत भी भूमि कम (3.3 प्रतिशत) है। हमारे देश में भूमि उपयोग का यह प्रारूप राष्ट्रीय, राज्य एवं स्थानीय स्तर पर भी सन्तुलित रूप में नहीं है। अत: भारत जैसे अधिक जनसंख्या एवं सीमित भू-संसाधन वाले देश में नियोजित व सन्तुलित भूमि उपयोग प्रारूप स्थापित करने की अति आवश्यकता है।

वर्ष 1960–61 से वन के अन्तर्गत क्षेत्र में महत्वपूर्ण वृद्धि नहीं होने के कारण–वर्ष 1960-61 से वनों के अन्तर्गत क्षेत्र में महत्वपूर्ण वृद्धि न होने का मुख्य कारण वनों की आर्थिक लाभ के लिए कटाई करना है। विभिन्न उद्योगों के विकास, कृषि कार्य एवं आवास के लिए भूमि निर्माण के उद्देश्य से ऐसा किया गया। इससे कई तरह की समस्याएँ उत्पन्न हुईं। फलस्वरूप सरकार द्वारा वनों की सुरक्षा व संरक्षण सम्बन्धी अनेक नीतियाँ बनाई गईं। इससे वनों का घटता हुआ ग्राफ थम गया। वहीं दूसरी तरफ स्थानीय स्तर पर वनों की कटाई होती रही है। यही कारण है कि वर्ष 1960–61 से वन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण वृद्धि नहीं हुई।

(ii) प्रौद्योगिक और आर्थिक विकास के कारण संसाधनों का अधिक उपभोग कैसे हुआ है?

उत्तर—प्रौद्योगिकी विकास हमें आधुनिक औजार एवं मशीनें प्रदान करता है जिससे हमारे उत्पादन में वृद्धि होती है, फलस्वरूप संसाधनों का अधिक उपभोग होता है। प्रौद्योगिकी विकास में आर्थिक विकास भी होता है, जब किसी देश की आर्थिक स्थिति में सुधार आता है तो लोगों की आवश्यकताएँ भी बढ़ती हैं जिसके फलस्वरूप संसाधनों का अधिकाधिक उपयोग होता है। वहीं आर्थिक विकास आधुनिकतम प्रौद्योगिकी के विकास हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। यह हमारे आसपास की विभिन्न वस्तुओं को संसाधन में परिवर्तित करने में मदद करता है। अत: नये संसाधनों का दोहन प्रारम्भ हो जाता है।

आज प्रौद्योगिक एवं आर्थिक विकास के कारण ही संसाधनों का अधिक उपभोग हुआ है। उदाहरण के लिए; राजस्थान खनिज एवं शक्ति संसाधनों की दृष्टि से एक सम्पन्न राज्य है परन्तु पहले उचित प्रौद्योगिकी के विकास के अभाव में इन संसाधनों का पर्याप्त उपयोग नहीं हो पाया था। आज उचित प्रौद्योगिकी के विकास से विभिन्न खनिज व शक्ति संसाधनों का पर्याप्त दोहन किया जा रहा है, जिससे विकास तीव्र गति से हो रहा है।

अत: यह कहना उचित है कि प्रौद्योगिकी आर्थिक विकास को गति प्रदान करती है तथा इन दोनों द्वारा संसाधनों का अधिक मात्रा में उपयोग होने लगता है।

परियोजना/क्रियाकलाप

1. अपने आसपास के क्षेत्रों में संसाधनों के उपभोग और संरक्षण को दर्शाते हुए एक परियोजना तैयार करें।

उत्तर—विद्यार्थी इस परियोजना कार्य को स्वयं करें।

2. आपके विद्यालय में उपयोग किए जा रहे संसाधनों के संरक्षण विषय पर अपनी कक्षा में एक चर्चा आयोजित करें।

उत्तर—विद्यार्थी स्वयं चर्चा का आयोजन करें।

3. वर्ग पहेली को सुलझाएँ; ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज छिपे उत्तरों को ढूँढ़ें।

नोट—पहेली के उत्तर अंग्रेजी के शब्दों में हैं।

S	F	G	S	F	O	B	R	O	M	S	U	A	P	J
Q	G	A	F	F	O	R	E	S	T	A	T	I	O	N
P	N	R	E	C	P	R	S	L	D	M	I	L	N	F
S	N	A	T	Q	X	U	O	V	A	I	O	L	A	L
O	D	E	I	D	R	J	U	J	L	D	B	N	B	D
T	G	H	M	I	N	E	R	A	L	S	A	X	M	W
B	V	J	K	M	E	D	C	R	U	P	F	M	H	R
L	A	T	E	R	I	T	E	M	V	A	Z	R	V	L
A	B	Z	O	E	N	M	F	T	I	S	D	L	R	C
C	G	N	N	S	Z	I	O	P	A	X	T	Y	J	H
K	J	G	K	D	T	D	C	S	L	S	E	G	E	W

(i) भूमि, जल, वनस्पति और खनिज के रूप में प्राकृतिक सम्पदा
(ii) अनवीकरण योग्य संसाधन का एक प्रकार
(iii) उच्च नमी रखाव क्षमता वाली मृदा (iv) मानसून जलवायु में अत्यधिक निक्षालित मृदाएँ
(v) मृदा अपरदन की रोकथाम के लिए वृहत स्तर पर पेड़ लगाना
(vi) भारत के विशाल मैदान इन मृदाओं से बने हैं।

उत्तर—(i) Resource (ii) Minerals (iii) Black (iv) Laterite (v) Afforestation (vi) Alluvial.

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. संसाधन से क्या तात्पर्य है? इनके वर्गीकरण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— हमारे पर्यावरण में उपलब्ध वे समस्त वस्तुएँ जो हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रयोग की जाती हैं और जिनको बनाने के लिए तकनीकी ज्ञान उपलब्ध है, जो आर्थिक रूप से संभाव्य एवं सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य हैं, संसाधन कहलाती हैं। संसाधन का अर्थ केवल प्राकृतिक तत्व ही नहीं है अपितु मानवीय या सांस्कृतिक तत्व भी महत्वपूर्ण संसाधन होते हैं। इस प्रकार कोई भी वस्तु जो मानव के लिए उपयोगी हो अथवा उपयोगिता में सहायक हो, संसाधन कहलाती है जैसे—खनिज तेल, कोयला, जल, खनिज, प्राकृतिक वनस्पति, जीव-जन्तु आदि।

संसाधनों के वर्गीकरण के विभिन्न आधार—

(i) उत्पत्ति के आधार पर—जैविक व अजैविक।

(ii) समाप्यता के आधार पर—नवीकरण योग्य और अनवीकरण योग्य

(iii) स्वामित्व के आधार पर—व्यक्तिगत, सामुदायिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय।

(iv) विकास की अवस्था के आधार पर—संभावी, विकसित, भण्डार एवं संचित कोष।

प्रश्न 2. सतत् विकास क्या है? भारत में संसाधन नियोजन की प्रक्रिया का वर्णन करें।

उत्तर—सतत् विकास का अर्थ—सतत् विकास अर्थ है ऐसा विकास जो भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किए बिना, वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करता है, जिसमें आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण—इन तीनों स्तम्भों को संतुलित किया जाता है, ताकि संसाधनों का बुद्धिमानी से उपयोग हो और सभी के लिए एक बेहतर और न्यायसंगत भविष्य सुनिश्चित हो सके।

संसाधन नियोजन—संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए नियोजन एक सर्वमान्य रणनीति है। भारत जैसे विविधतापूर्ण संसाधनों वाले देश में यह बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे देश में राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तर पर संसाधन नियोजन की आवश्यकता है। अत: संसाधनों के उपयुक्त उपयोग के लिए अपनाई जाने वाली तकनीक संसाधन नियोजन कहलाती है।

संसाधन नियोजन की प्रक्रिया/सोपान—राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तर पर संसाधन नियोजन करना आसान कार्य नहीं है, यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें निम्नलिखित सोपान हैं—

(i) देश के विभिन्न प्रदेशों में संसाधनों को पहचानकर उनकी तालिका बनाना, इस कार्य में क्षेत्रीय सर्वेक्षण, मानचित्र बनाना तथा संसाधनों का गुणात्मक व मात्रात्मक अनुमान लगाना एवं उनका मापन करना है। (ii) संसाधन विकास योजनाएँ लागू करने के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी, कौशल एवं संस्थागत नियोजन ढाँचा तैयार करना। (iii) संसाधन विकास योजनाओं तथा राष्ट्रीय विकास योजनाओं में समन्वय स्थापित करना। हमारे देश में स्वतन्त्रता के पश्चात् से ही संसाधन नियोजन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रथम पंचवर्षीय योजना से ही प्रयास किये गये हैं।

प्रश्न 3. भू-संसाधन क्या है? भारतीय भू-उपयोग संवर्गों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भू-संसाधन का अर्थ—भू-संसाधन वे सभी प्राकृतिक संसाधन हैं जो पृथ्वी की सतह पर पाए जाते हैं और जिनका उपयोग मानव जीवन और आर्थिक गतिविधियों (जैसे-कृषि, उद्योग, परिवहन) के लिए होता है, जिनमें भूमि, मिट्टी, खनिज, जल, वनस्पति और वन्य जीवन शामिल हैं; यह एक महत्वपूर्ण और सीमित संसाधन है जिसका सावधानीपूर्वक प्रबंधन जरूरी है।

भू-उपयोग प्रारूप—भू-उपयोग प्रारूप से तात्पर्य भूमि का विभिन्न उद्देश्यों के लिए उपयोग की रूपरेखा है, जैसे—कृषि, पशुचारण, खनन, सड़क, रेल, भवन आदि का निर्माण।

भारत में भू-उपयोग को निर्धारित करने वाले कारक निम्न हैं—

(i) भू-आकृति—ऊपरी मृदा की परत वाली चट्टानी भूमि, तीव्र ढाल वाली भूमि, दलदली भूमि आदि कृषि के लिए उपयुक्त नहीं होती। सिंचित, उपजाऊ समतल भूमि का ही उपयोग विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिए किया जाता है।

(ii) जलवायु—भारत का दोनों कटिबन्धों में विस्तार है। यहाँ उष्ण व शीतोष्ण, दोनों प्रकार की जलवायु पाये जाने के कारण वर्षभर फसलें उगायी जाती हैं। इस तरह की जलवायु ने हमारे देश की भूमि को उच्च कृषि उत्पादक एवं प्राकृतिक वनस्पति के विकास की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण बना दिया है।

(iii) मृदा के प्रकार—भारत में विभिन्न प्रकार की मृदाएँ पाये जाने के कारण फसलों में भी विविधता दिखाई देती है।

(iv) मानवीय कारक—मानवीय कारक, जैसे—जनसंख्या घनत्व, तकनीकी क्षमता, सांस्कृतिक परम्परा आदि ऐसे अन्य कारक हैं जो भूमि के उपयोग को निर्धारित करते हैं।

प्रश्न 4. भूमि क्षरण क्या है? इसके कारणों व संरक्षण के उपायों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—मृदा-क्षरण (मृदा-अपरदन)—प्राकृतिक कारकों द्वारा मृदा का कटाव एवं अपरदन कारकों द्वारा उसका स्थानान्तरण मृदा-क्षरण या मृदा-अपरदन कहलाता है। सामान्यतः मृदा के बनने एवं अपरदन की क्रियाएँ साथ-साथ चलती रहती हैं तथा दोनों में संतुलन बना रहता है। प्राकृतिक तथा मानवीय कारकों द्वारा यह सन्तुलन बिगड़ जाता है।

मृदा क्षरण/मृदा-अपरदन के प्रकार—मृदा-अपरदन में भाग लेने वाले कारकों व स्थिति के आधार पर मृदा क्षरण/ मृदा-अपरदन को निम्नलिखित दो भागों में बाँटा जा सकता है—

1. जलीय-अपरदन 2. पवन-अपरदन।

1. जलीय अपरदन—जल के विभिन्न रूपों, जैसे—नदियों, झीलों, हिमनदी, झरनों आदि के द्वारा जब मिट्टी का क्षरण होता है तो उसे जलीय-अपरदन कहते हैं। इनमें नदियाँ मृदा अपरदन की प्रमुख कारक हैं। नदियाँ मृदा-अपरदन इन दो रूपों में करती हैं—

(i) चादर अपरदन—इसे तलीय अथवा परत क्षरण भी कहते हैं। तीव्र गति से प्रवाहित जल द्वारा मिट्टी की ऊपरी परत को काटकर बहा ले जाया जाता है, इसे चादर अपरदन कहते हैं। कई बार जल विस्तृत क्षेत्र को ढके हुए ढाल के साथ नीचे की ओर बहता है। ऐसी स्थिति में इस क्षेत्र की ऊपरी परत घुलकर जल के साथ बह जाती है।

(ii) अवनलिका अपरदन—जब जल बहुत अधिक तीव्र गति से बहता हुआ लम्बवत् अपरदन द्वारा मिट्टी को कुछ गहराई तक काटकर बहा ले जाता है और छोटी-छोटी अवनलिकाओं का निर्माण हो जाता है तो उसे अवनलिका अपरदन कहा जाता है। ऐसी भूमि कृषि योग्य नहीं रह जाती है और उसे उत्खात भूमि के नाम से जाना जाता है। चम्बल बेसिन क्षेत्र में ऐसी भूमि को खड्ड भूमि कहा जाता है।

2. पवन अपरदन—पवन मृदा अपरदन का दूसरा महत्वपूर्ण कारक है। पवन द्वारा अपरदन मुख्यतः मरुस्थलीय एवं शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में होता है। इन भागों में जब पवन तीव्र गति से चलती है तो वह एक स्थान की मिट्टी को उड़ाकर दूसरे स्थान तक पहुँचा देती है। इस प्रकार पवन द्वारा मैदान अथवा ढालू क्षेत्र से मृदा को उड़ा ले जाने की प्रक्रिया को पवन अपरदन कहा जाता है।

प्रश्न 5. भारतीय मृदाओं के वर्गीकरण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भारत जैसे विशाल देश में कई प्रकार की मृदाएँ पाई जाती हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1. जलोढ़ मृदा—भारत के विशाल उत्तरी मैदानों में नदियों द्वारा पर्वतीय प्रदेशों से बहाकर लायी गयी जीवाश्मों से युक्त उर्वर मिट्टी मिलती है जिसे काँप अथवा कछारी मिट्टी भी कहते हैं। यह मिट्टी हिमालय पर्वत से निकलने वाली तीन प्रमुख नदियों—सतलज, गंगा, ब्रह्मपुत्र तथा इनकी

सहायक नदियों द्वारा बहाकर लाई एवं अवसाद के रूप में जमा की गई है। जलोढ़ मिट्टी पूर्व-तटीय मैदानों विशेषकर महानदी, गोदावरी, कृष्णा व कावेरी नदियों के डेल्टाई प्रदशों में भी मिलती है। जिन क्षेत्रों में बाढ़ का जल नहीं पहुँच पाता है वहाँ पुरातन जलोढ़ मिट्टी पायी जाती है जिसे 'बांगर' कहा जाता है। वास्तव में यह मिट्टी भी नदियों द्वारा बहाकर लायी गयी प्राचीन काँप मिट्टी ही है। इसके साथ ही जिन क्षेत्रों में नदियों ने नवीन काँप मिट्टी का जमाव किया है, उसे नवीन जलोढ़ या 'खादर' के नाम से जाना जाता है। अधिक उपजाऊ होने के कारण जलोढ़ मृदा वाले क्षेत्रों में गहन कृषि की जाती है तथा यहाँ जनसंख्या का घनत्व भी अधिक मिलता है।

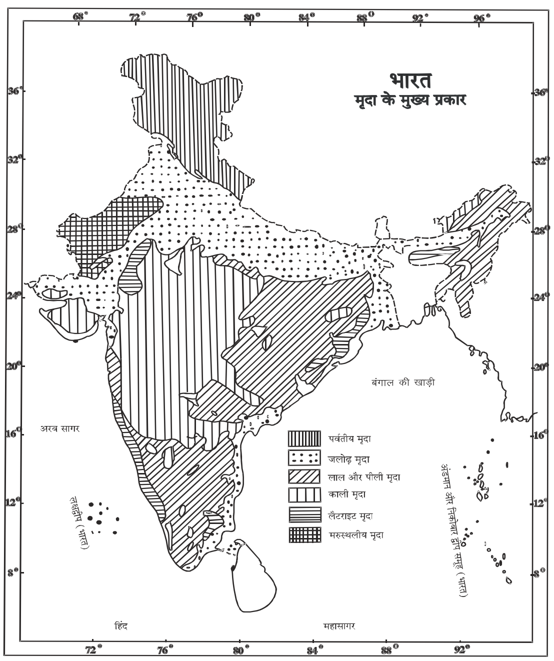

चित्र : भारत में प्रमुख मृदाओं का वितरण

2. काली या रेगर मृदा—इस मृदा को रेगर मृदा के नाम से भी जाना जाता है। इस मिट्टी का निर्माण ज्वालामुखी क्रिया द्वारा लावा के जमने एवं फिर उसके विखण्डन के फलस्वरूप हुआ है। इस मिट्टी में कपास की खेती अधिक होती है इसलिए इसे काली कपास मृदा भी कहा जाता है। इस मिट्टी में नमी को धारण करने की क्षमता अधिक होती है। इसमें लोहांश, कैल्शियम कार्बोनेट, मैग्नीशियम, पोटाश व चूना आदि तत्वों की मात्रा अधिक होती है। इस प्रकार की मृदा दक्कन पठारी क्षेत्र के उत्तरी-पश्चिमी भागों, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, मालवा, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठारी क्षेत्रों में पाई जाती है।

3. लाल व पीली मृदा—इस प्रकार की मृदा का विस्तार ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्य गंगा मैदान के दक्षिणी छोर एवं पश्चिमी घाट की पहाड़ियों व दक्कन पठार के पूर्वी व दक्षिणी हिस्सों में पाया जाता है। इन मृदाओं का लाल रंग रवेदार, आग्नेय एवं रूपान्तरित चट्टानों में लौह धातु के प्रसार के कारण तथा पीला रंग जलयोजन के कारण होता है।

4. लेटराइट मृदा—इस प्रकार की मृदा उच्च तापमान एवं अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में विकसित होती है। इस मृदा में ह्यूमस की मात्रा कम पायी जाती है। भरत में इस मृदा का विस्तार महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट क्षेत्रों, ओडिशा, पश्चिम बंगाल के कुछ भागों, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, केरल एवं उत्तरी-पूर्वी राज्यों में मिलता है। इस मृदा में अधिक मात्रा में खाद व रासायनिक उर्वरक डालकर ही खेती की जा सकती है।

5. मरुस्थलीय मृदा—इस मृदा का रंग लाल व भूरा होता है। यह मृदा रेतीली व लवणीय होती है। यह मृदा शुष्क जलवायविक दशाओं में पायी जाती है। शुष्क जलवायु और उच्च तापमान के कारण जल वाष्पन की दर अधिक होती है। इस मृदा में ह्यूमस व नमी की मात्रा कम होती है। राजस्थान व गुजरात राज्य में इस मृदा का विस्तार पाया जाता है। इस मृदा को सिंचित करके कृषि योग्य बनाया जा सकता है।

6. वन मृदा—इस प्रकार की मृदा का विस्तार पर्वतीय क्षेत्रों में मिलता है। नदी घाटियों में ये मृदाएँ दोमट व सिल्टदार होती हैं परन्तु ऊपरी ढालों पर इनका गठन मोटे कणों द्वारा होता है। हिमाच्छादित क्षेत्रों में इस मृदा की प्रकृति अम्लीय होती है तथा इसमें ह्यूमस की मात्रा भी नहीं होती है। नदी-घाटियों के निचले भागों में विशेषकर नदी सोपानों एवं जलोढ़ परतों आदि में यह मृदा बहुत अधिक उपजाऊ होती है।

प्रश्न 6. मृदा अपरदन क्या है? इसके प्रमुख कारणों व उपायों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—मृदा अपरदन के कारण—मृदा अपदरन के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—(i) कृषि के गलत तरीकों से मृदा अपरदन होता है। गलत ढंग से हल चलाने जैसे ढाल पर ऊपर से नीचे हल चलाने से वाहिकाएँ बन जाती हैं, जिसके अन्दर से बहता पानी आसानी से मृदा का कटाव करता है। (ii) शुष्क व बलुई क्षेत्रों में तीव्र हवा मृदा अपरदन का प्रमुख कारण है। खुली तथा ढीली बलुई मृदा की ऊपरी परत को पवन आसानी से उड़ा ले जाती है। (iii) पेड़ों की अविवेकपूर्ण तरीके से कटाई से मृदा भी शीघ्र अपरदित होना प्रारम्भ हो जाती है। (iv) वनोन्मूलन के कारण बार-बार बाढ़ें आती हैं जो मृदा को हानि पहुँचाती हैं। (v) खनन एवं निर्माण-कार्य भी मृदा को अपरदित करने में सहायता प्रदान करते हैं।

मृदा संरक्षण के उपाय—मिट्टी एक आधारभूत प्राकृतिक संसाधन है। यह धरातल पर निवास करने वाले मानव व जीव-जन्तुओं के जीवन का आधार है। आज मिट्टी का अवशोषण विभिन्न तरीकों से हुआ है इसलिए बहुत-से क्षेत्रों में मिट्टियाँ नष्ट हो गयी हैं और कुछ नष्टप्राय हैं। मिट्टी एक ऐसा संसाधन है जो नव्यकरणीय है, इसे बचाया जा सकता है। इसे सतत् उपयोग में लाया जा सकता है और

इसमें गुण वृद्धि की जा सकती है। अतएव मृदा संरक्षण आवश्यक है। मृदा संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं—
(i) समोच्च रेखीय जुताई—ढाल वाली कृषि भूमि पर समोच्च रेखाओं के समानांतर हल चलाने से ढाल के साथ जल बहाव की गति घटती है। इसे समोच्च रेखीय जुताई कहा जाता है। यह मृदा संरक्षण का प्रभावी उपाय है।
(ii) सोपानी कृषि—इसे सीढ़ीदार कृषि भी कहते हैं। इस प्रकार की कृषि में पहाड़ी ढलानों को काटकर कई चौड़ी सीढ़ियाँ बना दी जाती हैं। ये सीढ़ियाँ मृदा अपरदन को रोकती हैं। पश्चिमी एवं मध्य हिमालय क्षेत्र में इस प्रकार की कृषि बहुत अधिक की जाती है।
(iii) पट्टी कृषि—इस प्रकार की कृषि में बड़े-बड़े खेतों को पट्टियों में बाँट दिया जाता है। फसलों के बीच में घास की पट्टियाँ उगायी जाती हैं। ये पवनों द्वारा जनित बल को कमजोर करती हैं।
(iv) रक्षक मेखला—पेड़ों को कतारों में लगाकर रक्षक मेखला बनाना भी पवनों की गति को कम करता है। इन रक्षक पट्टियों का पश्चिमी भारत में रेत के टीलों के स्थायीकरण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
इनके अतिरिक्त अनियन्त्रित पशुचारण व स्थानान्तरित कृषि पर प्रतिबन्ध, फसल-चक्र, पड़त-कृषि, बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों का प्रबन्धन, जल-प्रबन्धन, बहु फसली कृषि, नये वन क्षेत्रों का विकास एवं उजड़े वनों का पुनः रोपण, अवनलिका नियन्त्रण एवं प्रबन्धन द्वारा भी मृदा-संरक्षण किया जा सकता है।

❑❑

2 वन एवं वन्य जीव संसाधन

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. बहुवैकल्पिक प्रश्न

(i) इनमें से कौन-सा संरक्षण तरीका समुदायों की सीधी भागीदारी नहीं करता?
(क) संयुक्त वन प्रबन्धन
(ख) चिपको आन्दोलन
(ग) बीज बचाओ आन्दोलन
(घ) वन्य जीव पशुविहार (Santuary) का परिसीमन
उत्तर—(i) घ।

2. निम्नलिखित का मेल करें—
1. **आरक्षित वन**—सरकार, व्यक्तियों के निजी और समुदायों के अधीन वन और बंजर भूमि।
2. **रक्षित वन**—वन और वन्य जीव संसाधन संरक्षण की दृष्टि से सर्वाधिक मूल्यवान वन।
3. **अवर्गीकृत वन**—वन भूमि जो और अधिक क्षरण से बचाई जाती है।
उत्तर—1. **आरक्षित वन**—वन और वन्य-जीव संसाधन संरक्षण की दृष्टि से सर्वाधिक मूल्यवान वन।
2. **रक्षित वन**—वन भूमि जो और अधिक क्षरण से बचाई जाती है।
3. **अवर्गीकृत वन**—सरकार, व्यक्तियों के निजी और समुदायों के अधीन वन और बंजर भूमि।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए—
(i) जैव-विविधता क्या है? यह मानव जीवन के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण है?
उत्तर—पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के प्राणिजात एवं वनस्पतिजात का पाया जाना जैव-विविधता कहलाता है। जैव-विविधता वनस्पति व प्राणियों में पाए जाने वाले जातीय विभेद को प्रकट करती है।
जैव-विविधता मानव जीवन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि जैव विविधता के कारण मानव को अनेक प्रकार की आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त होती हैं, जिससे पृथ्वी पर उसका जीवन सम्भव है।
(ii) विस्तारपूर्वक बताएँ कि मानव क्रियाएँ किस प्रकार प्राकृतिक वनस्पतिजात और प्राणिजात के ह्रास की कारक हैं?
उत्तर—मानव ने अपनी विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वन एवं वन्य जीवन को बहुत अधिक नुकसान पहुँचाया है। भारत में वनों और वन्य-जीवों को सर्वाधिक हानि उपनिवेश काल में रेलवे लाइन, कृषि, व्यवसाय, वाणिज्य-वानिकी एवं खनन क्रियाओं में वृद्धि से हुई है। स्थानान्तरी (झूमिंग) कृषि से भी वन तथा वन्य-जीव नष्ट हुए हैं।
बड़ी-बड़ी विकास योजनाओं, खनन, वन्य-जीवों के आवासों का विनाश, आखेट, पर्यावरणीय प्रदूषण व विषाक्तीकरण तथा दावानल आदि ने भी जैव विविधता को कम किया है। अतः मानव अन्य सभी कारकों की अपेक्षा प्राकृतिक वनस्पतिजात एवं प्राणिजात के ह्रास व विनाश के लिए अपेक्षाकृत अधिक उत्तरदायी है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए—
(i) भारत में विभिन्न समुदायों ने किस प्रकार वनों तथा वन्य-जीव संरक्षण और रक्षण में योगदान किया है? विस्तारपूर्वक विवेचना करें।

उत्तर—भारत में विभिन्न समुदायों द्वारा वन, वन्य-जीव संरक्षण तथा वन रक्षण के लिए किए गए योगदान को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) राजस्थान के अलवर जिले के सरिस्का बाघ रिजर्व में स्थानीय गाँवों के लोग वन्य जीव रक्षण अधिनियम के अन्तर्गत वहाँ से खनन कार्य बन्द करवाने के लिए संघर्षरत हैं।

(ii) अलवर (राजस्थान) के 5 गाँवों के लोगों ने 1200 हेक्टेयर वन भूमि को भैरोंदेव डाकव 'सोंचुरी' घोषित कर दिया है जिसके अपने ही नियम हैं; जो शिकार वर्जित करते हैं एवं बाहरी लोगों की घुसपैठ से यहाँ के वन्य-जीवों को बचाते हैं।

(iii) उत्तराखण्ड का प्रसिद्ध **'चिपको आन्दोलन'** कई क्षेत्रों में वन कटाई रोकने में ही सफल नहीं रहा बल्कि इसने स्थानीय पौधों की प्रजातियों की वृद्धि में भी योगदान दिया है।

(iv) भारत में संयुक्त वन प्रबन्धन कार्यक्रम ने भी वनों के प्रबन्धन एवं पुनर्जीवन में स्थानीय समुदाय की भूमिका को उजागर किया है।

(v) छोटा नागपुर क्षेत्र में मुंडा व संथाल जनजातियाँ महुआ और कदम्ब के पेड़ों की पूजा करती हैं तथा उनका संरक्षण भी करती हैं।

(vi) राजस्थान में बिश्नोई गाँवों के लोग अपने आस-पास के क्षेत्रों में निवास करने वाले हिरन, चिंकारा, नीलगाय एवं मोर आदि वन्य पशुओं की सुरक्षा करते हैं।

(ii) वन और वन्य-जीव संरक्षण में सहयोगी रीति रिवाजों पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर—भारत एक विभिन्न सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। यहाँ प्रकृति को पहले से ही पवित्र मानकर उसकी पूजा होती रही है। यहाँ के लोग पारम्परिक रूप से पेड़-पौधों, पशु-पक्षी, पर्वत, जल-स्रोतों आदि के उपासक रहे हैं। अपने रीति-रिवाजों द्वारा भारतवासी इनके प्रति अपनी श्रद्धा को प्रकट करते आ रहे हैं। रीति-रिवाजों के कारण ही बहुत-से वन क्षेत्र अपने कौमार्य रूप में आज भी विद्यमान हैं।

इन रिवाजों में वन व वन्य-जीवों से सम्बन्धित कुछ रीति-रिवाज महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये वन एवं वन्य-जीवों को सुरक्षा एवं संरक्षण प्रदान करते हैं। राजस्थान में बिश्नोई समाज के लोग खेजड़ी के वृक्ष, काले हिरन, नीलगाय व मोर आदि जीवों को सुरक्षा व संरक्षण प्रदान करते हैं।

ओडिशा व बिहार राज्य की कुछ जनजातियाँ विवाह समारोह के दौरान इमली व आम के वृक्षों की पूजा करती हैं। छोटा नागपुर के पठारी क्षेत्रों में मुंडा और संथाल जनजातियाँ महुआ और कदम्ब के वृक्षों की पूजा करती हैं। भारत के कई स्थानों पर पीपल व वटवृक्ष की पूजा की जाती है। तुलसी के पौधे की सम्पूर्ण भारत में हिन्दुओं द्वारा पूजा की जाती है। इस तरह हम देखते हैं कि रीति-रिवाज़ों द्वारा वन और वन्य-जीवों को पर्याप्त संरक्षण व सुरक्षा मिलती है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. जैव विविधता क्या है? भारत के संदर्भ में वनस्पति व जीवों की विविधता का वर्णन करें।

उत्तर—जैव विविधता का अर्थ है किसी पारिस्थितिक तंत्र या पृथ्वी पर पाए जाने वाले जीवों-पाधों, जानवरों और सूक्ष्म जीवों की विविधता और आनुवांशिक भिन्नता। भारत विश्व के 17 बृहद जैव विविधता वाले देशों में से एक है। यहाँ उष्ण कटिबंधीय वर्षा वनों से लेकर अल्पाइन तक विभिन्न वनस्पति (45000 + प्रजातियाँ) और वन्य जीवों (91000 + प्रजातियाँ) का अद्भुत मिश्रण पाया जाता है।

भारत में वनस्पतियों की विविधता—(i) हिमालयी क्षेत्र—यहाँ उष्ण कटिबंधीय से अल्पाइन प्रकार की वनस्पतियाँ मिलती हैं, जैसे—देवदार, फर्न और आर्किड। **(ii) उष्णकटिबंधीय वर्षा वन**—पश्चिमी घाट, पूर्वोत्तर भारत और अंडमान-निकोबार में महोगनी, बाँस, चंदन और रोजवुड जैसे घने वन पाए जाते हैं। **(iii) पर्णपाती वन**—भारत के मध्य और दक्षिणी भागों में टीक, साल और शीशम जैसे वृक्ष प्रमुख हैं। **(iv) मैंग्रोव वन**—गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा में सुंदरवन प्रसिद्ध है, जहाँ सुंदरी वृक्ष पाए जाते हैं।

भारत में जीव-जंतुओं की विविधता— भारत में जीव-जन्तुओं की विविधता में भी अत्यंत समृद्ध है, जिसमें 350 से अधिक स्तनधारी और 1200 से अधिक पक्षियों की प्रजातियाँ शामिल हैं—**(i) स्तनधारी**—बंगाल टाइगर, एशियाई शेर, भारतीय हाथी, एक सींग वाला गैंडा और हिम तेंदुआ प्रमुख हैं। **(ii) पक्षी**—मोर (राष्ट्रीय पक्षी), ग्रेट इंडियन बस्टर्ड और प्रवासी पक्षी, जो हिमालय के माध्यम से आते हैं। **(iii) सरीसृप और जलीय जीव**—किंग कोबरा, घड़ियाल और अंडमान-निकोबार में पाए जाने वाले विभिन्न समुद्री कछुए, साथ ही गंगा नदी में डाल्फिन पाई जाती है। **(iv) कीट**— 50,000 से अधिक कीड़ों की प्रजातियाँ यहाँ पाई जाती हैं।

भारत में जैव विविधता हॉट स्पॉट— विश्व के 25 जैव विविधता हॉट स्पॉट में से दो भारत में हैं, जो उच्च प्रजाति समृद्धि और स्थानिक प्रजातियों के लिए जाने जाते हैं—(i) पश्चिमी घाट, (ii) पूर्वी हिमालय।

संरक्षण की आवश्यकता— तेजी से हो रहे शहरीकरण, प्रदूषण और वनों की कटाई के कारण भारत में जैव विविधता को खतरा है, जिसके संरक्षण के लिए राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभ्यारण्य स्थापित किए गए हैं।

प्रश्न 2. वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—भारतीय वन्य जीवन (रक्षण) अधिनियम, 1972— भारत में वन्य जीवन संरक्षण सन् 1952 से सन् 1972 तक राष्ट्रीय वन नीति के अन्तर्गत होता था। वन्य-जीवों की सुरक्षा के लिए सन् 1972 में भारतीय वन्य जीवन सुरक्षा अधिनियम बनाया गया, जो वर्तमान में कई संशोधनों के साथ लागू है।

इस अधिनियम में वन्य-जीवों के आवास रक्षण के अनेक प्रावधान थे। इस अधिनियम में उन प्राणियों का उल्लेख किया गया जो प्राकृतिक असन्तुलन के कारण विलुप्ति के कगार पर पहुँच चुके थे परन्तु जिन्हें बचा लिया गया। इस अधिनियम के अन्तर्गत सम्पूर्ण भारत में रक्षित जातियों की सूची भी प्रकाशित की गयी। इस अधिनियम के अन्तर्गत बची हुई संकटग्रस्त प्रजातियों के बचाव पर, शिकार प्रतिबन्धन पर, वन्य-जीव आवासों का कानूनी रक्षण एवं जंगली जीवों के व्यापार पर रोक लगाने आदि पर मुख्य रूप से जोर दिया गया।

प्रश्न 3. भारतीय राष्ट्रीय उद्यानों व अभयारण्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्य जीव पशु विहार— वन्य-जीवों के संरक्षण की दृष्टि से विलुप्तप्राय जातियों तथा दुर्लभ जातियों के संरक्षण के लिए सम्पूर्ण भारत में 100 से अधिक राष्ट्रीय उद्यान एवं 550 से अधिक वन्य-जीव पशु विहारों (अभयारण्यों) की स्थापना की गई है। भारत में 18 जैव मंडलीय अभ्यारण्य हैं जो यूनेस्को के विश्व जैव मंडलीय अभ्यारण्य का हिस्सा हैं। विभिन्न राज्यों में फैले राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभ्यारण कुल मिलाकर 1,00,000 वर्ग किमी से अधिक क्षेत्र में फैले हुए हैं।

प्रश्न 4. भारत सरकार द्वारा संचालित वन्य जीव संरक्षण के कार्यक्रमों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—(i) संयुक्त वन प्रबन्धन कार्यक्रम की शुरुआत सन् 1988 में ओडिशा राज्य से हुई। इस वर्ष ओडिशा राज्य ने संयुक्त वन प्रबन्धन का पहला प्रस्ताव पारित किया था।

(ii) वन विभाग के अन्तर्गत संयुक्त वन प्रबन्धन क्षरित वनों के बचाव के लिए कार्य करता है और इसमें गाँव के स्तर पर संस्थाएँ बनायी जाती हैं, जिसमें ग्रामीण व वन विभाग के अधिकारी संयुक्त रूप से कार्य करते हैं।

(iii) संयुक्त वन प्रबन्धन के अन्तर्गत संकटग्रस्त वनों के प्रबंधन एवं पुनर्जीवन के काम में स्थानीय समुदायों की हिस्सेदारी सुनिश्चित की जाती है।

(iv) संयुक्त वन प्रबन्धन स्थानीय संस्थाओं के निर्माण पर निर्भर करता है जिसके द्वारा अधिकांशतः स्थानीय समुदायों के प्रबन्धन के अन्तर्गत आने वाले संकटग्रस्त वन क्षेत्र में सुरक्षा गतिविधियाँ चलायी जाती हैं।

(v) इसके एवज में इन ग्रामीण समुदायों के सदस्य मध्यस्तरीय लाभ जैसे, गैर इमारती वन उत्पाद के हक़दार होते हैं एवं सफल संरक्षण से प्राप्त होने वाली इमारती लकड़ी में भी उन्हें हिस्सा मिलता है।

❑❑

3 जल संसाधन

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. (i) नीचे दी गई सूचना के आधार पर स्थितियों को 'जल की कमी से प्रभावित' या 'जल की कमी से अप्रभावित' में वर्गीकृत कीजिए—

(क) अधिक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र

(ख) अधिक वर्षा और अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र

(ग) अधिक वर्षा वाले परन्तु अत्यधिक प्रदूषित जल क्षेत्र (घ) कम वर्षा और कम जनसंख्या वाले क्षेत्र

उत्तर—(क) और (ख) जल की सभी से अप्रभावित।

(ग) और (घ) जल की कमी से प्रभावित।

(ii) निम्नलिखित में से कौन-सा वक्तव्य बहुद्देशीय नदी परियोजनाओं के पक्ष में दिया गया तर्क नहीं है—

(क) बहुउद्देशीय परियोजनाएँ उन क्षेत्रों में जल लाती हैं जहाँ जल की कमी होती है।

(ख) बहुउद्देशीय परियोजनाएँ जल बहाव को नियन्त्रित करके बाढ़ पर काबू पाती हैं।

(ग) बहुउद्देशीय परियोजनाओं से वृहत स्तर पर विस्थापन होता है और आजीविका खत्म होती है।

(घ) बहुउद्देशीय परियोजनाएँ हमारे उद्योग और घरों के लिए विद्युत पैदा करती हैं।

उत्तर—(ग) बहुउद्देशीय परियोजनाओं से वृहत स्तर पर विस्थापन होता है और आजीविका खत्म होती है।

(iii) यहाँ कुछ गलत वक्तव्य दिए गए हैं। इनमें गलती पहचानें और दोबारा लिखें।

(क) शहरों की बढ़ती संख्या, उनकी विशालता और सघन जनसंख्या तथा शहरी जीवन शैली ने जल संसाधनों के सही उपयोग में मदद की है।

(ख) नदियों पर बाँध बनाने और उनको नियन्त्रित करने से उनका प्राकृतिक बहाव और तलछट बहाव प्रभावित नहीं होता।

(ग) आज राजस्थान में इन्दिरा गाँधी नहर से उपलब्ध पेयजल के कारण छत वर्षाजल संग्रहण लोकप्रिय हो रहा है।

उत्तर—(क) शहरों की बढ़ती जनसंख्या, उनकी विशालता और सघन जनसंख्या तथा शहरी जीवन-शैली ने जल संसाधनों के सही उपयोग में अवरोध उत्पन्न किया है।

(ख) नदियों पर बाँध बनाने और उनको नियन्त्रित करने से उनका प्राकृतिक बहाव और तलछट बहाव बुरे तरीके से प्रभावित होता है।

(ग) आज राजस्थान में इन्दिरा गांधी नहर से उपलब्ध पेयजल के कारण छत वर्षाजल संग्रहण की लोकप्रियता घट रही है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए—

(i) व्याख्या करें कि जल किस प्रकार नवीकरण योग्य संसाधन है ?

उत्तर—नवीकरण योग्य संसाधन वे संसाधन होते हैं जिनका बार-बार प्रयोग किया जा सकता है। इस परिभाषा के अनुसार जल एक नवीकरण योग्य संसाधन है। जल समुद्रों, नदियों, झीलों, तालाबों आदि से वाष्प बनकर उड़ता रहता है। जलवाष्प हवा में संघनित होकर बादलों में बदल जाती है। यह संघनित जलवाष्प पुन: वर्षा के रूप में धरती पर आ जाती है। धरती से जल पुन: सागरों आदि में पहुँचकर फिर वाष्पीकृत होता है। इस प्रकार यह सदैव गतिशील जलीय-चक्र, जल को एक नवीकरण योग्य संसाधन बना देता है, जिसका प्रयोग बार-बार किया जा सकता है।

(ii) जल दुर्लभता क्या है और इसके मुख्य कारण क्या हैं ?

उत्तर—किसी स्थान पर माँग की तुलना में जल की कमी होना जल दुर्लभता कहलाता है।

जल दुर्लभता के कारण—(i) निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या के कारण प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में निरन्तर कमी होना। (ii) जल का अतिदोहन। (iii) जल का अत्यधिक प्रयोग। (iv) समाज में जल संसाधनों का असमान वितरण (v) जल का प्रदूषित होना।

(iii) बहुउद्देशीय परियोजनाओं से होने वाले लाभ और हानियों की तुलना करें।

उत्तर—

तुलना

बहुउद्देशीय परियोजनाओं से लाभ	बहुउद्देशीय परियोजनाओं से हानियाँ
(i) बाँधों में एकत्रित जल का प्रयोग सिंचाई के लिए किया जाता है।	(i) नदियों का प्राकृतिक बहाव अवरुद्ध होने से तलछट बहाव कम हो जाता है।
(ii) ये जल-विद्युत ऊर्जा प्राप्ति का प्रमुख साधन है।	(ii) अत्यधिक तलछट जलाशय की तली पर जमा हो जाता है।
(iii) जल उपलब्धता के कारण जल की कमी वाले क्षेत्रों में फसलें उगायी जा सकती हैं।	(iii) इनसे भूमि का निम्नीकरण होता है।
(iv) घरेलू और औद्योगिक उपयोग हेतु जल की प्राप्ति।	(iv) भूकम्प की सम्भावना का बढ़ना।
(v) बाढ़ नियन्त्रण, मनोरंजन, आन्तरिक नौकायन, मत्स्य पालन व मृदा संरक्षण।	(v) किसी कारणवश बाँध के टूटने पर बाढ़ आ जाना। जलजनित बीमारियाँ, प्रदूषण, वनों की कटाई, मृदा व वनस्पति का अपघटन।

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए—

(i) राजस्थान के अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वर्षा जल संग्रहण किस प्रकार किया जाता है ? व्याख्या कीजिए।

उत्तर—राजस्थान जैसे अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वर्षा जल संग्रहण निम्नलिखित विधियों से किया जाता है— (i) राजस्थान जैसे अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में रहने वाले लोग पीने का पानी एकत्रित करने के लिए 'छत वर्षा-जल संग्रहण', तकनीक का प्रयोग करते हैं। (ii) शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वर्षाजल एकत्रित करने के लिए गड्ढे बनाये जाते हैं ताकि मृदा को सिंचित किया जा सके; जैसे—जैसलमेर में 'खादीन' (खडीन) एवं अन्य क्षेत्रों में 'जोहड़'। (iii) राजस्थान में शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों विशेषकर बीकानेर, फलौदी और बाड़मेर में लगभग प्रत्येक घर में पीने का पानी एकत्रित करने के लिए भूमिगत टैंक अथवा टाँका होते हैं। (iv) इन क्षेत्रों में छत वर्षा जल संग्रहण तंत्र का प्रयोग पानी को एकत्रित करने के लिए होता है एवं ये टैंक सुविकसित छत वर्षा जल संग्रहण तंत्र का एक अभिन्न हिस्सा होते हैं। जिसे मुख्य घर या आँगन में बनाया जाता है। ये टैंक घरों की ढलवाँ छतों से पाइप द्वारा जुड़े होते हैं। (v) छत से वर्षा का पानी इन पाइपों से होकर भूमिगत टाँका तक पहुँचता है जहाँ इसे एकत्रित किया जाता है। (vi) टाँका में वर्षा जल अगली वर्षा ऋतु तक संग्रहीत किया जाता है तथा जल की कमी वाले दिनों में इस जल का उपयोग किया जाता है। यह वर्षा जल (पालर पानी) प्राकृतिक जल का शुद्धतम रूप माना जाता है। कुछ घरों में तो टाँकों के साथ भूमिगत कमरे भी बनाये जाते हैं, क्योंकि जल का यह स्रोत इन कमरों को भी ठण्डा रखता है, जिससे ग्रीष्म ऋतु में गर्मी से राहत मिलती है।

(ii) परम्परागत वर्षा जल संग्रहण की पद्धतियों को आधुनिक काल में अपनाकर जल संग्रहण एवं भण्डारण किस प्रकार किया जा रहा है ?

उत्तर—परम्परागत वर्षा जल संग्रहण की पद्धतियों को आधुनिक काल में अपनाकर निम्न प्रकार से जल संग्रहण एवं भण्डारण किया जा रहा है—

(i) प्राचीन भारत में उत्कृष्ट जल संरचनाओं के साथ-साथ जल संग्रहण टैंक भी बनाये जाते थे।

(ii) पहाड़ी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में लोगों ने 'गुल' अथवा 'कुल' (पश्चिमी हिमालय क्षेत्र) जैसी वाहिकाएँ, नदी की धारा का रास्ता बदलकर खेतों में सिंचाई के लिए बनाई हैं।

(iii) पश्चिमी राजस्थान में पीने का पानी एकत्रित करने के लिए 'छत वर्षाजल संग्रहण' की विधि एक सामान्य प्रचलित विधि है।

(iv) पश्चिमी बंगाल में बाढ़ के मैदान में लोग अपने खेतों की सिंचाई करने के लिए बाढ़ जल वाहिकाएँ बनाते हैं।

(v) शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वर्षाजल एकत्रित करने के लिए गड्ढे बनाये जाते हैं ताकि मृदा को सिंचित किया जा सके तथा संरक्षित जल को खेती के लिए प्रयोग में लाया जा सके। उदाहरण—जैसलमेर (राजस्थान) में 'खादीन (खडीन) एवं अन्य क्षेत्रों में 'जोहड़' बनाये जाते हैं।

(vi) राजस्थान के अर्द्ध शुष्क एवं शुष्क क्षेत्रों विशेषकर फलौदी, बीकानेर व बाड़मेर आदि में लगभग प्रत्येक घर में पीने का पानी संग्रहण के लिए भूमिगत टैंक अथवा टाँका बने हुए हैं।

(vii) कर्नाटक के मैसूर जिले के गंडाथूर गाँव में ग्रामीणों ने अपने घर में जल की आवश्यकता-पूर्ति हेतु छत वर्षा जल संग्रहण की व्यवस्था की हुई है। शिलांग (मेघालय) में भी यह विधि प्रचलित है।

(viii) मेघालय में नदियों एवं झरनों के जल को बाँस से बने पाइपों द्वारा एकत्रित करने वाली लगभग 200 वर्ष पुरानी सिंचाई विधि प्रचलन में है। इसे बाँस ड्रिप सिंचाई प्रणाली कहा जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. जल दुर्लभता क्या है? इसके कारणों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

उत्तर—जल दुर्लभता से आशय—किसी स्थान अथवा क्षेत्र में माँग की तुलना में जल की कमी का होना जल दुर्लभता कहलाता है। स्वीडन के एक विशेषज्ञ फाल्कन मार्क ने जल दुर्लभता को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है—

फाल्कन मार्क के अनुसार, "जल की कमी तब होती है जब प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिवर्ष 1,000 से 1,600 घन मीटर के मध्य जल उपलब्ध होता है।"

जल दुर्लभता के कारण—भारत में जल दुलर्भता के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(i) जल के वितरण में असमानता—हमारे देश में वर्षा में वार्षिक एवं मौसमी परिवर्तनों के कारण जल संसाधनों की उपलब्धता में समय और स्थान के अनुसार विभिन्नता पायी जाती है। जहाँ एक तरफ हमारे देश के **मॉसिनराम** में विश्व की सर्वाधिक वर्षा होती है वहीं राजस्थान का मरुस्थल सूखाग्रस्त है। प्रकृति के साथ-साथ जल के असमान वितरण के लिए हम भी ज़िम्मेदार हैं। अधिकांशत: जल की कमी इसके अतिशोषण, अत्यधिक प्रयोग एवं समाज के विभिन्न वर्गों में जल के असमान वितरण के कारण होती है।

(ii) बढ़ती हुई जनसंख्या—हमारे देश में जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है जिस कारण जल की माँग में निरन्तर वृद्धि हो रही है। जल की बढ़ती माँग एवं उसका असमान वितरण जल दुर्लभता का कारण बनता जा रहा है।

(iii) सिंचाई—जल की उपलब्धता जनसंख्या के लिए सिर्फ घरेलू उपभोग के लिए ही नहीं बल्कि अधिक अनाज उगाने के लिए भी आवश्यक है। अनाज का उत्पादन बढ़ाने के लिए जल संसाधनों का अति शोषण करके ही सिंचित क्षेत्र में वृद्धि की जा सकती है और शुष्क ऋतु में भी कृषि की जा सकती है। हमारे देश के अधिकांश किसान अपने खेत की सिंचाई निजी कुओं एवं नलकूपों से करके अपने कृषि उत्पादन को बढ़ा रहे हैं। सिंचाई में जल के अत्यधिक प्रयोग से भौमजल स्तर नीचे गिर रहा है तथा लोगों के लिए उपलब्ध जल में निरन्तर कमी होती जा रही है।

(iv) औद्योगीकरण—स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारे देश में तीव्र गति से औद्योगीकरण हुआ है। आजकल प्रत्येक स्थान पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ बड़े औद्योगिक घरानों के रूप में फैली हुई हैं। उद्योगों की बढ़ती हुई संख्या के कारण अलवणीय जल संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है, उद्योगों को अत्यधिक जल के अतिरिक्त उनके संचालन के लिए भी ऊर्जा की आवश्यकता होती है जिसकी पूर्ति जल विद्युत से होती है।

(v) शहरीकरण—शहरीकरण भी जल दुर्लभता के लिए एक जिम्मेदार कारक है, इसने भी जल दुर्लभता की समस्या में वृद्धि की है। शहरों की बढ़ती जनसंख्या एवं शहरी जीवन शैली के कारण न केवल जल और ऊर्जा की आवश्यकता में वृद्धि हुई है बल्कि उनसे सम्बन्धित समस्याएँ और भी बढ़ गयी हैं। अधिक जनसंख्या जल संसाधनों का अति उपयोग कर रही है तथा उपलब्ध संसाधनों को प्रदूषित कर रही है।

(vi) जल प्रदूषण—जल की दुर्लभता का एक प्रमुख कारण जल की खराब गुणवत्ता अर्थात् जल प्रदूषण भी है। पिछले कुछ वर्षों से यह एक चिन्ताजनक विषय बनता जा रहा है कि लोगों की आवश्यकता के लिए पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध होने के बावजूद यह घरेलू एवं औद्योगिक अपशिष्टों, रसायनों, कीटनाशकों एवं कृषि में प्रयुक्त उर्वरकों द्वारा प्रदूषित है। ऐसा जल, मानव के उपयोग के लिए खतरनाक है।

प्रश्न 2. जल संरक्षण क्या है? जल प्रबंधन की आवश्यकता का वर्णन कीजिए।

उत्तर—जल संरक्षण—जल संरक्षण का अर्थ है पानी का बुद्धिमानी से प्रबंधन और उपयोग करना, ताकि बर्बादी रोकी जा सके और स्वच्छ, मीठे पानी के संसाधनों को भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जा सके, क्योंकि यह सीमित और बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है, जो बढ़ती जनसंख्या के कारण घट रहा है। इसमें वर्षा जल संचयन, पानी के अनावश्यक उपयोग (जैसे-ब्रश करते समय नल खुला

छोड़ देना) से बचना जैसे तरीके शामिल हैं, जो पर्यावरण और हमारी जेब दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।

आज भारत में लगातार बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए पेयजल एवं कृषि फसलों की सिंचाई हेतु जल की आवश्यकता निरन्तर बढ़ती जा रही है लेकिन स्वच्छ जल की निरन्तर आपूर्ति कम होती जा रही है। फलस्वरूप जल संरक्षण एवं प्रबन्धन वर्षा जल संग्रहण की आवश्यकता महसूस की जा रही है। भारत में जल संरक्षण एवं प्रबन्धन की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से भी है—

(i) जल की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धि के बावजूद इसके अतिशोषण, अत्यधिक प्रयोग एवं समाज के विभिन्न वर्गों में जल के असमान वितरण के कारण इसके संरक्षण एवं प्रबंधन की आवश्यकता बढ़ गयी है। (ii) प्राकृतिक पारितन्त्र को निम्नीकृत होने से बचाने के लिए जल का संरक्षण महत्वपूर्ण है। (iii) बढ़ती जनसंख्या, कृषि का आधुनिकीकरण, शहरीकरण व औद्योगीकरण के कारण नदियों का जल प्रदूषित हुआ है। यह समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है इससे सम्पूर्ण जीवन खतरे में है। (iv) फसलों का उगाना भी जल की उपलब्धता पर निर्भर है। (v) जल पीने एवं घरेलू उपयोग के लिए भी प्रयोग होता है। शहरों की बढ़ती जनसंख्या एवं शहरी जीवन शैली के कारण जल की माँग बढ़ती ही जा रही है।

इन सबके लिए जल की भविष्य में आपूर्ति को सुनिश्चित करने के लिए संरक्षण एवं प्रबंधन की आवश्यकता है।

प्रश्न 3. बहुउद्देशीय परियोजना क्या है? इनके उद्देश्यों का वर्णन करें।

उत्तर—बहुउद्देशीय परियोजना का अर्थ—बहुउद्देशीय परियोजना एक ऐसी परियोजना होती है जिसे एक साथ कई उद्देश्यों, जैसे—सिंचाई, जल विद्युत उत्पादन, बाढ़ नियंत्रण, पेयजल आपूर्ति, मत्स्य पालन और पर्यटन, आदि को पूरा करने के लिए नदी पर बनाया जाता है, जिससे जल संसाधनों का अधिकतम और संतुलित उपयोग हो सके। इन परियोजनाओं के मुख्य उद्देश्य कृषि, उद्योग और आम जनता के लिए पानी उपलब्ध कराना, बिजली पैदा करना, बाढ़ से बचाव करना और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

बहुउद्देशीय परियोजनाओं के प्रमुख उद्देश्य

1. सिंचाई—किसानों को पानी उपलब्ध कराकर कृषि उत्पादन बढ़ाना, खासकर शुष्क क्षेत्रों में जिससे फसल उत्पादन बढ़े।

2. जल विद्युत उत्पादन—बाँधों से पानी गिराकर बिजली बनाना, जो उद्योगों और घरों के लिए आवश्यक है।

3. बाढ़ नियंत्रण—नदियों के अतिरिक्त पानी को रोककर निचले इलाकों को बाढ़ से बचाना और जान-माल की हानि रोकना भी एक उद्देश्य है।

4. पेयजल आपूर्ति—बहुउद्देशीय परियोजनाओं का प्रमुख उद्देश्य शहरों और गाँवों के लिए पीने के पानी का सुरक्षित स्रोत प्रदान करना है।

5. मत्स्य पालन—जलाशयों (कृत्रिम झीलों) में मछली पालन को बढ़ावा देना है।

6. पर्यटन स्थल—बाँधों और जलाशयों के आसपास पिकनिक स्थल, रिसॉर्ट्स बनाकर मनोरंजन और पर्यटन को बढ़ावा देना।

7. वानिकी और वन्य जीव संरक्षण—बाँधों के आसपास वनस्पति और वन्यजीवों के अनुकूल वातावरण बनाना।

प्रश्न 4. बहुउद्देशीय परियोजनाओं के प्रभाव व सीमाओं का उल्लेख करते हुए उनसे सम्बन्धित आंदोलनों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—बहुउद्देशीय नदी परियोजना—एक नदी घाटी परियोजना जो एक साथ कई उद्देश्यों, जैसे—सिंचाई, बाढ़, नियन्त्रण, जल व मृदा का संरक्षण, जल विद्युत, जल परिवहन, पर्यटन का विकास, मत्स्यपालन, कृषि एवं औद्योगिक विकास आदि की पूर्ति करती है, बहुउद्देशीय नदी परियोजना कहलाती है।

बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं के विरोध के कारण—पिछले कुछ वर्षों से बाँध बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ निम्न कारणों से विरोध का विषय बन गयी हैं—

(i) नदियों में रहने वाले जलीय जीवों के भोजन व आवास को हानि—नदियों पर बाँध बनाने एवं उनका बहाव नियन्त्रित करने से उनका प्राकृतिक बहाव अवरुद्ध हो जाता है। जिसके कारण तलछट का बहाव कम हो जाता है और अत्यधिक तलछट जलाशय की तली पर जमा होता रहता है जिससे नदी का तल अधिक चट्टानी हो जाता है और नदी के जलीय जीव आवासों में भोजन की कमी हो जाती है।

(ii) जलीय जीवों का आवागमन अवरुद्ध होना—बहुउद्देशीय परियोजनाओं हेतु बनाये गये बाँध नदियों को कई टुकड़ों में विभाजित कर देते हैं, जिससे अण्डे देने की ऋतु में जलीय जीवों का नदियों में आवागमन अवरुद्ध हो जाता है।

(iii) वनस्पति एवं मृदाओं का जल में डूब जाना—बाढ़ के मैदानों में बनाये जाने वाले जलाशयों द्वारा वहाँ उपलब्ध वनस्पति एवं मिट्टियाँ जल में डूब जाती हैं जो कि कालान्तर में अपघटित हो जाती हैं।

(iv) स्थानीय लोगों का वृहत स्तर पर विस्थापित होना—बहुउद्देशीय परियोजनाएँ एवं बड़े बाँध नये सामाजिक आन्दोलनों, जैसे—नर्मदा बचाओ आन्दोलन एवं टिहरी बाँध आन्दोलन के कारण भी बन गये हैं। इन परियोजनाओं का विरोध मुख्य रूप से स्थानीय समुदायों के वृहत् स्तर पर विस्थापित होने के कारण हो रहा है। प्राय: स्थानीय लोगों को राष्ट्रहित में अपनी भूमि एवं आजीविका का त्याग करना पड़ता है।

(v) बाढ़ों में वृद्धि होना—बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं पर उठी अधिकांश आपत्तियाँ उनके उद्देश्यों में असफल हो जाने पर हैं। यह एक विडम्बना है कि जिन बाँधों का निर्माण बाढ़ नियन्त्रण के लिए किया जाता है, उन जलाशयों में तलछट के जमा हो जाने से वे बाढ़ आने का कारण बन जाते हैं। अत्यधिक वर्षा होने की स्थिति में तो बड़े बाँध भी अनेक बार बाढ़ नियन्त्रण में असफल रहते हैं। उदाहरण के लिए सन् 2006 में महाराष्ट्र एवं गुजरात में भारी वर्षा के दौरान बाँधों से छोड़े गये जल के कारण बाढ़ की स्थिति और भी विकट हो गयी थी। इन बाढ़ों से न केवल जान-माल का नुकसान हुआ बल्कि मृदा अपरदन भी पर्याप्त मात्रा में हुआ था।

(vi) मृदाओं का लवणीकरण होना—बहुउद्देशीय परियोजनाओं के फलस्वरूप अत्यधिक सिंचाई के कारण देश के अनेक क्षेत्रों में फसल प्रारूप में अत्यधिक परिवर्तन हो रहा है। इन क्षेत्रों में किसान

वाणिज्यिक फसलों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इससे मृदाओं में लवणीकरण जैसी गम्भीर परिस्थिति एवं समस्याएँ उत्पन्न हो गयी हैं।

(vii) भूमि निम्नीकरण की समस्याओं का बढ़ना—बाँधों के जलाशय में तलछट जमा होने का अर्थ यह भी है कि यह तलछट जो कि एक प्राकृतिक उर्वरक है, बाढ़ के मैदानों तक नहीं पहुँच पाती है। जिसके कारण भूमि निम्नीकरण की समस्याएँ बढ़ती हैं।

(viii) भूकम्प एवं जलजनित बीमारियाँ—यह भी माना जाता है कि बहुउद्देशीय परियोजनाओं के कारण क्षेत्र विशेष में भूकम्प आने की सम्भावनाओं में पर्याप्त वृद्धि हो जाती है। इसके अतिरिक्त अत्यधिक जल के उपयोग से जलजनित बीमारियाँ, फसलों में कीटाणुजनित बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं एवं जल प्रदूषण में वृद्धि होती है।

(ix) अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों में वृद्धि होना—बहुउद्देशीय परियोजनाओं के फलस्वरूप धनिक भूमि मालिकों एवं निर्धन भूमिहीनों में सामाजिक दूरी बढ़ गयी है जिससे सामाजिक परिदृश्य बदल गया है। बाँध उसी जल के अलग-अलग उपयोग एवं लाभ प्राप्त करने वालों के मध्य संघर्ष उत्पन्न करते हैं। गुजरात में साबरमती बेसिन में सूखे के दौरान शहरी क्षेत्रों में अधिक जलापूर्ति देने पर परेशान किसान उपद्रव पर उतारू हो गये। बहुउद्देशीय परियोजनाओं के लागत एवं लाभ के बँटवारे को लेकर भी अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं।

प्रश्न 5. बाँध क्या है? भारत के प्रमुख बाँधों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—बाँध बहते पानी के बीच बनाया गया अवरोध है जो प्रवाह को बाधित करता है, निर्देशित करता है या धीमा करता है, जिससे अक्सर जलाशय या झील बन जाती है। बाँध संरचना के बजाय जलाशय को संदर्भित करता है। अधिकांश बाँधों में एक खंड होता है जिसे उबड़-खाबड़ मार्ग या मेड़ कहा जाता है जिसके माध्यम से नदी का पानी लगातार बहता रहता है।

बाँधों को उनकी संरचना, इच्छित उद्देश्य या सिंचाई के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है। संरचना और इस्तेमाल की गई सामग्रियों के आधार पर बाँधों को लकड़ी के बाँध, तटबंध बाँध या चिनाई बाँध के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, जिसमें कई उप-प्रकार होते हैं। उनकी सिंचाई के अनुसार बाँधों को बड़े बाँधों और प्रमुख बाँधों, छोटे बाँधों, मध्यम-ऊँचे बाँधों और ऊँचे बाँधों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

भारत में प्रमुख नदी घाटी परियोजनाएँ

क्र.सं.	परियोजना का नाम	नदी	संबंधित राज्य
1.	भाखड़ा नांगल परियोजना	सतलुज	पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान
2.	दामोदर घाटी परियोजना	दामोदर	झारखंड, पश्चिम बंगाल
3.	हीराकुड	महानदी	ओडिशा
4.	टिहरी बाँध परियोजना	भागीरथी	उत्तराखंड
5.	सरदार सरोवर परियोजना	नर्मदा	मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान
6.	चंबल परियोजना	चंबल	राजस्थान, मध्य प्रदेश
7.	कोयना परियोजना	कोयना	महाराष्ट्र
8.	कोसी परियोजना	कोसी	बिहार
9.	इंदिरा गांधी नहर परियोजना	सतलुज, ब्यास	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा
10.	मयूराक्षी परियोजना	मयूराक्षी	पश्चिम बंगाल
11.	रिहंद परियोजना	रिहंद	उत्तर प्रदेश
12.	शारदा परियोजना	शारदा, गोमती	उत्तर प्रदेश
13.	तिलैया परियोजना	बराकर	झारखंड
14.	तुलबुल परियोजना	चिनाब	जम्मू और कश्मीर
15.	तुंगभद्रा परियोजना	तुंगभद्रा	आंध्र प्रदेश, कर्नाटक
16.	उकाई परियोजना	ताप्ती	गुजरात
17.	ब्यास परियोजना	ब्यास	हिमाचल प्रदेश
18.	तवा परियोजना	तवा	मध्य प्रदेश
19.	शिवासमुद्रम परियोजना	कावेरी	कर्नाटक
20.	नर्मदा सागर परियोजना	नर्मदा	मध्य प्रदेश, गुजरात

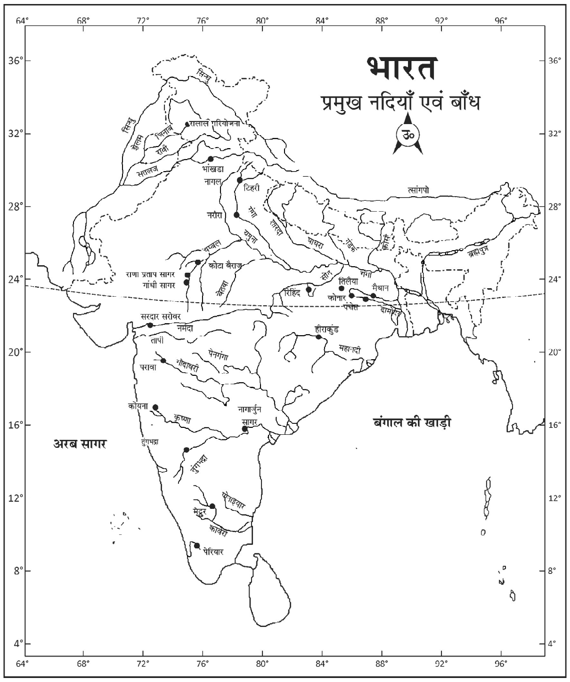

चित्र 4: भारत-प्रमुख नदियाँ और बाँध

प्रश्न 6. भारत में प्रचलित वर्षा जल संचयन की विधियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—वर्षा जल संचयन, वर्षा जल को सतही अपवाह के रूप में नष्ट होने से पहले सतही या उप-सतही जलभत्तों (भंडारण टैंकों) में एकत्रित करने और भंडारण करने की एक तकनीक है।

आज शुद्ध जल की कमी चिंता का विषय बन गई है। हालाँकि, वर्षा जल, जो शुद्ध और अच्छी गुणवत्ता वाला होता है, इसका उपयोग सिंचाई, कपड़े धोने, सफाई, नहाने, खाना पकाने और पशुओं की आवश्यकताओं के लिए भी किया जा सकता है।

भारत में वर्षा जल संचयन विधियाँ

(i) खड़ीन और जोहड़— शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में, कृषि क्षेत्रों को वर्षा आधारित भंडारण संरचनाओं में बदल दिया गया। इससे वर्षा जल को स्थिर रहने और मिट्टी को नम रखने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, जैसलमेर में खड़ीन और राजस्थान के अन्य हिस्सों में जोहड़।

(ii) छत पर वर्षा जल संचयन— यह पारंपरिक रूप से राजस्थान के अर्ध-शुष्क और ऋतु के क्षेत्रों में प्रचलित था, विशेष रूप से बीकानेर, फलौदी, बाड़मेर और थार रेगिस्तान के शहरों और गाँवों में।

टांका-छत वर्षा जल संचयन प्रणाली का एक हिस्सा है, और इन्हें मुख्य घर या आँगन के अंदर बनाया जाता है। टांके एक पाइप के माध्यम से घर की ढलान वाली छतों से जुड़े होते हैं। छत पर गिरने वाला बारिश का पानी पाइप से नीचे आता है और भूमिगत टांकों में जमा हो जाता है। इस वर्षा जल (जिसे आमतौर पर पालर पानी के रूप में जाना जाता है) का उपयोग शुष्क अवधि (गर्मियों) के दौरान किया जा सकता है जब अन्य स्रोत सूख जाते हैं। आज पश्चिमी राजस्थान में छतों पर वर्षा जल संचयन का प्रचलन कम होता जा रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इंदिरा गांधी नहर के कारण यहाँ प्रचुर मात्रा में पानी उपलब्ध है।

हालाँकि, आज भी भारत के कई ग्रामीण और शहरी इलाकों में जल संरक्षण और भंडारण का यह तरीका इस्तेमाल किया जा रहा है। कर्नाटक के मैसूर में एक सुदूर पिछड़े गाँव गंडाथूर में ग्रामीणों ने अपनी पानी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अपनी छतों पर वर्षा जल संचयन प्रणाली स्थापित की है। गाँव के लगभग 200 घरों ने यह प्रणाली स्थापित की है और गाँव ने वर्षा जल उपलब्धता में समृद्ध होने का दुर्लभ गौरव प्राप्त किया है।

गंडाथूर गाँव में सालाना 1000 मिमी बारिश होती है और 10 फीट भरायी के साथ 80 प्रतिशत संग्रहण क्षमता के साथ, हर घर सालाना लगभग 50,000 लीटर पानी इकट्ठा कर सकता है और उसका इस्तेमाल कर सकता है। 200 घरों से सालाना 10,00,000 लीटर वर्षा जल का संचयन होता है।

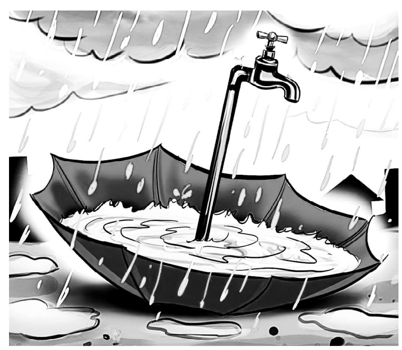

छत पर वर्षा जल संचयन शिलांग (मेघालय) में सबसे आम था है। यह दिलचस्प है क्योंकि शिलांग से 55 किलोमीटर की दूरी पर स्थित चेरापूँजी और मॉसिनराम में दुनिया की सबसे अधिक वर्षा होती है, लेकिन फिर भी राज्य की राजधानी शिलांग में पानी की भारी कमी है। इसलिए, शहर के लगभग हर घर में छत पर वर्षा जल संचयन की संरचना है। घर की कुल पानी की ज़रूरत का लगभग 15-25 प्रतिशत छत पर जल संचयन से पूरा होता है।

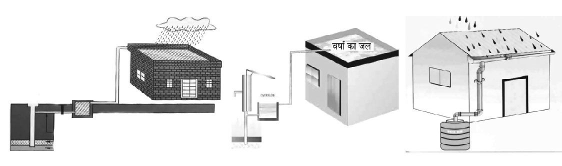

(अ) टैंक माध्यम से पुनर्भरण (ब) हैंडपंप के माध्यम से पुनर्भरण

तमिलनाडु भारत का पहला राज्य है जिसने राज्य भर के सभी घरों में छत वर्षा जल संचयन संरचना को अनिवार्य बना दिया है। ऐसा न करने वालों को दंडित करने के लिए कानूनी प्रावधान हैं।

थार के कस्बों और गाँवों में छतजल इकट्ठा करना आम बात थी। घरों की ढलान वाली छतों पर गिरने वाले बारिश के पानी को पाइप के ज़रिए मुख्य घर या आँगन में बने भूमिगत टांके (ज़मीन में गोलाकार छेद) में ले जाया जाता है। पर दी गई तस्वीर में एक पड़ोसी की छत से एक लंबी पाइप लाइन के ज़रिए पानी ले जाया जा रहा है। यहाँ पड़ोसी की छत का इस्तेमाल बारिश के पानी को इकट्ठा करने के लिए किया गया है। तस्वीर में एक छेद दिखाया गया है जिसके ज़रिए बारिश का पानी एक भूमिगत टांके में जाता है।

(iii) **गुल या कुल**— पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्रों में लोग वर्षा जल और झरने के पानी को इकट्ठा करने के लिए परिवर्तित सरिता बनाते हैं और इसे गोल टैंकों में जमा करते हैं जिन्हें गुल या कुल कहते हैं। पश्चिमी हिमालय में नदी के मार्ग को बदलकर खेतों में सिंचाई के लिए गुल या कुल जैसी संरचनाएँ बनाई गई हैं।

(iv) **बाँस ड्रिप सिंचाई प्रणाली**— यह प्रणाली मेघालय में 200 वर्षों से प्रचलन में है। इस प्रणाली में, बाँस को पाइप के रूप में उपयोग करके पहाड़ियों में नदियों और झरनों से पानी को क्षेत्रों में पहुँचाया जाता है। लगभग 18-20 लीटर पानी बाँस-पाइप प्रणाली में वेश करता है और सैकड़ों मीटर दूर तक पहुँचाया जाता है। यह प्रणाली अंततः पौधे स्थल पर पानी के प्रवाह को 20-80 बूँद प्रति मिनट तक कम कर देती है।

चित्र 7: बाँस ड्रिप सिंचाई प्रणाली

(v) **जलप्लावन चैनल**— पश्चिम बंगाल की बाढ़ योजनाओं में लोगों ने अपने खेतों की सिंचाई के लिए जलप्लावन चैनल खोदे हैं।

❑❑

4 कृषि

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. बहुवैकल्पिक प्रश्न—

(i) निम्नलिखित में से कौन-सा उस कृषि प्रणाली को दर्शाता है जिसमें एक ही फसल लम्बे-चौड़े क्षेत्र में उगाई जाती है ?

(क) स्थानान्तरी कृषि (ख) रोपण कृषि
(ग) बागवानी (घ) गहन कृषि

(ii) इनमें से कौन-सी रबी फसल है ?

(क) चावल (ख) मोटे अनाज
(ग) चना (घ) कपास

(iii) इनमें से कौन-सी एक फलीदार फसल है ?

(क) दालें (ख) मोटे अनाज
(ग) ज्वार (घ) तिल

उत्तरमाला—**(i)**-ख, **(ii)**-ग, **(iii)**-क।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए—

(i) एक पेय फसल का नाम बताएँ तथा उसको उगाने के लिए अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों का विवरण दें।

उत्तर—चाय एक प्रमुख पेय फसल है। चाय उत्पादन के लिए उपोष्ण कटिबन्धीय जलवायु, ह्यूमस एवं जीवाश्मयुक्त

गहरी मिट्टी एवं सुगम जल निकास वाले ढलवाँ क्षेत्र अनुकूल माने जाते हैं। वर्षभर समान रूप से होने वाली वर्षा की बौछारें चाय की कोमल पत्तियों के विकास में सहायक होती हैं।

(ii) भारत की एक खाद्य फसल का नाम बताएँ और जहाँ यह पैदा की जाती है उन क्षेत्रों का विवरण दें।

उत्तर—चावल भारत की एक प्रमुख खरीफ खाद्य फसल है। चीन के पश्चात् भारत चावल का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। पश्चिम बंगाल भारत का सबसे बड़ा चावल उत्पादक राज्य है। भारत में चावल मुख्यत: उत्तरी-पूर्वी मैदानों, तटीय क्षेत्रों एवं डेल्टाई प्रदेशों में उत्पादित किया जाता है। इसके अतिरिक्त पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान में भी चावल उगाया जाता है।

(iii) सरकार द्वारा किसानों के हित में किये गये संस्थागत सुधार कार्यक्रमों की सूची बनाएँ।

उत्तर—स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत में किसानों के हित में कई संस्थागत सुधार कार्यक्रमों को शुरू किया गया है जिनमें खेतों की चकबन्दी, जमींदारी प्रथा की समाप्ति, फसल बीमा योजना, ग्रामीण बैंक व सहकारी समितियों की स्थापना, किसान क्रेडिट कार्ड, व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना, कृषि कार्यक्रमों का प्रसारण, न्यूनतम सहायता मूल्य एवं खरीद मूल्यों की घोषणा आदि मुख्य हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए—

(i) कृषि उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा किए गए उपाय सुझाइए।

उत्तर—कृषि उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा किये गए उपाय/सुधार निम्नलिखित हैं—

(i) **संस्थागत सुधार**—स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत सरकार द्वारा कृषि में उत्पादन वृद्धि के लिए कुछ संस्थागत सुधार किये गये हैं जिनमें जोतों की चकबन्दी व सहकारिता का विकास करना तथा जमींदारी प्रथा की समाप्ति करना आदि प्रमुख हैं।

(ii) **व्यापक भूमि सुधार कार्यक्रम**—भारत सरकार द्वारा सन् 1980 तथा 1990 के दशकों में व्यापक भूमि सुधार कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया जो संस्थागत एवं तकनीकी सुधारों पर आधारित था। इस दिशा में उठाये गये महत्वपूर्ण कदमों में बाढ़, सूखा, चक्रवात, आग एवं बीमारी के लिए फसल बीमा का प्रावधान तथा किसान को बहुत कम दर पर ऋण सुविधाएँ प्रदान करने के लिए ग्रामीण बैंकों, सहकारी समितियों एवं सहकारी बैंकों की स्थापना आदि सम्मिलित हैं।

(iii) **कृषि शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार**—सरकार द्वारा विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर कृषि सम्बन्धी शिक्षा का देश के विभिन्न भागों में विस्तार किया गया। आकाशवाणी व दूरदर्शन पर किसानों के लिए मौसम की जानकारी सम्बन्धी बुलेटिन एवं कृषि कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं जिनमें उन्नत बीजों, कीटनाशक दवाओं, नवीन कृषि यंत्रों एवं मृदा आदि की जानकारी दी जाती है।

(iv) **न्यूनतम समर्थन मूल्यों की घोषणा**—किसानों को बिचौलियों और दलालों के शोषण से बचाने के लिए तथा किसानों को अपनी कृषि उपजों का उचित मूल्य सीधे व समय पर मिले, इसके लिए कृषि उपजों की खरीद का दायित्व सरकार ने ले लिया है। सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य एवं कुछ महत्वपूर्ण फसलों के लाभदायक खरीद मूल्यों की घोषणा भी करती है।

(v) **भारतीय खाद्य निगम की स्थापना**—खाद्यान्नों की अधिक प्राप्ति एवं भण्डारण की व्यवस्था हेतु भारतीय खाद्य निगम की स्थापना की गयी है। भारतीय खाद्य निगम सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य पर किसानों से खाद्यान्न खरीदता है।

(vi) **कृषि हेतु सब्सिडी उपलब्ध कराना**—सरकार कृषि को बढ़ावा देने हेतु किसानों के लिए उर्वरक, ऊर्जा एवं जल जैसे कृषि निवेशों पर सहायिकी (सब्सिडी) उपलब्ध कराती है।

(ii) चावल की खेती के लिए उपयुक्त भौगोलिक परिस्थितियों का वर्णन करें।

उत्तर—चावल की खेती के लिए आवश्यक भौगोलिक परिस्थितियाँ/दशाएँ निम्नलिखित हैं—

(i) **तापमान**—चावल की खेती के लिए बोने से लेकर काटने तक की अवधि में तापमान 25° सेल्सियस से ऊपर होना चाहिए।

(ii) **वर्षा**—चावल की कृषि के लिए 100 सेमी. से अधिक वर्षा उपयुक्त रहती है। अत: इसके लिए पर्याप्त जल की आवश्यकता होती है।

(iii) **मिट्टियाँ**—इसकी कृषि के लिए चिकनी व दोमट मिट्टियाँ अधिक अनुकूल रहती हैं, क्योंकि इन मिट्टियों में जलधारण करने की क्षमता अधिक होती है। चावल भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट करता है। अत: इसकी फसल के लिए खाद दिया जाना आवश्यक हो जाता है।

(iv) **धरातल**—चावल की फसल के लिए धीमी ढाल वाली समतल भूमि अत्यन्त उपयोगी रहती है। कई क्षेत्रों में चावल पर्वतीय भागों में भी उगाया जाता है।

(v) **सस्ता मानवीय श्रम**—चावल की कृषि में बोने, निराने, सिंचाई करने, काटने, ओसने व कूटने आदि के लिए अधिक श्रमिकों की आवश्यकता होती है। अत: चावल अधिकतर उन घने बसे क्षेत्रों में अधिक पैदा किया जाता है, जहाँ सस्ते श्रमिकों की उपलब्धता होती है।

परियोजना कार्य

प्रश्न 1. किसानों की साक्षरता विषय पर एक सामूहिक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करें।

उत्तर—विद्यार्थी अपने विषय के शिक्षक की देखरेख में दो समूह बनायें तथा निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करें।

(i) भारत में साक्षरता दर—कुल पुरुष एवं महिला साक्षरता, **(ii)** किसानों में साक्षरता दर, **(iii)** न्यून साक्षरता के कारण,

(iv) न्यून साक्षरता का कृषि पर प्रभाव, **(v)** साक्षरता से लाभ आदि।

प्रश्न 2. भारत के मानचित्र में गेहूँ उत्पादन क्षेत्र दर्शाइए।

उत्तर—

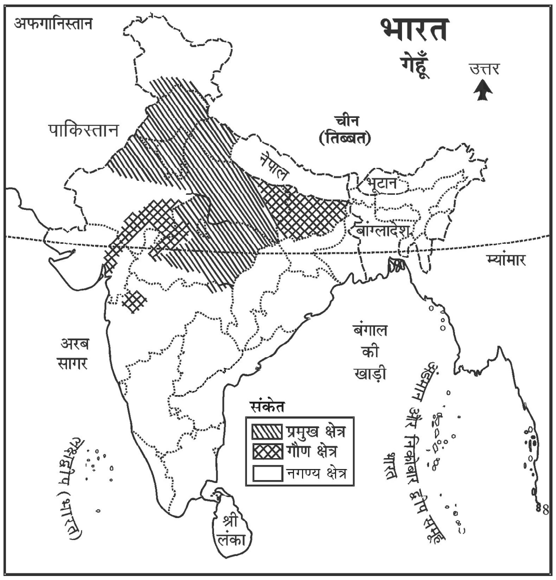

प्रश्न 3. ऊपर-नीचे और दायें-बायें चलते हुए वर्ग पहेली को सुलझाएँ और छिपे उत्तर ढूँढ़ें।

नोट—पहेली के उत्तर अंग्रेजी भाषा के शब्दों में हैं।

A	Z	M	X	N	C	B	V	N	X	A	H	D	Q
S	G	E	W	S	R	J	D	Q	J	Z	V	R	E
D	K	H	A	R	I	F	G	W	F	M	R	F	W
F	N	L	R	G	C	H	H	R	S	B	S	V	T
G	B	C	W	H	E	A	T	Y	A	C	H	B	R
H	R	T	K	A	S	S	E	P	H	X	A	N	W
J	I	E	S	J	O	W	A	R	J	Z	H	D	T
K	C	L	A	E	G	A	C	O	F	F	E	E	Y
L	T	E	F	Y	M	T	A	T	S	S	R	G	I
P	D	E	J	O	U	Y	V	E	J	G	F	A	U
O	U	M	H	Q	S	U	D	I	T	S	W	S	P
U	O	A	C	O	T	T	O	N	E	A	H	F	O
Y	O	L	F	L	U	S	R	Q	Q	D	T	W	I
T	M	U	A	H	R	G	Y	K	T	R	A	B	F
E	A	Q	D	G	D	Q	H	S	U	O	I	W	H
W	Q	Z	C	X	V	B	N	M	K	J	A	S	L

(i) भारत की दो प्रमुख खाद्य फसलें।

उत्तर—1. गेहूँ (Wheat) 2. चावल (Rice)

(ii) यह भारत की ग्रीष्म-ऋतु फसल है।

उत्तर—खरीफ (Kharif)

(iii) अरहर, मूँग, चना व उड़द जैसी दालों से ········ मिलता है।

उत्तर—प्रोटीन (Protein)

(iv) यह एक मोटा अनाज है।

उत्तर—ज्वार (Jowar)

(v) भारत की दो महत्वपूर्ण पेय फसलें हैं।

उत्तर—1. चाय (Tea) 2. कॉफी (Coffee)

(vi) काली मिट्टी पर उगाई जाने वाली चार रेशेदार फसलों में से एक।

उत्तर—कपास (Cotton)

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कृषि से क्या तात्पर्य है? प्रमुख कृषि प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर—कृषि एक प्राथमिक क्रिया है जो व्यक्ति के लिए अधिकांशत: खाद्यान्न एवं विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चा माल उत्पन्न करती है। भारत में कृषि प्राचीनकाल से ही होती आ रही है।

भारत के कृषि तंत्र—वर्तमान समय में भारत के विभिन्न भागों में निम्नलिखित प्रकार के कृषि तंत्र अपनाये गये हैं—

(i) प्रारम्भिक जीविका निर्वाह कृषि, (ii) गहन जीविका कृषि, (iii) वाणिज्यिक कृषि, (iv) रोपण कृषि।

प्रारम्भिक जीविका निर्वाह कृषि—प्रारम्भिक जीविका निर्वाह कृषि, कृषि का एक आदिम रूप है। इस प्रकार की कृषि हमारे देश के कुछ भागों में आज भी की जाती है। यह कृषि जंगलों में निवास करने वाले आदिवासी एवं पिछड़ी जातियों द्वारा की जाती है। इसमें वनों को जलाकर भूमि साफ करके दो-तीन वर्षों तक अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए अनाज व अन्य खाद्य फसलें उगायी जाती हैं और जब मिट्टी की उर्वराशक्ति समाप्त हो जाती है तो उस भूमि को छोड़कर यही प्रक्रिया दूसरे क्षेत्रों में अपनायी जाती है। इस कृषि को कर्तन दहन प्रणाली कृषि अथवा स्थानान्तरित कृषि के नाम से भी जाना जाता है।

गहन जीविका कृषि—गहन जीविका कृषि एक प्रकार की श्रम गहन खेती है जिसमें अधिक उत्पादन के लिए अधिक मात्रा में जैव रासायनिक निवेशों एवं सिंचाई का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार की कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ खेती की जाने वाली भूमि सीमित होती है तथा जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है।

वाणिज्यिक कृषि—वाणिज्यिक कृषि, कृषि का वह रूप है जिसमें फसलें मुख्य रूप से बेचने अथवा व्यापार के उद्देश्य से ही उगायी जाती हैं। इस कृषि में निर्यात की दृष्टि से अतिरिक्त उत्पादन किया जाता है।

रोपण कृषि भी एक प्रकार की वाणिज्यिक खेती है जिसमें फसलें मुख्य रूप से बाजार एवं व्यापार को ध्यान में रखते हुए उगायी जाती हैं। इस कृषि के अन्तर्गत एक नगदी फसल उगायी जाती है जिसका उत्पादन केवल बेचने के उद्देश्य से किया जाता है। चाय, कॉफी, रबड़, गन्ना, कहवा, केला आदि महत्वपूर्ण रोपण फसलें हैं।

व्यावसायिक खेती—बागान कृषि एक प्रकार की व्यावसायिक खेती है जिसमें पूरे साल एक ही फसल उगाई जाती है। उत्पादित

फसल को उसी खेत से संसाधित किया जा सकता है, जहाँ इसे उगाया जाता है या आसपास के कारखानों या छोटे पैमाने के उद्योगों में संसाधित किया जाता है। बागान फसलों को आगे की प्रक्रिया के लिए ले जाने के लिए संचार, परिवहन, उचित बाजार सुविधाओं का जाल आवश्यक है।

प्रश्न 2. फसल प्रारूप क्या है? भारत के फसली मौसम का वर्णन कीजिए।

उत्तर—फसल प्रारूप से तात्पर्य अलग-अलग समय पर अलग-अलग फसलों की खेती से है। यह किसी क्षेत्र विशेष में फसलों के समय और व्यवस्था को दर्शाता है। फसल प्रारूप में कोई भी बदलाव विभिन्न फसलों के तहत भूमि के अनुपात में बदलाव का कारण बनेगा। भारत में फसल पद्धति वर्षा, तापमान, जलवायु, प्रौद्योगिकी और मिट्टी के प्रकार द्वारा निर्धारित की जाती है। अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए, फसल के विभिन्न प्रारूप अपनाए जाते हैं । प्रमुख फसल प्रारूप में निम्नलिखित शामिल हैं—

भारत की तीन शस्य ऋतुएँ निम्नलिखित हैं—

(i) रबी—शीत ऋतु में वर्षा के बाद अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य इन फसलों को बोया जाता है। रबी की प्रमुख फसलों में गेहूँ, जौ, मटर, चना व सरसों आदि हैं। इन फसलों की अप्रैल से जून के मध्य कटाई की जाती है।

(ii) खरीफ—देश में वर्षा ऋतु के प्रारम्भ होते ही जून-जुलाई में खरीफ की फसलें बोई जाती हैं। इस ऋतु में बोयी जाने वाली प्रमुख फसलों में चावल, मक्का, कपास, जूट, उड़द, बाजरा, ज्वार, अरहर, सोयाबीन, मूँगफली, जूट व मूँग आदि हैं।

इन फसलों को सितम्बर-अक्टूबर में काट लिया जाता है।

(iii) जायद—यह गर्मी में बोयी जाने वाली कृषि फसल है। रबी व खरीफ की फसल ऋतुओं के मध्य ग्रीष्मकाल में बोई जाने वाली फसल को जायद के नाम से जाना जाता है। इस ऋतु की प्रमुख फसलों में तरबूज, खरबूज, ककड़ी, खीरा, सब्जियाँ आदि हैं।

प्रश्न 3. भारत में चावल या गेहूँ के उत्पादन व वितरण का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत चावल का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक है, जिसका उत्पादन मुख्य रूप से पूर्वी (पश्चिम बंगाल, बिहार), उत्तरी (पंजाब, उत्तरप्रदेश, हरियाणा) और दक्षिणी (आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु) भारत के उपजाऊ नदी बेसिनों में होता है, जहाँ खरीफ (अमन, ऑस) और रबी (बोरो) मौसमों में कई फसलें उगाई जाती हैं; वितरण में घरेलू खपत और विश्व के देशों को निर्यात शामिल हैं, जिससे यह देश की खाद्य सुरक्षा और अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है।

चावल उत्पादन एवं वितरण क्षेत्र

प्रमुख उत्पादक राज्य—पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब, तेलंगाना, असम, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, बिहार, ओडिशा और हरियाणा आदि मुख्य हैं।

भौगोलिक क्षेत्र—

1. पूर्वी भारत—गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन (पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा)।

2. उत्तर भारत—पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड में सिंचाई सुविधाओं के साथ चावल का उत्पादन किया जाता है।

3. दक्षिण भारत—डेल्टा क्षेत्र (आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल)।

4. मध्य भारत—छत्तीसगढ़ को भारत का 'चावल का कटोरा' कहा जाता है।

चावल उत्पादन के शीर्ष पर भारत के तीन राज्य पश्चिम बंगाल, पंजाब और उत्तर प्रदेश हैं।

चावल का वितरण—

1. घरेलू खपत—देश की अधिकांश आबादी के लिए चावल मुख्य भोजन है, जिससे घरेलू बाजार में इसकी बड़ी माँग रहती है।

2. निर्यात—भारत दुनिया में चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा चावल उत्पादक है और विश्व का सबसे बड़ा निर्यातक है। भारत से चावल के निर्यात में बासमती और गैर-बासमती दोनों शामिल हैं, जो वैश्विक बाजार में भेजे जाते हैं।

3. बाजार—वितरण में सरकारी खरीद (न्यूनतम समर्थन मूल्य के तहत), निजी व्यापार और निर्यात शामिल हैं, जो खाद्यान्न सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

4. चुनौतियाँ—पानी की कमी, बढ़ती लागत और जलवायु परिवर्तन जैसे कारक उत्पादन और वितरण को प्रभावित करते हैं, जिससे उत्पादकता और कुशल उपयोग की आवश्यकता है।

गेहूँ उत्पादन एवं वितरण क्षेत्र

भारत में गेहूँ उत्पादन मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी राज्यों (पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश) में होता है, जो देश के कुल उत्पादन का बड़ा हिस्सा है और इन्हें 'भारत का अन्न भंडार' भी कहा जाता है; वितरण प्रणाली सरकारी खरीद (जैसे-एफ.सी.आई.) और सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पी.डी.एस.) के माध्यम से होती है, जो खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है, जिसमें हरित क्रांति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

उत्पादन—(i) प्रमुख राज्य—देश में उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियााणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार और गुजरात मुख्य उत्पादक राज्य हैं।

(ii) प्रमुख क्षेत्र—देश के भौगोलिक क्षेत्र के दृष्टिकोण से सतलुज-यमुना और ऊपरी गंगा के मैदान में गेहूँ का सबसे अधिक उत्पादन (लगभग 68 प्रतिशत) होता है।

(iii) भारत का स्थान—भारत विश्व का दूसरा बड़ा गेहूँ उत्पादक देश है, जो वैश्विक उत्पादन 14 प्रतिशत के करीब है।

(iv) हरित क्रांति—भारत में 1960 के दशक में शुरू हुई हरित क्रांति ने गेहूँ के उत्पादन में भारी वृद्धि की, जिससे देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बना।

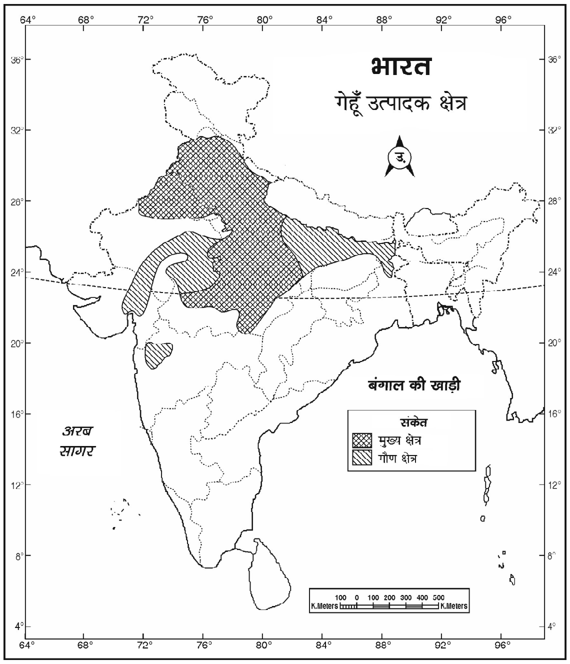

वितरण—

(i) सरकारी खरीद—सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूँ की बड़ी मात्रा खरीदी जाती है।

(ii) भारतीय खाद्य निगम—यह निगम अनाज खरीदता है और उसे भंडारण करता है।

(iii) सार्वजनिक वितरण प्रणाली—इस प्रणाली के माध्यम से कम कीमत पर गेहूँ को गरीब आबादी तक पहुँचाया जाता है, जिससे खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

(iv) भंडारण—देश के सरकारी और निजी गोदामों में भी गेहूँ का भंडारण किया जाता है।

(v) आर्थिक महत्व—यह दूसरी सबसे महत्वपूर्ण अनाज फसल है और देश की खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

प्रश्न 4. भारत में उत्पादित होने वाले मोटे अनाजों को वर्णित कीजिए।

उत्तर—(i) ज्वार—क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से ज्वार देश की तीसरी महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है। अधिकांशतया आर्द्र प्रदेशों में उगाये जाने के कारण इस फसल को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। ज्वार की सर्वाधिक पैदावार महाराष्ट्र में होती है। अन्य उत्पादक राज्य कर्नाटक, तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश व मध्य प्रदेश आदि हैं।

(ii) बाजरा—बाजरे की फसल बलुआ व उथली काली मिट्टी में उत्पादित की जाती है। बाजरे का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य राजस्थान है। अन्य उत्पादक राज्यों में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात व हरियाणा आदि हैं।

(iii) रागी—यह शुष्क प्रदेशों की फसल है जो लाल, काली, बलुआ, दोमट व उथली काली मिट्टी में उगायी जाती है। रागी में प्रचुर मात्रा में पोषक तत्व मिलते हैं। रागी का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य कर्नाटक है। अन्य उत्पादक राज्य हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, झारखण्ड व अरुणाचल प्रदेश आदि हैं।

(iv) दालें—भारत विश्व का सबसे बड़ा दाल उत्पादक देश एवं उपभोक्ता देश है। तुर (अरहर), उड़द, मूँग, मसूर, चना व मटर आदि भारत की प्रमुख दलहनी फसल हैं। दालें कम नमी में पैदा की जा सकती हैं। फलीदार फसल होने के कारण अरहर के अतिरिक्त अन्य सभी दालें वायु से नाइट्रोजन लेकर भूमि की उर्वरता को बनाये रखती हैं।

भारत में दाल के प्रमुख उत्पादक राज्य मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश व कर्नाटक आदि हैं।

(v) मक्का—मक्का एक खरीफ की फसल है, जिसका प्रयोग खाद्यान्न व चारा दोनों रूपों में किया जाता है। इसे उगाने के लिए 21^{o} से 27^{o} सेल्सियस तापमान व पुरानी जलोढ़ मिट्टी आवश्यक होती है।

मक्का के प्रमुख उत्पादक राज्य कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, आन्ध्र प्रदेश एवं तेलंगाना आदि हैं।

प्रश्न 5. भारत की प्रमुख बागवानी फसलों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—भारत की बागवानी फसलों में आम, केला, सेब, अंगूर (फल), आलू, प्याज, टमाटर, गोभी (सब्जियाँ) और मसाले (मिर्च, हल्दी, अदरक, लहसुन) शामिल हैं, जिनमें केला, आम, आलू, प्याज, मिर्च के उत्पादन में भारत विश्व में अग्रणी है, और यह क्षेत्र कृषि सकल मूल्यवर्धित (GVA) का 33 फीसदी योगदान देता है, जिसमें फल, सब्जी, फूल, मेवा, मसाले, कोको और नारियल जैसी फसलें शामिल हैं, जो देश की अर्थव्यवस्था और पोषण सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं।

प्रमुख फसलें

(i) आम—भारत में सबसे ज्यादा उगाया जाने वाला फल है। इसके प्रमुख उत्पादक क्षेत्र उत्तर प्रदेश और आंध्रप्रदेश हैं।

(ii) केला—देश का सबसे अधिक उत्पादित फल है। इसके उत्पादन में तमिलनाडु अग्रणी राज्य है।

(iii) सेब—यह फल देश के तीन राज्य-जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में उगाया जाता है।

(iv) अंगूर—महाराष्ट्र, अंगूर का प्रमुख उत्पादक राज्य है।

(v) अमरूद—अमरूद के उत्पादन में मध्य प्रदेश देश में शीर्षस्थान पर है।

(vi) नींबू और आँवला—भारत इनका भी बड़ा उत्पादक है।

प्रमुख सब्जी फसलें

(i) आलू—भारत में सर्वाधिक उत्पादित सब्जी और सबसे अधिक खेती वाला रकबा होता है।

(ii) टमाटर—आलू के बाद दूसरी सबसे ज्यादा उत्पादित सब्जी टमाटर ही है।

(iii) प्याज—यह देश की महत्वपूर्ण सब्जी है और इसके उत्पादन में वृद्धि जारी है।

देश में गोभी, फूलगोभी, बैंगन और मिर्च जैसी अन्य सब्जियों का उत्पादन भी बड़े पैमाने पर होता है।

अन्य महत्वपूर्ण फसलें

(i) मसाले—भारत मसालों का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक है; जिनमें मिर्च, हल्दी, अदरक और लहसुन प्रमुख हैं।

(ii) नारियल—विश्व के कुल उत्पादन में भारत पहले स्थान पर है; देश में तमिलनाडु अग्रणी राज्य है।

(iii) काजू—भारत दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक, प्रोसेसर और निर्यातक है; इसके उत्पादन में महाराष्ट्र अग्रणी राज्य है।

(iv) कोको—देश में केरल प्रमुख उत्पादक राज्य है।

भारत में बागवानी का महत्व—(i) भारत बागवानी फसलों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है, जो कृषि सकल मूल्य वर्धित (GVA) में 33 प्रतिशत का योगदान देता है। (ii) यह क्षेत्र रोजगार, पोषण सुरक्षा और निर्यात आय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। (iii) एकीकृत बागवानी मिशन जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से फलों, सब्जियों, फूलों, मसालों आदि के समग्र विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है।

प्रश्न 6. भारत की व्यापारिक फसलों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत की प्रमुख व्यापारिक (नकदी) फसलें वे हैं जो उद्योगों को कच्चा माल देती हैं और निर्यात में महत्वपूर्ण हैं, जिनमें गन्ना, कपास, जूट, चाय, कॉफी, तिलहन (मूँगफली, सरसों), रबर और तंबाकू शामिल हैं; जो कृषि आधारित अर्थव्यवस्था और रोजगार में योगदान करती हैं, साथ ही मसाले और फल-सब्जियाँ भी महत्वपूर्ण हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में उगाई जाती हैं और भारतीय बाजार और निर्यात में विविधता लाती हैं।

प्रमुख व्यापारिक फसलें और उनका विवरण

1. गन्ना—देश के चीनी उद्योग का आधार है; विश्व में भारत चीनी के सबसे बड़े उपभोक्ताओं और उत्पादकों में से एक है। देश के उत्पादक राज्यों में उत्तर प्रदेश सबसे प्रमुख उत्पादक राज्य है, लेकिन महाराष्ट्र में सबसे अधिक चीनी मिलें हैं।

2. कपास—वस्त्र उद्योग के लिए कच्चा माल, जो रोजगार और निर्यात को बढ़ावा देता है। देश में मध्य प्रदेश के खरगोन और बड़वानी जैसे क्षेत्र कपास उत्पादन के लिए जाने जाते हैं।

3. जूट—रेशेदार फसल, जिसका उपयोग बोरे, रस्सी और अन्य उत्पादों के लिए होता है, अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

4. चाय—रोपण कृषि का एक उदाहरण है, भारत दुनिया के सबसे बड़े चाय उत्पादकों और निर्यातकों में से एक है, जिसके लिए विशिष्ट जलवायु की आवश्यकता होती है।

5. कॉफी—दक्षिण भारत में उगाई जाती हैं, यह रोपण कृषि का हिस्सा है और निर्यात के लिए महत्वपूर्ण है।

6. तिलहन—मूँगफली, सरसों, अलसी आदि शामिल हैं, जो तेल के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण हैं और विभिन्न राज्यों (जैसे-मध्य प्रदेश में सरसों और मूँगफली में उगाई जाती है।

7. तंबाकू—देश में खासकर मध्यप्रदेश के मंदसौर, नीमच जैसे क्षेत्रों में उगाया जाता है और यह एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है।

8. रबर—औद्योगिक उपयोग के लिए महत्वपूर्ण रोपण कृषि के अंतर्गत आती है।

9. मसाले—लहसुन, मिर्च, धनिया, हल्दी, अदरक आदि मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में प्रमुखता से उगाये जाते हैं और घरेलू व अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में महत्वपूर्ण हैं।

10. फल और सब्जियाँ—अमरूद, नींबू, पपीता, प्याज, आलू, मटर, मिर्च आदि भी व्यापारिक फसलों का हिस्सा हैं, जो विभिन्न राज्यों में बड़े पैमाने पर उत्पादित होते हैं।

व्यापारिक कृषि की प्रकृति—(i) व्यावसायिक उद्देश्य— इन फसलों को केवल बाजार में बेचने और लाभ कमाने के लिए उगाया जाता है, न कि केवल खाने के लिए।

(ii) उद्योगों से जुड़ाव—ये फसलें कपड़ा, चीनी, खाद्य तेल, पेय पदार्थ जैसे उद्योगों के लिए कच्चा माल प्रदान करती हैं।

(iii) आधुनिक तकनीक—बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए मशीनों, आधुनिक उपकरणों और अधिक श्रम का उपयोग किया जाता है।

प्रश्न 7. भारतीय कृषि में अपनाये गये तकनीकी व संस्थागत सुधारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर— तकनीकी और संस्थागत सुधार

भारत में हज़ारों सालों से खेती होती आ रही है। तकनीकी- संस्थागत

बदलावों के बिना भूमि के निरंतर उपयोग ने देश में कृषि विकास की गति को बाधित किया है। भारत में 60% से अधिक आबादी को आजीविका वृद्धि से मिलती है। भारत सरकार ने कृषि उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न तकनीकी और संस्थागत सुधार शुरू किए हैं। प्रथम पंचवर्षीय योजना में भूमि सुधार मुख्य लक्ष्य था।

तकनीकी सुधार—1. 1960 व 1970 के दशकों में पैकेज प्रौद्योगिकी के उपयोग पर आधारित हरित क्रांति और श्वेत क्रांति (ऑपरेशन फ्लड) भारतीय कृषि में सुधार के लिए शुरू की गई कुछ प्रमुख रणनीतियाँ थीं।

2. सतही एवं भूजल सिंचाई एवं ग्रामीण विद्युतीकरण का विकास।

3. उच्च उपज देने वाली किस्मों के बीज, रासायनिक उर्वरक, शाकनाशी और कीटनाशकों का प्रचलन।

4. रेडियो पर किसानों के लिए विशेष मौसम बुलेटिन और कृषि कार्य शुरू किए गए। किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों से परिचित कराने के लिए टेलीविजन और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

5. आधुनिक कृषि उपकरणों और यंत्रों; जैसे— पावर टिलर, ट्रैक्टर, हार्वेस्टर आदि का उपयोग।

6. 1980 और 1990 के दशक में एक व्यापक भूमि विकास कार्यक्रम शुरू किया गया, जिसमें संस्थागत और तकनीकी दोनों सुधार शामिल थे।

संस्थागत सुधार—

1. स्वतंत्रता के बाद सामूहिकीकरण, भूमि जोतों का समेकन (चकबंदी), सहकारिता आदि को सरकार द्वारा प्राथमिकता दी गई।

2. ज़मींदारी प्रथा का उन्मूलन और भूमि सुधार हमारी पहली पंचवर्षीय योजना का मुख्य लक्ष्य थे।

3. किसानों को कम ब्याज दरों पर ऋण सुविधा उपलब्ध कराने के लिए ग्रामीण बैंकों, सहकारी समितियों और बैंकों की स्थापना ।

4. सूखा, बाढ़, चक्रवात, आग और बीमारियों के खिलाफ फसल बीमा का प्रावधान।

5. सरकार दलालों और बिचौलियों से किसानों के शोषण को रोकने हेतु महत्वपूर्ण फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) और लाभकारी खरीद मूल्यों की भी घोषणा करती है।

6. किसान क्रेडिट कार्ड और व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजनाएँ शुरू की गई हैं।

❑❑

5 खनिज तथा ऊर्जा संसाधन

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. बहुवैकल्पिक प्रश्न

(i) निम्नलिखित में से कौन-सा खनिज अपक्षयित पदार्थ के अवशिष्ट भार को त्यागता हुआ चट्टानों के अपघटन से बनता है ?

(क) कोयला (ख) बॉक्साइट (ग) सोना (घ) जस्ता

(ii) झारखण्ड में स्थित कोडरमा निम्नलिखित में से किस खनिज का अग्रणी उत्पादक है ?

(क) बॉक्साइट (ख) अभ्रक
(ग) लौह अयस्क (घ) ताँबा

(iii) निम्नलिखित चट्टानों में से किस चट्टान के स्तरों में खनिजों का निक्षेपण और संचयन होता है ?

(क) तलछटी चट्टानें (ख) आग्नेय चट्टानें
(ग) कायान्तरित चट्टानें (घ) इनमें से कोई नहीं

(iv) मोनाजाइट रेत में निम्नलिखित में से कौन-सा खनिज पाया जाता है ?

(क) खनिज तेल (ख) यूरेनियम
(ग) थोरियम (घ) कोयला

उत्तर—(i) (ख), **(ii)** (ख), **(iii)** (क) **(iv)** (ग)।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए—

(i) निम्नलिखित में अन्तर 30 शब्दों से अधिक न दें—

(क) लौह और अलौह खनिज, (ख) परम्परागत तथा गैर परम्परागत ऊर्जा साधन।

उत्तर—(क) लौह और अलौह खनिज

लौह खनिज	अलौह खनिज
1. ऐसे खनिज अयस्क जिनमें लोहे का अंश होता है, लौह खनिज कहलाते हैं। 2. लौह खनिजों में लौह अयस्क, निकिल, टंगस्टन, क्रोमियम, कोबाल्ट व मैंगनीज़ अयस्क सम्मिलित हैं।	1. ऐसे खनिज अयस्क जिनमें लोहे का अंश नहीं होता है, अलौह खनिज कहलाते हैं। 2. अलौह खनिजों में ताँबा अयस्क, जस्ता, सोना, चाँदी, सीसा, जस्ता आदि सम्मिलित हैं।

(ख) परम्परागत तथा गैर परम्परागत ऊर्जा साधन

परम्परागत ऊर्जा साधन	गैर परम्परागत ऊर्जा साधन
1. ऊर्जा प्राप्ति के वे साधन जिनका उपयोग मनुष्य प्राचीनकाल से करता आ रहा है, परम्परागत ऊर्जा साधन कहलाते हैं। 2. कोयला, पेट्रोलियम, जलशक्ति आदि परम्परागत ऊर्जा के साधनों की श्रेणी में आते हैं। 3. इनके अधिकाधिक उपयोग से पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि होती है।	1. ऊर्जा प्राप्ति के वे साधन जिनका उपयोग मनुष्य ने कुछ वर्षों पूर्व ही प्रारम्भ किया है, गैर-परम्परागत ऊर्जा साधन कहलाते हैं। 2. सौर ऊर्जा, आणविक ऊर्जा व पवन ऊर्जा आदि गैर - परम्परागत ऊर्जा साधनों की श्रेणी में आते हैं। 3. ये साधन पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करते हैं।

(ii) खनिज क्या है?

उत्तर—खनिज प्राकृतिक रूप से उत्पन्न ऐसा तत्व है जिसकी अपनी भौतिक विशेषताएँ होती हैं तथा जिसकी बनावट को रासायनिक गुणों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। खनिज प्रकृति में अनेक रूपों में पाये जाते हैं। ये कठोर हीरे से नरम चूने तक के अनेक रूपों में मिलते हैं।

(iii) आग्नेय तथा कायान्तरित चट्टानों में खनिजों का निर्माण कैसे होता है ?

उत्तर—आग्नेय तथा कायान्तरित चट्टानों में खनिजों का निर्माण दबाव एवं ताप वृद्धि का परिणाम है। ताप, द्रव एवं गैसीय प्रभाव से चट्टानों में विद्यमान खनिज तत्व जब तरल या गैसीय अवस्था में परिवर्तित हो जाते हैं तो यह दरारों के सहारे भू-पृष्ठ की ओर आ जाते हैं तथा ऊपर आकर ठण्डे होकर जम जाते हैं।

(iv) हमें खनिजों के संरक्षण की क्यों आवश्यकता है?

उत्तर—हमें निम्न कारणों से खनिजों के संरक्षण की आवश्यकता है—

(i) खनिजों का निर्माण लाखों वर्षों में होता है। (ii) खनिज निर्माण की भू-गर्भिक प्रक्रिया इतनी धीमी है कि उनके वर्तमान उपयोग दर की तुलना में इनके पुनर्भरण की दर अपरिमित रूप से थोड़ी है। (iii) खनिज संसाधन सीमित एवं अनवीकरण योग्य हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए—

(i) भारत में कोयले के वितरण का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में कोयले का वितरण बहुत ही असमान है। भारत में कोयला दो प्रमुख भू-गर्भिक चट्टानी क्रम में पाया जाता है : (i) गोंडवाना क्रम की चट्टानें (ii) टरशियरी क्रम की चट्टानें।

(i) गोंडवाना क्रम की चट्टानों से सम्पूर्ण भारत का अधिकांश कोयला प्राप्त होता है। गोंडवाना क्षेत्र मुख्यरूप से प्रायद्वीपीय पठारी भागों में स्थित है। इस क्षेत्र में पश्चिमी बंगाल, झारखण्ड, ओडिशा, मध्य प्रदेश, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश व महाराष्ट्र राज्य आते हैं। भारत में गोंडवाना काल का कोयला चार नदी घाटियों—दामोदर घाटी, सोन घाटी, महानदी घाटी एवं गोदावरी-वर्धा घाटी में मिलता है।

(ii) टरशियरी क्रम की चट्टानों से भी कोयला प्राप्त होता है। टरशियरी कोयला क्षेत्र में मेघालय, असम, अरुणाचल, नागालैण्ड, तमिलनाडु एवं राजस्थान राज्य सम्मिलित हैं। इस क्रम की चट्टानों में लिग्नाइट कोयला अधिकांशत: मिलता है जो एक घटिया किस्म का कोयला होता है।

(iii) भारत में सौर-ऊर्जा का भविष्य उज्ज्वल है। क्यों?

उत्तर—भारत में परम्परागत ऊर्जा संसाधनों की बढ़ती कीमतों तथा इनकी संभाव्य कमी ने भविष्य की ऊर्जा आपूर्ति के लिए अनिश्चितताएँ पैदा कर दी हैं। भारत में वर्षपर्यन्त सौर-ऊर्जा प्राप्त होती है। हमारे देश में सौर-ऊर्जा के उत्पादन की क्षमता में वृद्धि हुई है।

सौर-ऊर्जा का नव्यकरणीय एवं प्रदूषणरहित स्रोत होने के कारण भारत में सौर-ऊर्जा का भविष्य उज्ज्वल है। भारत में कई स्थानों पर

सौर–ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए गये हैं। आज देश में सौर–ऊर्जा धीरे–धीरे काफी लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। सौर ऊर्जा का प्रयोग खाना पकाने, पम्प द्वारा पानी निकालने, पानी गर्म करने, प्रशीतन तथा सड़कों की रोशनी करने में किया जाता है। सर्दी में घरों को गर्म करने में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। इस तरह कहा जा सकता है कि भारत में सौर–ऊर्जा का भविष्य उज्ज्वल है।

क्रियाकलाप

नीचे दी गई वर्ग पहेली में उपयुक्त खनिजों का नाम भरें–

नोट : पहेली के उत्तर अंग्रेजी के शब्दों में हैं।

			2		1 M										
	2		M												
					4		3 M								
	4		T												
	1								5					5 T	
6	o														
						7	y								

क्षैतिज	ऊर्ध्वाधर
1. एक लौह खनिज (9)	**1.** प्लेसर निक्षेपों से प्राप्त होता है।
2. सीमेंट उद्योग में प्रयुक्त कच्चा माल (9)	**2.** बेलाडिला में खनन किया जाने वाला लौह–अयस्क (8)
3. चुंबकीय गुणों वाला सर्वश्रेष्ठ लोहा (10)	**3.** विद्युत उद्योग में अपरिहार्य (4)
4. उत्कृष्ट कोटि का कठोर कोयला (10)	**4.** उत्तरी-पूर्वी भारत में मिलने वाले कोयले की भूगर्भिक आयु (8)
5. इस अयस्क से एल्युमिनियम प्राप्त किया जाता है। (7)	**5.** शिराओं तथा शिरानिक्षेपों में निर्मित (3)
6. इस खनिज के लिए खेतड़ी की खदानें प्रसिद्ध हैं। (6)	
7. वाष्पीकरण से निर्मित (6)	

			[2]H		[1]M	A	N	G	A	N	E	S	E		
			E												
	[2]L	I	M	E	S	T	O	N	E						
			A												
			T		[4]T		[3]M	A	G	N	E	T	I	T	E
			I		E		I								
	[4]A	N	T	H	R	A	C	I	T	E					
			E		T		A								
					I				[5]B	A	U	X	I	[5]T	E
	[1]G				A									I	
[6]C	O	P	P	E	R									N	
	L				Y										
	D					[7]G	Y	P	S	U	M				

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. खनिज क्या है? इनके वर्गीकरण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—खनिज—भूवैज्ञानिकों के अनुसार खनिज एक प्राकृतिक रूप से विद्यमान समरूप तत्व है जिसकी एक निश्चित आन्तरिक संरचना होती है। खनिज प्रकृति में अनेक रूपों में पाये जाते हैं, जिसमें कठोर हीरा से लेकर नरम चूना तक सम्मिलित हैं। सामान्य एवं वाणिज्यिक उद्देश्य हेतु खनिजों को निम्नलिखित भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

खनिज
- **धात्विक**
  - लौह धातु (जिसमें लोहे का अंश हो), जैसे—लौह अयस्क, मैंगनीज़, निकल व कोबाल्ट आदि।
  - अलौह धातु, जैसे—ताँबा, सीसा जस्ता व बॉक्साइट आदि
  - बहुमूल्य खनिज, जैसे—सोना, चाँदी, प्लेटिनम आदि
- **अधात्विक**
  - जैसे— अभ्रक, नमक, पोटाश, सल्फर, चूनाश्म/चूना पत्थर, संगमरमर तथा बलुआ पत्थर
- **ऊर्जा खनिज**
  - जैसे— पेट्रेलियम, कोयला तथा प्राकृतिक गैस।

(i) धात्विक खनिज—वे खनिज जिसमें धातु अंश की प्रधानता पायी जाती है, धात्विक खनिज कहलाते हैं। धात्विक खनिज तीन प्रकार के होते हैं—

(अ) लौह खनिज—इन खनिजों में लोहे का अंश होता है, जैसे—लौह अयस्क, मैंगनीज़, निकिल व कोबाल्ट आदि।

(ब) अलौह खनिज—इन खनिजों में लोहे का अंश नहीं होता है, जैसे—ताँबा, सीसा, जस्ता व बॉक्साइट आदि।

(स) बहुमूल्य खनिज—सोना, चाँदी, प्लेटिनम आदि।

(ii) अधात्विक खनिज—वे खनिज जिनमें धातु अंश नहीं पाया जाता है, अधात्विक खनिज कहलाते हैं, जैसे— अभ्रक, नमक, पोटाश, सल्फर, चूना पत्थर, संगमरमर एवं बलुआ पत्थर आदि।

(iii) ऊर्जा खनिज—वे खनिज जिनसे ऊर्जा की प्राप्ति होती है, ऊर्जा खनिज कहलाते हैं, जैसे—कोयला, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस आदि।

प्रश्न 2. भारत में लौह अयस्क का वितरण समझाइए।

उत्तर—आधुनिक यांत्रिक युग में लोहा प्रत्येक देश के आर्थिक विकास की धुरी है। इससे सुई से लेकर विशालकाय जलपोत एवं विभिन्न संयन्त्र आदि का निर्माण किया जाता है। इसलिए आधुनिक युग को लौह-इस्पात का युग भी कहा जा सकता है। लोहे की कच्ची धातु लौह अयस्क कहलाती है।

भारत में लौह अयस्क का वितरण—भारत में लौह अयस्क के प्रचुर भंडार हैं। देश में लौह अयस्क के दो प्रमुख प्रकार—हेमेटाइट एवं मैग्नेटाइट पाये जाते हैं। हमारे देश के लौह अयस्क में लोहे की मात्रा 70-72 प्रतिशत तक होती है। लौह अयस्क की खदानें देश के उत्तर-पूर्वी पठारी प्रदेश में कोयला क्षेत्रों के निकट स्थित हैं। लौह अयस्क के कुल आरक्षित भण्डारों का लगभग 95 प्रतिशत भाग ओडिशा, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ एवं कर्नाटक राज्यों में स्थित है। 2016-17 में लौह-अयस्क का उत्पादन सबसे अधिक ओडिशा (52%), इसके पश्चात्, छत्तीसगढ़ (16%), कर्नाटक (14%), झारखण्ड (11.%) व अन्य (7%) में हुआ।

भारत में लौह अयस्क की प्रमुख पेटियाँ निम्नलिखित हैं—

1. ओडिशा-झारखण्ड पेटी—ओडिशा में उच्चकोटि का हेमेटाइट किस्म का लौह अयस्क मयूरभंज व केंदूझर जिलों में बादाम पहाड़ की खदानों से निकाला जाता है। झारखण्ड राज्य के सिंहभूमि जिले में गुआ एवं नोआमुंडी से हेमेटाइट अयस्क प्राप्त किया जाता है।

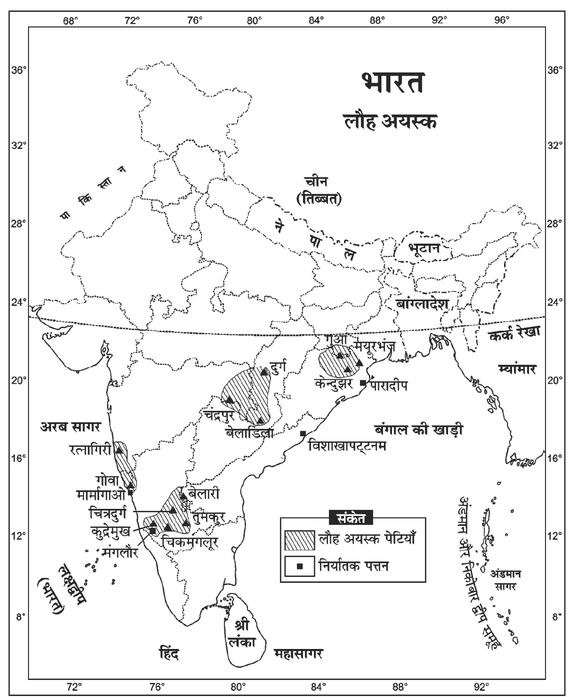

2. दुर्ग-बस्तर-चंद्रपुर पेटी—लौह अयस्क की यह पेटी महाराष्ट्र एवं छत्तीसगढ़ राज्यों में फैली हुई है। छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले में बेलाडिला पहाड़ी शृंखलाओं से उत्तम किस्म का हेमेटाइट लौह अयस्क प्राप्त होता है। यहाँ लौह अयस्क के 14 जमाव मिलते हैं। इन खदानों से लौह अयस्क विशाखापट्टनम बन्दरगाह से जापान एवं दक्षिण कोरिया को निर्यात किया जाता है।

3. बेलारी-चित्रदुर्ग, चिक्कमंगलूरू-तुमकूरू पेटी—लौह अयस्क की यह पेटी कर्नाटक राज्य में स्थित है। इस पेटी में लौह अयस्क की विशाल राशि संचित है। कर्नाटक के पश्चिमी घाट में स्थित कुद्रेमुख की खानों से सम्पूर्ण लौह अयस्क का निर्यात कर दिया जाता है। कुद्रेमुख विश्व के सबसे बड़े लौह अयस्क निक्षेपों में से एक है।

4. महाराष्ट्र-गोवा पेटी—यह पेटी गोवा एवं महाराष्ट्र राज्य के रत्नागिरि जिले में स्थित है। इस पेटी से प्राप्त लौह अयस्क उत्तम किस्म का नहीं होता है। मार्मागाओ बन्दरगाह से इसका निर्यात कर दिया जाता है।

प्रश्न 3- अलौह खनिजों के वितरण का वर्णन कीजिए।

उत्तर—अलौह खनिजों (जैसे—ताँबा, बॉक्साइट, सोना, अभ्रक) का वितरण विश्वभर में असमान है, जो भौगोलिक संरचना और भूगर्भीय प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है; भारत में, ये मुख्य रूप से प्रायद्पीय पठार (ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश) में पाए जाते हैं, जबकि बॉक्साइट ओडिशा और झारखंड में, ताँबा मध्यप्रदेश और राजस्थान में और सोना कर्नाटक में केंद्रित है, जो विभिन्न उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

अलौह खनिजों के प्रमुख प्रकार और उनका वितरण

1. बॉक्साइट (एल्युमीनियम का अयस्क)—भारत— ओडिशा (कालाहांडी, संबलपुर, कोरापुट), झारखंड (लोहरदगा), छत्तीसगढ़ (अमरकंटक पठार), मध्य प्रदेश (अमरकंटक, बालाघाट), गुजरात (खेड़, अमरेली) और महाराष्ट्र में पाया जाता है।

विश्व—आस्ट्रेलिया, गिनी, ब्राजील और जमैका में पाया जाता है।

2. ताँबा—भारत— मध्यप्रदेश (बालाघाट), राजस्थान (खेतड़ी), झारखंड (सिंहभूमजिला) प्रमुख उत्पादक राज्य हैं।

विश्व—चिली, पेरू, चीन, अमेरिका में पाया जाता है।

3. सोना—भारत—कर्नाटक (कोलार, हट्टी), आंध्र प्रदेश (रामगिरी) में भंडार हैं, हालाँकि कोलार की खदानें बंद हो चुकी हैं।

विश्व—चीन, ऑस्ट्रेलिया, रूस, दक्षिण अफ्रीका सबसे बड़े उत्पादक हैं।

4. अभ्रक—भारत—छोटा नागपुर पठार (झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल), राजस्थान (अजमेर) और आंध्र प्रदेश (नेल्लोर) में पाया जाता है।

विश्व—ब्राजील, मेडागास्कर, रूस और फिनलैंड में मिलता है।

5. अन्य अलौह खनिज (सीसा, जस्ता, टिन आदि)—सीसा और जस्ता—भारत में राजसीान, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में मिलते हैं।

टिन—विश्व स्तर पर चीन, इंडोनेशिया और दक्षिण अमेरिका में पाया जाता है।

वितरण के मुख्य कारक

1. भूगर्भीय संरचना—ये खनिज अक्सर प्राचीन क्रिस्टलीय चट्टानों (प्रायद्वीपीय भारत) और लैटेराइट निक्षेपों से जुड़े होते हैं।

2. जलवायु और अपक्षय—बॉक्साइट जैसे खनिजों का निर्माण चट्टानों के अपघटन से होता है।

3. उद्योगों की आवश्यकता—विभिन्न उद्योगों (विमानन, इलेक्ट्रॉनिक्स, निर्माण) के लिए इनकी माँग, इनके वितरण को आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण बनाती है।

संक्षेप में, अलौह खनिजों का वितरण पृथ्वी की पपड़ी की विविधता को दर्शाता है, जो स्थानीय भूगर्भीय इतिहास और रासायनिक प्रक्रियाओं का परिणाम है, जिससे कुछ क्षेत्रों में इनकी प्रचुरता है और अन्य में कमी।

प्रश्न 4. ऊर्जा के परम्परागत स्रोतों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

उत्तर—परम्परागत ऊर्जा स्रोत—लकड़ी, कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, जल व तापीय विद्युत आदि।

कोयला—भारत में सबसे प्रचुर मात्रा में पाया जाने वाला जीवाश्म ईंधन कोयला है।

कोयला के विभिन्न रूप एवं उनका महत्व—कोयले का उपयोग विद्युत उत्पादन, उद्योगों एवं घरेलू आवश्यकता के लिए ऊर्जा की आपूर्ति के लिए किया जाता है। भारत अपनी वाणिज्यिक ऊर्जा की आवश्यकता की पूर्ति हेतु मुख्य रूप से कोयले पर निर्भर है।

कोयला मुख्य रूप से निम्नलिखित चार प्रकार का होता है—

(i) **एन्थ्रेसाइट**—यह सर्वोत्तम गुण वाला कठोर कोयला है। इसमें कार्बन की मात्रा सर्वाधिक होती है।

(ii) **बिटुमिनस**—गहराई में दबे तथा अधिक तापमान से प्रभावित कोयला को बिटुमिनस के नाम से जाना जाता है। वाणिज्यिक उपयोग में यह कोयला सर्वाधिक लोकप्रिय है। परन्तु शोधन में उच्च श्रेणी के बिटुमिनस कोयले का उपयोग किया जाता है। लोहे के प्रगलन में इस कोयले का विशेष महत्व है।

(iii) **लिग्नाइट**—यह निम्न किस्म का भूरा कोयला होता है। यह मुलायम होने के साथ अधिक नमीयुक्त होता है। भारत में लिग्नाइट के मुख्य भण्डार तमिलनाडु के नैवेली क्षेत्र में पाये जाते हैं। लिग्नाइट कोयले का उपयोग विद्युत उत्पादन में किया जाता है।

(iv) **पीट**—इस प्रकार का कोयला दलदली भागों में क्षय होने वाले पेड़-पौधों से उत्पन्न होता है। इसमें कार्बन की मात्रा कम एवं नमी की मात्रा अधिक होती है। अधिक नमी के कारण पीट कोयले की ताप क्षमता कम होती है।

प्रश्न 5. परम्परागत ऊर्जा स्रोत के रूप में कोयले की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—परम्परागत ऊर्जा स्रोत—लकड़ी, कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, जल व तापीय विद्युत आदि।

कोयला—भारत में सबसे प्रचुर मात्रा में पाया जाने वाला जीवाश्म ईंधन कोयला है।

कोयला के विभिन्न रूप एवं उनका महत्व—कोयले का उपयोग विद्युत उत्पादन, उद्योगों एवं घरेलू आवश्यकता के लिए ऊर्जा की आपूर्ति के लिए किया जाता है। भारत अपनी वाणिज्यिक ऊर्जा की आवश्यकता की पूर्ति हेतु मुख्य रूप से कोयले पर निर्भर है।

कोयला मुख्य रूप से निम्नलिखित चार प्रकार का होता है—

(i) **एन्थ्रेसाइट**—यह सर्वोत्तम गुण वाला कठोर कोयला है। इसमें कार्बन की मात्रा सर्वाधिक होती है।

(ii) **बिटुमिनस**—गहराई में दबे तथा अधिक तापमान से प्रभावित कोयला को बिटुमिनस के नाम से जाना जाता है। वाणिज्यिक उपयोग में यह कोयला सर्वाधिक लोकप्रिय है। परन्तु शोधन में उच्च श्रेणी के बिटुमिनस कोयले का उपयोग किया जाता है। लोहे के प्रगलन में इस कोयले का विशेष महत्व है।

(iii) **लिग्नाइट**—यह निम्न किस्म का भूरा कोयला होता है। यह मुलायम होने के साथ अधिक नमीयुक्त होता है। भारत में लिग्नाइट के मुख्य भण्डार तमिलनाडु के नैवेली क्षेत्र में पाये जाते हैं। लिग्नाइट कोयले का उपयोग विद्युत उत्पादन में किया जाता है।

(iv) **पीट**—इस प्रकार का कोयला दलदली भागों में क्षय होने वाले पेड़-पौधों से उत्पन्न होता है। इसमें कार्बन की मात्रा कम एवं नमी की मात्रा अधिक होती है। अधिक नमी के कारण पीट कोयले की ताप क्षमता कम होती है।

प्रश्न 6. गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—गैर-परम्परागत ऊर्जा संसाधनों से अभिप्राय ऐसे ऊर्जा संसाधनों से है जो आधुनिक वैज्ञानिक युग की देन हैं। इनके अन्तर्गत सौर-ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, भूतापीय ऊर्जा, बायो गैस एवं परमाणु ऊर्जा को सम्मिलित किया जाता है। इनमें से अधिकांश सतत् एवं सनातन हैं। आणविक ऊर्जा ऐसा गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोत है, जो असमाप्य है।

भारत में प्रमुख गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधन (शक्ति के साधन) निम्नलिखित हैं—

1. सौर ऊर्जा, 2. पवन ऊर्जा, 3. बायो गैस 4. भूतापीय ऊर्जा 5. ज्वारीय ऊर्जा 6. परमाणु ऊर्जा।

1. सौर ऊर्जा—गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोतों में सौर-ऊर्जा सर्वोपरि है। सौर-ऊर्जा सूर्य से प्राप्त होती है। भारत में सौर ऊर्जा के विकास की असीम सम्भावनाएँ हैं। फोटोवोल्टाइक विधि से धूप को सीधे विद्युत में परिवर्तित किया जाता है। भारत के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में सौर ऊर्जा तेजी से लोकप्रिय हो रही है।

2. पवन ऊर्जा—पवन की गति से उत्पन्न ऊर्जा पवन ऊर्जा कहलाती है। यह पूर्ण रूप से प्रदूषणमुक्त एवं ऊर्जा का असमाप्य स्रोत है। पवन ऊर्जा को पवनचक्कियों से प्राप्त किया जाता है। पवन की गतिज ऊर्जा को टरबाइन के माध्यम से विद्युत ऊर्जा में बदला जाता है। इस ऊर्जा का मुख्य उपयोग कुओं से पानी निकालने, सिंचाई एवं विद्युत उत्पादन में किया जाता है। भारत में पवन ऊर्जा फार्म की विशालतम पेटी तमिलनाडु में नागरकोइल से मदुरई तक फैली हुई है।

इसके अतिरिक्त आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, केरल, महाराष्ट्र एवं लक्षद्वीप में भी महत्वपूर्ण पवन ऊर्जा फार्म स्थापित हैं। तमिलनाडु में नागरकोइल एवं राजस्थान का जैसलमेर देश में पवन ऊर्जा के प्रभावी उपयोग के लिए जाने जाते हैं।

3. बायो गैस—भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में झाड़ियों, कृषि अपशिष्टों, पशुओं और मानवजनित अपशिष्टों के उपयोग से घरेलू उपयोग हेतु बायो गैस उत्पन्न की जाती है। यह गैस जैविक पदार्थों के अपघटन से उत्पन्न होती है। भारत में पशुओं का गोबर प्रयोग करने वाले संयंत्र गोबर गैस संयंत्र के नाम से जाने जाते हैं। ऊर्जा प्राप्ति का यह साधन पर्यावरण को संरक्षित करने वाला है।

4. भू-तापीय ऊर्जा—पृथ्वी के आंतरिक भागों में ताप का प्रयोग कर उत्पन्न की जाने वाली विद्युत को भू-तापीय ऊर्जा कहते हैं। भारत में सैकड़ों गर्म पानी के झरने हैं जिनका विद्युत उत्पादन में प्रयोग किया जा सकता है। भू-तापीय ऊर्जा के दोहन के लिए भारत में दो प्रौद्योगिक परियोजनाएँ प्रारम्भ की गयी हैं—

(i) पार्वती घाटी—मणिकरण (हिमाचल प्रदेश), (ii) पूगा घाटी—लद्दाख।

5. ज्वारीय ऊर्जा—महासागरों में उठने वाली तरंगों का प्रयोग विद्युत उत्पादन में किया जा सकता है। भारत में ज्वारीय तरंगों द्वारा ऊर्जा उत्पन्न करने की आदर्श दशाएँ खम्भात की खाड़ी, कच्छ की खाड़ी और पश्चिमी तट पर गुजरात में तथा पश्चिम बंगाल में सुन्दरवन क्षेत्र में गंगा के डेल्टा में पाई जाती है।

6. परमाणु ऊर्जा—परमाणु ऊर्जा अथवा आणविक ऊर्जा अणुओं की संरचना को बदलने से प्राप्त की जाती है। भारत के झारखण्ड एवं राजस्थान में मिलने वाले यूरेनियम व थोरियम का प्रयोग परमाणु ऊर्जा के उत्पादन में किया जाता है। भारत में आणविक ऊर्जा के उत्पादन हेतु तारापुर (महाराष्ट्र), रावतभाटा (राजस्थान), कलपक्कम (तमिलनाडु), नरोरा (उत्तर प्रदेश), काकरापारा (गुजरात) एवं कैगा (कर्नाटक) में अणु विद्युत गृहों की स्थापना की गई है।

प्रश्न 7. ऊर्जा संरक्षण के विविध उपायों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—ऊर्जा संरक्षण के उपायों में उपयोग न होने पर लाइट-पंखे बंद करना, एलईडी और सीएफएल बल्बों का उपयोग करना, दिन में प्राकृतिक प्रकाश का उपयोग करना, उपकरणों को धूल मुक्त रखना, आई.एस.आई.मार्क वाले उपकरण इस्तेमाल करना, घर को इंसुलेट करना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना और ऊर्जा-कुशल उपकरणों जैसे टी5 ट्यूबलाइट का प्रयोग करना शामिल है, जिससे बिजली बिल कम होता है और प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव घटता है।

ऊर्जा संरक्षण के विभिन्न उपाय—

1. घरेलू स्तर पर—(i) **प्रकाश व्यवस्था—**कमरे बाहर जाते समय लाइट और पंखे बंद कर दें। एल.ई.डी. और सी.एफ.एल. बल्बों का उपयोग करें, ये साधारण बल्बों से कम बिजली खपत करते हैं। ट्यूबलाइट और बल्बों पर जमी धूल को नियमित रूप से साफ करें, क्योंकि धूल प्रकाश को सोख लेती है। दिन के समय प्राकृतिक रोशनी का अधिकतम उपयोग करें और हल्की रंगत वाले पर्दे लगाएँ। टास्क लाइटिंग (जैसे कीडिंग लैंप) का उपयोग करें, जो केवल जरूरी जगह पर प्रकाश देती है। (ii) **उपकरणों का उपयोग—**उपयोग न होने वाले उपकरणों (जैसे-टी.वी., कम्प्यूटर) का प्लग निकाल दें। ऊर्जा की बचत करने वाले (स्टार-रेटेड) और आई.एस.आई. मार्क वाले उपकरण खरीदें। पंखों के लिए पारंपरिक रेगुलेटर का इस्तेमाल करें। (iii) **रसोईघर—**खाना पकाते समय बर्तन ढँककर रखें, इससे खाना जल्दी पकता है और ऊर्जा बचती है। जरूरत के अनुसार ही पानी का प्रयोग करें और नल खुले न छोड़ें। (iv) **घर की बनावट—**खिड़कियों और दरवाजों को अच्छी तरह सील करें ताकि बाहर की गर्मी या ठंड अंदर न आए। गर्मियों में पंखे बंद रखें और सर्दियों में खुले में रखें ताकि प्राकृतिक लाभ मिल सके।

2. परिवहन—कम दूरी के लिए पैदल चलें या साइकिल का उपयोग करें। जब संभव हो, सार्वजनिक परिवहन (बस, ट्रेन) का उपयोग करें।

3. व्यवहार में बदलाव—गर्मी बढ़ाने के बजाय स्वेटर पहनें और ए.सी.की जगह पंखे का इस्तेमाल करें। ऊर्जा की खपत कम करने वाली गतिविधियों में भाग लें, जैसे—किताबें पढ़ना (इलेक्ट्रॉनिक्स के बजाय)।

इन उपायों को अपनाकर हम न केवल अपने बिजली बिल में बचत कर सकते हैं, बल्कि देश के प्राकृतिक संसाधनों को भी बचा सकते हैं।

❑❑

6 विनिर्माण उद्योग

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. बहुवैकल्पिक प्रश्न

(i) निम्नलिखित में से कौन-सा उद्योग चूना पत्थर को कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त करता है?

(क) एल्यूमिनियम (ख) प्लास्टिक
(ग) सीमेंट (घ) मोटरगाड़ी

(ii) निम्नलिखित में से कौन-सा उद्योग बॉक्साइट का कच्चे माल के रूप में प्रयोग करता है?

(क) एल्यूमिनियम प्रगलन (ख) सीमेंट
(ग) कागज (घ) स्टील

(iii) निम्नलिखित में कौन-सा उद्योग दूरभाष, कम्प्यूटर आदि संयन्त्र निर्मित करता है?

(क) स्टील (ख) एल्यूमिनियम
(ग) इलेक्ट्रॉनिक (घ) सूचना प्रौद्योगिकी

उत्तर—**(i)** (ग), **(ii)** (क), **(iii)** (ग)।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए—

(i) विनिर्माण क्या है ?

उत्तर—कच्चे माल को मूल्यवान उत्पाद में परिवर्तित कर अधिक मात्रा में वस्तुओं के उत्पादन को विनिर्माण या वस्तु निर्माण कहा जाता है। उदाहरण के लिए; गन्ने से चीनी, कपास से सूती वस्त्र, लौह अयस्क से लौह इस्पात तथा बॉक्साइट से एल्यूमिनियम निर्माण इसी प्रक्रिया के उदाहरण हैं।

(ii) आधारभूत उद्योग क्या है ? उदाहरण देकर बताएँ।

उत्तर—ऐसे उद्योग जिनके उत्पादन पर अन्य उद्योग निर्भर करते हैं, आधारभूत उद्योग कहलाते हैं। आधारभूत उद्योगों द्वारा उत्पादित माल अन्य उद्योगों के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है।

उदाहरण—लोहा-इस्पात उद्योग, ताँबा प्रगलन, ऐल्यूमिनियम प्रगलन उद्योग आदि।

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए—

(i) उद्योग पर्यावरण को कैसे प्रदूषित करते हैं ?

उत्तर—उद्योग चार प्रकार से पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं—

1. वायु प्रदूषण—रसायन व कागज उद्योग, ईंटों के भट्टे, तेलशोधन शालाएँ, प्रगलन उद्योग, जीवाश्म ईंधन दहन एवं छोटे-बड़े कारखाने से निकलने वाले धुएँ से पर्यावरण प्रदूषित होता है। जहरीली गैसों का रिसाव बहुत भयानक एवं दूरगामी प्रभाव डालता है। वायु प्रदूषण, मानव स्वास्थ्य के अतिरिक्त पशुओं, पेड़-पौधों, इमारतों एवं सम्पूर्ण पर्यावरण पर दुष्प्रभाव डालता है।

2. जल प्रदूषण—विभिन्न उद्योगों द्वारा कार्बनिक एवं अकार्बनिक अपशिष्ट पदार्थों की नदी व तालाबों में छोड़ने से जल प्रदूषण

फैलता है। जल प्रदूषण के प्रमुख कारक कागज, लुगदी, रसायन, वस्त्र रँगाई उद्योग, तेलशोधन शालाएँ, चमड़ा उद्योग, इलेक्ट्रोप्लेटिंग उद्योग हैं जो रंग, अपमार्जक, अम्ल, लवण एवं भारी धातुएँ; जैसे—सीसा, पारा, कीटनाशक, उर्वरक, प्लास्टिक, कार्बन, रबर एवं कृत्रिम रसायन आदि जल में बहा देते हैं। ये अशुद्धियाँ जल को प्रदूषित करने के साथ-साथ पर्यावरण को भी प्रदूषित कर देती हैं।

3. तापीय प्रदूषण—कारखानों तथा तापघरों से निकला गर्म पानी नदियों एवं तालाबों के जल को गर्म कर देता है। इसे तापीय प्रदूषण कहते हैं। तापीय प्रदूषण का जलीय जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। जल में रहने वाली मछलियाँ व अन्य जीव मर जाते हैं।

4. ध्वनि प्रदूषण—ध्वनि प्रदूषण औद्योगिक एवं निर्माण-कार्य, कारखानों के उपकरण, जेनरेटर, लकड़ी चीरने के कारखाने, गैस यांत्रिकी एवं विद्युत ड्रिल आदि द्वारा होता है। ध्वनि प्रदूषण से मानसिक खिन्नता एवं उत्तेजना, श्रवण अक्षमता, रक्तचाप आदि शारीरिक समस्याओं में वृद्धि होती है।

(ii) उद्योगों द्वारा पर्यावरण निम्नीकरण को कम करने के लिए उठाए गए विभिन्न उपायों की चर्चा करें।

उत्तर—उद्योगों द्वारा पर्यावरण निम्नीकरण को कम करने के लिए अग्रलिखित उपाय किये जा सकते हैं—

1. जल की आवश्यकता पूर्ति हेतु वर्षाजल का संग्रहण करना।
2. विभिन्न प्रक्रियाओं में जल का न्यूनतम उपयोग करना।
3. जल का दो या अधिक उत्तरोत्तर अवस्थाओं में पुनर्चक्रण द्वारा पुन: उपयोग करना।
4. नदियों एवं तालाबों में गर्म जल व अपशिष्ट पदार्थों को प्रवाहित करने से पहले उनका शोधन करना। औद्योगिक अपशिष्ट का शोधन तीन चरणों में किया जा सकता है—

(i) यांत्रिक साधनों द्वारा प्राथमिक शोधन के अन्तर्गत अपशिष्ट पदार्थों की छँटाई, उनके छोटे-छोटे टुकड़े करना, ढकना एवं तलछट जमाव आदि को सम्मिलित किया जाता है, (ii) जैविक प्रक्रियाओं द्वारा द्वितीयक शोधन, (iii) जैविक, रासायनिक एवं भौतिक प्रक्रियाओं द्वारा तृतीयक शोधन अर्थात् प्रदूषित जल को पुन: चक्रीय प्रक्रिया द्वारा प्रदूषण मुक्त किया जाता है।

5. भूमिगत जल स्तर कम होने वाले क्षेत्रों में उद्योगों द्वारा अधिक जल निष्कासन पर कानूनी प्रतिबन्ध लगाया जाए।
6. वायु में निलंबित प्रदूषण को कम करने के लिए कारखानों में ऊँची चिमनियाँ, चिमनियों में इलेक्ट्रॉस्टेटिक अवक्षेपण, स्क्रबर उपकरण एवं गैसीय प्रदूषक पदार्थों को जड़त्वीय रूप से पृथक् करने के लिए उपकरण लगाया जाना चाहिए।
7. कारखानों में कोयले की अपेक्षा तेल व गैस के प्रयोग से धुएँ के निष्कासन में कमी लाई जा सकती है।
8. मशीनों एवं उपकरणों का उपयोग किया जाना चाहिए एवं जेनरेटरों में साइलेंसर लगाया जा सकता है।
9. ऐसी मशीनरी का प्रयोग किया जाए जो ऊर्जा सक्षम हों एवं कम ध्वनि प्रदूषण करती हों।
10. ध्वनि अवशोषण करने वाले उपकरणों के उपयोग के साथ-साथ कानों पर शोर नियंत्रक उपकरण भी पहनने चाहिए।

क्रियाकलाप

प्रश्न—उद्योगों के संदर्भ में प्रत्येक के लिए एक शब्द दें (संकेतिक अक्षर संख्या कोष्ठक में दी गई है तथा उत्तर अंग्रेजी के शब्दों में है)

(i) मशीनरी चलाने में प्रयुक्त

(5) P ....

(ii) कारखानों में काम करने वाले व्यक्ति

(6) W ....

(iii) उत्पाद को जहाँ बेचा जाता है

(6) M ....

(iv) वह व्यक्ति जो सामान बेचता है

(8) R ....

(v) वस्तु उत्पादन

(7) P ....

(vi) निर्माण या उत्पादन

(11) M ....

(vii) भूमि जल तथा वायु अवनयन

(9) P ....

उत्तर—(i) POWER, (ii) WORKER, (iii) MARKET, (iv) RETAILOR, (v) PRODUCT, (vi) MANUFACTURE, (vii) POLLUTION.

प्रोजेक्ट कार्य

प्रश्न—अपने क्षेत्र के एक कृषि आधारित तथा एक खनिज आधारित उद्योग को चुनें।

(i) ये कच्चे माल के रूप में क्या प्रयोग करते हैं ?

(ii) विनिर्माण प्रक्रिया में अन्य निवेश क्या हैं जिनसे परिवहन लागत बढ़ती है ?

(iii) क्या ये कारखाने पर्यावरण नियमों का पालन करते हैं?

उत्तर—कृषि आधारित उद्योग : चीनी उद्योग

(i) गन्ना। (ii) पूँजी, श्रम, विद्युत, जल एवं परिवहन आदि। (iii) हाँ, कारखाना पर्यावरण नियमों का पालन करता है।

खनिज आधारित उद्योग : सीमेंट उद्योग

(i) चूना पत्थर, डोलोमाइट, मैंगनीज व कोयला। (ii) पूँजी, श्रम, विद्युत, जल एवं परिवहन आदि। (iii) हाँ, यह कारखाना पर्यावरण नियमों का पालन करता है।

प्रश्न—निम्न वर्ग पहेली में क्षैतिज अथवा ऊर्ध्वाधर अक्षरों को जोड़ते हुए निम्न प्रश्नों के उत्तर दें—

नोट—पहेली के उत्तर अंग्रेजी के शब्दों में हैं।

G	G	G	P	(vi) V	A	R	A	N	A	S	I
U	O	(iii) J	I	P	G	X	K	M	Q	W	V
K	(ii) S	U	G	A	R	C	A	N	E	E	N
O	T	T	O	N	O	Z	V	O	P	T	R
A	U	E	L	U	(v) B	H	I	L	A	I	U
T	K	O	C	R	A	Q	N	T	R	L	N
E	(iv) I	R	O	N	S	T	E	E	L	S	J
E	N	A	N	O	E	P	I	T	L	R	Y
G	A	N	U	J	D	R	A	G	D	T	A
N	T	A	R	P	O	A	P	U	E	P	Y
A	S	N	A	E	N	J	D	I	Y	S	K
S	M	H	V	L	I	A	J	H	S	K	G

(i) वस्त्र, चीनी, वनस्पति तेल तथा रोपण उद्योग जो कृषि से कच्चा माल प्राप्त करते हैं, उन्हें कहते हैं ....

(ii) चीनी उद्योग में प्रयुक्त होने वाला कच्चा पदार्थ।

(iii) इस रेशे को गोल्डन फाइबर (Golden Fibre) भी कहते हैं।

(iv) लौह-अयस्क, कोकिंग कोयला तथा चूना पत्थर इस उद्योग के प्रमुख कच्चे माल हैं।

(v) छत्तीसगढ़ में स्थित सार्वजनिक क्षेत्र का लोहा-इस्पात उद्योग।

(vi) उत्तर प्रदेश में इस स्थान पर डीजल रेलवे इंजन बनाए जाते हैं।

उत्तर—(i) AGRO BASED, (ii) SUGARCANE, (iii) JUTE, (iv) IRONSTEEL, (v) BHILAI, (vi) VARANASI.

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. विनिर्माण उद्योग क्या है? इनके महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—विनिर्माण उद्योग, वह क्षेत्र है जहाँ कच्चे माल, घटकों या पदार्थों को मशीनों, श्रम और रासायनिक प्रक्रियाओं का उपयोग करके अधिक मूल्यवान तैयार उत्पादों (जैसे— ऑटोमोबाइल, कपड़े, कम्प्यूटर, रसायन) में बदला जाता है, जिन्हें सीधे उपभोक्ताओं या अन्य व्यवसायों को बेचा जा सकता है। यह उद्योग कच्चे माल के रूपांतरण, उत्पादों के निर्माण, प्रसंस्करण और संयोजन पर आधारित है, जो अक्सर औद्योगिक प्रणालियों और गुणवत्ता नियंत्रण का उपयोग करता है।

विनिर्माण उद्योग की मुख्य विशेषताएँ

1. कच्चे माल का रूपांतरण—यह एक प्राकृतिक संसाधनों या घटकों को उपयोगी वस्तुओं में परिवर्तित करता है।

2. श्रम और मशीनरी का उपयोग—इसमें मानव श्रम के साथ-साथ स्वचालित मशीनरी, उपकरण और औद्योगिक प्रणालियाँ शामिल होती हैं।

3. उत्पाद विविधता—ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, वस्त्र, खाद्य प्रसंस्करण, एयरोस्पेस और रसायन जैसे कई प्रकार के उत्पाद इसमें बनते हैं।

4. बी.2बी. और बी.2सी.—तैयार उत्पादों को सीधे उपभोक्ताओं (बी.2सी.) या अन्य व्यवसायों (बी.2बी.) को बेचा जा सकता है।

विनिर्माण उद्योग को निम्न कारणों से विकास की रीढ़ माना जाता है—

(i) यह द्वितीयक एवं तृतीयक सेवाओं में रोजगार के अवसर उपलब्ध करा कर कृषि पर जनसंख्या की निर्भरता को कम करता है। (ii) देश के विभिन्न भागों में स्थापित विनिर्माण उद्योग लोगों को रोजगार उपलब्ध कराकर गरीबी को कम करने का प्रयास करते हैं। (iii) जनजातीय एवं पिछड़े क्षेत्रों में स्थापित विनिर्माण उद्योग क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में सहायक होते हैं। (iv) विनिर्माण उद्योगों से प्राप्त उत्पादों के निर्माण से व्यापार और वाणिज्य का विस्तार होता है तथा देश को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

संक्षेप में, विनिर्माण उद्योग अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जो कच्चे माल को अनंतिम उपयोग वाले उत्पादों में बदलकर मूल्य जोड़ता है और रोजगार पैदा करता है।

प्रश्न 2. उद्योगों के वर्गीकरण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—उद्योगों का वर्गीकरण अग्रलिखित आधारों पर किया जा सकता है—

1. प्रयुक्त कच्चे माल के स्रोत के आधार पर–

(i) कृषि आधारित उद्योग–वे उद्योग जिन्हें अपना कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता है, कृषि आधारित उद्योग कहलाते हैं। उदाहरण–सूती वस्त्र, ऊनी वस्त्र, पटसन, रेशम वस्त्र, चीनी, चाय, कॉफी एवं वनस्पति तेल उद्योग आदि।

(ii) खनिज आधारित उद्योग–वे उद्योग जिन्हें अपना कच्चा माल खनिजों से प्राप्त होता है, खनिज आधारित उद्योग कहलाते हैं। उदाहरण–लोहा व इस्पात, सीमेंट, एल्यूमिनियम, मशीन, औजार एवं पेट्रो-रसायन उद्योग।

2. प्रमुख भूमिका के आधार पर–

(i) आधारभूत उद्योग–वे उद्योग जिनके उत्पादन या कच्चे माल पर दूसरे उद्योग निर्भर रहते हैं, आधारभूत उद्योग कहलाते हैं। **उदाहरण**–लोहा-इस्पात, ताँबा-प्रगलन एवं एल्यूमिनियम- प्रगलन उद्योग।

(ii) उपभोक्ता उद्योग–वे उद्योग जो उपभोक्ताओं के सीधे उपयोग हेतु उत्पादन करते हैं, उपभोक्ता उद्योग कहलाते हैं। उदाहरण–चीनी, दंत-मंजन, कागज, पंखे, सिलाई-मशीन आदि।

3. पूँजी निवेश के आधार पर–

(i) लघु उद्योग–यदि उद्योग में निवेशित पूँजी एक करोड़ रुपये से कम हो तो यह लघु उद्योग कहलाता है।

(ii) वृहत उद्योग–यदि उद्योग में निवेशित पूँजी की सीमा एक करोड़ से अधिक हो तो उसे वृहत उद्योग कहते हैं।

4. स्वामित्व के आधार पर–

(i) सार्वजनिक उद्योग–ये उद्योग सरकारी एजेंसियों द्वारा प्रबंधित तथा संचालित होते हैं। उदाहरण–भारत हैवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड (BHEL), स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (SAIL) आदि।

(ii) निजी उद्योग–ये उद्योग निजी व्यक्तियों या उनके समूहों के स्वामित्व वाले होते हैं। उदाहरण–बजाज ऑटो लिमिटेड, डाबर उद्योग आदि।

(iii) संयुक्त उद्योग–ये उद्योग राज्य सरकार तथा निजी क्षेत्र के संयुक्त प्रयास से चलाये जाते हैं। उदाहरण–ऑयल इण्डिया लिमिटेड (OIL).

(iv) सहकारी उद्योग–इन उद्योगों का स्वामित्व कच्चे माल की आपूर्ति करने वाले उत्पादकों, श्रमिकों अथवा दोनों के हाथों में होता है। उदाहरण–महाराष्ट्र का चीनी उद्योग, केरल के नारियल उद्योग।

5. कच्चे तथा तैयार माल की मात्रा व भार के आधार पर–

(i) भारी उद्योग–ये उद्योग भारी व अधिक मात्रा में कच्चे माल का उपयोग कर भारी उत्पाद तैयार करते हैं। उदाहरण–लोहा इस्पात उद्योग, सीमेंट उद्योग।

(ii) हल्के उद्योग–ये उद्योग कम भार वाले कच्चे माल का प्रयोग कर हल्के तैयार माल का उत्पादन करते हैं। उदाहरण–विद्युत सामान उद्योग, घड़ी उद्योग आदि।

प्रश्न 3. कृषि आधारित उद्योगों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–कृषि आधारित उद्योगों में वे उद्योग शामिल हैं जो पौधों और पशुओं से प्राप्त कच्चे माल पर निर्भर करते हैं। ये उद्योग न केवल कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन करते हैं, बल्कि उपभोक्ताओं तक उनका वितरण और उपलब्धता भी सुनिश्चित करते हैं। भारत में कृषि आधारित उद्योगों के कुछ उदाहरण हैं-दुग्ध उत्पादन, मुर्गीपालन, गन्ना, चमड़ा, रबर, जैव ईंधन, चावल मिलें, जूट, कागज, कपड़ा, सब्जी और फल प्रसंस्करण इकाइयाँ (अचार, जैम, चिप्स आदि), चाय और कॉफी आदि।

कृषि आधारित उद्योग

1. दुग्ध-उत्पादन उद्योग–दुग्ध उत्पादन उद्योग (डेयरी उद्योग) कृषि का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसमें दूध देने वाले पशुओं (गाय, भैंस, बकरी आदि) के पालन-पोषण से लेकर दूध निकालने, प्रसंस्करण और विभिन्न डेयरी उत्पादों (पनीर, दही, घी, मिठाइयाँ) के उत्पादन व बिक्री तक का काम शामिल है, और भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है, जो लगातार वृद्धि दर्ज कर रहा है।

2. मुर्गी पालन उद्योग–मुर्गीपालन व्यवसाय कम निवेश में अतिरिक्त आय का एक अच्छा स्रोत बन सकता है, खासकर खेती के साथ-साथ। मुर्गी पालन उद्योग मांस और अंडे के लिए मुर्गियों, बतखों, टर्की जैसे पक्षियों को पालने का व्यवसाय है, जो कम पूँजी, जगह और समय में शुरू किया जा सकता है। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था और रोजगार का महत्वपूर्ण साधन है।

3. गन्ना उद्योग–भारत की कृषि और अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जो चीनी, गुड़, इथेनॉल और कागज जैसे उत्पाद बनाता है, लाखों लोगों को रोजगार देता है और ग्रामीण आय को स्थिर करता है।

4. चावल उद्योग–चावल मिल उद्योग एक महत्वपूर्ण कृषि-आधारित व्यवसाय है जो कच्चे धान को खाने योग्य पॉलिश किए हुए चावल में बदलने का काम करता है।

5. जूट उद्योग–कृषि आधारित उद्योग है। यह उद्योग वस्त्र उद्योग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे 'सोने का रेशा' भी कहते हैं।

6. कपड़ा उद्योग–यह कृषि के कच्चे माल पर आधारित है। कपास खेती से प्राप्त कच्चा माल है। कपड़ा उद्योग कच्चे कपास के रेशों को उपभोक्ताओं के लिए उपयोगी और सुंदर उत्पादों में बदलने वाली एक जटिल और महत्वपूर्ण शृंखला है।

7. चमड़ा उद्योग–एक वैश्विक और भारतीय अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो पशुओं की खाल से जूते, वस्त्र, एक्सेसरीज और अन्य उत्पाद बनाता है। इस उद्योग को कच्चा माल (पशुधन) कृषि क्षेत्र से प्राप्त होता है।

8. सब्जी और फल प्रसंस्करण उद्योग–यह उद्योग न केवल मौसमी फलों और सब्जियों को पूरे साल उपलब्ध कराता है, बल्कि कृषि उत्पादों से उच्च मूल्य वाले खाद्य पदार्थ बनाकर और अर्थव्यवस्था को भी लाभ पहुँचाता है।

संक्षेप में, कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और कृषि उत्पादों की मूल्य वर्धित प्रक्रिया से

किसानों और देश दोनों को लाभ पहुँचाते हैं। इससे भारत जैसे कृषि प्रधान देश में आर्थिक स्थिरता आती है।

प्रश्न 4. भारत में सूती वस्त्र उद्योग के उत्पादन व वितरण को समझाइए।

उत्तर—सूती वस्त्र उद्योग भारत का सबसे बड़ा कृषि आधारित परम्परागत उद्योग है। प्राचीनकाल में सूती वस्त्र हाथ से कताई एवं हथकरघा बुनाई तकनीकों से बनाये जाते थे। 18वीं शताब्दी में विद्युतीय करघों का उपयोग प्रारम्भ हो गया। औपनिवेशिक काल में हमारे परम्परागत उद्योगों को बहुत हानि हुई, क्योंकि हमारे उद्योग इंग्लैण्ड के मशीन निर्मित वस्त्रों से प्रतियोगिता करने में असमर्थ थे।

भारत में सूती वस्त्र उद्योग का विकास—भारत में सर्वप्रथम आधुनिक सूती वस्त्र मिल की स्थापना सन् 1854 ई. में मुम्बई में की गयी।

सूती वस्त्र उद्योग के स्थानीयकरण के कारक— आरम्भिक वर्षों में सूती वस्त्र उद्योग का विकास महाराष्ट्र एवं गुजरात के कपास उत्पादक क्षेत्रों तक ही सीमित था। कपास की उपलब्धता, बाजार, परिवहन, बन्दरगाहों की समीपता, नमीयुक्त जलवायु एवं श्रम आदि कारकों ने सूती वस्त्र उद्योग के स्थानीयकरण को बढ़ावा दिया। चूँकि कपास एक शुद्ध कच्चा माल है जिसका वजन निर्माण प्रक्रिया में घटता नहीं है। अत: अन्य कारक; जैसे—करघों को चलाने के लिए शक्ति, श्रमिक, पूँजी अथवा बाजार आदि उद्योग की स्थिति को निर्धारित करते हैं। वर्तमान में इस उद्योग को बाजार में या बाजार के निकट स्थापित करने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

उत्पादक राज्य— भारत में सूती धागों की कताई का कार्य महाराष्ट्र, गुजरात व तमिलनाडु राज्यों में मुख्य रूप से होता है, लेकिन सूती, रेशम, जरी एवं कशीदाकारी आदि की बुनाई में परम्परागत कौशल एवं डिज़ाइन देने के लिए बुनाई अत्यधिक विकेन्द्रित है। भारत में सूती वस्त्र उत्पादन में महाराष्ट्र राज्य का प्रथम स्थान है। इस राज्य में इस उद्योग के विकास का मुख्य कारण मुम्बई के पृष्ठ प्रदेश में कपास उत्पादक क्षेत्रों का होना है। गुजरात द्वितीय एवं तमिलनाडु सूती वस्त्र उत्पादन में तृतीय स्थान पर है। अन्य सूती वस्त्र उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश एवं पश्चिम बंगाल आदि हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार—भारत में सूती वस्त्रों का निर्यात भी किया जाता है। भारत से सूती वस्त्रों का निर्यात जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, पूर्वी यूरोपीय देश, श्रीलंका, नेपाल, सिंगापुर एवं अफ्रीकी देशों को किया जाता है।

प्रश्न 5. भारत में लौह एवं इस्पात उद्योग के वितरण को समझाइए।

उत्तर—लोहा और इस्पात उद्योग एक आधारभूत उद्योग है, क्योंकि अन्य सभी भारी, हल्के एवं मध्यम उद्योग इससे बनी मशीनरी पर निर्भर हैं। वर्तमान युग को इस्पात युग कहा जाता है। लौह इस्पात उद्योग से ही सभी उद्योगों में कार्यरत मशीनों, परिवहन के साधनों एवं इंजीनियरिंग का सामान तैयार किया जाता है।

लोहा और इस्पात उद्योग के विकास की दशाएँ—इस्पात के उत्पादन एवं खपत को प्राय: एक देश के विकास का पैमाना माना जाता है। लोहा और इस्पात उद्योग एक भारी उद्योग है क्योंकि प्रयुक्त कच्चा एवं तैयार माल दोनों ही भारी व स्थूल होते हैं तथा इसके लिए अधिक परिवहन लागत की आवश्यकता होती है। इस उद्योग के लिए लौह अयस्क एवं कोकिंग कोयले के अतिरिक्त चूना-पत्थर, डोलोमाइट, मैंगनीज एवं अग्निसह मृत्तिका आदि कच्चे माल की आवश्यकता होती है। इस उद्योग के लिए लौह अयस्क, कोकिंग कोयले एवं चूना पत्थर का अनुपात लगभग 4 : 2 : 1 का है। इस उद्योग की स्थापना में सक्षम परिवहन की आवश्यकता होती है।

लोहा इस्पात उद्योग का स्थानीयकरण—भारत में लोहा और इस्पात उद्योग का सर्वाधिक केन्द्रीकरण छोटा नागपुर के पठारी क्षेत्र में हुआ है। छोटा नागपुर के पठारी क्षेत्र में इस उद्योग के विकास के लिए अधिक अनुकूल सापेक्षिक परिस्थितियाँ हैं। इनमें लौह अयस्क की कम लागत, उच्च किस्म के कच्चे माल की निकटता, सस्ते श्रमिक एवं स्थानीय बाजार में इसकी माँग की विशाल सम्भाव्यता आदि हैं।

भारत में लोहा और इस्पात के कारखाने—वर्तमान में भारत में 10 मुख्य संकलित उद्योग एवं अनेक छोटे इस्पात संयन्त्र हैं। भारत में लोहा इस्पात उद्योग की प्रमुख इकाइयाँ निम्नलिखित हैं—
(i) टाटा लौह इस्पात कम्पनी (टिस्को)—जमशेदपुर (झारखण्ड), (ii) भारतीय लोहा और इस्पात कम्पनी (इसरो)—हीरापुर, कुल्टी व बर्नपुर, (iii) विश्वेश्वरैया, आयरन एण्ड स्टील वर्क्स—भद्रावती (कर्नाटक), (iv) राउरकेला इस्पात संयन्त्र—राउरकेला (ओडिशा), (v) भिलाई इस्पात संयन्त्र, भिलाई (छत्तीसगढ़), (vi) दुर्गापुर इस्पात संयन्त्र—दुर्गापुर (प. बंगाल), (vii) बोकारो इस्पात संयन्त्र—बोकारो (झारखण्ड), (viii) सलेम इस्पात संयन्त्र—सेलम (तमिलनाडु), (ix) विजाग इस्पात संयन्त्र— विशाखापट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश), (x) विजयनगर इस्पात संयन्त्र—विजयनगर (कर्नाटक)। सार्वजनिक क्षेत्र के लगभग समस्त कारखाने अपने इस्पात को स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया (सेल-SAIL) के माध्यम से बेचते हैं जबकि टिस्को (TISCO) टाटा स्टील के नाम से अपने उत्पाद को स्वयं बेचती है।

प्रश्न 6. भारत के निम्न उद्योगों पर टिप्पणी लिखिए—
(i) एल्युमिनियम उद्योग
(ii) रसायन उद्योग
(iii) सीमेंट उद्योग

उत्तर—एल्युमीनियम उद्योग— भारत में लोहा एवं इस्पात उद्योग दूसरा महत्वपूर्ण उद्योग है। एल्युमिना की प्राप्ति बॉक्साइट धातु से होती है। एल्युमीनियम उद्योग के अधिकांश केन्द्र कोयला तथा बिजली उत्पादन केन्द्र के समीप स्थित है।

एल्युमीनियम का उपयोग घरेलू बर्तन, बिजली के तार, भवन निर्माण, प्रतिरक्षा उपकरण, रेल के डिब्बे, वायुयान, मोटरगाड़ी,

नाभिकीय कार्यक्रमों तथा फर्नीचर के निर्माण में बड़ी मात्रा में किया जाता है।

उद्योग का विकास— भारत में सर्वप्रथम सन् 1886 में इलेक्ट्रानिक पद्धति से एल्युमीनियम धातु का उत्पादन प्रारम्भ किया गया। आयातित एल्युमीनियम से बर्तन बनाने का कार्य भारत में सन् 1929 में शुरू हुआ। भारत में एल्युमीनियम उद्योग की शुरुआत 1937 में जे. के. (जे. के. नगर) पश्चिमी बंगाल में एल्युमीनियम कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया के अन्तर्गत एक कारखाना लगाया गया। 1941 में इण्डियन एल्युमीनियम कम्पनी ने आयातित एल्युमीनियम पिण्डों से एल्युमीनियम की चादरें बनाना प्रारम्भ किया।

भारत एल्युमीनियम उत्पादन में दूसरा तथा उपभोग की दृष्टि से विश्व में तीसरा बड़ा देश है। भारत बॉक्साइट के भण्डारण की दृष्टि से विश्व का पाँचवा बड़ा देश है।

(ii) रसायन उद्योग—भारत में रसायन उद्योग तीव्र गति से विकसित हो रहा है। इसकी सकल घरेलू उत्पाद में भागीदारी लगभग 3 प्रतिशत है। एशिया में इस उद्योग का तीसरा तथा विश्व में आकार के हिसाब से 12 वाँ स्थान है। इसमें लघु और वृहत् दोनों तरह की विनिर्माण इकाइयाँ सम्मिलित हैं। इस उद्योग में कार्बनिक व अकार्बनिक दोनों प्रकार के रसायन निर्मित होते हैं। इसके साथ ही रसायन उद्योग अपने आप में एक बड़ा उपभोक्ता भी है, जो निम्न तथ्यों द्वारा स्पष्ट है—

(i) आधारभूत रसायन एक प्रक्रिया द्वारा अन्य रसायन उत्पन्न करते हैं जिनका उपयोग औद्योगिक अनुप्रयोग, कृषि अथवा उपभोक्ता बाजारों के लिए किया जाता है। (ii) सल्फ्यूरिक अम्ल का प्रयोग उर्वरक उद्योग, रंग-रोगन, कृत्रिम वस्त्र, प्लास्टिक, गोंद एवं डाई आदि उद्योग में किया जाता है। (iii) नाइट्रिक अम्ल, क्षार, सोडा ऐश आदि का प्रयोग साबुन, शोधक या अपमार्जक एवं कागज में प्रयुक्त होने वाले रसायनों में किया जाता है। (iv) पेट्रो-रसायन का प्रयोग रंजक पदार्थ, दवाइयाँ, औषधि रसायनों के निर्माण में किया जाता है। इस तरह के उद्योगों का विकास तेल शोधनशालाओं अथवा पेट्रो-रसायन संयंत्रों के समीप के क्षेत्र में देखा जा सकता है।

(iii) सीमेंट उद्योग—सीमेंट के निर्माण के लिए भारी मात्रा में कच्चे माल का प्रयोग किया जाता है, जिसमें चूना, पत्थर, जिप्सम तथा कोयला प्रमुख हैं। इनकी ढुलाई पर आने वाले खर्च को बचाने के लिए सीमेंट कारखाने प्राय: कच्चे माल के क्षेत्रों के समीप ही स्थापित किए जाते हैं। वर्तमान समय में लौह इस्पात की भट्टियों से निकलने वाले कचरे (स्लैग) का भी सीमेंट निर्माण में प्रयोग किया जाता है। भारत में प्रति व्यक्ति सीमेंट का उपयोग अन्य विकसित देशों की अपेक्षा कम है। देश में 2006-07 में कुल 1547 लाख मीट्रिक टन सीमेंट का उत्पादन हुआ।

विश्व में सबसे पहले आधुनिक ढंग की सीमेंट का निर्माण 1824 में ब्रिटेन के पोर्टलैण्ड नामक स्थान पर किया गया था। जिसके नाम पर आज भी इसे पोर्टलैण्ड सीमेंट कहा जाता है। भारत में आधुनिक सीमेंट बनाने का पहला कारखाना 1094 में चेन्नई में लगाया गया, जो असफल रहा। 1912-13 की अवधि में 'इण्डियन सीमेंट कम्पनी (लि.) द्वारा गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर कारखाने की स्थापना की गयी, जिससे अक्टूबर 1914 में उत्पादन शुरू हुआ। 1950-51 में देश में हालाँकि मात्र 21 कारखानों में सीमेंट का उत्पादन किया जाता था वहीं वर्तमान में इनकी संख्या बढ़कर 144 हो गयी है।

प्रश्न 7. पर्यावरण प्रदूषण क्या है? इसके प्रकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण में हानिकारक पदार्थों या ऊर्जा का मिलना है जो प्राकृतिक संतुलन बिगाड़ता है, जिससे जीव-जंतुओं और मानव स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है; इसके मुख्य प्रकारों में वायु प्रदूषण (हानिकारक गैसें), जल प्रदूषण (औद्योगिक कचरा), मृदा प्रदूषण (रसायन), ध्वनि प्रदूषण (अत्यधिक शोर) और प्रकाश प्रदूषण (अनावश्यक रोशनी) शामिल हैं जो मानवीय गतिविधियों और औद्योगिकीकरण से बढ़ते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार

1. वायु प्रदूषण—हवा में हानिकारक गैसों (जैसे—कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड), धूल और धुएँ के मिलने से होता है, जो वाहनों और उद्योगों से निकलता है।

2. जल प्रदूषण—नदियों, झीलों और समुद्रों में औद्योगिक अपशिष्ट, प्लास्टिक, रासायनिकों उर्वरकों और कीटनाशकों के मिलने से जल के प्राकृतिक गुण खराब हो जाते हैं।

3. मृदा प्रदूषण—भूमि में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, प्लास्टिक और औद्योगिक कचरे के जमा होने से मिट्टी की उर्वरता और स्वास्थ्य खराब हो जाना है।

4. ध्वनि प्रदूषण—यातायात, मशीनरी, और निर्माण कार्यों से उत्पन्न अत्यधिक शोर, जो मानव और वन्य जीवों की शांति और स्वास्थ्य को भंग करता है।

5. प्रकाश प्रदूषण—रात में अनावश्यक और अत्यधिक कृत्रिम प्रकाश का उपयोग, जो प्राकृतिक रात के चक्र और खगोलीय अवलोकन को प्रभावित करता है।

6. रेडियोधर्मी प्रदूषण—परमाणु गतिविधियों से निकलने वाले खतरनाक रेडियोधर्मी पदार्थों से होता है, जो पर्यावरण में दीर्घकालिक नुकसान पहुँचाते हैं।

7. तापीय प्रदूषण—उद्योगों से निकलने वाले गर्म पानी या हवा के कारण जल या वायु के तापमान में वृद्धि, जिससे जलीय जीवन प्रभावित होता है।

कारण—मानवीय गतिविधियों; जैसे— औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, वाहनों का बढ़ता उपयोग, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक इस्तेमाल और बढ़ती आबादी प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं।

प्रश्न 8. पर्यावरण अवनयन के कारणों व उपायों को समझाइए।

उत्तर—पर्यावरण अवनयन के मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, वनों की कटाई (वनोन्मूलन), प्रदूषण (वायु, जल, मृदा) और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हैं, जिससे जैव विवधता का नुकसान, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएँ

(बाढ़, सूखा) बढ़ती हैं; इसके उपायों में वृक्षारोपण, संसाधनों का संरक्षण (जल, बिजली), अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण शिक्षा शामिल हैं, जो सतत विकास के लिए आवश्यक हैं।

पर्यावरण अवनयन के कारण

1. बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण—भोजन, आवास और ऊर्जा की बढ़ती माँग से संसाधनों पर दबाव बढ़ता है।

2. औद्योगीकरण और विकास—कारखानों से निकलने वाला धुआँ (वायु प्रदूषण), रासायनिक कचरा (जल, मृदा प्रदूषण) और अत्यधिक ऊर्जा खपत से।

3. वनोन्मूलन—कृषि, आवास और लकड़ी के लिए अंधाधुंध कटाई।

4. प्रदूषण—वाहनों, उद्योगों और कचरे से वायु, जल और मृदा में हानिकारक पदार्थों का मिलना।

5. संसाधनों का अत्यधिक दोहन—पानी, खनिज और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का बेहिसाब उपयोग।

6. कृषि में रासायनिकों का प्रयोग—उर्वरकों और कीटनाशकों का अधिक उपयोग मिट्टी और जल को प्रदूषित करता है।

7. जलवायु परिवर्तन—ग्रीन हाउस गैसों के कारण तापमान बढ़ना और प्राकृतिक चक्रों में बदलाव।

पर्यावरण अवनयन रोकने के उपाय

1. वृक्षारोपण—अधिक से अधिक पेड़ लगाना, क्योंकि वे हवा को शुद्ध करते हैं और मिट्टी का कटाव रोकते हैं।

2. संसाधन संरक्षण—पानी और बिजली का समझदारी से उपयोग करना और उन्हें बचाना।

3. अपशिष्ट प्रबंधन—कचरे को कम करना, दोबारा उपयोग करना और पुनर्चक्रण करना।

4. प्रदूषण नियंत्रण—वाहनों और कारखानों से होने वाले प्रदूषण को नियंत्रित करना।

5. पर्यावरण शिक्षा—लोगों को पर्यावरण के महत्व और सुरक्षा के बारे में जागरूक करना।

6. नवीकरणीय ऊर्जा—सौर और पवन ऊर्जा जैसे स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाना।

7. सतत विकास—विकास ऐसा हो जो पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाए और भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों को बचाएँ।

8. प्लास्टिक का कम उपयोग—एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक से बचना।

❑❑

7 राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. बहुवैकल्पिक प्रश्न

(i) निम्नलिखित में कौन-से दो दूरस्थ स्थित स्थान पूर्वी-पश्चिमी गलियारे से जुड़े हैं ?

(क) मुम्बई तथा नागपुर (ख) मुम्बई और कोलकाता
(ग) सिलचर तथा पोरबंदर (घ) नागपुर और सिलिगुड़ी

(ii) निम्नलिखित में से परिवहन का कौन-सा साधन वहनांतरण हानियों तथा देरी को घटाता है ?

(क) रेल परिवहन (ख) पाइपलाइन
(ग) सड़क परिवहन (घ) जल परिवहन

(iii) निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर पाइपलाइन से नहीं जुड़ा है?

(क) मध्य प्रदेश (ख) गुजरात
(ग) महाराष्ट्र (घ) उत्तर प्रदेश

(vi) इनमें से कौन-सा पत्तन पूर्वी तट पर स्थित है जो अन्तःस्थलीय तथा अधिकतम गहराई का पत्तन है तथा पूर्ण सुरक्षित है?

(क) चेन्नई (ख) तूतीकोरिन
(ग) पारादीप (घ) विशाखापट्नम

(v) निम्नलिखित में से कौन-सा परिवहन साधन भारत में प्रमुख साधन है ?

(क) पाइपलाइन (ख) सड़क परिवहन
(ग) रेल परिवहन (घ) वायु परिवहन

(vi) निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द दो या अधिक देशों के व्यापार को दर्शाता है ?

(क) आन्तरिक व्यापार (ख) बाहरी व्यापार
(ग) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार (घ) स्थानीय व्यापार

उत्तर—1. (ग), **2.** (ख), **3.** (ग), **4.** (घ), **5.** (ख), **6.** (ग)।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए—

(i) सड़क परिवहन के तीन गुण बताएँ।

उत्तर—सड़क परिवहन के तीन गुण निम्नलिखित हैं—

(i) सड़कों की निर्माण लागत बहुत कम है। (ii) अपेक्षाकृत ऊबड़-खाबड़ व विच्छिन्न भू-भागों पर सड़कें बनायी जा सकती हैं। (iii) सड़क परिवहन अन्य परिवहन साधनों के उपयोग में एक कड़ी के रूप में भी कार्य करता है।

(ii) रेल परिवहन कहाँ पर अत्यधिक सुविधाजनक परिवहन का साधन है तथा क्यों ?

उत्तर—रेल परिवहन मैदानी भागों में अत्यधिक सुविधाजनक परिवहन साधन है, क्योंकि मैदानों की समतल भूमि पर रेलमार्ग बनाना आसान होता है तथा लागत भी कम आती है। इसके अतिरिक्त मैदानी भागों में जनसंख्या की सघनता के कारण यात्रियों की संख्या अधिक होने से आय भी अधिक होती है।

(iii) सीमांत सड़कों का महत्व बताएँ।

उत्तर—देश के सीमांत क्षेत्रों में सीमा सड़क संगठन द्वारा निर्मित सड़कें सामरिक महत्व की सड़कें हैं। इन सड़कों के विकास से दुर्गम क्षेत्रों में अभिगम्यता बढ़ी है तथा उत्तरी-पूर्वी क्षेत्रों के आर्थिक विकास में वृद्धि हुई है। इन सड़कों ने सेनाओं के आवागमन को सुगम बना दिया है।

(iv) व्यापार से आप क्या समझते हैं ? स्थानीय व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में अन्तर स्पष्ट करें।

उत्तर—**व्यापार**—राज्यों व देशों में व्यक्तियों के बीच वस्तुओं का आदान-प्रदान व्यापार कहलाता है। जब व्यापार शहरों, कस्बों व गाँवों में होता है तो वह स्थानीय व्यापार कहलाता है, किन्तु जब एक देश का दूसरे देश से वस्तुओं या मुद्रा के माध्यम से आदान-प्रदान होता है तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए—

(i) परिवहन तथा संचार के साधन किसी देश की जीवन रेखा तथा अर्थव्यवस्था क्यों कहे जाते हैं ?

उत्तर—परिवहन तथा संचार के साधन किसी देश की जीवनरेखा तथा अर्थव्यवस्था निम्नलिखित कारणों से कहे जाते हैं—

(1) प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में विभिन्न सामग्रियों एवं सेवाओं का प्रयोग करता है। इनमें से कुछ तो उसके आस-पास उपलब्ध होती हैं जबकि कुछ अन्य वस्तुओं की जरूरतें दूसरे स्थान से लाकर पूरी की जाती हैं।

(2) वस्तुएँ एवं सेवाएँ माँग स्थल से आपूर्ति स्थल पर अपने आप नहीं पहुँचतीं, उनको आपूर्ति स्थलों से माँग स्थानों तक ले जाने के लिए परिवहन की आवश्यकता होती है।

(3) एक देश के विकास की गति वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के साथ-साथ उनके एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की सुविधा पर निर्भर है। इसलिए सक्षम परिवहन के साधन तीव्र विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं।

(4) सक्षम एवं तीव्र गति वाले परिवहन से आज सम्पूर्ण विश्व एक बड़े गाँव में परिवर्तित हो गया है।

(5) परिवहन का यह विकास संचार साधनों के विकास की सहायता से ही संभव हो सका है। इसलिए परिवहन, संचार और व्यापार एक-दूसरे के पूरक हैं।

(6) आज भारत अपने विशाल आकार, विविधताओं, भाषायी एवं सामाजिक व सांस्कृतिक बहुलताओं के बावजूद विश्व के समस्त क्षेत्रों से परिवहन और संचार के साधनों के माध्यम से जुड़ा हुआ है।

(7) रेल, वायु एवं जल परिवहन, समाचारपत्र, रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा व इंटरनेट आदि भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास में अनेक प्रकार से सहायक हैं।

(8) आधुनिक संचार एवं परिवहन के साधन हमारे देश व इसकी आधुनिक अर्थव्यवस्था को संचालित करते हैं इसलिए साधन व परिवहन का जाल व संचार के साधन आज सम्पूर्ण विश्व, राष्ट्र व स्थानीय व्यापार हेतु पूर्व-अपेक्षित हैं। अत: परिवहन व संचार के साधनों को देश की जीवन रेखा तथा अर्थव्यवस्था कहा जाता है।

(ii) पिछले पन्द्रह वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की बदलती प्रवृत्ति पर एक लेख लिखें।

उत्तर—भारत के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में पिछले पन्द्रह वर्षों में भारी बदलाव आया है। परिवर्तन की इस प्रवृत्ति को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है—(i) पहले भारत वस्तुओं का ही आदान-प्रदान करता था परन्तु अब सूचनाओं, ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान में वृद्धि हुई है। (ii) आज भारत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक सॉफ्टवेयर महाशक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है। (iii) वर्तमान में भारत सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से अत्यधिक मात्रा में विदेशी मुद्रा का अर्जन कर रहा है। (iv) पूर्व में भारत कच्चे माल का निर्यात अधिक करता था परन्तु अब औद्योगीकरण में प्रगति होने के कारण विदेशों को तैयार माल अधिक भेजा जाने लगा है। (v) आज भारत कृषि उत्पादों का आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने के कारण इसका निर्यात कर रहा है। (vi) पिछले कुछ वर्षों में भारत के निर्यात व्यापार में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। विगत वर्षों में जिन वस्तुओं का निर्यात लगातार बढ़ रहा है उनमें कृषि उत्पाद, खनिज अयस्क, रत्न व जवाहरात, रसायन व सम्बन्धित उत्पाद, इंजीनियरिंग सामान व पेट्रोलियम उत्पाद आदि प्रमुख हैं। (vii) भारत में पेट्रोलियम की माँग निरन्तर बढ़ते जाने के कारण आयातित पेट्रोलियम एवं पेट्रोलियम उत्पादों की मात्रा भी लगातार बढ़ती जा रही है। अन्य आयातित वस्तुओं में—मोती व बहुमूल्य रत्न, अकार्बनिक रसायन, कोयला, कोक मशीनरी आदि सम्मिलित हैं। (viii) उर्वरकों, खाद्यान्न, वनस्पति तेल एवं छपाई मशीनों के आयात में भी वृद्धि हुई है। (ix) भारत सरकार ने निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिए करों में अनेक रियायतों का प्रावधान किया है तथा निजी क्षेत्र को प्राथमिकता दी है। (x) भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण व आर्थिक सुधारों को अपनाया गया है। इसके अन्तर्गत अल्पकालीन व दीर्घकालीन उपाय करके मूल्य स्थिरता, उद्योग, विदेशी व्यापार, राजकोषीय प्रबन्धन, बैंकिंग, बीमा वित्तीय क्षेत्र, कर प्रणाली आदि क्षेत्रों में आवश्यक परिवर्तन किये गये तथा वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति बढ़ाने का प्रयास किया गया। (xi) विश्व व्यापार संगठन से किए गए वायदे के अनुरूप भारत ने आयात शुल्क में कमी कर अनेक वस्तुओं पर मात्रात्मक प्रतिबन्ध हटा दिये हैं।

प्रश्न पहेली

1. उत्तरी-दक्षिणी गलियारे (Corridor) का उत्तरी छोर।
2. राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या—2 का नाम।
3. दक्षिण रेलवे खंड का मुख्यालय। 4. 1·676 मीटर चौड़ाई वाले रेल मार्ग का नाम।

5. राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 7 का दक्षिणतम किनारा।
6. एक नदीय पत्तन।
7. उत्तरी भारत का व्यस्ततम रेलवे जंक्शन।

क्षैतिज, ऊर्ध्वाधर तथा विकर्ण रूप से शुरू करते हुए देश के विभिन्न गंतव्यों को चिह्नित करें।

नोट : पहेली के उत्तर अंग्रेजी के शब्दों में हैं।

उत्तर– (i) SRINAGAR, (ii) SHER SHAH SURI MARG, (iii) CHENNAI, (iv) BROAD GAUGE, (v) KANYAKUMARI, (vi) KOLKATA, (vii) MUGHAL SARAI.

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. परिवहन से क्या तात्पर्य है? भारत के संदर्भ में इसके प्रकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—परिवहन का तात्पर्य लोगों, वस्तुओं और सेवाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की व्यवस्था से है, जो किसी भी देश के आर्थिक विकास की रीढ़ है, और भारत में इसे मुख्य रूप से सड़क, रेल, जल और वायु परिवहन में बाँटा गया है, जिसमें सड़क और रेल परिवहन सबसे प्रमुख हैं और देश की अधिकांश यातायात आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

परिवहन का अर्थ—परिवहन एक प्रणाली है जो व्यक्तियों, वस्तुओं और सेवाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाती है, जिससे सभ्यताओं का विकास और आर्थिक गतिविधियाँ संभव होती हैं।

भारत में परिवहन के प्रकार—भारत में मुख्य रूप से चार प्रमुख माध्यमों और एक अन्य महत्वपूर्ण माध्यम (पाइप लाइन) में वर्गीकृत किया गया है—

1. सड़क परिवहन—यह भारत में सबसे व्यापक और किफायती साधन है, जो दूरदराज के इलाकों तक पहुँचता है और लगभग 87 प्रतिशत यात्री यातायात व 60 प्रतिशत माल ढुलाई करता है। उदाहरण के लिए, बसें, कार, ट्रक, मोटर-साइकिल, ऑटो-रिक्शा, मेट्रो, मोनोरेल सड़क परिवहन के साधन हैं। यह रेलवे और हवाई अड्ड़ों के लिए फीडर (पूरक) सेवा के रूप में कार्य करता है।

2. रेल परिवहन—यह लंबी दूरी के लिए भारी मात्रा में यात्रियों और माल के परिवहन के लिए कुशल माध्यम है। यह देश के आर्थिक और सामाजिक एकीकरण में अहम् भूमिका निभाता है और भारतीय रेलवे दुनिया के सबसे बड़े रेल संजालों (नेटवर्कों) में से एक है।

3. जल परिवहन—इसमें समुद्री मार्ग (जहाज, स्टीमर) और आंतरिक जलमार्ग (नदियाँ, नहरें, झीलें) शामिल हैं। भारत की लंबी तटरेखा के कारण समुद्री परिवहन 45 प्रतिशत व्यापार मात्रा के हिसाब से महत्वपूर्ण है; हालाँकि, आंतरिक जलमार्गों का उपयोग कम होता है।

4. वायु परिवहन—यह सबसे तेज परिवहन का साधन है, जिसका उपयोग यात्री और माल दोनों के लिए किया जाता है, खासकर लम्बी दूरी के लिए। उदाहरण के लिए, हवाई जहाज, हेलीकॉप्टर इसके माध्यम हैं। यह भारत में सबसे तेजी से बढ़ते विमानन बाजारों में से एक है।

5. पाइप लाइन—यह पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और पानी जैसे तरल पदार्थों और गैसों को लंबी दूरी तक पहुँचाने का एक कुशल तरीका है।

ये सभी माध्यम मिलकर भारत के सुविकसित और समन्वित परिवहन संजाल (नेटवर्क) का निर्माण करते हैं, जो देश के विकास के लिए आवश्यक है।

प्रश्न 2. भारत की विभिन्न प्रकार की सड़कों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में सड़कों को सक्षमता के आधार पर छः भागों में बाँटा जा सकता है—

1. स्वर्णिम चतुर्भुज महाराजमार्ग— दिल्ली-कोलकाता-चेन्नई-मुम्बई व दिल्ली को जोड़ने वाली 6 लेन वाली सड़क को महा राजमार्ग के नाम से जाना जाता है। इस महाराजमार्ग का प्रमुख उद्देश्य भारत के वृहद् नगरों के मध्य की दूरी व परिवहन समय को न्यूनतम करना है। इस महाराजमार्ग के अन्तर्गत दो गलियारे निर्मित किये गये हैं—(i) उत्तर-दक्षिण गलियारा जो श्रीनगर को कन्याकुमारी से जोड़ता है।

(ii) पूर्व-पश्चिम गलियारा जो सिल्चर को पोरबंदर से जोड़ता है। यह महा राजमार्ग परियोजना भारत के राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकार क्षेत्र में है।

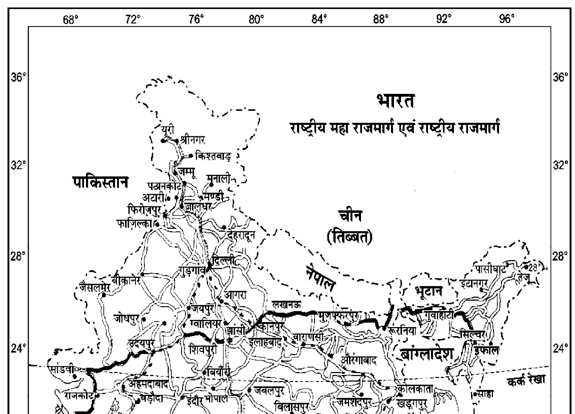

2. राष्ट्रीय राजमार्ग—राष्ट्रीय राजमार्ग देश के दूरस्थ भागों को जोड़ते हैं। ये प्राथमिक सड़क तंत्र हैं, जिनका निर्माण व रखरखाव

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के अधिकार क्षेत्र में है। इन भागों की पहचान राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या के आधार पर की जाती है। उदाहरण—दिल्ली व अमृतसर के मध्य ऐतिहासिक शेरशाह सूरी मार्ग राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-1 के नाम से जाना जाता है।

3. राज्य राजमार्ग—राज्यों की राजधानियों को जिला मुख्यालय से जोड़ने वाली सड़कें राज्य राजमार्ग कहलाती हैं। ये राष्ट्रीय राजमार्गों को भी आपस में जोड़ने का कार्य करती हैं। राज्य राजमार्गों के निर्माण एवं रखरखाव का दायित्व राज्यों के सार्वजनिक निर्माण विभाग का होता है।

4. जिला मार्ग—ये सड़कें जिला मुख्यालयों को जिले की तहसीलों, प्रमुख नगरीय केन्द्रों एवं कस्बों से जोड़ती हैं। इन सड़कों के निर्माण एवं रखरखाव का दायित्व जिला परिषद् का होता है।

5. ग्रामीण सड़कें—इस वर्ग के अन्तर्गत वे सड़कें आती हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों एवं गाँवों को शहरों से जोड़ती हैं। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत इन सड़कों के विकास को विशेष प्रोत्साहन मिला है। इस परियोजना के कुछ विशेष प्रावधान हैं जिनके तहत देश के प्रत्येक गाँव को प्रमुख शहरों से पक्की सड़कों द्वारा जोड़ना प्रस्तावित है।

6. सीमांत सड़कें—भारत सरकार प्राधिकरण के अन्तर्गत सीमा सड़क संगठन देश के सीमांत क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण व रखरखाव करता है। इन सड़कों के विकास से दुर्गम क्षेत्रों में अभिगम्यता बढ़ी है एवं ये सड़कें इन क्षेत्रों के आर्थिक विकास में भी सहायक हुई हैं।

प्रश्न 3. भारत में रेल परिवहन का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत में रेल परिवहन का विकास—भारत में रेल परिवहन का इतिहास सन् 1853 से प्रारम्भ होता है। भारत में सर्वप्रथम 16 अप्रैल, 1853 को पुराने ढंग की एक रेलगाड़ी मुम्बई से थाणे के मध्य 34 किमी. लम्बे रेलमार्ग पर चलायी गयी। इसके पश्चात् भारतीय रेल का कार्यक्षेत्र बढ़ता चला गया। भारतीय रेल वार्षिक पुस्तिका 2017-18 के अनुसार भारत में रेलमार्गों की कुल लम्बाई 68,442 किमी. है।

रेलमार्ग के प्रकार—पटरियों के मध्य दूरी अथवा गेज की दृष्टि से भारत में तीन प्रकार के रेलमार्ग पाये जाते हैं—

(i) सँकरी लाइन—ये मार्ग अधिकांशतः पर्वतीय भागों में मिलते हैं। छोटी लाइन की चौड़ाई 0·762 व 0·610 मीटर होती है।

(ii) मीटर गेज लाइन—इसकी चौड़ाई 1 मीटर होती है। भारत में तीव्रगति से औद्योगिक विकास के कारण इन लाइनों को बड़ी लाइनों में परिवर्तित किया जा रहा है।

(iii) बड़ी लाइन—बड़ी लाइन की चौड़ाई 1·676 मीटर होती है। ये रेलमार्ग देश के सभी महत्वपूर्ण नगरों, व्यापारिक औद्योगिक केन्द्रों व बन्दरगाहों को जोड़ते हैं।

रेल परिवहन का महत्व—भारत में रेल परिवहन के महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है—(i) भारतीय रेलवे वस्तुओं और यात्रियों के परिवहन का एक प्रमुख साधन है। यह वस्तुओं के परिवहन का लगभग तीन चौथाई हिस्सा अकेले ढोता है, जबकि कुल यात्री परिवहन में इसका लगभग 60 प्रतिशत योगदान है।

(ii) भारतीय रेलवे लोह अयस्क, कोयला, खाद्यान्न, खनिज अयस्क एवं सीमेंट आदि जैसे भारी एवं स्थूल वस्तुओं के परिवहन का सबसे सुगम साधन है।

(iii) रेलवे ने भारत में कृषि एवं उद्योगों के विकास में भी विशेष योगदान दिया है।

(iv) रेलवे ने श्रमिकों को एक-स्थान से दूसरे-स्थान तक पहुँचाने में भी योगदान दिया है।

(v) भारतीय रेलवे ने देश के लोगों को बहुत बड़ी संख्या में रोजगार प्रदान किये हैं।

(vi) रेलवे लोगों एवं राज्यों को एक साथ जोड़कर देश में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत में रेल परिवहन के वितरण को प्रभावित करने वाले कारक—भारत में रेल परिवहन के वितरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में भू-आकृतिक, आर्थिक व प्रशासकीय कारक प्रमुख हैं। भारत के विशाल उत्तरी मैदान में विस्तृत भूमि एवं सघन जनसंख्या के कारण रेलवे का सघन जाल है। प्रायद्वीपीय भारत में रेलमार्ग ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी क्षेत्रों में छोटी पहाड़ियों एवं सुरंगों आदि से होकर गुजरते हैं।

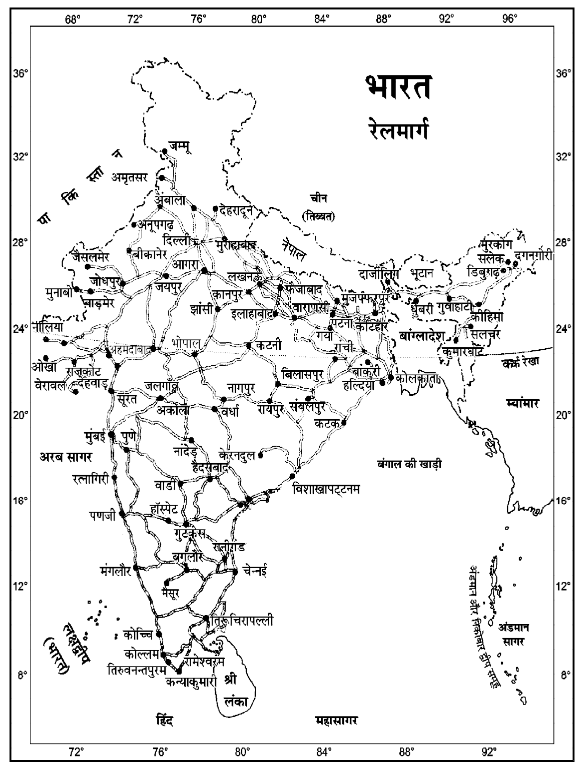

हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र में दुर्लभ उच्चावच एवं विरल जनसंख्या के कारण रेलमार्गों का बहुत कम विकास हुआ है। राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र एवं गुजरात के कच्छ क्षेत्र में भी रेलवे का विकास बहुत कम हुआ है।

रेल परिवहन के प्रखण्ड—भारतीय रेल परिवहन को निम्नलिखित रेल प्रखण्डों में बाँटा गया है—

नाम रेल प्रखण्ड	मुख्यालय
1. उत्तरी-पूर्वी सीमान्त रेलमण्डल	मालेगाँव (गुवाहाटी)
2. उत्तरी-पूर्वी रेल मण्डल	गोरखपुर
3. पूर्वी रेल मण्डल	कोलकाता
4. दक्षिणी-पूर्वी रेल मण्डल	कोलकाता
5. पूर्वी तटीय रेल मण्डल	भुवनेश्वर
6. पूर्वी-मध्य रेल मण्डल	हाजीपुर
7. दक्षिणी-पूर्वी-मध्य रेल मण्डल	बिलासपुर
8. उत्तर-मध्य रेल मण्डल	इलाहाबाद
9. पश्चिम-मध्य रेल मण्डल	जबलपुर
10. उत्तरी रेल मण्डल	नई दिल्ली
11. उत्तरी-पश्चिमी रेल मण्डल	जयपुर
12. पश्चिमी रेल मण्डल	मुम्बई (चर्चगेट)
13. दक्षिणी-मध्य रेल मण्डल	सिकन्दराबाद
14. मध्य रेल मण्डल	मुम्बई (टर्मिनस)
15. दक्षिणी-पश्चिमी रेल मण्डल	हुबली
16. दक्षिणी रेल मण्डल	चेन्नई
17. मेट्रो रेलमण्डल	मार्कस्ट्रीट कोलकाता
18. दक्षिणी तटीय रेलमण्डल	विशाखापट्टनम

भारत में रेल परिवहन की समस्याएँ—भारत में रेल परिवहन की प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं—

(i) बहुत बड़ी संख्या में यात्रियों द्वारा बिना टिकट यात्रा करना। (ii) कुछ लोगों द्वारा अनावश्यक रूप से आपात जंजीर खींचना। (iii) रेलवे की सम्पत्ति की चोरी करना। (iv) रेलवे की सम्पत्ति को क्षति पहुँचाना। (v) मानवीय गलतियों के कारण रेल दुर्घटनाएँ होना। (vi) भूस्खलन के कारण प्रायः देश के किसी-न-किसी भाग में रेलवे ट्रैक का धँसना आदि।

प्रश्न 4. भारत में पाइपलाइन परिवहन का वर्णन कीजिए।

उत्तर—पाइपलाइन परिवहन का एक नवीन साधन है। खनिज तेल, पेट्रोलियम, पैट्रो उत्पाद, प्राकृतिक गैस आदि के परिवहन के लिए पाइपलाइनें सस्ता एवं द्रुतगामी साधन हैं।

पाइपलाइन परिवहन का उपयोग—वर्तमान में पाइपलाइनों का प्रयोग परिवहन हेतु विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है, जिसका विवरण निम्नलिखित है—

(i) शहरों एवं उद्योगों को जल परिवहन के लिए पाइपलाइन का प्रयोग किया जाता है।

(ii) कच्चा तेल, पेट्रोलियम उत्पादों तथा तेल एवं प्राकृतिक गैस क्षेत्र से प्राप्त होने वाली प्राकृतिक गैस को तेल शोधनशालाओं, कारखानों तथा बड़े तापीय विद्युतगृहों तक पहुँचाने के लिए पाइपलाइन का उपयोग किया जाता है।

(iii) ठोस पदार्थों को तरल अवस्था में परिवर्तित कर पाइपलाइनों द्वारा ले जाया जाता है।

पाइपलाइन परिवहन का महत्व—पाइपलाइन परिवहन के महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) पाइपलाइनों का विस्तार स्थल व जल क्षेत्रों में समान रूप से किया जा सकता है।

(ii) पाइपलाइनों को बिछाने में बहुत धन व्यय करना पड़ता है लेकिन इनके संचालन की लागत न्यूनतम है।

(iii) पाइपलाइन सबसे सुरक्षित एवं सुनिश्चित आपूर्ति का महत्वपूर्ण साधन है।

(iv) पाइपलाइन द्वारा पदार्थों के परिवहन से समय एवं ऊर्जा की बचत होती है।

(v) पाइपलाइन के माध्यम से परिवहन प्रदूषण रहित होता है।

भारत में पाइपलाइन परिवहन—भारत में पाइपलाइन परिवहन के तीन प्रमुख जाल हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1. ऊपरी असम के तेल क्षेत्रों से इलाहाबाद तक—यह पाइपलाइन असम के डिग्बोई नामक स्थान से प्रारम्भ होती है तथा गुवाहाटी व बरौनी होती हुई इलाहाबाद के रास्ते कानपुर तक जाती है। इस पाइपलाइन की तीन अन्य शाखाएँ हैं— (i) बरौनी से राजबंध होती हुई हल्दिया तक। (ii) राजबंध से मोरीग्राम तक। (iii) गुवाहाटी से सिलीगुड़ी तक।

2. सलाया (गुजरात) से जालंधर (पंजाब) तक—यह पाइपलाइन गुजरात में सलाया नामक स्थान से प्रारम्भ होकर वीरमगाँव, मथुरा, दिल्ली व सोनीपत होती हुई पंजाब में जालंधर तक जाती है। इस पाइप लाइन की शाखाएँ कोयली, चक्शु व अन्य स्थानों को भी जोड़ती हैं।

3. एच. बी. जे. गैस पाइपलाइन—यह गैस पाइपलाइन हजीरा (गुजरात) से प्रारम्भ होकर विजयपुर (मध्य प्रदेश) होती हुई उत्तर प्रदेश के जगदीशपुर नामक स्थान तक जाती है। इस गैस पाइपलाइन की कई शाखाएँ हैं। ये शाखाएँ राजस्थान में कोटा, उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर, बबराला व अन्य स्थानों तक जाती हैं।

प्रश्न 5. भारत के प्रमुख समुद्री बन्दरगाहों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत के प्रमुख समुद्री पत्तन (बंदरगाह) निम्नलिखित हैं—

1. कांडला पत्तन—भारत के पश्चिमी तट पर स्थित यह एक ज्वारीय पत्तन है। मुम्बई पत्तन से होने वाले व्यापारिक दबाव को कम करने के लिए इस पत्तन का निर्माण किया गया था। यह पत्तन जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान व गुजरात के औद्योगिक एवं खाद्यान्नों के आयात-निर्यात को संचालित करता है।

2. मुम्बई पत्तन—मुम्बई भारत का सबसे बड़ा पत्तन है जिसके प्राकृतिक खुले, विस्तृत व सुचारु पोताश्रय हैं। इस पत्तन के अधिक परिवहन को ध्यान में रखते हुए इसके सामने जवाहरलाल नेहरू पत्तन विकसित किया गया है, जो इस सम्पूर्ण क्षेत्र को एक समूह पत्तन की सुविधा प्रदान करता है।

3. मार्मागाओ पत्तन—यह पत्तन गोवा राज्य में स्थित है। लोह अयस्क के निर्यात के सन्दर्भ में यह देश का एक महत्वपूर्ण पत्तन है। यहाँ से देश के कुल निर्यात का लगभग 50 प्रतिशत लौह अयस्क निर्यात किया जाता है।

4. न्यू मंगलौर पत्तन—यह पत्तन कर्नाटक राज्य में स्थित है। यह पत्तन कुद्रेमुख खानों से निकले लौह अयस्क का निर्यात करता है।

5. कोच्चि पत्तन—यह पत्तन केरल राज्य में स्थित है। यह सुदूर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पत्तन एक लेगून के मुहाने पर स्थित एक प्राकृतिक पोताश्रय है।

6. तूतीकोरिन पत्तन—यह पत्तन तमिलनाडु के दक्षिणी-पूर्वी छोर पर स्थित है। यह एक प्राकृतिक पोताश्रय है। इस पत्तन की पृष्ठभूमि अत्यन्त समृद्ध है। यह पत्तन हमारे पड़ोसी देशों; जैसे-श्रीलंका, मालदीव एवं भारत के तटीय क्षेत्रों की विभिन्न वस्तुओं के व्यापार को संचालित करता है।

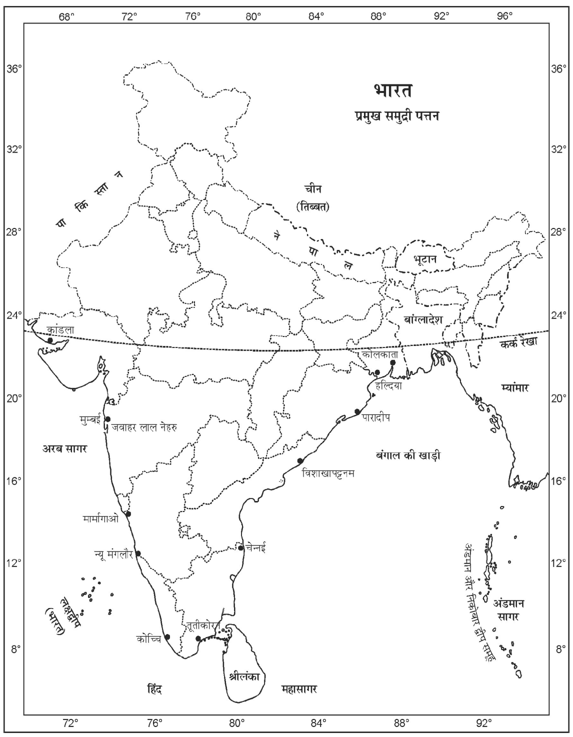

7. चेन्नई—भारत के पूर्वी तट पर स्थित यह पत्तन तमिलनाडु में स्थित है। यह देश का प्राचीनतम कृत्रिम पत्तन है। व्यापार की मात्रा एवं लदे सामान की दृष्टि से इसका मुम्बई पत्तन के बाद द्वितीय स्थान है।

8. विशाखापट्टनम पत्तन—यह आन्ध्र प्रदेश में स्थित है। यह पत्तन स्थल से घिरा, गहरा व सुरक्षित पत्तन है। प्रारम्भ में यह पत्तन लोह अयस्क निर्यातक के रूप में विकसित किया गया था।

9. पारादीप पत्तन—ओडिशा राज्य में स्थित यह पत्तन लोह अयस्क का निर्यात करता है।

10. कोलकाता पत्तन—यह एक अन्त:स्थलीय नदीय पत्तन है। यह पत्तन गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन के वृहत व समृद्ध पृष्ठभूमि को सेवाएँ प्रदान करता है। यह एक ज्वारीय पत्तन है। हुगली नदी के तलछट जमाव से इसे नियमित रूप से साफ करना पड़ता है।

11. हल्दिया पत्तन—कोलकाता पत्तन पर बढ़ते व्यापार के दबाव को कम करने के लिए हल्दिया को सहायक पत्तन के रूप में विकसित किया गया है।

प्रश्न 6. भारत में वायु परिवहन का वर्णन कीजिए।

उत्तर—वायु परिवहन जैसे तीव्रगामी साधन का महत्व भारत जैसे भौतिक दृष्टि से विविधतापूर्ण तथा विशाल देश में स्वत: स्पष्ट है। पश्चिमी देशों एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच संगम-स्थल की भाँति स्थित इस देश को वायु परिवहन की दृष्टि से विश्व में केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। यहाँ पर वायु परिवहन की शुरुआत 1911 में हुई, जब इलाहाबाद से नैनी के बीच विश्व की प्रथम डाक सेवा का परिवहन किया गया। लेकिन इसका वास्तविक विकास आजादी के बाद हुआ।

भारतीय हवाई अड्डा प्राधिकरण—भारत में अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकरण देश के चार बड़े हवाई अड्डों-मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली और चेन्नई का प्रबंध करता है। देश के हवाई अड्डों पर असैनिक उड़ान पट्टियों का प्रबंध करता है। देश के हवाई अड्डों की विशेषता, महत्व तथा उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के आधार पर चार वर्गों में रखा जाता है, जो निम्नलिखित है—

1. अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे—इनकी संख्या वर्तमान 5 है। ये हैं—जवाहर लाल हवाई अड्डा (सांताक्रुज हवाई अड्डा) मुम्बई, सुभाष चन्द्र बोस हवाई अड्डा (दमदम हवाई अड्डा) कोलकाता, इंदिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (दिल्ली), मीनाम्बकम (चेन्नई) तथा तिरुअनन्तपुरम। इसके अतिरिक्त बंगलौर, हैदराबाद, अहमदाबाद, गोवा, अमृतसर, गुवाहाटी, और नेदुम्बरी में स्थित नये कोचीन हवाई अड्डों को अंतर्राष्ट्रीय घोषित करने का निर्णय किया गया है।

2. प्रधान श्रेणी के हवाई अड्डे—छोटे-बड़े सभी प्रकार के वायुयानों को उतारने एवं उड़ान भरने की सुविधा प्रदान करते हैं। यह हैं—अगरतला, अहमदाबाद, अमृतसर, लखनऊ, पटना, हैदराबाद, चेन्नई, दिल्ली आदि।

3. मध्यम श्रेणी के हवाई अड्डे—इसके अन्तर्गत इलाहाबाद, औरंगाबाद, बागडोगरा (पश्चिम बंगाल), वाराणसी, इन्दौर, गया, जूनागढ़, खजुराहो, पोर्ट ब्लेयर रायपुर, राजकोट, विजयवाड़ा, जोधपुर, पन्तनगर, इम्फाल, उदयपुर, राँची आदि हवाई अड्डे शामिल किए जाते हैं।

4. छोटे श्रेणी के हवाई अड्डे—इस श्रेणी के अन्तर्गत आने वाले हवाई अड्डे अंकोला, बिलासपुर, कुडप्पा, डानाकोंडा (तमिलनाडु), हल्द्वानी, वारंगल, बेलूर, तंजापुर, पन्ना, रक्सोल, शोलापुर, रूपसी, माल्दा, पासीघाट, शैला (असम), सहारनपुर, राजमहेन्द्री, ललितपुर, झाँसी, सतना, जोगबानी, कोटा, चकेरी (कानपुर नगर), पालनपुर (दीसा), पन्तनगर, पोरबन्दर आदि हैं।

केरल के कोच्चि के निकट अनिवासीय भारतीयों के सहयोग से देश में पहला अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बनाया जा रहा है।

वायु परिवहन का महत्व—आज वायु परिवहन के अधिक उपयोगी होने के निम्नलिखित कारण हैं—

(i) वायु परिवहन यातायात का सबसे तीव्रतम साधन है, जिससे समय की बहुत बचत होती है। (ii) यह आरामदायक एवं प्रतिष्ठित परिवहन साधन है। (iii) इसके द्वारा अति दुर्गम स्थानों; जैसे—ऊँचे पहाड़ों, मरुस्थलों, बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों, घने जंगलों व लम्बे समुद्री रास्तों को आसानी से पार किया जा सकता है। (iv) वायु परिवहन के कारण शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं का आवागमन सुगम हुआ है, जिससे व्यापार में वृद्धि हुई है।

प्रश्न 7. संचार से क्या तात्पर्य है? इसके प्रमुख प्रकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—संचार का अर्थ है जानकारी, विचार, भावनाएँ या संदेशों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाने और समझने की प्रक्रिया, जिसमें प्रेषक, संदेश, माध्यम और प्राप्तकर्ता शामिल होते हैं; इसके प्रमुख प्रकार हैं-मौखिक (बातचीत), लिखित (पत्र, ईमेल), अशाब्दिक (हाव-भाव, शारीरिक भाषा) और दृश्य (चित्र, चार्ट) संचार, जो हमें आपस में जोड़ने और सहयोग करने में मदद करते हैं।

संचार से तात्पर्य—यह एक दो-तरफा प्रक्रिया है जिसमें सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है, जिससे आपसी समझ विकसित होती है। इसमें एक स्रोत (प्रेषक) होता है, जो एक संदेश बनाता है, उसे एक माध्यम (जैसे-हवा, फोन) से भेजता है, और एक प्राप्तकर्ता (रिसीवर) उसे समझता है, जिसके बाद प्रतिक्रिया (फीडबैक) मिलती है। संचार के प्रकार—(i) **मौखिक संचार**—इसमें बोले गए शब्दों का प्रयोग होता है, जैसे-बातचीत, भाषण, फोन कॉल आदि। (ii) **लिखित संचार**— इसमें लिखित शब्दों, प्रतीकों के माध्यम से संदेश प्रेषित किया जाता है, जैसे-पत्र, ईमेल, रिपोर्ट, एस.एम.एस. चार्ट इत्यादि। (iii) **अशाब्दिक संचार**—इसमें शारीरिक भाषा, हाव-भाव, इशारों और चेहरे के भावों से संदेश प्रेषित किया जाता है; जैसे—मुस्कुराना, आँखें मिलाना, हाथ हिलाना, मुख मुद्रा आदि। (iv) **दृश्य संचार**—इसमें चित्रों, ग्राफिक्स, संकेतों और चार्ट के माध्यम से जानकारी प्रेषित की जाती है; उदाहरण के रूप में मानचित्र, इन्फोग्राफिक्स, वीडियो, संकेत आदि को शामिल किया जा सकता है।

इनके अलावा, पारस्परिक संचार (दो लोगों बीच) और अंत: वैयक्तिक संचार (खुद से बात करना) भी महत्वपूर्ण हैं।

प्रश्न 8. व्यापार क्या है? इसके प्रकार, घटक व महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—**व्यापार का अर्थ**—व्यापार से अभिप्राय राज्यों व देशों में व्यक्तियों के बीच वस्तुओं, सेवाओं व विचारों के आदान-प्रदान से है।

व्यापार के अन्तर्गत वस्तुओं व सेवाओं का परिवहन व संचलन लोगों व स्थानों के मध्य होता है।

जब किसी देश में किसी वस्तु का उत्पादन आवश्यकता से अधिक होता है तो उस वस्तु का परिवहन कम उत्पत्ति व अधिक आवश्यकता वाले स्थानों की ओर कुछ नियम व शर्तों के अधीन होता है। वस्तुओं के स्थानान्तरण की यही प्रवृत्ति व्यापार कहलाती है। दूसरे शब्दों में, वस्तुओं व सेवाओं के लेन-देन, आदान-प्रदान, विनिमय अथवा आयात-निर्यात को व्यापार कहते हैं।

व्यापार के प्रकार—क्षेत्र के आधार पर व्यापार को तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

(i) स्थानीय व्यापार—जब कच्चे माल, निर्मित वस्तुओं व सेवाओं का आदान-प्रदान एक क्षेत्र विशेष के लोगों द्वारा स्थानीय रूप से किया जाता है, तो उसे स्थानीय व्यापार कहते हैं।

(ii) राज्यस्तरीय व्यापार—जब कच्चे माल, निर्मित वस्तुओं और सेवाओं का आधार दो या दो से अधिक राज्यों के मध्य होता है तो उसे राज्यस्तरीय, क्षेत्रीय अथवा प्रादेशिक व्यापार कहा जाता है।

(iii) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार—जब कच्चा माल, तैयार माल और सेवाओं का आदान-प्रदान दो देशों के मध्य होता है तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं।

व्यापार के घटक—व्यापार के दो घटक होते हैं—(i) आयात (ii) निर्यात।

आयात व निर्यात का अन्तर ही देश के व्यापार संतुलन का निर्धारण करता है। यदि निर्यात मूल्य आयात मूल्य से अधिक हो तो उसे अनुकूल व्यापार सन्तुलन कहते हैं। इसके विपरीत निर्यात की अपेक्षा अधिक आयात असन्तुलित व्यापार कहलाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का महत्व—विभिन्न देशों की भौगोलिक परिस्थितियाँ समान नहीं हैं, जिस कारण वस्तुओं के उत्पादन एवं औद्योगिक विकास में भिन्नता पायी जाती है। आवश्यकता की विभिन्न वस्तुओं की आपूर्ति दूसरे देशों व स्थानों से आयात-निर्यात द्वारा की जाती है। यही प्रक्रिया व्यापार कहलाती है। व्यापार का महत्व प्रत्येक देश के लिए होता है। व्यापार का महत्व निम्न प्रकार है—

(i) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार किसी भी देश के आर्थिक विकास स्तर को मापने में बैरोमीटर का काम करता है।

(ii) इससे देश-विदेश के निवासियों के जीवन-स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है।

(iii) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार द्वारा देश की माँग की पूर्ति के साथ-साथ सूचनाओं का विस्तार भी होता है।

(iv) इससे सम्बन्धित देशों के मध्य सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक सम्बन्ध मजबूत होते हैं।

(v) देश के आर्थिक विकास और नागरिकों के जीवन-स्तर को उन्नत बनाने में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

(vi) इससे आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है तथा उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार होता है।

(vii) इससे उत्पादक व उपभोक्ता देशों के मध्य सम्बन्ध प्रगाढ़ होते हैं।

(viii) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार द्वारा भूमण्डलीकरण में सहायता प्राप्त होती है।

(ix) इससे देशों की अर्थव्यवस्था के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। उच्चस्तरीय सन्तुलित आयात-निर्यात मूल्य विकसित व सम्पन्न अर्थव्यवस्था के प्रतीक हैं, जबकि निम्नस्तरीय असन्तुलित आयात-निर्यात मूल्य पिछड़ेपन और विपन्न अर्थव्यवस्था को सूचित करते हैं।

❑❑

1 सत्ता की साझेदारी

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. आधुनिक लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं में सत्ता की साझेदारी के अलग-अलग तरीके क्या हैं ? इनमें से प्रत्येक का एक उदाहरण भी दें।

उत्तर—आधुनिक लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं में सत्ता की साझेदारी के अनेक रूप हो सकते हैं—(i) शासन के विभिन्न अंग; जैसे—विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका के बीच सत्ता का बँटवारा रहता है। न्यायपालिका, कार्यपालिका पर तथा विधायिका द्वारा बने कानून पर अंकुश रखती है।(ii) सरकारों के बीच विभिन्न स्तरों पर सत्ता का बँटवारा हो सकता है। जैसे पूरे देश के लिए एक सामान्य सरकार हो और फिर राज्य या क्षेत्रीय स्तर पर अलग-अलग सरकार रहे। (iii) सत्ता का बँटवारा विभिन्न सामाजिक समूहों, मसलन भाषायी और धार्मिक समूहों के बीच हो सकता है। बेल्जियम में सामुदायिक सरकार इस व्यवस्था का एक अच्छा उदाहरण है। (iv) सत्ता के बँटवारे का एक रूप हम विभिन्न प्रकार के दबाव-समूह और आन्दोलनों द्वारा शासन को प्रभावित और नियन्त्रित करने के तरीके में भी लक्ष्य कर सकते हैं। लोकतन्त्र में लोगों के समक्ष सत्ता के दावेदारों के बीच चुनाव का विकल्प रहता है। इसमें विभिन्न राजनीतिक दल सत्ता के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा करते हैं। दलों की यह प्रतिद्वन्द्विता ही इस बात को सुनिश्चित करती है कि सत्ता एक व्यक्ति या समूह के हाथ में न रहे। सत्ता विभिन्न दलों के मध्य आती-जाती रहती है।

प्रश्न 2. भारतीय सन्दर्भ में सत्ता की हिस्सेदारी का एक उदाहरण देते हुए इसका एक युक्तिपरक और एक नैतिक कारण बताएँ।

उत्तर—भारत जनसांख्यिक विविधता वाला देश है, जहाँ समाज में एक जाति व्यवस्था कायम है। प्रत्येक जाति का अपना हित है। अत: किसी संघर्ष तथा राजनीतिक अस्थिरता को कम करने के लिए सत्ता में भागीदारी समान रूप से रखी गयी है। भारत में लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था अपनायी गयी है।

पिछड़े वर्गों को प्राचीनकाल से ही राजनीतिक अधिकारों से वंचित रखा गया है। जनसंख्या अधिक होने पर भी उनकी राजनीतिक भागीदारी संख्या के आधार पर कम है। अब उन्हें सत्ता में भागीदारी करने का अवसर प्रदान किया जा रहा है। सत्ता की हिस्सेदारी का यह दृष्टिकोण नैतिक दृष्टिकोण कहलाता है।

प्रश्न 3. इस अध्याय को पढ़ने के बाद तीन छात्रों ने अलग-अलग निष्कर्ष निकाले। आप इनमें से किससे सहमत हैं और क्यों ? अपना जवाब करीब 50 शब्दों में दें।

थम्मन—*जिन समाजों में क्षेत्रीय, भाषायी और जातीय आधार पर विभाजन हो, सिर्फ़ वहीं सत्ता की साझेदारी ज़रूरी है।*

मथाई—*सत्ता की साझेदारी सिर्फ ऐसे बड़े देशों के लिए उपयुक्त है, जहाँ क्षेत्रीय विभाजन मौजूद होते हैं।*

औसेफ—*हर समाज में सत्ता की साझेदारी की ज़रूरत होती है, भले ही वह छोटा हो या उसमें सामाजिक विभाजन न हों।*

उत्तर—औसेफ का निष्कर्ष उत्तम है। मैं औसेफ के निष्कर्ष से सहमत हूँ, जिसमें प्रत्येक समाज की सत्ता में साझेदारी आवश्यक होती है। चाहे वह समाज छोटा हो या बड़ा, उसमें सामाजिक विभाजन हो या न हो, क्योंकि यह लोकतन्त्र का मौलिक सिद्धान्त है। इसमें लोग अपने प्रतिनिधियों द्वारा स्वयं शासन करते हैं। समाज छोटा हो या बड़ा या उसमें विभाजन हो अथवा न हो। इससे किसी भी प्रकार की राजनीतिक अस्थिरता को रोका जा सकता है तथा संघर्ष की सम्भावना नहीं रहती इसलिए सभी को सत्ता में भागीदारी का अवसर प्रदान करना चाहिए।

प्रश्न 4. बेल्जियम में ब्रूसेल्स के निकट स्थित शहर मर्चटेम के मेयर ने अपने यहाँ के स्कूलों में फ्रेंच बोलने पर लगी रोक को सही बताया है। उन्होंने कहा कि इससे डच भाषा न बोलने वाले लोगों को इस फ्लेमिश शहर के लोगों से जुड़ने में मदद मिलेगी। क्या आपको लगता है कि यह फैसला बेल्जियम की सत्ता की साझेदारी की व्यवस्था की मूल भावना से मेल खाता है ? अपना जवाब करीब 50 शब्दों में लिखें।

उत्तर—नहीं, यह प्रतिबन्ध बेल्जियम में सत्ता में भागीदारी की व्यवस्था से मेल नहीं खाता है, क्योंकि बेल्जियम में विभिन्न भाषा-भाषी लोग रहते हैं। यहाँ डच बोलने वाले लोग रहते हैं, जो फ्लेमिश क्षेत्र में निवास करते हैं तथा वेलोनिया क्षेत्र में रहने वाले लोग फ्रेंच बोलते हैं। यदि एक क्षेत्र में एक भाषा पर प्रतिबन्ध लगाया जाता है तो दूसरे क्षेत्र में रहने वाले लोग दूसरी भाषा पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग करेंगे, इससे राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष प्रारम्भ हो जायेगा और देश में अशान्ति फैल जायेगी। अत: यह फैसला सत्ता की भागीदारी की व्यवस्था की मूल भावना से मेल नहीं खाता है।

प्रश्न 5. नीचे दिए गए उद्धरण को गौर से पढ़ें और इसमें सत्ता की साझेदारी के जो युक्तिपरक कारण बताए गए हैं, उसमें से किसी एक का चुनाव करें।

"*महात्मा गाँधी के सपनों को साकार करने और अपने संविधान निर्माताओं की उम्मीदों को पूरा करने के लिए हमें पंचायतों को अधिकार देने की ज़रूरत है।* पंचायती राज ही वास्तविक लोकतन्त्र

की स्थापना करता है। यह सत्ता उन लोगों के हाथों में सौंपता है, जिनके हाथों में इसे होना चाहिए। भ्रष्टाचार कम करने और प्रशासनिक कुशलता को बढ़ाने का एक उपाय पंचायतों को अधिकार देना भी है। जब विकास की योजनाओं को बनाने और लागू करने में लोगों की भागीदारी होगी तो इन योजनाओं पर उनका नियन्त्रण बढ़ेगा। इससे भ्रष्ट बिचौलियों को खत्म किया जा सकेगा। इस प्रकार पंचायती राज लोकतन्त्र की नींव को मज़बूत करेगा।"

उत्तर—साझेदारी का युक्तिपरक कारण—पंचायतों को शक्ति देना भ्रष्टाचार को कम करने तथा प्रशासनिक दक्षता बढ़ाने का भी एक तरीका है।

प्रश्न 6. सत्ता के बँटवारे के पक्ष और विपक्ष में कई तरह के तर्क दिए जाते हैं। इनमें से जो तर्क सत्ता के बँटवारे के पक्ष में हैं, उनकी पहचान करें और नीचे दिए गए कोड से अपने उत्तर का चुनाव करें।

सत्ता की साझेदारी—

(क) विभिन्न समुदायों के बीच टकराव को कम करती है।

(ख) पक्षपात का अंदेशा कम करती है।

(ग) निर्णय लेने की प्रक्रिया को अटका देती है।

(घ) विविधताओं को अपने में समेट लेती है।

(ङ) अस्थिरता और आपसी फूट को बढ़ाती है।

(च) सत्ता में लोगों की भागीदारी बढ़ाती है।

(छ) देश की एकता को कमज़ोर करती है।

(सा)	क	ख	घ	च
(रे)	क	ग	ङ	च
(गा)	क	ख	घ	छ
(मा)	ख	ग	घ	छ

उत्तर—(सा) क, ख, घ, च।

प्रश्न 7. बेल्जियम और श्रीलंका की सत्ता में साझेदारी की व्यवस्था के बारे में निम्नलिखित बयानों पर विचार करें—

(क) बेल्जियम में डच-भाषी बहुसंख्यकों ने फ्रेंच-भाषी अल्पसंख्यकों पर अपना प्रभुत्व जमाने का प्रयास किया।

(ख) सरकार की नीतियों ने सिंहली-भाषी बहुसंख्यकों का प्रभुत्व बनाए रखने का प्रयास किया।

(ग) अपनी संस्कृति और भाषा को बचाने तथा शिक्षा तथा रोजगार में समानता के अवसर के लिए श्रीलंका के तमिलों ने सत्ता को संघीय ढाँचे पर बाँटने की माँग की।

(घ) बेल्जियम में एकात्मक सरकार की जगह संघीय शासन व्यवस्था लाकर मुल्क को भाषा के आधार पर टूटने से बचा लिया गया।

ऊपर दिए गए बयानों में से कौन-से सही हैं ?

(सा) क, ख, ग और घ **(रे) क, ख और घ**

(गा) ग और घ **(मा) ख, ग और घ**

उत्तर—(सा) क, ख, ग और घ।

प्रश्न 8. सूची 1 (सत्ता के बँटवारे के स्वरूप) और सूची 2 (शासन के स्वरूप) में मेल कराएँ और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करते हुए सही जवाब दें—

सूची 1	सूची II
1. सरकार के विभिन्न अंगों के बीच सत्ता का बँटवारा	(क) सामुदायिक सरकार
2. विभिन्न स्तर की सरकारों के बीच अधिकारों का बँटवारा	(ख) अधिकारों का वितरण
3. विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच सत्ता की साझेदारी	(ग) गठबन्धन सरकार
4. दो या अधिक दलों के बीच सत्ता की साझेदारी	(घ) संघीय सरकार

	1	2	3	4
(सा)	घ	क	ख	ग
(रे)	ख	ग	घ	क
(गा)	ख	घ	क	ग
(मा)	ग	घ	क	ख

उत्तर—(गा) 1. ख, 2. घ, 3. क, 4. ग।

प्रश्न 9. सत्ता की साझेदारी के बारे में निम्नलिखित दो बयानों पर गौर करें और नीचे दिए गए कोड के आधार पर जवाब दें—

(अ) सत्ता की साझेदारी लोकतन्त्र के लिए लाभकर है।

(ब) इससे सामाजिक समूहों में टकराव का अंदेशा घटता है।

इन बयानों में कौन सही है और कौन गलत ?

(क) अ सही है लेकिन ब गलत है।(ख) अ और ब दोनों सही हैं।

(ग) अ और ब दोनों गलत हैं।(घ) अ गलत है लेकिन ब सही है।

उत्तर—(ख) अ और ब दोनों सही हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. स्थिति, आकार व सांस्कृतिक पहलुओं के आधार पर बेल्जियम व श्रीलंका की स्थिति की तुलना कीजिए।

उत्तर–**स्थिति**–बेल्जियम, फ्रांस, नीदरलैंड, जर्मनी व लक्समबर्ग की सीमाओं से लगता हुआ एक छोटा-सा यूरोपीय देश है जबकि श्रीलंका एक द्वीपीय देश है जो भारत के तमिलनाडु राज्य के दक्षिणी तट से कुछ किमी. दूर स्थित है।

आकार–बेल्जियम क्षेत्रफल में भारत के हरियाणा राज्य से भी छोटा है तथा यहाँ की आबादी एक करोड़ से कुछ अधिक है यानि हरियाणा की आबादी से लगभग आधी जबकि श्रीलंका की आबादी लगभग दो करोड़ है यानी हरियाणा की आबादी के बराबर।

सांस्कृतिक पहलू–बेल्जियम की जातीय बुनावट बहुत जटिल है। यहाँ की कुल आबादी का 59 प्रतिशत भाग फ्लेमिश क्षेत्र में रहता है व डच बोलता है, 40 प्रतिशत बेलोनिया क्षेत्र में तथा फ्रेंच बोलता है जबकि शेष 1 प्रतिशत जर्मन बोलता है। इसकी राजधानी ब्रूसेल्स में 80 प्रतिशत लोग फ्रेंच तथा 20 प्रतिशत लोग डच भाषा बोलते हैं। श्रीलंका में भी कई जातीय समूह के लोग रहते हैं जिनमें सबसे प्रमुख सामाजिक समूह सिंहलियों का है। इनकी आबादी कुल जनसंख्या की 74 प्रतिशत है। तमिलों की आबादी कुल जनसंख्या की 18 फीसदी है जिसमें 13 फीसदी श्रीलंकाई मूल के हैं। यहाँ की आबादी में 7 प्रतिशत ईसाई हैं जो सिंहली व तमिल दोनों भाषाएँ बोलते हैं। अधिकांश सिंहली भाषी लोग बौद्ध हैं वहीं तमिल भाषी लोगों में कुछ हिन्दू तथा कुछ मुसलमान हैं।

प्रश्न 2. बेल्जियम के दो प्रमुख समुदायों में परस्पर संघर्ष के कारणों व उनके समाधान की दशा का वर्णन करें।

उत्तर–बेल्जियम के दो प्रमुख समुदायों में परस्पर संघर्ष के कारण–

(i) बेल्जियम की जातीय बुनावट बहुत जटिल है। इस देश की कुल जनसंख्या का 59 प्रतिशत भाग फ्लेमिश क्षेत्र में रहता है तथा डच भाषा बोलता है। शेष 40 प्रतिशत लोग वेलोनिया क्षेत्र में रहते हैं तथा फ्रेंच भाषा बोलते हैं। शेष 1 प्रतिशत लोग जर्मन भाषा बोलने वाले हैं। देश की राजधानी ब्रूसेल्स की 80 प्रतिशत जनता फ्रेंच भाषा बोलती है, जबकि 20 प्रतिशत लोग डच भाषा बोलते हैं।

(ii) बेल्जियम में फ्रेंच भाषी (अल्पसंख्यक) समूह अधिक धनी व शक्तिशाली है। आर्थिक एवं शिक्षा के विकास के प्रश्न को लेकर डच भाषीय समूह ने फ्रेंच भाषीय समूह का विरोध किया। इस कारण दोनों समुदायों के मध्य 1950 से 1960 ई. के दशक में परस्पर तनाव एवं संघर्ष बढ़ते चले गये। देश की राजधानी ब्रूसेल्स में यह स्थिति और अधिक गम्भीर हो गयी।

समस्या का समाधान

बेल्जियम के नेताओं ने दो भाषायी समुदायों के मध्य बढ़ते संघर्ष के समाधान हेतु एकता के प्रयास किये। उन्होंने क्षेत्रीय अन्तरों एवं सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार किया तथा इस सम्बन्ध में 1970 से 1993 ई. के मध्य संविधान में चार महत्वपूर्ण संशोधन कर निम्न व्यवस्था को लागू किया–

(i) संविधान में यह व्यवस्था की गई कि केन्द्रीय सरकार में डच और फ्रेंच भाषी मन्त्रियों की संख्या बराबर होगी जिससे कुछ विशेष प्रकार के कानूनों को पारित करने में दोनों भाषायी समुदायों के बहुमत के समर्थन की आवश्यकता होगी।

(ii) केन्द्र सरकार की अनेक शक्तियाँ देश के दो स्तरों पर कार्य करने वाली राज्य सरकारों को प्रदान कर दी गयी हैं। ये राज्य सरकारें, केन्द्र सरकार के नियन्त्रण में कार्य नहीं करती हैं।

(iii) बेल्जियम की राजधानी ब्रूसेल्स में अलग सरकार की व्यवस्था की गई। इस सरकार में दोनों भाषायी समुदायों को समान प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया है।

(iv) बेल्जियम में केन्द्र तथा राज्य सरकारों के अतिरिक्त एक तीसरे प्रकार की सरकार भी कार्य करती है। इस सरकार को सामुदायिक सरकार कहा जाता है। इस सरकार को तीन समूहों-डचों, फ्रांसीसियों एवं जर्मन बोलने वाले समुदायों द्वारा मिलकर चुन लिया जाता है। इस सरकार को शिक्षा, संस्कृति एवं भाषा जैसे मामलों पर फैसला लेने का अधिकार प्राप्त है।

प्रश्न 3. सत्ता की साझेदारी की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–सत्ता की साझेदारी निम्नलिखित कारणों से वांछनीय है–

(i) टकराव को रोकने के लिए–सत्ता की साझेदारी वांछनीय है क्योंकि यह सामूहिक समूहों के मध्य संघर्ष की सम्भावना को कम करती है। चूँकि सामाजिक टकराव आगे बढ़कर अक्सर हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता का रूप ले लेता है इसलिए सत्ता में हिस्सा दे देना राजनीतिक व्यवस्था के स्थायित्व के लिए अच्छा है।

(ii) लोकतन्त्र की आत्मा–सत्ता की साझेदारी प्रजातन्त्र का आधार है, यह इसके विकास के लिए आवश्यक है। आधुनिक प्रजातन्त्र में शक्ति जनता के हाथों में निहित रहती है। इसका प्रयोग जनता निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा करती है। इस प्रकार समस्त समूह सत्ता में भागीदारी के माध्यम से शासन व्यवस्था से जुड़े रहते हैं।

उदाहरण–निम्नलिखित उदाहरण सत्ता की साझेदारी की वांछनीयता को दर्शाते हैं–

(i) बेल्जियम में अल्पसंख्यक फ्रेंच भाषी लोग अधिक धनी व शक्तिशाली थे, सत्ता उन्हीं के पास थी। यहाँ सत्ता की साझेदारी बहुसंख्यक डच भाषी समुदाय द्वारा नहीं होती थी, यह एक अप्रजातान्त्रिक बात थी। फलस्वरूप समाज में संघर्ष उत्पन्न हो गया।

(ii) श्रीलंका में सत्ता बहुसंख्यक सिंहलियों के पास थी, जबकि अल्पसंख्यक तमिल इससे वंचित थे फलस्वरूप तमिलों ने सिंहलियों के विरुद्ध संघर्ष प्रारम्भ कर दिया। यह संघर्ष ही श्रीलंका में गृहयुद्ध का कारण बना।

इस प्रकार समाज के विकास एवं कल्याण के लिए सत्ता की साझेदारी वांछनीय है।

प्रश्न 4. सत्ता साझाकरण के विविध रूपों का वर्णन करें।

उत्तर–आधुनिक लोकतान्त्रिक व्यवस्था के अन्तर्गत सरकार में साझेदारी के चार रूप निम्नलिखित हैं–

(i) सरकार के विभिन्न अंगों के मध्य सत्ता की साझेदारी–लोकतन्त्र में सरकार के विभिन्न अंग, जैसे–विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका के मध्य सत्ता का बँटवारा रहता है। इन सभी के पास शक्ति होती है तथा वे आपस में एक-दूसरे पर नियन्त्रण रखते हैं। इसे ही सत्ता का क्षैतिज वितरण कहा जाता है। इस प्रकार के बँटवारे से यह सुनिश्चित हो जाता है कि कोई भी एक

अंग सत्ता का असीमित उपयोग नहीं कर सकता। प्रत्येक अंग एक-दूसरे पर अंकुश रखता है। इससे विभिन्न संस्थाओं के मध्य सत्ता का सन्तुलन बना रहता है।

भारत सरकार

विधायिका | कार्यपालिका | न्यायपालिका

तालिका—सत्ता का क्षैतिज वितरण

(ii) सरकार के मध्य विभिन्न स्तरों पर सत्ता की साझेदारी—इसके अन्तर्गत सत्ता का विभाजन केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों के मध्य तथा इससे आगे स्थानीय निकायों के बीच होता है। उच्चतर एवं निम्नतर स्तर की सरकारों के मध्य सत्ता की इस साझेदारी को सरकार का ऊर्ध्वाधर वितरण कहते हैं।

केन्द्र सरकार
↓
राज्य सरकार
↓
स्थानीय सरकार

तालिका—भारत-सत्ता का ऊर्ध्वाधर वितरण

(iii) विभिन्न सामाजिक समूहों के मध्य सत्ता की साझेदारी—लोकतन्त्र में विशेष रूप से विभिन्न धार्मिक, भाषायी, आदिवासी एवं अल्पसंख्यक समूह विभिन्न स्तरों पर सत्ता की साझेदारी करते हैं। सत्ता की साझेदारी का यह रूप या तो प्रजातान्त्रिक हो सकता है जैसे कि बेल्जियम में अथवा फिर संवैधानिक हो सकता है जैसे कि भारत में। इस प्रकार की व्यवस्था विधायिका एवं प्रशासन में अलग-अलग सामाजिक समूहों को हिस्सेदारी देने के लिए की जाती है ताकि वे स्वयं को शासन से अलग न समझने लगें। कुछ देशों के संविधान एवं कानून में इस बात का प्रावधान है कि सामाजिक रूप से कमजोर समुदाय एवं महिलाओं को विधायिका और प्रशासन में हिस्सेदारी दी जाए।

(iv) राजनीतिक दलों, दबाव समूहों एवं आन्दोलनों के मध्य सत्ता की साझेदारी—लोकतन्त्र में विभिन्न राजनीतिक दलों, दबाव समूहों एवं आन्दोलनों के मध्य भी सत्ता की साझेदारी होती है। लोकतन्त्र लोगों के समक्ष सत्ता के दावेदारों के बीच चुनाव का विकल्प देता है। यह विकल्प विभिन्न राजनीतिक दलों के रूप में उपलब्ध होता है, जोकि चुनाव लड़ते हैं। राजनीतिक दलों की यह प्रतिद्वन्द्विता ही यह सुनिश्चित करती है कि सत्ता एक व्यक्ति या समूह के हाथ में न रहे।

❑❑

2 संघवाद

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. भारत के खाली राजनीतिक नक्शे पर इन राज्यों की उपस्थिति दर्शाएँ :

मणिपुर, सिक्किम, छत्तीसगढ़ और गोवा।

उत्तर—

प्रश्न 2. विश्व के खाली राजनीतिक मानचित्र पर भारत के अलावा संघीय शासन वाले तीन देशों की अवस्थिति बताएँ और उनके नक्शे को रंग से भरें।

उत्तर—

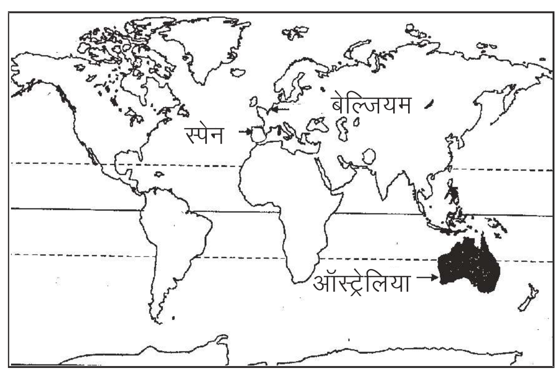

प्रश्न 3. भारत की संघीय व्यवस्था में बेल्जियम से मिलती-जुलती एक विशेषता और उससे अलग एक विशेषता को बताएँ।

उत्तर—मिलती-जुलती विशेषता—बेल्जियम तथा भारत दोनों ही संघीय व्यवस्था वाले देश हैं तथा इनमें त्रि-स्तरीय सरकारें हैं।

अलग विशेषता—तीसरे स्तर पर बेल्जियम में सामुदायिक सरकार है। भारत में तीसरे स्तर पर स्थानीय स्वशासन है।

प्रश्न 4. शासन के संघीय और एकात्मक स्वरूपों में क्या-क्या मुख्य अन्तर है ? इसे उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट करें।

उत्तर—शासन के संघीय एवं एकात्मक स्वरूपों में मुख्य अन्तर निम्नलिखित हैं—

क्र.सं. संघीय शासन व्यवस्था	एकात्मक शासन व्यवस्था
1. इस शासन के स्वरूप में दो स्तरों पर सरकारें होती हैं तथा सत्ता के इन दोनों स्तरों की सरकारें अपने-अपने स्तर पर स्वतन्त्र होकर कार्य करती हैं।	इस शासन के स्वरूप में शासन का एक ही स्तर होता है तथा राज्य सरकारें उसके अधीन होकर कार्य करती हैं।
2. इस व्यवस्था में राज्य सरकारों को शक्तियाँ संविधान से प्राप्त होती हैं।	इसमें राज्य सरकारों को अपनी शक्तियाँ केन्द्रीय सरकार से प्राप्त होती हैं।
3. इस व्यवस्था में संघ और राज्य सरकारों के बीच विषयों का विभाजन होता है।	इस व्यवस्था में विषयों का विभाजन नहीं होता है।
4. इस व्यवस्था में राज्य सरकारें अपने कार्यों के लिए केन्द्रीय सरकार के प्रति जिम्मेदार नहीं होती हैं।	इस व्यवस्था में राज्य सरकारें अपने कार्यों के लिए केन्द्रीय सरकार के प्रति जिम्मेदार होती हैं।
5. इस व्यवस्था में केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों को कुछ विशेष कार्य करने का आदेश नहीं दे सकती हैं।	इस व्यवस्था में केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों को आदेश दे सकती है।
उदाहरण—भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, बेल्जियम, कनाडा व ऑस्ट्रेलिया ने संघीय शासन व्यवस्था को अपनाया है।	**उदाहरण**—फ्रांस, हॉलैण्ड, जापान, इटली आदि देशों ने एकात्मक शासन व्यवस्था को अपनाया है।

प्रश्न 5. 1992 के संविधान संशोधन के पहले और बाद के स्थानीय शासन के दो महत्वपूर्ण अन्तरों को बताएँ।

उत्तर—

क्र.सं.	स्थानीय शासन (1992 से पूर्व)	स्थानीय शासन (1992 के बाद)
1.	स्थानीय सरकारों का चुनाव नहीं होता था।	स्थानीय सरकारों का नियमित चुनाव होता है।
2.	स्थानीय सरकार के पास स्वयं का आय का स्रोत नहीं था।	केन्द्र सरकार द्वारा स्थानीय सरकार को सीधे पैसा भेजा जाता है।

प्रश्न 6. रिक्त स्थानों को भरें—

चूँकि अमरीका..........तरह का संघ है इसलिए वहाँ सभी इकाइयों को समान अधिकार है। संघीय सरकार के मुकाबले प्रान्त..........हैं। लेकिन भारत की संघीय प्रणाली..........की है और यहाँ कुछ राज्यों को औरों से ज्यादा शक्तियाँ प्राप्त हैं।

उत्तर—'साथ आकर संघ बनाने की', शक्तिशाली एवं 'सबको साथ लेकर चलने' की नीति।

प्रश्न 7. भारत की भाषा नीति पर नीचे तीन प्रतिक्रियाएँ दी गई हैं। इनमें से आप जिसे ठीक समझते हैं उसके पक्ष में तर्क और उदाहरण दें।

संगीता—प्रमुख भाषाओं को समाहित करने की नीति ने राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया है।

अरमान—भाषा के आधार पर राज्यों के गठन ने हमें बाँट दिया है। हम इसी कारण अपनी भाषा के प्रति सचेत हो गए हैं।

हरीश—इस नीति ने अन्य भाषाओं के ऊपर अंग्रेजी के प्रभुत्व को मजबूत करने का काम किया है।

उत्तर—मुझे संगीता की प्रतिक्रिया ठीक लगती है, क्योंकि यह सच है कि सामंजस्य की नीति ने हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया है। प्रारम्भ में हिन्दी को आधिकारिक भाषा बनाया गया और अंग्रेजी का प्रयोग आधिकारिक रूप से बन्द कर दिया गया। इस पर तमिलनाडु में लोगों ने आन्दोलन करना प्रारम्भ कर दिया। हमारे देश में आठवीं अनुसूची में 22 मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं, इनके अलावा भी 100 से अधिक भाषाएँ और सैकड़ों बोलियाँ बोली जाती हैं। हमको इन सभी भाषाओं का आदर करना चाहिए, जिससे ये देश की उन्नति में मदद कर सकें और विकसित हो सकें।

हमारे समक्ष श्रीलंका का उदाहरण है, जहाँ भाषायी विवाद ने देश को गृहयुद्ध के कगार पर ला खड़ा किया था।

प्रश्न 8. संघीय सरकार की एक विशिष्टता है—(क) राष्ट्रीय सरकार अपने कुछ अधिकार प्रान्तीय सरकारों को देती है। **(ख)** अधिकार विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच बँट जाते हैं। **(ग)** निर्वाचित पदाधिकारी ही सरकार में सर्वोच्च ताकत का उपयोग करते हैं। **(घ)** सरकार की शक्ति शासन के विभिन्न स्तरों के बीच बँट जाती है।

उत्तर—(घ) सरकार की शक्ति शासन के विभिन्न स्तरों के बीच बँट जाती है।

प्रश्न 9. भारतीय संविधान की विभिन्न सूचियों में दर्ज कुछ विषय यहाँ दिए गए हैं। इन्हें नीचे दी गई तालिका में संघीय सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची वाले समूहों में लिखें।

(क) रक्षा, (ख) पुलिस, (ग) कृषि, (घ) शिक्षा, (ङ) बैंकिंग, (च) वन, (छ) संचार, (ज) व्यापार, (झ) विवाह।

उत्तर—संघीय सूची—(क) रक्षा (ङ) बैंकिंग (छ) संचार

राज्य सूची—(ख) पुलिस (ग) कृषि (ज) व्यापार

समवर्ती सूची—(घ) शिक्षा (च) वन (झ) विवाह

प्रश्न 10. नीचे भारत में शासन के विभिन्न स्तरों और उनके कानून बनाने के अधिकार क्षेत्र के जोड़े दिए गए हैं। इनमें से कौन-सा जोड़ा सही मेल वाला नहीं है ?

(क) राज्य सरकार	राज्य सूची
(ख) केन्द्र सरकार	संघीय सूची
(ग) केन्द्र और राज्य सरकार	समवर्ती सूची
(घ) स्थानीय सरकार	अवशिष्ट अधिकार

उत्तर—(घ) स्थानीय सरकार-अवशिष्ट अधिकार।

प्रश्न 11. सूची I और सूची II में मेल ढूँढ़ें और नीचे दिए गए कोड के आधार पर सही उत्तर चुनें।

सूची I	सूची II
1. भारतीय संघ	(अ) प्रधानमन्त्री
2. राज्य	(ब) सरपंच
3. नगर निगम	(स) राज्यपाल
4. ग्राम पंचायत	(द) मेयर

	1	2	3	4
(सा)	द	अ	ब	स
(रे)	ब	स	द	अ
(गा)	अ	स	द	ब
(मा)	स	द	अ	ब

उत्तर—(गा) 1. (अ), 2. (स), 3. (द), 4. (ब)।

प्रश्न 12. इन बयानों पर गौर करें—(अ) संघीय व्यवस्था में संघ और प्रान्तीय सरकारों के अधिकार स्पष्ट रूप से तय होते हैं।

(ब) भारत एक संघ है क्योंकि केन्द्र और राज्य सरकारों के अधिकार संविधान में स्पष्ट रूप से दर्ज हैं और अपने-अपने विषयों पर उनका स्पष्ट अधिकार है।

(स) श्रीलंका में संघीय व्यवस्था है क्योंकि उसे प्रान्तों में बाँट दिया गया है।

(द) भारत में संघीय व्यवस्था नहीं रही, क्योंकि राज्यों के कुछ अधिकार स्थानीय शासन की इकाइयों में बाँट दिए गए हैं।

ऊपर दिए गए बयानों में कौन-कौन सही हैं।

(सा) अ, ब और स (रे) अ, स और द (गा) अ और ब (मा) ब और स।

उत्तर—(गा) अ और ब।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. संघवाद क्या है? इसकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—संघीय शासन व्यवस्था/संघवाद—संघवाद सरकार की एक व्यवस्था है जिसमें सर्वोच्च सत्ता केन्द्रीय प्राधिकरण एवं उसकी विभिन्न अनुषांगिक इकाइयों के बीच बँट जाती है। आमतौर पर संघीय व्यवस्था में दो स्तर पर सरकारें होती हैं। इसमें एक सरकार सम्पूर्ण देश के लिए होती है जिसके जिम्मे राष्ट्रीय महत्व के विषय होते हैं फिर राज्य या प्रान्तों के स्तर की सरकारें होती हैं जो शासन के दैनिक काम-काज को देखती हैं। सत्ता के इन दोनों स्तरों की सरकारें अपने-अपने स्तर पर स्वतन्त्र होकर अपना कार्य करती हैं। उदाहरणार्थ— भारत।

संघीय शासन व्यवस्था/संघवाद की विशेषताएँ—प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) सरकार के दो या अधिक स्तर—संघीय शासन व्यवस्था में सर्वोच्च सत्ता केन्द्रीय प्राधिकरण और उसकी विभिन्न अनुषांगिक इकाइयों के मध्य बँट जाती है। सामान्यत: संघीय शासन व्यवस्था में दो स्तर पर सरकारें होती हैं। एक सरकार सम्पूर्ण देश के लिए होती है एवं दूसरी सरकार राज्य स्तर की होती है। भारत में सरकार का तीसरा स्तर स्थानीय स्वशासन भी है।

(ii) एक नागरिक समूह, अलग-अलग अधिकार—संघीय शासन व्यवस्था में अलग-अलग स्तर की सरकारें एक ही नागरिक समूह पर शासन करती हैं, पर कानून बनाने, कर वसूलने एवं प्रशासन का उनका अपना-अपना अधिकार क्षेत्र होता है।

(iii) सुदृढ़ संविधान—संविधान के मौलिक प्रावधानों को किसी एक स्तर की सरकार स्वयं अकेले नहीं बदल सकती। ऐसे बदलाव दोनों स्तर की सरकारों—केन्द्र व राज्य की सहमति से ही हो सकते हैं।

(iv) संविधान की सर्वोच्चता—संविधान में सरकार के विभिन्न स्तरों के अधिकार क्षेत्र स्पष्ट रूप से वर्णित होते हैं इसलिए संविधान सरकार के प्रत्येक स्तर के अस्तित्व एवं प्राधिकार की गारण्टी एवं सुरक्षा देता है।

(v) दोहरे उद्देश्य—संघीय शासन व्यवस्था के दोहरे उद्देश्य हैं—देश की एकता की सुरक्षा करना एवं उसे बढ़ावा देना। इसके साथ ही क्षेत्रीय विभिन्नताओं का पूर्ण सम्मान करना।

(vi) न्यायालयों के सर्वोच्च अधिकार—न्यायालयों को संविधान और विभिन्न स्तर की सरकारों के अधिकारों की व्याख्या करने का अधिकार है। विभिन्न स्तर की सरकारों के मध्य अधिकारों के विवाद की स्थिति में सर्वोच्च न्यायालय निर्णायक की भूमिका निभाता है।

(vii) वित्तीय स्वायत्तता—संघीय शासन व्यवस्था में वित्तीय स्वायत्तता निश्चित करने के लिए विभिन्न स्तर की सरकारों के लिए राजस्व के भिन्न-भिन्न स्रोत निर्धारित हैं।

प्रश्न 2. संघात्मक व एकात्मक राज्यों के मध्य अन्तर स्पष्ट करें।

उत्तर—संघात्मक और एकात्मक शासन प्रणालियों में मुख्य अंतर सत्ता के वितरण का है। संघात्मक व्यवस्था (जैसे— भारत, अमेरिका) में संविधान द्वारा केन्द्र और राज्यों के बीच शक्तियों का विभाजन होता है और दोनों अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र होते हैं। इसके विपरीत प्रादेशिक इकाइयाँ (राज्य) केन्द्र के अधीन रहकर कार्य करती है।

संघात्मक शासन प्रणाली— 1. शक्तियों का विभाजन— संविधान के माध्यम से केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों का स्पष्ट विभाजन होता है। **2. संविधान की सर्वोच्चता—** संविधान सर्वोच्च होता है, जिसे आसानी से बदला नहीं जा सकता। **3. दोहरी सरकार—** यहाँ केन्द्र और राज्य स्तर पर अलग-अलग सरकारें होती हैं। **4. स्वतंत्र न्यायपालिका—** शक्तियों के विवाद सुलझाने के लिए एक स्वतंत्र सर्वोच्च न्यायालय होता है।

एकात्मक शासन प्रणाली— 1. केन्द्रीकृत शक्ति— सभी शक्तियाँ केन्द्रीय सरकार के पास होती हैं, जो राष्ट्रीय महत्व के कार्यों को संभालती हैं। **2. प्रादेशिक इकाइयाँ—** राज्य या स्थानीय सरकारें केन्द्र से शक्ति प्राप्त करती हैं और उसी के प्रति उत्तरदायी होती है। **3. एकल सरकार—** सत्ता का केन्द्र एक ही होता है। **4. लचीला संविधान—** संविधान आमतौर पर लचीला होता है और केन्द्र सरकार उसे आसानी से संशोधित कर सकती है। संघात्मक व्यवस्था में राज्य अपनी शक्तियों के लिए केन्द्र पर निर्भर नहीं होते, जबकि एकात्मक व्यवस्था में इकाइयाँ केन्द्र के अधीन होती हैं।

प्रश्न 3. भारत को संघीय देश बनाने वाली दशाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—'भारत एक संघीय देश है।' इसका वर्णन निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत प्रस्तुत है—

1. सत्ता का विभाजन—भारतीय संविधान स्पष्ट रूप से केन्द्र व राज्य सरकारों के मध्य विधायी अधिकारों को तीन सूचियों में बाँटता है। ये तीन सूचियाँ निम्नलिखित हैं—

(i) संघ सूची—संघ सूची में प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, बैंकिंग, संचार और मुद्रा जैसे राष्ट्रीय महत्व के विषय हैं। पूरे देश के लिए इन मामलों में एक तरह की नीतियों की जरूरत है। इसी कारण इन विषयों को संघ सूची में डाला गया है। संघ सूची में वर्णित विषयों के बारे में कानून बनाने का अधिकार केवल केन्द्र सरकार को है।

(ii) राज्य सूची—राज्य सूची में पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि और सिंचाई जैसे प्रान्तीय और स्थानीय महत्व के विषय हैं। राज्य सूची में वर्णित विषयों के बारे में सिर्फ राज्य सरकार ही कानून बना सकती है।

(iii) समवर्ती सूची—समवर्ती सूची में शिक्षा, वन, मजदूर संघ, विवाह, गोद लेना और उत्तराधिकार जैसे विषय हैं, जो केन्द्र के साथ राज्य सरकारों की साझी दिलचस्पी में आते हैं।

2. त्रिस्तरीय व्यवस्था—भारतीय संविधान में तीन स्तर की शासन व्यवस्थाओं का उल्लेख किया गया है :

(i) संघ सरकार, जिसे हम केन्द्र सरकार के नाम से जानते हैं।

(ii) राज्य सरकारें।

(iii) स्थानीय सरकारें।

किसी भी संघीय व्यवस्था की तरह हमारे देश में भी तीनों स्तरों की शासन व्यवस्थाओं के अपने अलग-अलग अधिकार क्षेत्र हैं।

3. सभी प्रशासनिक इकाइयों को समान अधिकार नहीं— सबको साथ लेकर चलने की नीति मानकर बनी अधिकांश बड़ी संघीय व्यवस्थाओं में साथी इकाइयों को बराबर के अधिकार नहीं मिलते। भारतीय संघ के सभी राज्यों को भी बराबर-बराबर के अधिकार नहीं मिले हैं। असम, नागालैण्ड, अरुणाचल प्रदेश तथा मिजोरम जैसे कुछ राज्यों को विशेष दर्जा प्राप्त है।

4. सरकार के दोनों स्तरों की सहमति—संघीय सरकार के अन्तर्गत संविधान के मौलिक प्रावधानों को किसी एक स्तर की सरकार अकेले नहीं बदल सकती और यह भारत के लिए भी सही है। अकेली संसद इस व्यवस्था में बदलाव नहीं कर सकती।

5. न्यायालय का क्षेत्र अधिकार—संघीय शासन व्यवस्था में संवैधानिक प्रावधानों और कानूनों के क्रियान्वयन की देख-रेख में न्यायपालिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शक्तियों के बँटवारे के सम्बन्ध में कोई विवाद होने की हालत में फैसला उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय में ही होता है।

6. आय के विभिन्न साधन—सरकार के संचालन एवं अपनी ज़िम्मेदारियों का निर्वाह करने के लिए आवश्यक राजस्व की उगाही के सम्बन्ध में केन्द्र व राज्य सरकारों को विभिन्न प्रकार के कर लगाने एवं संसाधन जमा करने के अधिकार प्राप्त हैं।

प्रश्न 4. भारत में केन्द्र व राज्यों में सत्ता साझाकरण की दशाओं व राज्यों के भाषाई गठन को स्पष्ट करें।

अथवा

केन्द्र व राज्यों के सत्ता साझाकरण की दशा लिखते हुए शक्तियों के विभाजन व भाषाई आधार पर राज्यों के गठन का वर्णन करें।

उत्तर—भारत में केन्द्र व राज्यों के बीच सत्ता साझाकरण (संघवाद) सातवीं अनुसूची के तहत शक्तियों (संघ, राज्य, समवर्ती सूची) के बँटवारे, साझा वित्तीय संसाधनों और राज्यपाल के माध्यम से संचालित है। भाषाई आधार पर राज्यों गठन (जैसे— 1956 में भाषाई पुनर्गठन) मुख्य रूप से प्रशासनिक दक्षता, सांस्कृतिक संरक्षण और लोकतांत्रिक भागीदारी को मजबूत करने के लिए किया गया, जिससे देश की विविधता में एकता कायम रही। **भारत में केन्द्र व राज्यों के बीच सत्ता साझाकरण की दशाएँ (संघवाद)— 1. संवैधानिक शक्ति विभाजन—** भारतीय संविधान के तहत केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों को तीन सूचियां (संघ, राज्य, समवर्ती) में स्पष्ट रूप से विभाजित किया गया है। **2. वित्तीय आत्मनिर्भरता—** राजस्व के लिए राज्य पूरी तरह से केन्द्र पर निर्भर नहीं हैं; वस्तु एवं सेवाकर जैसी व्यवस्था में केन्द्र और राज्य दोनों की भूमिका होती हैं। **3. प्रशासनिक संबंध—** संविधान के अनुच्छेद 256-263 के तहत केन्द्र और राज्य के बीच तालमेल सुनिश्चित किया जाता है, जहाँ राज्यों को केन्द्र के निर्देशों का पालन करना होता है। **4. लोकतांत्रिक भागीदारी—** बहुदलीय प्रणाली के कारण, केन्द्र में गठबंधन सरकारें राज्यों के क्षेत्रीय दलों को सत्ता में हिस्सेदारी देती हैं।

राज्यों का भाषाई गठन (भाषाई आधार पर पुनर्गठन)— स्वतंत्रता के बाद, भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की माँग उठी, जिसे मुख्य रूप से 1956 में राज्य पुनर्गठन आयोग (फजल अली आयोग) द्वारा लागू किया गया।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि— 1953 में, पोट्टी श्रीरामुलू के निधन के बाद तेलुगु भाषियों के लिए पहला भाषाई राज्य आंध्र प्रदेश बनाया गया। **2. राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956—** इस अधिनियम ने भाषाई और सांस्कृतिक आधार पर राज्यों की सीमाएँ पुनर्निर्धारित कीं। इसके द्वारा 14 राज्य और 6 केन्द्रशासित प्रदेश बनाए गए (जैसे— केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात)। **3. भाषाई आधार पर परिणाम—** स्थानीय भाषा में सरकारी कामकाज आसान हुआ, जिससे प्रशासनिक सुगमता में वृद्धि हुई। लोगों के भाषाई आधार से सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित हुई। इसने राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया, न कि विखंडन को। **4. बाद के पुनर्गठन—** इसके बाद भी भाषा और क्षेत्रीय विकास के आधार पर, 1960 (गुजरात और महाराष्ट्र) और 2014 (तेलंगाना) में राज्य बने।

संक्षेप में, भारत में सत्ता का विभाजन और भाषाई पुनर्गठन, 'विविधता में एकता' के सिद्धान्त पर आधारित है, जो संघीय ढाँचे को बनाए रखते हुए क्षेत्रीय आकांक्षाओं को पूरा करता है।

प्रश्न 5. विकेन्द्रीकरण से क्या तात्पर्य है? भारतीय संदर्भ में इसके प्रावधानों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

विकेन्द्रीकरण को परिभाषित करते हुए भारत के संदर्भ में इसके प्रावधानों के रूप में स्थानीय निकायों, महिला आरक्षण, राजस्व साझाकरण के रूप में वर्णन करें।

उत्तर—जब केन्द्र और राज्य सरकार से शक्तियाँ लेकर स्थानीय सरकारों को दी जाती हैं तो इसे सत्ता का विकेन्द्रीकरण कहते हैं। भारत में संघीय सत्ता की साझेदारी तीन स्तरों पर की गई है—(i) केन्द्रीय स्तर, (ii) राज्य स्तर, (iii) स्थानीय स्तर। सत्ता के विकेन्द्रीकरण में प्रथम दो स्तरों केन्द्रीय स्तर व राज्य स्तर से शक्तियाँ लेकर स्थानीय सरकारों को प्रदान की जाती हैं। भारत में स्थानीय सरकारों को सन् 1992 में संविधान संशोधन के माध्यम से अधिक शक्तिशाली बनाया गया है। प्रत्येक राज्य में इन संस्थाओं के चुनाव हेतु चुनाव आयोग की व्यवस्था की गयी है।

विकेन्द्रीकरण के पीछे बुनियादी सोच—(i) विकेन्द्रीकरण के पीछे बुनियादी सोच यह है कि अनेक मुद्दों एवं समस्याओं का समाधान स्थानीय स्तर पर ही अच्छे तरीके से हो सकता है। लोगों को अपने क्षेत्रों की समस्याओं की अच्छी समझ होती है। लोगों को इस बात की भी जानकारी होती है कि पैसा कहाँ खर्च किया जाए और चीजों का अधिक कुशलता से उपयोग किस तरह किया जा सकता है। (ii) स्थानीय स्तर पर लोगों का नीतिगत फैसलों में सीधे भागीदार बनना भी सम्भव हो जाता है, इससे लोकतान्त्रिक भागीदारी की आदत पड़ती है। स्थानीय सरकारों की स्थापना स्वशासन के लोकतान्त्रिक सिद्धान्त को वास्तविक बनाने का सबसे अच्छा तरीका है।

विकेन्द्रीकरण की दिशा में 1992 में कदम उठाये गये। भारत में 1992 ई. में संविधान संशोधन अधिनियम के द्वारा भारतीय लोकतंत्र के स्थानीय स्वशासी निकायों को अधिक शक्तिशाली एवं प्रभावी बनाने हेतु निम्नलिखित कदम उठाए गये—

(i) अब स्थानीय स्वशासी निकायों के चुनाव 5 वर्ष में लिखित रूप से कराना संवैधानिक बाध्यता है।

(ii) अब इन निकायों के सदस्यों एवं पदाधिकारियों के निर्वाचन में अनुसूचित जातियों, जनजातियों एवं पिछड़ी जातियों के लिए सीटें आरक्षित हैं।

(iii) कम से कम एक-तिहाई पद महिलाओं के लिए आरक्षित हैं।

(iv) प्रत्येक राज्य में इन निकायों के चुनाव कराने के लिए 'राज्य चुनाव आयोग' नामक स्वतन्त्र संस्था का गठन किया गया है।

(v) राज्य सरकारों को अपने राजस्व और अधिकारों का कुछ हिस्सा इन निकायों को देना पड़ता है। सत्ता में भागीदारी की प्रकृति प्रत्येक राज्य में अलग-अलग है।

प्रश्न 6. स्थानीय शासन व्यवस्था क्या है? इसके गठन की प्रक्रिया का वर्णन करें।

उत्तर—स्थानीय शासन व्यवस्था गाँवों एवं शहरों दोनों पर स्थापित है। गाँवों में इसे पंचायती राज के नाम से जाना जाता है। शहरों में नगरपालिका, नगर परिषद एवं नगर निगम जैसी संस्थाओं द्वारा इनका नेतृत्व किया जाता है।

(i) ग्राम स्तर पर—प्रत्येक गाँव या ग्राम समूह के लिए एक ग्राम पंचायत का प्रावधान किया गया है। यह एक तरह की परिषद् होती है जिसके कई सदस्य एवं एक अध्यक्ष होता है। सदस्य वार्डों से चुने जाते हैं तथा उन्हें सामान्यतया पंच कहा जाता है। इसके अध्यक्ष को सरपंच या प्रधान कहा जाता है। इसका चुनाव गाँव या वार्ड में रहने वाले सभी वयस्क लोग मतदान के माध्यम से करते हैं।

(ii) खण्ड स्तर पर—कई ग्राम पंचायतों को मिलाकर पंचायत समिति का गठन होता है। इसे मण्डल या प्रखण्ड स्तरीय पंचायत भी कहा जाता है। इसके सदस्यों का चुनाव सम्बन्धित क्षेत्र के सभी पंचायत सदस्य करते हैं।

(iii) जिला स्तर पर—किसी जिले की समस्त पंचायत समितियों को मिलाकर जिला परिषद् का गठन होता है। यह पंचायती राज की सर्वोच्च संस्था है। जिला परिषद् के अधिकांश सदस्यों का चुनाव होता है। जिला परिषद् के उस जिले से लोकसभा व राज्यसभा के लिए चुने गये सांसद, विधायक तथा जिला स्तर की संस्थाओं के कुछ अधिकारी भी इसके सदस्य होते हैं।

(iv) शहरी स्तर पर—स्थानीय स्वायत्त संस्थाएँ शहरों में भी कार्य करती हैं। शहरों में जनसंख्या के आधार पर नगरपालिका, नगरपरिषद् एवं नगरनिगम का गठन किया गया है। इन संस्थाओं का कामकाज निर्वाचित प्रतिनिधि करते हैं। नगरपालिका के अध्यक्ष को नगरपालिका अध्यक्ष, नगर परिषद् में सभापति एवं नगर निगम में इन्हें मेयर (महापौर) कहा जाता है।

❑❑

3 जाति, धर्म और लैंगिक मसले

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. जीवन के उन विभिन्न पहलुओं का जिक्र करें जिनमें भारत में स्त्रियों के साथ भेदभाव होता है या वे कमज़ोर स्थिति में होती हैं।

उत्तर—भारत में स्त्रियों के साथ अभी भी जीवन के निम्नलिखित पहलुओं में भेदभाव होते हैं—

(i) शिक्षा के क्षेत्र में भेदभाव—आज भी भारत के कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ लड़कियों को शिक्षा के लिए नहीं भेजा जाता है। यदि भेजा भी जाता है तो मात्र औपचारिकता पूरी करने के लिए। देश में स्त्री साक्षरता (54 प्रतिशत) आज भी कम है। यद्यपि विद्यालयी परीक्षाओं के परिणामों में लड़कियों का प्रदर्शन लड़कों से अच्छा रहता है लेकिन आगे की पढ़ाई के दरवाजे उनके लिए बंद हो जाते हैं क्योंकि उनके माता-पिता अपने संसाधनों को लड़के-लड़की दोनों पर खर्च करने के स्थान पर लड़कों पर अधिक खर्च करना पसंद करते हैं।

(ii) उच्च पदों पर स्त्रियों की कम संख्या—आज भी भारत में उच्च वेतन एवं उच्च पदों पर कार्य करने वाली स्त्रियों की संख्या सीमित है। हमारे देश में औसतन एक स्त्री एक पुरुष की तुलना में प्रतिदिन एक घण्टा अधिक कार्य करती है पर उसको ज्यादातर कार्य के लिए पैसे नहीं मिलते इसलिए सामान्यतया उसके कार्य को मूल्यवान नहीं माना जाता।

(iii) समान कार्य के लिए समान मजदूरी नहीं—हमारे देश के समान मजदूरी से सम्बन्धित अधिनियम में कहा गया है कि समान काम के लिए समान मजदूरी प्रदान की जाएगी लेकिन कार्य के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी मिलती है। भले ही दोनों ने समान कार्य किया हो।

(iv) केवल लड़के की चाह—हमारे देश में संतान के रूप में अधिकांश: दम्पत्ति लड़का ही चाहते हैं, कन्या भ्रूण की हत्या कर दी जाती है।

(v) स्त्रियों का उत्पीड़न व शोषण—हमें समाचार-पत्रों में प्रतिदिन ही स्त्रियों के उत्पीड़न, शोषण एवं उन पर होने वाली हिंसा की खबरें पढ़ने को मिलती हैं। शहरी क्षेत्रों में स्त्रियाँ विशेष रूप से असुरक्षित हैं। वे अपने घरों में भी सुरक्षित नहीं हैं क्योंकि वहाँ भी उन्हें मारपीट एवं अनेक प्रकार की घरेलू हिंसा को सहन करना पड़ता है।

प्रश्न 2. विभिन्न तरह की साम्प्रदायिक राजनीति का ब्यौरा दें और सबके साथ एक-एक उदाहरण भी दें।

उत्तर—विभिन्न तरह की साम्प्रदायिक राजनीति का ब्यौरा निम्नलिखित है—

(i) धार्मिक पूर्वाग्रह—साम्प्रदायिकता की सबसे आम अभिव्यक्ति दैनिक जीवन में ही देखने को मिलती है। इसमें धार्मिक पूर्वाग्रह, धार्मिक समुदायों के बारे में बनी-बनाई धारणाएँ एवं एक धर्म को दूसरे धर्म से श्रेष्ठ मानने की मान्यताएँ सम्मिलित हैं। ये चीजें इतनी सामान्य हैं कि सामान्यतया हमारा ध्यान इस ओर नहीं जाता है, जबकि ये हमारे अन्दर ही बैठी हुई होती हैं।

(ii) बहुसंख्यकवाद—साम्प्रदायिक सोच अक्सर अपने धार्मिक समुदाय का राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित करने की फिराक में रहती है। जो लोग बहुसंख्यक समुदाय से सम्बन्ध रखते हैं उनकी यह कोशिश बहुसंख्यकवाद का रूप ले लेती है। जो लोग अल्पसंख्यक समुदाय के होते हैं उनमें यह विश्वास अलग राजनीतिक इकाई बनाने की इच्छा का रूप ले लेता है।

(iii) साम्प्रदायिक आधार पर राजनीतिक गोलबंदी—इसके अन्तर्गत धर्म के पवित्र प्रतीकों, धर्म-गुरुओं, भावनात्मक अपील एवं अपने ही लोगों के मन में डर बैठाने जैसे तरीके का उपयोग किया जाना एक सामान्य बात है। चुनावी राजनीति में एक धर्म के मतदाताओं की भावनाओं अथवा हितों की बात उठाने जैसे तरीके सामान्यतया अपनाए जाते हैं।

(iv) साम्प्रदायिक दंगे—कभी-कभी साम्प्रदायिकता, साम्प्रदायिक हिंसा, दंगा, नरसंहार के रूप में सबसे बुरा रूप अपना लेती है। उदाहरण के लिए, देश विभाजन के समय भारत व पाकिस्तान में भयावह साम्प्रदायिक दंगे हुए थे। स्वतन्त्रता के पश्चात् भी बड़े पैमाने पर साम्प्रदायिक हिंसा हुई थी।

प्रश्न 3. बताइए कि भारत में किस तरह अभी भी जातिगत असमानताएँ जारी हैं ?

उत्तर—भारत में आज भी जातिगत असमानताएँ जारी हैं क्योंकि लोग अपनी ही जाति या समुदाय के लोगों के साथ ही विवाह संबंध स्थापित करते हैं। अन्य कार्यक्रमों में भी कुछ जातियाँ ऐसी हैं जो अपनी ही जाति के लोगों को ही बुलाती हैं। चुनाव में अपनी ही जाति के उम्मीदवार को वोट डालते हैं तथा अपनी जाति के अन्य लोगों को वोट डालने के लिए प्रेरित करते हैं। जिन जातियों में पहले से ही शिक्षा का प्रचलन था और जिनकी शिक्षा पर पकड़ थी, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भी उन्हीं का वर्चस्व है। जिन जातियों को पहले शिक्षा से वंचित रखा जाता था, उनके सदस्य अभी भी स्वाभाविक रूप से शिक्षा में पिछड़े हुए हैं।

जाति व्यवस्था के अन्तर्गत सदियों से कुछ समूहों को लाभ की स्थिति में तो कुछ समूहों को दबाकर रखा गया है। इसका प्रभाव सदियों पश्चात् आज तक नज़र आता है। अत: यह कहा जा सकता है कि भारत में आज भी जातिगत असमानताएँ विद्यमान हैं।

प्रश्न 4. दो कारण बताएँ कि क्यों सिर्फ जाति के आधार पर भारत में चुनावी नतीजे तय नहीं हो सकते ?

उत्तर—भारत में सिर्फ जाति के आधार पर ही चुनावी नतीजे तय नहीं हो सकते क्योंकि—

(i) देश के किसी भी एक संसदीय चुनावी क्षेत्र में किसी एक जाति के लोगों का बहुमत नहीं है इसलिए प्रत्येक राजनैतिक दल और उम्मीदवार को चुनाव में विजय प्राप्त करने के लिए एक जाति व एक समुदाय से अधिक लोगों का समर्थन प्राप्त करना पड़ता है।

(ii) कोई भी राजनैतिक दल किसी एक जाति या समुदाय के समस्त लोगों का वोट प्राप्त नहीं कर सकता। किसी जाति विशेष को किसी एक दल का वोट बैंक कहते हैं तो इसका अर्थ यह होता है कि उस जाति के अधिकांश लोग उसी दल को वोट देते हैं।

प्रश्न 5. भारत की विधायिकाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की स्थिति क्या है ?

उत्तर—भारत की विधायिकाओं में महिला प्रतिनिधियों का अनुपात बहुत ही कम है। लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या पहली बार 2019 में ही 14.36 फीसदी तक पहुँची है। राज्यों की विधानसभाओं में उनका प्रतिनिधित्व 5 प्रतिशत से भी कम है। इस मामले में भारत का स्थान विश्व के देशों में बहुत पीछे है। भारत इस मामले में अफ्रीका व लैटिन अमेरिका में कई विकासशील देशों से भी पीछे है। लेकिन वर्तमान में स्थानीय शासन की विधायिकाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई आरक्षण की व्यवस्था किए जाने के कारण इन संस्थाओं में महिलाओं की संख्या 10 लाख से अधिक हो गयी है।

प्रश्न 6. किन्हीं दो प्रावधानों का जिक्र करें जो भारत को धर्मनिरपेक्ष देश बनाते हैं।

उत्तर—(अ) संविधान देश में धर्म के आधार पर किसी भी भेदभाव पर प्रतिबंध लगाता है। (ब) भारत में रहने वाला व्यक्ति किसी भी धर्म को मान सकता है, उसे व्यवहार में ला सकता है या किसी भी धर्म को न मानने के लिए स्वतन्त्र है।

प्रश्न 7. जब हम लैंगिक विभाजन की बात करते हैं तो हमारा अभिप्राय होता है—

(क) स्त्री और पुरुष के बीच जैविक अन्तर

(ख) समाज द्वारा स्त्री और पुरुष को दी गई असमान भूमिकाएँ

(ग) बालक और बालिकाओं की संख्या का अनुपात

(घ) लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में महिलाओं को मतदान का अधिकार न मिलना

उत्तर—(ख) समाज द्वारा स्त्री और पुरुष को दी गई असमान भूमिकाएँ।

प्रश्न 8. भारत में यहाँ औरतों के लिए आरक्षण की व्यवस्था है—

(क) लोकसभा (ख) विधानसभा

(ग) मंत्रिमण्डल (घ) पंचायतीराज की संस्थाएँ

उत्तर—(घ) पंचायतीराज की संस्थाएँ।

प्रश्न 9. साम्प्रदायिक राजनीति के अर्थ सम्बन्धी निम्नलिखित कथनों पर गौर करें। साम्प्रदायिक राजनीति इस धारणा पर आधारित है कि—

(अ) एक धर्म दूसरे से श्रेष्ठ है।

(ब) विभिन्न धर्मों के लोग समान नागरिक के रूप में खुशी-खुशी साथ रह सकते हैं।

(स) एक धर्म के अनुयायी एक समुदाय बनाते हैं।

(द) एक धार्मिक समूह का प्रभुत्व बाकी सभी धर्मों पर कायम करने में शासन की शक्ति का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

इनमें से कौन या कौन सा कथन सही है ?

(क) अ, ब, स और द (ख) अ, ब और द

(ग) अ और स (घ) ब और द

उत्तर—(ग) अ और स।

प्रश्न 10. भारतीय संविधान के बारे में इनमें से कौन-सा कथन गलत है ?

(क) यह धर्म के आधार पर भेदभाव की मनाही करता है।

(ख) यह एक धर्म को राजकीय धर्म बताता है।

(ग) सभी लोगों को कोई भी धर्म मानने की आज़ादी देता है।

(घ) किसी धार्मिक समुदाय के सभी नागरिकों को बराबरी का अधिकार देता है।

उत्तर—(ख) यह एक धर्म को राजकीय धर्म बताता है।

प्रश्न 11. ....पर आधारित सामाजिक विभाजन सिर्फ भारत में ही है।

उत्तर—लिंग, धर्म तथा जाति।

प्रश्न 12. सूची I और सूची II का मेल करायें और नीचे दिए गये कोड के आधार पर सही जवाब खोजें।

सूची-I	सूची-II
1. अधिकारों और अवसरों के मामले में स्त्री और पुरुष की बराबरी मानने वाला व्यक्ति	(क) साम्प्रदायिक
2. धर्म को समुदाय का मुख्य आधार मानने वाला व्यक्ति	(ख) नारीवाद
3. जाति को समुदाय का मुख्य आधार मानने वाला व्यक्ति	(ग) धर्मनिरपेक्ष
4. व्यक्तियों के बीच धार्मिक आस्था के आधार पर भेदभाव न करने वाला व्यक्ति	(घ) जातिवादी

	1	2	3	4
(सा)	ख	ग	क	घ
(रे)	ख	क	घ	ग
(गा)	घ	ग	क	ख
(मा)	ग	क	ख	घ

उत्तर–(रे)–1 (ख), 2 (क) 3. (घ) 4. (ग)।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लैंगिक विभाजन क्या है? इसे श्रम विभाजन से क्यों जोड़ा जाता है?

उत्तर–लैंगिक विभाजन से आशय पुरुषों एवं महिलाओं के मध्य कार्य के विभाजन से है। कुछ कार्य विशेषकर घरेलू कार्य; जैसे–खाना बनाना, सिलाई करना, कपड़े धोना एवं सफाई करना आदि केवल महिलाओं द्वारा किए जाते हैं, जबकि पुरुष कुछ विशेष प्रकार के कार्य करते हैं।

अधिकांश समाजों में इसे निम्न प्रकार से श्रम विभाजन से जोड़ा जाता है–

(i) पुरुषों एवं महिलाओं के मध्य लैंगिक विभाजन का यह अर्थ है कि पुरुष घरेलू कार्य नहीं कर सकते हैं। वे केवल इतना सोचते हैं कि घरेलू कार्य करना महिलाओं का कार्य है। जब इन कार्यों हेतु पारिश्रमिक दिया जाता है तो पुरुष भी इन कार्यों को करने के लिए तैयार हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, अधिकांश दर्जी या होटलों में रसोइए पुरुष ही होते हैं।

(ii) लैंगिक विभाजन का यह अर्थ भी नहीं होता कि महिलाएँ अपने घर से बाहर कार्य नहीं करती हैं। गाँव में महिलाएँ पानी लाती हैं, जलावन की लकड़ी लाती हैं। शहरों में गरीब महिलाएँ घरेलू नौकरानी का कार्य करती हैं तथा मध्यमवर्गीय महिलाएँ कार्य करने के लिए कार्यालय जाती हैं।

(iii) अधिकांश महिलाएँ घरेलू कार्यों के अतिरिक्त कुछ कार्य मजदूरी पर भी करती हैं। परन्तु उनके कार्यों की उचित मजदूरी प्रदान नहीं की जाती है तथा न ही उचित महत्त्व दिया जाता है।

प्रश्न 2. भारत में महिलाओं की स्थिति व भेदभाव का वर्णन करें।

उत्तर–भारत में महिलाओं की स्थिति

भारत में, स्वतंत्रता के बाद से निजी और सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार देखा गया है। लेकिन महिलाएँ अभी भी पारिवारिक पदानुक्रम और सार्वजनिक जीवन में पुरुषों से पीछे हैं। हमारा समाज पुरुष-प्रधान या पितृसत्तात्मक समाज है जहाँ महिलाओं को वंचित रखा जाता है, उनके साथ भेदभाव किया जाता है और उन्हें विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित किया जाता है। भारतीय समाज और राजनीति में महिलाओं की स्थिति के बारे में कुछ तथ्य इस प्रकार हैं–

महिलाओं में साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में कम है। जनगणना 2011 के अनुसार, कुल साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत और महिला साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है। साथ ही, उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियों का अनुपात बहुत कम है। यद्यपि समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976 में प्रावधान है कि समान कार्य के लिए समान वेतन दिया जाएगा, फिर भी कृषि मजदूरी से लेकर सिनेमा और खेल तक अधिकांश क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है, भले ही दोनों समान प्रकार का कार्य करते हों।

हमारे देश में महिलाओं के खिलाफ विभिन्न प्रकार के उत्पीड़न, शोषण और हिंसा की घटनाएँ आम हैं। खास तौर पर शहरी इलाकों में, महिलाएँ सार्वजनिक स्थानों और कार्यस्थलों पर सुरक्षित नहीं हैं। शारीरिक यातना, उत्पीड़न और घरेलू हिंसा के अन्य रूप महिलाओं को अपने घरों में भी असुरक्षित बनाते हैं। 2023 में, नारी शक्ति वंदन अधिनियम के तहत लोकसभा, विधानसभा और दिल्ली विधानसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण की घोषणा हुई।

भारत में महिलाओं को जीवन के हर क्षेत्र में भेदभाव का सामना करना पड़ता है और यह बात सभी को पता है, जिसमें हमारा राजनीतिक नेतृत्व भी शामिल है, फिर भी महिलाओं की भलाई या उनकी खराब स्थिति से जुड़े मुद्दों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है। इसलिए महिला आंदोलन और नारीवादियों का मानना है कि जब तक महिलाएँ सत्ता पर नियंत्रण नहीं करेंगी, उनकी समस्याओं का कभी भी पर्याप्त समाधान नहीं हो पाएगा। उन्हें लगता है कि निर्वाचित प्रतिनिधियों के रूप में अधिक महिलाओं की उपस्थिति से महिलाओं की स्थिति में सुधार होगा।

प्रश्न 3. भारत में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व हेतु किये गये प्रयासों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–नारीवादी आन्दोलन–विश्व के अलग-अलग भागों में महिलाओं ने अपने संगठन बनाये तथा बराबरी का अधिकार प्राप्त करने के लिए आन्दोलन किए। विभिन्न देशों में महिलाओं को वोट का अधिकार प्रदान करने के लिए आन्दोलन हुए। इन आन्दोलनों में महिलाओं के राजनैतिक एवं वैधानिक दर्जे को ऊँचा उठाने एवं उनके लिए शिक्षा व रोज़गार के अवसर बढ़ाने की माँग की गई। इन महिला आन्दोलनों ने महिलाओं के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन में भी बराबरी की माँग उठाई। इन आन्दोलनों को ही नारीवादी आन्दोलन कहा जाता है।

भारत में महिलाओं को राजनीतिक प्रतिनिधित्व–भारत की विधायिका में महिलाओं का अनुपात बहुत कम है। उदाहरण के लिए; लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या पहली बार 2019 में 14.36 फीसदी पहुँची है। विभिन्न राज्यों की विधानसभाओं में भी महिला सदस्यों का अनुपात जनसंख्या में उनके अनुपात से बहुत

कम है। राज्य की विधानसभाओं में उनका प्रतिनिधित्व 5 प्रतिशत से भी कम है। इस मामले में भारत का स्थान विश्व के अन्य देशों से बहुत नीचे है। भारत इस मामले में अफ्रीका व लैटिन अमेरिका के विकासशील देशों से भी नीचे है।

इस समस्या के समाधान का सबसे अच्छा तरीका यह है कि चुनावी निकायों में महिलाओं के समुचित अनुपात को कानूनी रूप से बाध्यकारी बनाया जाए। ऐसा भारत में पंचायती राज्य के अन्तर्गत हुआ है। स्थानीय निकायों; जैसे—पंचायतों व नगरपालिकाओं में कुल सीटों का एक-तिहाई भाग महिलाओं के लिए आरक्षित किया गया है।

आज भारत के ग्रामीण एवं शहरी स्थानीय निकायों में निर्वाचित महिलाओं की संख्या 10 लाख से भी अधिक है।

महिला संगठनों एवं कार्यकर्ताओं की माँग पर लोकसभा और राज्यसभा में भी एक-तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने हेतु संसद में एक विधेयक प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 4. साम्प्रदायिकता की अवधारणा क्या है? इसके विभिन्न रूपों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—साम्प्रदायिकता—साम्प्रदायिकता समाज की वह स्थिति है जिसमें विभिन्न धार्मिक समूह अन्य समूहों पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयास करते हैं। किसी एक धार्मिक समूह की सत्ता एवं वर्चस्व तथा अन्य समूहों की उपेक्षा पर आधारित राजनीति, साम्प्रदायिक राजनीति कहलाती है।

साम्प्रदायिकता राजनीति में निम्नलिखित रूप धारण कर सकती है—

(i) दैनिक जीवन में साम्प्रदायिकता—साम्प्रदायिकता की सबसे आम अभिव्यक्ति दैनिक जीवन में ही देखने को मिलती है। इसमें धार्मिक पूर्वाग्रह, धार्मिक समुदायों के बारे में बनी-बनाई धारणाएँ एवं एक धर्म को दूसरे धर्म से श्रेष्ठ मानने की मान्यताएँ सम्मिलित हैं। ये चीजें इतनी सामान्य हैं कि सामान्यतया हमारा ध्यान इस ओर नहीं जाता है, जबकि ये हमारे अन्दर ही बैठी हुई होती हैं।

(ii) समुदायों के आधार पर राजनीतिक दलों का गठन—साम्प्रदायिक सोच अक्सर अपने धार्मिक समुदाय का राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित करने की फिराक में रहती है। जो लोग बहुसंख्यक समुदाय से सम्बन्ध रखते हैं उनकी यह कोशिश बहुसंख्यकवाद का रूप ले लेती है। जो लोग अल्पसंख्यक समुदाय के होते हैं, उनमें यह विश्वास अलग राजनीतिक इकाई बनाने की इच्छा का रूप ले लेता है।

(iii) साम्प्रदायिक आधार पर राजनीतिक गोलबंदी—साम्प्रदायिक आधार पर राजनीतिक गोलबंदी साम्प्रदायिकता का दूसरा रूप है। इसके अन्तर्गत धर्म के पवित्र प्रतीकों, धर्म गुरुओं, भावनात्मक अपील एवं अपने ही लोगों के मन में डर बैठाने जैसे तरीकों का उपयोग किया जाना एक सामान्य बात है। चुनावी राजनीति में एक धर्म के मतदाताओं की भावनाओं अथवा हितों की बात उठाने जैसे तरीके सामान्यतया अपनाए जाते हैं।

(iv) साम्प्रदायिक दंगे—कभी-कभी साम्प्रदायिकता, साम्प्रदायिक हिंसा, दंगा, नरसंहार के रूप में अपना सबसे बुरा रूप अपना लेती है। उदाहरण के लिए, देश विभाजन के समय भारत व पाकिस्तान में भयावह साम्प्रदायिक दंगे हुए थे। स्वतन्त्रता के पश्चात् भी बड़े पैमाने पर साम्प्रदायिक हिंसा हुई थी।

प्रश्न 5. भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है क्यों? स्पष्ट करते हुए भारत की धार्मिक विविधता का वर्णन करें।

उत्तर—भारतीय संविधान के निम्नलिखित प्रावधान भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाते हैं—

(i) भारत का संविधान किसी धर्म को विशेष दर्जा नहीं देता है। (ii) हमारा संविधान सभी व्यक्तियों एवं समुदायों को उनको अपनी इच्छा के धर्म को मानने एवं उसका प्रचार करने की स्वतन्त्रता प्रदान करता है। (iii) भारतीय संविधान धर्म के आधार पर किए जाने वाले किसी भी प्रकार के भेदभाव को प्रतिबंधित करता है। (iv) संविधान राज्य को धार्मिक समुदायों के अन्दर समानता सुनिश्चित करने के लिए धर्म के मामले में हस्तक्षेप करने का अधिकार प्रदान करता है।

स्पष्ट है कि धर्मनिरपेक्षता कुछ व्यक्तियों या पार्टियों की एक विचारधारा नहीं है, बल्कि यह हमारे संविधान की बुनियाद है अर्थात् हमारे देश की नीवों में से एक है।

भारत में धार्मिक और सामाजिक विविधता—भारत में दुनिया के लगभग सभी धर्मों के अनुयायी रहते हैं जो देश को एक अनूठी सांस्कृतिक पहचान देते हैं। भारत की जनगणना में हर दस साल बाद प्रत्येक भारतीय के धर्म का रिकार्ड दर्ज किया जाता है। आजादी के बाद में, प्रत्येक समुदाय की कुल आबादी में काफी वृद्धि हुई है, लेकिन देश की आबादी में उनका अनुपात कमोबेश वही बना हुआ है।

(i) प्रमुख धर्म—हिंदू (बहुसंख्यक), इस्लाम, ईसाई धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म प्रमुख हैं। 2011 में हिंदुओं (79.08 प्रतिशत), जैनियों (0.4 प्रतिशत) और ईसाइयों (2.3 प्रतिशत), सिख (1.7 प्रतिशत) और बौद्ध (0.7 प्रतिशत) जनसंख्या का अनुपात मामूली रूप से बढ़ा है। 2011 में देश की जनसंख्या में अनुसूचित जातियाँ 16.6 प्रतिशत तथा अनुसूचित जनजातियाँ 8.6 प्रतिशत थीं। जबकि सच्चर समिति की रिपोर्ट के अनुसार, अगले 50 वर्षों मुसलमानों का अनुपात लगभग 3 से 4 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है। विभिन्न धार्मिक समुदायों के जनसंख्या संतुलन में बड़े पैमाने पर बदलाव की संभावना नहीं है।

2. सांस्कृतिक समृद्धि—यह विविधता संगीत, नृत्य, कला, साहित्य और त्योहारों (दिवाली, ईद, क्रिसमस) के माध्यम से जीवन जीने के अनूठे तरीकों को जन्म देती है।

3. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व—विभिन्न धार्मिक समुदायों का एक साथ रहना और एक-दूसरे का सम्मान करना भारतीय धर्मनिरपेक्षता की नींव है, हालाँकि सांप्रदायिकता एक चुनौती बनी हुई है।

प्रश्न 6. साम्प्रदायिकता से क्या आशय है? इसके प्रमुख आधारों (विश्वासों) का वर्णन कीजिए।

उत्तर—साम्प्रदायिकता का आशय—साम्प्रदायिकता समाज की वह स्थिति है जिसमें विभिन्न धार्मिक समूह अन्य समूहों पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयास करते हैं। साम्प्रदायिक सोच के

अनुसार एक विशेष धर्म में आस्था रखने वाले लोग एक ही समुदाय के होते हैं। उनके मौलिक हित एक जैसे होते हैं तथा समुदाय के लोगों के आपसी मतभेद सामुदायिक जीवन में कोई महत्त्व नहीं रखते। इस सोच में यह बात भी सम्मिलित है कि किसी अलग धर्म को मानने वाले लोग दूसरे सामाजिक समुदाय का हिस्सा नहीं हो सकते। यदि विभिन्न धर्मों की सोच में कोई समानता दिखाई देती है तो यह ऊपरी और बेमानी होती है। साम्प्रदायिक सोच इस मान्यता पर आधारित है कि दूसरे धर्मों के अनुयायी एक ही राष्ट्र में समान नागरिक के रूप में नहीं रह सकते। इस मानसिकता के अनुसार या तो एक समुदाय के लोगों को दूसरे समुदाय के वर्चस्व में रहना होगा अथवा फिर उनके लिए अलग राष्ट्र बनाना होगा।

अत: साम्प्रदायिकता एक ऐसी स्थिति है जब एक विशेष समुदाय के लोग अन्य समुदायों की कीमत पर अपने हितों को बढ़ावा देते हैं। साम्प्रदायिक राजनीति इस सोच पर आधारित होती है कि धर्म ही सामाजिक समुदाय का निर्माण करता है।

साम्प्रदायिकता के प्रमुख विश्वास—साम्प्रदायिकता के प्रमुख विश्वास निम्नलिखित हैं—

(i) एक विशेष धर्म में आस्था रखने वाले लोग एक ही समुदाय के हों।

(ii) उनके मौलिक हित एक जैसे हों तथा समुदाय के लोगों के आपसी मतभेद सामुदायिक जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण स्थान न रखें।

(iii) इस सोच में यह बात सम्मिलित है कि किसी अलग धर्म को मानने वाले लोग दूसरे समुदाय का हिस्सा नहीं हो सकते। यदि विभिन्न धर्मों के लोगों की सोच में कोई समानता दिखती है तो यह ऊपरी बेमानी होती है। उनके हित भी अलग-अलग होंगे और उनमें टकराव भी होगा।

(iv) कभी-कभी साम्प्रदायिकता में यह विचार भी जुड़ने लगता है कि दूसरे धर्मों के अनुयायी एक ही राष्ट्र के समान नागरिक के तौर पर नहीं रह सकते या तो एक समुदाय के लोगों को दूसरे समुदाय के वर्चस्व में रहना होगा या फिर उनके लिए अलग राष्ट्र का निर्माण करना होगा।

प्रश्न 7. जातिवाद क्या है? भारतीय राजनीति में इसकी भूमिका का वर्णन करें।

उत्तर—जातिवाद—जातिवाद अन्य जाति समूहों के विरुद्ध भेदभाव एवं उनके निष्कासन पर आधारित सामाजिक व्यवहार है। समान जाति समूह के लोग एक सामाजिक समुदाय का निर्माण करते हैं। वे एक ही व्यवसाय अपनाते हैं। अपनी जाति के भीतर ही शादी करते हैं एवं अन्य जाति समूहों के सदस्यों के साथ खाना नहीं खाते हैं। राजनीति में जाति अनेक रूप ले सकती है। भारतीय राजनीति में जाति की भूमिका को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) उम्मीदवारों का नाम तय करते समय—जब राजनीतिक दल चुनाव के लिए उम्मीदवारों का नाम तय करते हैं तो चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं की जातियों का हिसाब ध्यान में रखा जाता है ताकि उन्हें जीतने के लिए आवश्यक वोट मिल जाएँ।

(ii) सरकार का गठन करते समय—जब सरकार का गठन किया जाता है तो राजनीतिक दल इस बात का ध्यान रखते हैं कि उसमें विभिन्न जातियों तथा कबीलों के लोगों को उचित स्थान प्रदान किया जाए।

(iii) चुनाव प्रचार करते समय—राजनीतिक दल एवं चुनाव में खड़े हुए उम्मीदवार जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिए जातिगत भावनाओं को उकसाते हैं। कुछ राजनीतिक दलों को कुछ जातियों के सहयोगी एवं प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता है।

(iv) जातियों में नयी चेतना—सार्वभौम वयस्क मताधिकार एवं एक व्यक्ति एक वोट की व्यवस्था ने राजनीतिक दलों को विवश किया कि वे राजनीतिक समर्थन पाने एवं लोगों को गोलबंद करने के लिए सक्रिय हों। इससे उप-जातियों के लोगों में नवीन चेतना का संचार हुआ है जिन्हें अभी तक छोटा और निम्न स्तर का माना जाता था।

भारत में 'जाति में राजनीति' को निम्न तर्कों द्वारा भी बताया जा सकता है—

(i) प्रत्येक जाति स्वयं को बड़ा बनाना चाहती है। पहले वह अपने समूह की जिन उपजातियों को छोटा या नीचा बताकर अपने से बाहर रखना चाहती थी, अब उन्हें अपने साथ लाने की कोशिश करती है।

(ii) चूँकि एक जाति अपने दम पर सत्ता पर कब्जा नहीं कर सकती इसलिए वह ज्यादा राजनीतिक ताकत पाने के लिए दूसरी जातियों अथवा समुदायों को साथ लेने की कोशिश करती है और इस प्रकार उनके मध्य संवाद और मोल-तोल होता है।

(iii) राजनीति में नई किस्म की जातिगत गोलबंदी भी हुई है, जिसे अगड़ा और पिछड़ा कहा जाता है।

प्रश्न 8. जातिगत असमानताओं का भारतीय परिपेक्ष्य में वर्णन करें।

उत्तर—भारत में आज भी जातिगत असमानताएँ जारी हैं क्योंकि लोग अपनी ही जाति या समुदाय के लोगों के साथ ही विवाह संबंध स्थापित करते हैं। अन्य कार्यक्रमों में भी कुछ जातियाँ ऐसी हैं जो अपनी ही जाति के लोगों को ही बुलाती हैं। चुनाव में अपनी ही जाति के उम्मीदवार को वोट डालते हैं तथा अपनी जाति के अन्य लोगों को वोट डालने के लिए प्रेरित करते हैं। जिन जातियों में पहले से ही शिक्षा का प्रचलन था और जिनकी शिक्षा पर पकड़ थी, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भी उन्हीं का वर्चस्व है। जिन जातियों को पहले शिक्षा से वंचित रखा जाता था, उनके सदस्य अभी भी स्वाभाविक रूप से शिक्षा में पिछड़े हुए हैं।

जाति व्यवस्था के अन्तर्गत सदियों से कुछ समूहों को लाभ की स्थिति में तो कुछ समूहों को दबाकर रखा गया है। इसका प्रभाव सदियों पश्चात् आज तक नज़र आता है। अत: यह कहा जा सकता है कि भारत में आज भी जातिगत असमानताएँ विद्यमान हैं।

प्रश्न 9. चुनाव जातियों का खेल है कुछ और नहीं, इस कथन की व्याख्या करें।

उत्तर—राजनीति में जाति पर जोर देने के कारण कई बार लोगों में यह धारणा बन सकती है कि चुनाव जातियों का खेल है, कुछ और नहीं। यह बात वास्तव में सत्य नहीं होती है, जिसे अग्रलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) चुनाव क्षेत्र विभिन्न जातियों से सम्बन्धित लोगों का मिश्रण होते हैं—देश के किसी भी एक संसदीय चुनाव क्षेत्र में किसी एक जाति के लोगों का बहुमत नहीं होता है इसलिए प्रत्येक राजनैतिक दल एवं उम्मीदवार को चुनाव जीतने के लिए एक जाति एवं समुदाय के अधिक लोगों का विश्वास प्राप्त करना पड़ता है।

(ii) चुनावों का इतिहास—हमारे देश के चुनावों का इतिहास देखने से पता चलता है कि सत्ताधारी दल, वर्तमान सांसदों एवं विधायकों को अक्सर पराजय का सामना करना पड़ता है। जो यह सिद्ध करता है कि चुनाव में जातिवाद यद्यपि महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है परन्तु चुनाव केवल जातिवाद पर ही निर्भर नहीं होते।

(iii) प्रभुता सम्पन्न जातियों के लिए खोज—अधिकांश राजनीतिक दल बहुसंख्यक जाति से अपना उम्मीदवार चुनाव में खड़ा करते हैं। परन्तु इससे भी उनकी जीत की गारण्टी नहीं हो सकती क्योंकि ऐसे में कुछ उम्मीदवारों के सामने उनकी जाति के एक से अधिक उम्मीदवार होते हैं तो किसी जाति के मतदाताओं के सामने उनकी जाति का एक भी उम्मीदवार नहीं होता है।

(iv) एक जाति में भी विभिन्न विकल्प उपलब्ध—कोई भी राजनीतिक दल किसी एक जाति या समुदाय के समस्त लोगों का वोट प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि एक समुदाय में भी लोगों के पास विकल्प उपलब्ध होते हैं। जब लोग किसी जाति विशेष को किसी एक पार्टी का 'वोट बैंक' कहते हैं तो इसका यह अर्थ होता है कि उस जाति के अधिकांश लोग उस पार्टी को वोट देते हैं।

❑❑

4 राजनीतिक दल

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की विभिन्न भूमिकाओं की चर्चा करें।

उत्तर—लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की विभिन्न भूमिकाओं/कार्यों/महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) चुनाव लड़ना—विश्व के अधिकांश लोकतांत्रिक देशों में चुनाव राजनीतिक दलों द्वारा चयनित उम्मीदवारों के मध्य लड़ा जाता है। राजनीतिक दल अपने उम्मीदवारों का चुनाव कई तरीकों से करते हैं; जैसे—संयुक्त राज्य अमेरिका में उम्मीदवारों का चुनाव दल के सदस्य व समर्थक करते हैं, वहीं भारत में दलों के नेता ही उम्मीदवार चुनते हैं।

(ii) नीतियों एवं कार्यक्रमों को मतदाताओं के समक्ष रखना—राजनीतिक दल अलग-अलग नीतियों एवं कार्यक्रमों को मतदाताओं के समक्ष रखते हैं तथा मतदाता अपनी पसंद की नीतियाँ एवं कार्यक्रम चुनते हैं।

(iii) कानून निर्माण में भूमिका—राजनीतिक दल देश के कानून निर्माण में निर्णायक भूमिका का निर्वाह करते हैं, कानूनों पर औपचारिक बहस होती है तथा उन्हें विधायिका में पास करवाना होता है। लेकिन विधायिका के अधिकांश सदस्य किसी-न-किसी राजनीतिक दल के सदस्य होते हैं, इस कारण वे अपने दल के नेता के निर्देश पर फैसला करते हैं।

(iv) सरकार का निर्माण एवं संचालन—राजनैतिक दल ही सरकार का निर्माण करते हैं एवं उसका संचालन करते हैं जो भी राजनीतिक दल अथवा उनका गठबन्धन विधायिका में बहुमत प्राप्त करता है, वह सरकार बनाता है और अपनी विचारधारा के अनुसार सरकार को चलाता है व नीतियाँ बनाता है।

(v) शासक दल के विरोधी पक्ष की भूमिका का निर्वाह करना—चुनाव में पराजय का सामना करने वाले दल शासन में विरोधी पक्ष की भूमिका निभाते हैं। ऐसे दल सरकार की गलत नीतियों व असफलताओं की आलोचना करते हैं तथा अपनी राय भी रखते हैं। इसके अतिरिक्त विपक्षी दल सरकार के विरुद्ध आम जनता को भी गोलबन्द करते हैं।

(vi) जनमत का निर्माण करना—जनमत निर्माण में राजनीतिक दल महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। वे उन मुद्दों को जनता के समक्ष लाते हैं जिनका सरकार ठीक ढंग से प्रबंध नहीं कर पाती है। इससे ये अपने पक्ष में एवं सत्ताधारी दल के विरुद्ध जनमत का निर्माण करते हैं।

(vii) सरकारी तंत्र व कल्याणकारी कार्यक्रमों तक जनता की पहुँच को आसान बनाना—राजनीतिक दल ही सरकारी तंत्र एवं सरकार द्वारा संचालित कल्याण कार्यक्रमों तक लोगों की पहुँच बनाते हैं। जनता एक राजकीय अधिकारी के स्थान पर एक नेता तक आसानी से पहुँच सकती है।

प्रश्न 2. राजनीतिक दलों के सामने क्या चुनौतियाँ हैं ?

उत्तर—आधुनिक युग में राजनीतिक दलों के सामने निम्नलिखित चुनौतियाँ हैं—

(i) आंतरिक लोकतंत्र का अभाव होना—अधिकांश राजनीतिक दलों के समक्ष आन्तरिक लोकतंत्र की कमी एक प्रमुख चुनौती है। समस्त विश्व में यह प्रवृत्ति बन गयी है कि समस्त शक्ति एक या कुछेक नेताओं के हाथ में सिमट जाती है। दलों के पास न तो सदस्यों की खुली सूची होती है, न ही नियमित रूप से संगठनात्मक

बैठकें होती हैं, इसके अतिरिक्त आन्तरिक चुनाव भी नहीं होते हैं। कार्यकर्त्ताओं से वे सूचनाओं का साझा भी नहीं करते। सामान्य कार्यकर्ता दल में चल रही हलचलों से अनजान बना रहता है।

(ii) वंशवाद की प्रवृत्ति—भारत के अधिकांश राजनीतिक दलों के समक्ष यह एक प्रमुख चुनौती है। जो लोग बड़े नेता होते हैं, वे अनुचित लाभ लेते हुए अपने नजदीकी लोगों विशेषकर अपने परिवार के लोगों को आगे बढ़ाते हैं। अनेक दलों में उच्च पदों पर हमेशा एक ही परिवार के लोग आते हैं।

(iii) धन एवं अपराधी तत्वों की बढ़ती घुसपैठ—चूँकि समस्त राजनीतिक दलों की चिन्ता चुनाव जीतने की होती है अत: इसके लिए वे कोई भी जायज-नाजायज तरीका अपनाने से भी परहेज नहीं करते हैं। वे ऐसे ही लोगों को चुनाव में उतारते हैं जिनके पास अधिक पैसा है या अधिक पैसा जुटा सकते हैं। कई बार राजनीतिक दल चुनाव जीत सकने वाले अपराधियों का भी समर्थन करते हैं तथा उनकी मदद लेते हैं।

(iv) राजनैतिक दलों के मध्य विकल्पहीनता की स्थिति—आधुनिक युग में राजनीतिक दलों के पास मतदाताओं को देने के लिए सार्थक विकल्प की कमी है। सार्थक विकल्प देने के लिए विभिन्न दलों की नीतियों में अन्तर होना चाहिए। पिछले कुछ वर्षों से विभिन्न देशों में दलों के बीच वैचारिक अन्तर कम होता जा रहा है।

प्रश्न 3. राजनीतिक दल अपना कामकाज बेहतर ढंग से करें, इसके लिए उन्हें मजबूत बनाने के कुछ सुझाव दें।

उत्तर—राजनैतिक दल अपना काम-काज बेहतर ढंग से करें, इसके लिए उन्हें मजबूत बनाने हेतु निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं—

(i) कानून का निर्माण—राजनीतिक दलों के आंतरिक कामकाज को व्यवस्थित करने के लिए कानून का निर्माण किया जाना चाहिए। सभी दल अपने-अपने सदस्यों की सूची रखें, अपने संविधान का पालन करें, दल में विवाद की स्थिति में एक स्वतन्त्र प्राधिकारी को पंच बनाएँ, दल के सबसे बड़े पदों के लिए खुला चुनाव कराएँ। इन समस्त व्यवस्थाओं को अनिवार्य किया जाना चाहिए।

(ii) महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था—राजनीतिक दलों को महिलाओं को एक न्यूनतम अनुपात (लगभग एक-तिहाई) में चुनाव में टिकट दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त दल के प्रमुख पदों पर महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

(iii) चुनाव खर्च का सरकार द्वारा वहन—विभिन्न प्रकार के चुनावों का खर्चा सरकार द्वारा वहन किया जाना चाहिए। सरकार को चुनावों हेतु विभिन्न राजनीतिक दलों को धन प्रदान करना चाहिए। यह धन नकद रूप में अथवा मदद जैसे—पेट्रेल, कागज, फोन आदि के रूप में हो सकता है।

(iv) राजनीतिक दलों पर जनता द्वारा दबाव बनाना—राजनीतिक दलों पर जनता द्वारा दबाव बनाया जाय इस हेतु पत्र लिखने, प्रचार करने एवं आन्दोलन के माध्यम से जनता यह कार्य कर सकती है। आम नागरिक दबाव समूह, आन्दोलन एवं मीडिया के माध्यम से यह कार्य कर सकता है। अपनी छवि खराब होने के भय से राजनीतिक दल अपने में सुधार करेंगे।

प्रश्न 4. राजनीतिक दल का क्या अर्थ होता है ?

उत्तर—राजनीतिक दल का अर्थ—राजनीतिक दल को लोगों के एक ऐसे संगठित समूह के रूप में समझा जा सकता है जो चुनाव लड़ने व सरकार में राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के उद्देश्य से कार्य करता है। समाज के सामूहिक हित को ध्यान में रखकर यह समूह कुछ नीतियाँ एवं कार्यक्रम तय करता है। इसके तीन प्रमुख अंग (अवयव) हैं—नेता, सक्रिय सदस्य एवं अनुयायी या समर्थक।

प्रश्न 5. किसी भी राजनीतिक दल के क्या गुण होते हैं ?

उत्तर—किसी भी राजनीतिक दल के निम्नलिखित गुण होते हैं—

(i) यह लोगों का एक ऐसा संगठित समूह होता है जो सरकार बनाने एवं चलाने के लिए समान मुद्दों पर सहमति दिखाते हुए साथ मिलकर चुनाव लड़ते हैं।

(ii) समाज के सामूहिक हितों को सुनिश्चित करने के लिए इनके पास नीति व कार्यक्रम होते हैं।

(iii) इनका एक चुनाव चिह्न होता है।

(iv) समाज के विकास के लिए धरना, प्रदर्शन आदि करते हैं।

(v) वे अपनी नीतियों व कार्यक्रमों को चुनाव द्वारा जनता से प्राप्त लोकप्रिय समर्थन के माध्यम से लागू करते हैं।

(vi) राजनीतिक दल समाज के मौलिक राजनीतिक विभाजन को परिलक्षित करते हैं।

प्रश्न 6. चुनाव लड़ने और सरकार में सत्ता सँभालने के लिए एकजुट हुए लोगों के समूह को .... कहते हैं।

उत्तर—राजनीतिक दल।

प्रश्न 7. पहली सूची (संगठन/दल) और दूसरी सूची (गठबंधन/मोर्चा) के नामों का मिलान करें और नीचे दिए गए कूट नामों के आधार पर सही उत्तर ढूँढ़ें—

सूची-I	सूची-II
1. इंडियन नेशनल कांग्रेस	(क) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन
2. भारतीय जनता पार्टी	(ख) क्षेत्रीय दल
3. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी)	(ग) संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन
4. तेलुगु देशम पार्टी	(घ) वाम मोर्चा

उत्तर—कूट—

	1	2	3	4
(क)	ग	क	ख	घ
(ख)	ग	घ	क	ख
(ग)	ग	क	घ	ख
(घ)	घ	ग	क	ख

उत्तर—(ग) 1. ग, 2. क, 3. घ, 4. ख।

प्रश्न 8. इनमें से कौन बहुजन समाज पार्टी का संस्थापक है?

(क) कांशीराम (ख) साहू महाराज
(ग) बी. आर. आंबेडकर (घ) ज्योतिबा फुले

उत्तर—(क) कांशीराम।

प्रश्न 9. भारतीय जनता पार्टी का मुख्य प्रेरक सिद्धान्त क्या है ?

(क) बहुजन समाज (ख) क्रांतिकारी लोकतन्त्र
(ग) समग्र मानवतावाद (घ) आधुनिकता

उत्तर—(ग) समग्र मानवतावाद।

प्रश्न 10. पार्टियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर गौर करें—

(अ) राजनीतिक दलों पर लोगों का ज्यादा भरोसा नहीं है।
(ब) दलों में अक्सर बड़े नेताओं के घोटालों की गूँज सुनाई देती है।
(स) सरकार चलाने के लिए पार्टियों का होना जरूरी नहीं।

इन कथनों में से कौन सही है ?

(क) अ, ब और स (ख) अ और ब
(ग) ब और स (घ) अ और स

उत्तर—(ख) अ और ब।

प्रश्न 11. निम्नलिखित उद्धरण को पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्नों का जवाब दें—

मोहम्मद युनूस बांग्लादेश के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हैं। गरीबों के आर्थिक और सामाजिक विकास के प्रयासों के लिए उन्हें अनेक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। उन्हें और उनके द्वारा स्थापित ग्रामीण बैंक को संयुक्त रूप से वर्ष 2006 का नोबेल शान्ति पुरस्कार दिया गया। फरवरी 2007 में उन्होंने एक राजनीतिक दल बनाने तथा संसदीय चुनाव लड़ने का फैसला किया। उनका उद्देश्य सही नेतृत्व को उभारना, अच्छा शासन देना और नए बांग्लादेश का निर्माण करना है। उन्हें लगता है कि पारम्परिक दलों से अलग एक नए राजनीतिक दल से ही नई राजनीतिक संस्कृति पैदा हो सकती है। उनका दल निचले स्तर से लेकर ऊपर तक लोकतांत्रिक होगा। नागरिक शक्ति नामक इस नये दल के गठन से बांग्लादेश में हलचल मच गई है। उनके फैसले को काफी लोगों ने पसंद किया तो अनेक को यह अच्छा नहीं लगा। एक सरकारी अधिकारी शाहेदुल इस्लाम ने कहा, "मुझे लगता है कि अब बांग्लादेश में अच्छे और बुरे के बीच चुनाव करना सम्भव हो गया है। अब एक अच्छी सरकार की उम्मीद की जा सकती है। यह सरकार न केवल भ्रष्टाचार से दूर होगी बल्कि भ्रष्टाचार और काले धन की समाप्ति को भी अपनी प्राथमिकता बनायेगी।"

पर दशकों से मुल्क की राजनीति में रुतबा रखने वाले पुराने दलों के नेताओं में संशय है। बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी के एक बड़े नेता का कहना है—"नोबेल पुरस्कार जीतने पर क्या बहस हो सकती है पर राजनीति एकदम अलग चीज है। एकदम चुनौती भरी और अक्सर विवादास्पद।" कुछ अन्य लोगों का स्वर और कड़ा था। वे उनके राजनीति में आने पर सवाल उठाने लगे। एक राजनीतिक प्रेक्षक ने कहा, "देश से बाहर की ताकतें उन्हें राजनीति पर थोप रही हैं।"

प्रश्न 12. क्या आपको लगता है कि यूनुस ने नई राजनीतिक पार्टी बनाकर ठीक किया?

क्या आप विभिन्न लोगों द्वारा जारी बयानों और संदेशों से सहमत हैं? इस पार्टी को दूसरों से अलग काम करने के लिए खुद को किस तरह संगठित करना चाहिए? अगर आप इस राजनीतिक दल के संस्थापकों में एक होते तो इसके पक्ष में क्या दलील देते?

उत्तर—(i) हाँ, मेरे विचार से युनूस ने नई राजनीतिक पार्टी बनाकर ठीक किया है।

(ii) हाँ, मैं समस्त प्रगतिशील लोकतांत्रिक जनता की भलाई के लिए किए गए उन लोगों के बयानों व अंदेशों से सहमत हूँ जो किसी-न-किसी रूप में युनूस के कार्यक्रम से सहमत हैं। लेकिन मैं बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी के एक बड़े नेता के कथन से सहमत नहीं हूँ।

(iii) इस पार्टी को सभी लोगों के हित में काम करना चाहिए। अमीर-गरीब, साक्षर-निरक्षर, सभी तरह के लोगों की समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए। ऐसी नीतियाँ बनानी चाहिए, जो सभी लोगों के हित में हों।

(iv) यदि मैं इस राजनीतिक दल के संस्थापकों में से एक होता तो मैं बांग्लादेश के लोगों को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न करता कि इस नवगठित दल का एकमात्र उद्देश्य जनता की भलाई करना है। यह पार्टी जमीनी स्तर से ही ऊपरी स्तर तक लोकतांत्रिक होगी जिससे इस पर जन-साधारण का नियंत्रण रहेगा तथा वंशवाद का उभार नहीं होगा। यह पार्टी एक अधिक लोकतांत्रिक एवं पारदर्शी नवीन राजनीतिक संस्कृति को जन्म देने जा रही है, जिसकी बांग्लादेश को अति आवश्यकता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. राजनीतिक दल क्या है? इनके कार्यों का वर्णन कीजिए।

अथवा

राजनीतिक दलों की परिभाषा लिखते हुए, चुनाव लड़ने, नीतियाँ बनाने, कानून बनाने, सरकार बनाने, विपक्ष की भूमिका निभाने, जनमत को आकार देने के संदर्भ में वर्णन कीजिए।

उत्तर—राजनीतिक दल समान विचारधारा वाले लोगों का एक संगठित समूह है जो चुनाव लड़कर, नीतियाँ बनाकर, कानून बनाकर, सरकार बनाकर, विपक्ष की भूमिका निभाकर और जनमत को आकार देकर सत्ता हासिल करने और देश के शासन में भाग लेने का लक्ष्य रखता है, जो लोकतंत्र के लिए आवश्यक है क्योंकि वे नागरिकों को राजनीतिक व्यवस्था से जोड़ते हैं और उन्हें नीतिगत विकल्प देते हैं।

राजनीतिक दल का अर्थ—एक राजनीतिक दल ऐसे लोगों का एक संगठित समूह है जिनके राजनीतिक लक्ष्य और राय लगभग समान होती हैं, और जो अपने उम्मीदवारों को सार्वजनिक पदों के लिए चुनवाकर सार्वजनिक नीति को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।

राजनीतिक के प्रमुख कार्य और भूमिकाएँ

1. चुनाव लड़ना—राजनीतिक दल उम्मीदवारों का चयन और नामांकन करते हैं और उन्हें चुनाव लड़ने के लिए तैयार करते हैं। वे चुनाव जीतने के लिए अभियान चलाते हैं और अपने प्रतिनिधियों को चुनवाते हैं।

2. नीतियाँ और कार्यक्रम बनाना—दल विभिन्न सामाजिक समूहों की समस्याओं और मांगों को पहचानते हैं, उन्हें नीतियों में बदलते हैं। वे जनता की राय को नीतिगत विकल्पों में परिवर्तित करते हैं।

3. सरकार बनाना और चलाना—चुनाव जीतने के बाद, राजनीतिक दल सरकार बनाते हैं और महत्वपूर्ण पदों पर अपने सदस्यों को नियुक्त करते हैं। वे सरकार की नीतियों और कार्यों का प्रचार करते हैं और विधायिका व कार्यपालिका में समन्वय स्थापित करते हैं।

4. विपक्ष की भूमिका निभाना—जो दल चुनाव नहीं जीतते, वे विपक्ष की भूमिका निभाते हैं। वे सरकार की नीतियों की आलोचना करते हैं, जनमत को सरकार के सामने रखते हैं और वैकल्पिक नीतियाँ प्रस्तुत करते हैं।

5. जनमत को आकार देना—दल मतदाओं को राजनीतिक व्यवस्था, चुनावों और सामाजिक सामान्य मूल्यों के बारे में शिक्षित करते हैं। वे नागरिकों की राय और चिंताओं को सरकार तक पहुँचाते हैं और उन्हें राजनीतिक निर्णय लेने में सक्रिय करते हैं।

6. कानून बनाना—सत्ता में आने पर, दल विधायिका में अपने सदस्यों के माध्यम से कानूनों के निर्माण और संशोधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संक्षेप में, राजनीतिक दल आधुनिक लोकतंत्र की धड़कन हैं, जो समाज को एकजुट करते हैं, नीतियों को आकार देते हैं और सरकार को जवाबदेह बनाए रखने में मदद करते हैं।

प्रश्न 2. राजनीतिक दलों की आवश्यकता क्यों है? समझाइए।

उत्तर—राजनीतिक दलों की जरूरत निम्नलिखित कारणों से है—(i) यदि राजनीतिक दल न हों तो समस्त उम्मीदवार स्वतन्त्र या निर्दलीय होंगे। तब इनमें से कोई भी बड़े नीतिगत परिवर्तन के बारे में लोगों से चुनावी वायदे करने की स्थिति में नहीं होगा। (ii) सरकार बन जाने के पश्चात् इनकी उपयोगिता संदिग्ध होगी। (iii) राजनैतिक दलों के अभाव में निर्वाचित प्रतिनिधि सिर्फ अपने निर्वाचन क्षेत्रों के लिए किए गये कार्यों के प्रति जवाबदेह होंगे। लेकिन देश कैसे चलाया जा रहा है, इसके लिए कोई भी उत्तरदायी नहीं होगा। (iv) राजनीतिक दल के अभाव में सरकार निरकुंश हो सकती है क्योंकि सरकार की गलत नीतियों एवं कार्यक्रमों का विरोध करने के लिए कोई समूह नहीं होगा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि राजनीतिक दल लोकतन्त्र की एक अनिवार्य शर्त है। (v) हमें विभिन्न कार्यों के सम्पादन के लिए राजनीतिक दलों की आवश्यकता होती है। वे नीतियाँ व कार्यक्रम बनाते हैं, कानून बनाते हैं, सरकार बनाते व चलाते हैं। विपक्ष की भूमिका के साथ-साथ अन्य कार्य भी करते हैं।

प्रश्न 3. राजनीतिक दलीय व्यवस्था के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—राजनीतिक दलीय व्यवस्था मुख्य रूप से एकल-दलीय, द्वि-दलीय और बहु-दलीय प्रणाली में वर्गीकृत होती है, जहाँ एकल-दलीय में एक ही दल का शान होता है (जैसे-चीन), द्वि-लीय में दो प्रमुख दल होते हैं (जैसे-अमेरिका) और बहु-दलीय में कई दल प्रतिस्पर्धा करते हैं, अक्सर गठबंधन बनाते हैं (जैसे-भारत), जिससे व्यवस्थाएँ राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और गठबंधन आधारित होती हैं।

1. एकलदलीय प्रणाली—इस प्रणाली में केवल एक ही राजनीतिक दल को कानूनी रूप से शासन करने की अनुमति होती है और कोई विरोधी दल नहीं होता। उदाहरण स्वरूप-चीन, जहाँ कम्युनिस्ट पार्टी का शासन है। इस राजनीतिक व्यवस्था से शासन को स्थिरता मिलती है, लेकिन लोकतंत्र और व्यक्तिगत स्वतंत्रता सीमित हो सकती है।

2. द्वि-दलीय प्रणाली—इस प्रणाली में दो प्रमुख दल सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं और अक्सर एक दल बहुमत प्राप्त कर सरकार बनाता है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका (डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टी) और यूनाइटेड किंगडम (हालाँकि वहाँ कई छोटे दल भी हैं।) द्वि-दलीय व्यवस्था देश को स्पष्ट विकल्प प्रदान करती है, लेकिन छोटे दलों और विचारों को कम प्रतिनिधित्व मिलता है।

3. बहु-दलीय प्रणाली—इस प्रणाली में देश में कई दल मौजूद होते हैं और चुनाव लड़ते हैं; अक्सर कोई भी एक दल बहुमत नहीं पाता, जिससे गठबंधन सरकारें बनती हैं। उदाहरण के लिए, हमारे देश में कई राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल हैं और गठबंधन (जैसे-यूपीए, एनडीए) आम हैं। इस प्रणाली में अधिक प्रतिनिधित्व और विविधता मिलती है, लेकिन गठबंधन अस्थिर हो सकते हैं और न्यूनतम साझा कार्यक्रम पर निर्भर करते हैं।

भारत के संदर्भ में दलीय व्यवस्था—(i) **राष्ट्रीय दल**—भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी), भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) जैसे दल जिनका पूरे देश में प्रभाव है। (ii) **क्षेत्रीय दल**—वे दल जो किसी विशेष राज्य या क्षेत्र में मजबूत होते हैं; जैसे—द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डी एम के) या तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी)। (iii) **गठबंधन**—भारत में अक्सर राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के बीच गठबंधन बनते हैं; जो न्यूनतम साझा कार्यक्रम के आधार पर सरकार बनाते हैं।

प्रश्न 4. भारतीय राजनीतिक दलों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत के संविधान के अनुसार भारत में संघीय व्यवस्था है। दुनिया भर में संघीय व्यवस्था का पालन करने वाले लोकतंत्रों में दो प्रकार के राजनीतिक दल होते हैं—(i) राज्य दल और (ii) राष्ट्रीय दल। भारत एक ऐसा उदाहरण है जहाँ दोनों तरह के दल एक साथ मौजूद हैं। राष्ट्रीय दल का प्रभाव पूरे देश में होता है, वहीं राज्य दल का प्रभाव क्षेत्रीय होता है, इसलिए इन्हें क्षेत्रीय दल भी कहते हैं। देश के हर दल को चुनाव आयोग में अनिवार्य रूप से पंजीकरण कराना होता है।

भारत के राष्ट्रीय राजनीतिक दल—2023 के वर्गीकरण के अनुसार, देश में छह मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय राजनीतिक दल हैं। जो इस प्रकार हैं—

1. भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी)—भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) देश का एक प्रमुख राष्ट्रवादी राजनीतिक दल हैं, जो 1980 में स्थापित हुआ और जिसका मूल भारतीय जनसंघ है, जो हिंदुत्व और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर आधारित है तथा वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र में सत्तारूढ़ है।

प्रमुख नीतियाँ—हिन्दुत्व को राष्ट्रवाद व राजनीति के महत्वपूर्ण तत्व के रूप में अपनाना। भारत के साथ जम्मू और कश्मीर का पूर्ण क्षेत्रीय, राजनीतिक एकीकरण तथा सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता, चाहे वे किसी भी धर्म के हों, धर्मांतरण पर प्रतिबंध मुख्य नीतियाँ हैं। इसका चुनाव चिह्न कमल का फूल है।

2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी)—दुनिया की सबसे पुरानी पार्टियों में एक, यह देश का एक प्रमुख राजनीतिक दल है, जिसकी स्थापना 28 दिसंबर, 1885 में ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीयों को राजनीतिक रूप से एकजुट करने और स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने के लिए ए.ओ.ह्यूम ने मुम्बई (बम्बई) में की थी। 2019 के लोकसभा चुनाव में 52 सीटें जीतीं।

3. बहुजन समान पार्टी (बसपा)—बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) भारत की राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टी है, जिसकी स्थापना कांशीराम ने 1984 में की थी, जिसका उद्देश्य 'बहुजन' (एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक) समुदायों को राजनीति शक्ति देना है, यह डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के सिद्धांतों से प्रेरित है। इसका चुनाव चिह्न हाथी है जिसका मुख्य गढ़ उत्तर प्रदेश है। वर्तमान में कांशीराम के बाद मायावती पार्टी की बागडोर संभाले हैं।

4. नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी)—भारत की एक राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टी है, जो मुख्य रूप से पूर्वोत्तर भारत, खासकर मेघालय में केंद्रित है, और 2019 में राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा प्राप्त करने वाली पूर्वोत्तर की पहली पार्टी बनी, यह पी.ए. संगमा द्वारा राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) से 2013 में अलग होकर स्थापित की गयी। यह पार्टी मेघालय में सत्ता में है। वर्तमान में कॉनराड संगमा इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं और मेघालय के मुख्यमंत्री भी हैं।

5. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) (सीपीआई- एम) या माकपा—यह देश का एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल है, जिसकी स्थापना 1964 में भारतीय कम्युनिस्ट (सीपीआई) से अलग होकर हुई थी; यह मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा पर आधारित है, जिसका लक्ष्य वर्गहीन, समाजवादी समाज की स्थापना करना है और इसका मुख्य जनाधार पश्चिम बंगाल, केरल और त्रिपुरा जैसे राज्यों में बना हुआ है, जहाँ इसने लंबे समय तक सरकारें चलाई हैं।

6. आम आदमी पार्टी (आप)—आम आदमी पार्टी का गठन भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन के बाद 26 नवंबर 2012 को हुआ। 2022 के गुजरात विधानसभा चुनाव के बाद यह गुजरात की राजनीति में तीसरे मोर्चे के रूप में उभरी। आप ने पंजाब और दिल्ली में सरकार बनाई थी। 2019 के लोकसभा चुनाव में पार्टी ने लोकसभा में एक सीट हासिल की।

प्रश्न 5. राजनीतिक दलों की प्रमुख चुनौतियों का वर्णन करें।

उत्तर—राजनीतिक दलों के सामने मुख्य चुनौतियाँ आंतरिक लोकतंत्र की कमी, वंशवाद, धनबल और बाहुबल का प्रभाव, पारदर्शिता का अभाव, विचारधारा की अस्पष्टता, भ्रष्टाचार, जनता से जुड़ाव में कमी और सामाजिक व तकनीकी बदलावों के अनुकूल ढलने की आवश्यकता हैं, जो उन्हें अधिक लोकतांत्रिक और जनता के प्रति जवाबदेह बनने से रोकती हैं, जिससे कई बार जनता का विश्वास भी कम होता है।

राजनीतिक दलों की प्रमुख चुनौतियाँ—

1. आंतरिक लोकतंत्र का अभाव—पार्टियों में सत्ता कुछ शीर्ष नेताओं के हाथों में केंद्रित हो जाती है। इससे निर्णय लेने की प्रक्रिया में आम कार्यकर्ताओं की भागीदारी नहीं होती। पार्टियाँ नियमित चुनाव नहीं करातीं और सदस्यों को जानकारी भी नहीं दी जाती है।

2. वंशवाद और परिवारवाद—दलों के शीर्ष पदों पर अक्सर एक ही परिवार के सदस्यों का नियंत्रण होता है। परिवार के सदस्यों को अनुचित लाभ पहुँचाने की प्रवृत्ति होती है।

3. धनबल और बाहुबल का बढ़ता प्रभाव—चुनाव जीतने के लिए धन और बाहुबल का उपयोग किया जाता है। अमीर लोग और कंपनियाँ पार्टियों को धन देकर नीतियों को प्रभावित करती हैं।

4. पारदर्शिता की कमी—पार्टियाँ अपने कामकाज में खुली प्रक्रियाओं का पालन नहीं करतीं और साधारण कार्यकर्ता के लिए शीर्ष पर पहुँचना मुश्किल हो जाता है।

5. विचारधारा की अस्पष्टता—कुछ दलों में स्पष्ट विचारधारा नहीं होती, जिससे मतदाताओं को भ्रम होता है।

6. भ्रष्टाचार—सरकार में रहते हुए दलों के बीच भ्रष्टाचार बढ़ने की संभावना रहती है।

7. जनता से जुड़ाव की कमी—कई बार दल जनता के मुद्दों की नजरअंदाज कर देते हैं। घोटाले और वादे पूरे न होने से जनता का विश्वास कम होता है।

8. परिवर्तन के अनुकूल ढलने की चुनौती—बदलते सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिदृश्य के साथ खुद को प्रासांगिक बनाए रखना मुश्किल होता है।

9. आंतरिक विभाजन और गुटबाजी—पार्टियों के भीतर विचारधाराओं और प्राथमिकताओं को लेकर टकराव होता है, जिससे एकता कमजोर होती है।

ये चुनौतियाँ मिलकर राजनीतिक दलों की विश्वसनीयता और लोकतांत्रिक प्रणाली की मजबूती को प्रभावित करती है।

प्रश्न 6. भारत में राजनीतिक दलों के सुधार हेतु अपनाये गये कदमों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भारत में राजनीतिक दलों के सुधार के लिए दलबदल विरोधी कानून, चुनाव आयोग की सशक्तिकरण, वित्तीय पारदर्शिता (जैसे-आयकर रिटर्न और ऑडिट), उम्मीदवारों के लिए शपथ-पत्र (स्व-घोषणा), और आंतरिक लोकतंत्र को बढ़ावा देने जैसे कदम उठाए गए हैं, ताकि पारदर्शिता, जवाबदेही और आंतरिक कामकाज में सुधार हो सके और चुनावों में धन-बल और बाहुबल के प्रभाव को कम किया जा सके, हालाँकि इन उपायों के पूर्ण कार्यान्वयन और प्रभावशीलता पर लगातार बहस जारी है।

प्रमुख सुधार और उठाए गए कदम

1. दलबदल विरोधी कानून (52वाँ संशोधन अधिनियम, 1985)—संविधान की दसवीं अनुसूची जोड़ी गई, जिससे सांसदों और विधायकों को दल बदलने पर अयोग्य ठहराया जा सके। इसका उद्देश्य दल-बदल को रोकना और राजनीतिक अस्थिरता कम करना था, हालाँकि बाद में 91वें संशोधन (2003) से इसमें कुछ कठोरता लाई गई।

2. चुनाव आयोग की भूमिका—चुनाव आयोग ने दलों के लिए संगठनात्मक चुनाव कराना और आयकर रिटर्न दाखिल करना अनिवार्य किया। आदर्श आचार संहिता को सख्ती से लागू करने के प्रयास किए गए, खासकर टी.एस.शेषन के कार्यकाल में।

3. उम्मीदवारों के लिए स्व-घोषणा—सुप्रीम कोर्ट के आदेश से चुनाव लड़ने वाले हर उम्मीदवार को अपनी संपत्ति और आपराधिक मामलों की जानकारी एक शपथ पत्र के माध्यम से देना अनिवार्य है।

4. राजनीतिक दलों के वित्तपोषण में पारदर्शिता— सुधारों का लक्ष्य चुनावी बांड (हालाँकि विवादित) और अन्य माध्यमों से मिलने वाले धन में पारदर्शिता लाना है। राज्य द्वारा चुनाव वित्त पोषण का विचार भी प्रस्तावित है, जिसमें सरकार पेट्रोल, कागज, आदि के खर्च में मदद करें या नकद राशि दे।

5. आंतरिक लोकतंत्र और संरचना—दलों के आंतरिक कामकाज में पारदर्शिता और लोकतंत्र लाने के लिए कानून बनाने की माँग है; जैसे-सदस्यों का रजिस्टर रखना और स्वतंत्र प्रधिकरण द्वारा चुनाव कराना।

6. महिला प्रतिनिधित्व—राजनीतिक दलों के लिए महिलाओं को टिकटों में न्यूनतम एक-तिहाई आरक्षण देने का प्रस्ताव है, ताकि लैंगिक समानता बढ़े।

7. अपराधियों का प्रभाव कम करना—शपथ पत्र और अन्य माध्यमों से आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों की जानकारी सार्वजनिक करने का प्रावधान है, हालाँकि जानकारी की सत्यता की जाँच एक चुनौती है।

चुनौतियाँ—इन सुधारों के बावजूद, कई बार दलों द्वारा नियमों का पालन नहीं किया जाता और पारदर्शिता व जवाबदेही सुनिश्चित करना मुश्किल होता है। चुनावों में धन और बाहुबल का प्रभाव अभी भी एक बड़ी समस्या है, जिसे पूरी तरह खत्म नहीं किया जा सका है।

❑❑

5 लोकतन्त्र के परिणाम

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लोकतन्त्र किस तरह उत्तरदायी, जिम्मेवार और वैध सरकार का गठन करता है ?

उत्तर—लोकतन्त्र एक उत्तरदायी, जिम्मेदार और वैध सरकार शासन का गठन निम्नलिखित प्रकार से करता है—

(i) उत्तरदायी सरकार—लोकतन्त्र एक उत्तरदायी सरकार का गठन करता है। लोकतन्त्र में सबसे बड़ी चिन्ता यह होती है कि लोगों को अपना शासक चुनने का अधिकार और शासकों पर नियन्त्रण बरकरार रहे। लोकतन्त्र में जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनती है। ये प्रतिनिधि सरकार बनाते हैं और अपने कार्यों के लिए जनता के प्रति उत्तरदायी होते हैं। इस प्रकार एक निश्चित समय अन्तराल पर निर्वाचन की व्यवस्था के द्वारा लोकतन्त्र एक उत्तरदायी सरकार का गठन करता है।

(ii) जिम्मेवार सरकार—लोकतन्त्र एक जिम्मेवार सरकार का गठन करता है क्योंकि इसका निर्णय जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि करते हैं। ये प्रतिनिधि समाज की समस्याओं पर बहस करते हैं एवं तदनुसार नीतियाँ एवं कार्यक्रम बनाते हैं। समस्याओं को सुलझाने के लिए इन्हीं नीतियों एवं कार्यक्रमों को लागू किया जाता है।

(iii) वैध सरकार—लोकतन्त्र एक वैध सरकार का निर्माण करता है क्योंकि यह जनता की सरकार होती है। लोकतान्त्रिक सरकारें जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की सरकारें होने के कारण वैध सरकारें होती हैं। इन्हें देश की जनता की स्वाभाविक स्वीकृति मिली हुई होती है। यह जनता ही होती है जो अपने द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से सरकार बनाकर स्वयं के ऊपर शासन करवाती है।

प्रश्न 2. लोकतन्त्र किन स्थितियों में सामाजिक विविधता को सँभालता है और उनके बीच सामंजस्य बैठाता है ?

उत्तर—लोकतन्त्र निम्नलिखित स्थितियों में सामाजिक विविधता को सँभालता है एवं उनके बीच सामंजस्य बैठाता है—

(i) विश्व के अधिकांश देशों में, जिनमें लोकतान्त्रिक व्यवस्था को अपनाया गया है, उनमें अनेक प्रकार की सामाजिक विविधताएँ देखने को मिलती हैं। लोकतन्त्र शान्तिपूर्ण एवं सद्भाव के वातावरण में सामाजिक विभिन्नताओं को उचित स्थान प्रदान करता है व उन्हें अपनाता है। उदाहरण के रूप में, बेल्जियम की लोकतान्त्रिक व्यवस्था ने अपने यहाँ के विभिन्न जातीय समूहों की आकांक्षाओं के बीच सफलतापूर्वक सामंजस्य स्थापित किया।

(ii) लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं में वार्तालाप, विचार-विमर्श एवं वाद-विवाद के आधार पर निर्णय लिया जाता है। इससे लोगों के मध्य तनाव कम होते हैं जिससे हिंसा भड़कने अथवा रक्तपात होने की सम्भावना बहुत कम हो जाती है।

(iii) लोकतन्त्र में सामाजिक विविधताओं से उत्पन्न समस्याओं के समाधान की क्षमता निहित होती है। देश की अधिक जनसंख्या होने के कारण व्यक्तियों के आचार-विचार, हित, दृष्टिकोण एवं दर्शन भिन्न-भिन्न होते हैं। इनके मध्य सामंजस्य स्थापित करने के लिए लोकतान्त्रिक व्यवस्था ही सबसे अच्छी है।

(iv) कोई भी समाज अपने विभिन्न समूहों के मध्य के टकरावों को पूरी तरह से समाप्त नहीं कर सकता पर हम इन अन्तरों और विभेदों का आदर करना सीख सकते हैं तथा उनके बीच बातचीत से सामंजस्य बैठाने का तरीका विकसित कर सकते हैं। इस हेतु लोकतन्त्र सबसे अच्छा है।

(v) लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था विभिन्न विचारों के मध्य तभी सामंजस्य स्थापित करने में सफल हो सकती है जब बहुसंख्यक समुदाय अल्पसंख्यकों की एकता एवं विचारों को सुने व समझे। लोकतन्त्र को भाषायी, जातिगत एवं धार्मिक अल्पसंख्यकों को देश में उचित स्थान तथा सम्मानपूर्वक स्थिति प्रदान करनी चाहिए।

प्रश्न 3. निम्नलिखित कथनों के पक्ष या विपक्ष में तर्क दें—

(1) औद्योगिक देश ही लोकतान्त्रिक व्यवस्था का भार उठा सकते हैं, पर गरीब देशों को आर्थिक विकास करने के लिए तानाशाही चाहिए।

(2) लोकतन्त्र अपने नागरिकों के बीच की असमानता को कम नहीं कर सकता।

(3) गरीब देशों की सरकार को अपने ज्यादा संसाधन गरीबी को कम करने और आहार, कपड़ा, स्वास्थ्य तथा शिक्षा पर लगाने की जगह उद्योगों और बुनियादी आर्थिक ढाँचे पर खर्च करने चाहिए।

(4) नागरिकों के बीच आर्थिक समानता अमीर और गरीब, दोनों तरह के लोकतान्त्रिक देशों में है।

(5) लोकतन्त्र में सभी को एक ही वोट का अधिकार है। इसका मतलब है कि लोकतन्त्र में किसी तरह का प्रभुत्व और टकराव नहीं होता।

उत्तर—(1) यद्यपि तानाशाही शासन से गरीब देशों में आर्थिक वृद्धि होती है, किन्तु स्वतन्त्रता, सम्मान जो केवल लोकतन्त्र में पाये जाते हैं, की कीमत पर तानाशाही का समर्थन नहीं किया जा सकता। (2) नागरिकों के बीच में असमानता आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के कारण हो सकती है। अत: सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ लोकतन्त्र के द्वारा नहीं मिटायी जा सकती हैं। (3) औद्योगिक और बुनियादी ढाँचे पर पैसा खर्च करने और शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर कम पैसा खर्च करने पर कमजोर व्यक्तियों की संख्या बढ़ जायेगी तथा अशिक्षित लोगों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी होगी, जो किसी उद्योग को संचालित नहीं कर सकते हैं। इसके विपरीत स्वस्थ और शिक्षित नागरिक स्वयं ही एक संस्थान हैं। (4) अमीर और गरीब सभी देशों में पाए जाते हैं और यह असमानता दूर नहीं की जा सकती। (5) सभी को एक मत का अधिकार है किन्तु टकराव अन्य मुद्दों पर होता है। एक पार्टी अपने हित के लिए चाहती है कि उसके पक्ष में अधिक से अधिक वोट पड़ें।

प्रश्न 4. नीचे दिए गए ब्यौरों में लोकतन्त्र की चुनौतियों की पहचान करें। ये स्थितियाँ किस तरह नागरिकों के गरिमापूर्ण, सुरक्षित और शान्तिपूर्ण जीवन के लिए चुनौती पेश करती हैं। लोकतन्त्र को मजबूत बनाने के लिए नीतिगत-संस्थागत उपाय भी सुझाएँ—

(1) उच्च न्यायालय के निर्देश के बाद ओडिशा में दलितों और गैर-दलितों के प्रवेश के लिए अलग-अलग दरवाजा रखने वाले एक मन्दिर को एक ही दरवाजे से सबको प्रवेश की अनुमति देनी पड़ी।

(2) भारत के विभिन्न राज्यों में बड़ी संख्या में किसान आत्महत्या कर रहे हैं।

(3) जम्मू-कश्मीर के गंडवारा में मुठभेड़ बताकर जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा तीन नागरिकों की हत्या करने के आरोप को देखते हुए इस घटना के जाँच के आदेश दिए गए।

उत्तर—(1) लोकतन्त्र में जाति-धर्म के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव न किया जाए इसी कारण सबके लिए एक ही दरवाजा कर दिया गया। (2) सरकार की नीतियों के विरोध में ऐसा हुआ। सरकार को चाहिए प्रत्येक वर्ग का ध्यान रखकर अपनी नीतियों का निर्धारण करे। (3) इस घटना से यह पता चलता है कि लोकतन्त्र लोगों की स्वतन्त्रता की रक्षा करने में नाकाम रहा। (4) लोकतन्त्र को मजबूत करने के लिए अग्र उपाय हैं—(i) आपसी विवादों को बातचीत के जरिए हल करना चाहिए। (ii) भ्रष्टाचार को समाप्त करके। (iii) राजनैतिक पार्टियों को जाति-धर्म निरपेक्षपूर्ण कार्यक्रम बनाने चाहिए। (iv) सामान्य समस्याओं पर विचार कर उन्हें दूर करना चाहिए। (v) सरकार को सभी लोगों के हित का ध्यान रखकर अपनी नीतियाँ बनानी चाहिए।

प्रश्न 5. लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं के सन्दर्भ में इनमें से कौन-सा विचार सही है—लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं ने सफलतापूर्वक—(1) लोगों के बीच टकराव को समाप्त कर दिया है। (2) लोगों के बीच की आर्थिक असमानताएँ समाप्त कर दी हैं। (3) हाशिए के समूहों से कैसा व्यवहार हो, इस बारे में सारे मतभेद मिटा दिए हैं। (4) राजनीतिक गैर-बराबरी के विचार को समाप्त कर दिया है।

उत्तर–(3) हाशिए के समूहों से कैसा व्यवहार हो, इस बारे में सारे मतभेद मिटा दिए हैं।

प्रश्न 6. लोकतन्त्र के मूल्यांकन के लिहाज से इनमें कोई एक चीज लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं के अनुरूप नहीं है। उसे चुनें–

(क) स्वतन्त्र और निष्पक्ष चुनाव

(ख) व्यक्ति की गरिमा

(ग) बहुसंख्यकों का शासन

(घ) कानून के समक्ष समानता।

उत्तर–(ग) बहुसंख्यकों का शासन।

प्रश्न 7. लोकतान्त्रिक व्यवस्था के राजनीतिक और सामाजिक असमानताओं के बारे में किए गए अध्ययन बताते हैं कि–

- **लोकतन्त्र और विकास साथ ही चलते हैं।**
- **लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं में असमानताएँ बनी रहती हैं।**
- **तानाशाही में असमानताएँ नहीं होतीं।**
- **तानाशाहियाँ लोकतन्त्र से बेहतर साबित हुई हैं।**

उत्तर–लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं में असमानताएँ बनी रहती हैं।

प्रश्न 8. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़ें–

नन्नू एक दिहाड़ी मजदूर है। वह पूर्वी दिल्ली की एक झुग्गी बस्ती वेलकम मज़दूर कॉलोनी में रहता है। उसका राशन कार्ड गुम हो गया और जनवरी 2006 में उसने डुप्लीकेट राशन कार्ड बनाने के लिए अर्ज़ी दी। अगले तीन महीनों तक उसने राशन विभाग के दफ्तर के कई चक्कर लगाए लेकिन वहाँ तैनात किरानी और अधिकारी उसका काम करने या उसकी अर्ज़ी की स्थिति बताने की कौन कहे, उसको देखने तक के लिए तैयार न थे। आखिरकार उसने सूचना के अधिकार का उपयोग करते हुए अपनी अर्ज़ी की दैनिक प्रगति का ब्यौरा देने का आवेदन किया। इसके साथ ही उसने इस अर्ज़ी पर काम करने वाले अधिकारियों के नाम और काम न करने की सूरत में उनके खिलाफ होने वाली कार्रवाई का ब्यौरा भी माँगा। सूचना के अधिकार वाला आवेदन देने के हफ्ते भर के अन्दर खाद्य विभाग का एक इन्स्पेक्टर उसके घर आया और उसने नन्नू को बताया कि तुम्हारा राशन कार्ड तैयार है और तुम दफ्तर आकर उसे ले जा सकते हो। अगले दिन जब नन्नू राशन कार्ड लेने गया तो उस इलाके के खाद्य और आपूर्ति विभाग के सबसे बड़े अधिकारी ने गर्मजोशी से उसका स्वागत किया। इस अधिकारी ने उसे चाय की पेशकश की और कहा कि अब आपका काम हो गया है, इसलिए सूचना के अधिकार वाला अपना आवेदन आप वापस ले लें। नन्नू का उदाहरण क्या बताता है ? नन्नू के इस आवेदन का अधिकारियों पर क्या असर हुआ ? अपने माँ-पिताजी से पूछिए कि अपनी समस्याओं के लिए सरकारी कर्मचारियों के पास जाने का उनका अनुभव कैसा रहा है ?

उत्तर–नन्नू के आवेदन देने पर आवेदन से जुड़े अधिकारियों और उनके द्वारा किए गए कार्यों से सम्बन्धित रिपोर्ट उसे प्राप्त हुई तथा उसे इस बात की जानकारी मिली कि जिन अधिकारियों ने कार्य नहीं किया है उनके विरुद्ध क्या कार्यवाही की जा सकती है। अत: अधिकारी इस बात से डर गये और उन्होंने उसका राशन कार्ड तैयार कर दिया और नन्नू की आवभगत कर रहे हैं जिससे वह सूचना के अधिकार के तहत डाला गया अपना आवेदन वापस ले लें। (उत्तर का शेष भाग छात्र स्वयं अपने माता-पिता की सहायता से लिखें।)

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लोकतंत्र क्या है? इसके परिणामों का आकलन कैसे किया जा सकता है।

उत्तर–लोकतंत्र शासन की वह व्यवस्था है जिसमें शासन की अन्तिम शक्ति जनता के हाथों में रहती है। लोकतंत्र ऐसी शासन पद्धति है जो नागरिकों का सर्वांगीण विकास करना चाहती है। यह व्यक्तियों में अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करने के साथ-साथ उनकी स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की क्षमताओं को भी विकसित करती है। समकालीन विश्व में लोकतंत्र शासन का एक प्रमुख रूप है।

लोकतंत्र के अपेक्षित परिणाम–लोकतंत्र को निम्नलिखित अपेक्षाएँ पूरी करनी चाहिए–

(i) जनता को न केवल अपना शासक चुनने का अधिकार होना चाहिए बल्कि इन शासकों पर नियंत्रण भी इन्हीं का होना चाहिए। (ii) लोकतंत्र को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि निर्णय, निर्माण निर्धारित मानकों एवं प्रक्रियाओं पर आधारित हो। (iii) निर्णय निर्माण की प्रक्रिया में पारदर्शिता होनी चाहिए। जनता के पास निर्णय निर्माण की प्रक्रिया की छानबीन करने के अधिकार एवं साधन होने चाहिए। (iv) जनता को उन निर्णय निर्माण की प्रक्रिया में भागीदारी हेतु सक्षम होना चाहिए जो निर्णय उन्हें प्रभावित करते हैं। अर्थात् लोकतांत्रिक सरकार को जनता की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के प्रति जिम्मेदार होना चाहिए।

प्रश्न 2. लोकतांत्रिक व्यवस्था अन्य व्यवस्थाओं से बेहतर क्यों है? समझाइए।

उत्तर–लोकतंत्र शासन की वह व्यवस्था है जिसमें शासन की अन्तिम शक्ति जनता के हाथों में रहती है। लोकतंत्र ऐसी शासन पद्धति है जो नागरिकों का सर्वांगीण विकास करना चाहती है। यह व्यक्तियों में अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करने के साथ-साथ उनकी स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की क्षमताओं को भी विकसित करती है। समकालीन विश्व में लोकतंत्र शासन का एक प्रमुख रूप है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था निम्नलिखित कारणों से अन्य शासन व्यवस्थाओं से बेहतर है–

(i) यह नागरिकों के मध्य समानता को बढ़ावा देती है। (ii) यह व्यक्ति के आत्म-सम्मान को बढ़ाती है। (iii) यह नागरिकों को राज्यों के मध्य संघर्ष को सुलझाने का तरीका उपलब्ध कराती है।

(iv) इससे निर्णय निर्माण प्रक्रिया की गुणवत्ता में सुधार आता है।
(v) इसमें गलतियों को सुधारने की पर्याप्त सम्भावनाएँ होती हैं।
लोकतंत्र का आर्थिक विकास एवं आर्थिक असमानताओं से सम्बन्ध को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—
(i) आर्थिक विकास के मामले में लोकतांत्रिक देशों की तुलना में तानाशाही शासन व्यवस्था वाले देशों का रिकॉर्ड थोड़ा ठीक है। किन्तु जब हम केवल गरीब देशों की तुलना करते हैं तो इनकी आर्थिक संवृद्धि की दरों में कोई विशेष अन्तर नहीं दिखता है। (ii) लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था वाले देशों के मध्य भारी आर्थिक असमानताएँ हो सकती हैं। उदाहरण के लिए; दक्षिण अफ्रीका एवं ब्राजील जैसे लोकतांत्रिक देशों में ऊपरी 20 प्रतिशत जनसंख्या का ही राष्ट्रीय आय में हिस्सा 60 प्रतिशत से अधिक है जबकि सबसे नीचे की 20 प्रतिशत जनसंख्या राष्ट्रीय आय के मात्र 3 प्रतिशत भाग पर जीवन-यापन करती है। (iii) लोकतांत्रिक देशों में निर्धन वर्गों में सदैव अवसरों की असमानता पायी जाती है।

प्रश्न 3. लोकतंत्र तथा आर्थिक संवृद्धि में क्या सम्बन्ध है?

उत्तर—लोकतंत्र और आर्थिक संवृद्धि के बीच एक जटिल और गहरा संबंध है, जहाँ लोकतंत्र स्थिरता, जवाबदेही और समावेशी नीतियाँ लाकर आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है (जैसे-शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश), जबकि आर्थिक विकास जीवन स्तर सुधार कर लोकतंत्र को मजबूत करता है, हालाँकि लोकतंत्र में त्वरित विकास तानाशाही जितना तेज नहीं हो सकता, लेकिन यह असमानता कम करने और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा में बेहतर है, जिससे दीर्घकालिक स्थिरता और संतुलित विकास होता है।

लोकतंत्र आर्थिक संवृद्धि को कैसे बढ़ावा देता है?

1. जनभागीदारी और जवाबदेही—लोकतांत्रिक सरकारें जनता की जरूरतों के अनुसार नीतियाँ बनाती हैं, जिससे कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य और उद्योगों में संतुलित निवेश होता है और समावेशी विकास होता है।

2. नागरिकों के अधिकार—लोकतंत्र लोगों को संपत्ति और व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देता है, जिससे आर्थिक अवसर बढ़ते हैं और जीवन स्तर में सुधार होता है।

3- स्थिरता और विश्वास—नागरिक स्वतंत्रता और कानून का शासन पूँजी निवेश और आर्थिक गतिविधियों के लिए एक स्थिर वातावरण प्रदान करते हैं, जो आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

4. मानव पूँजी विकास—लोकतंत्र शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार की माँग करता है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है और आर्थिक विकास होता है।

आर्थिक संवृद्धि लोकतंत्र को कैसे प्रभावित करती है?

1. स्थिरता—आर्थिक विकास के लोगों का जीवन स्तर सुधारता है, जिससे लोकतंत्र को स्थिरता मिलती है और नागरिकों की भागीदारी बढ़ती है।

2. असमानता में कमी—विकास के लाभों का समान वितरण सुनिश्चित करने की माँग लोकतंत्र को मजबूत करती है, हालाँकि यह एक चुनौती भी है।

चुनौतियाँ और भिन्न मत

1. धीमा विकास—कुछ विश्लेषकों के अनुसार, लोकतंत्र में निर्णय लेने की प्रक्रिया धीमी होने के कारण आर्थिक विकास तानाशाही जितना तेज नहीं हो सकता, क्योंकि इसमें विचार-विमर्श और सर्वसम्मति की आवश्यकता है।

2. अन्य कारक—आर्थिक विकास कई कारकों (जैसे- तकनीक, पूँजी, शिक्षा) पर निर्भर करता है, और केवल लोकतंत्र होने से ही तेज आर्थिक विकास की गारंटी नहीं है।

संक्षेप में, लोकतंत्र और आर्थिक संवृद्धि एक-दूसरे के पूरक हैं; लोकतंत्र विकास के लिए नींव रखता है और विकास लोकतंत्र को मजबूत करता है, जिससे समाज के सभी वर्गों को लाभ मिलता है।

प्रश्न 4. लोकतंत्र की असफलता के कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—निम्नलिखित चार परिणामों में लोकतंत्र असफल रहा है—

(i) भ्रष्टाचार—लोकतंत्र के अभिलेख यह दर्शाते हैं कि अधिकांश देशों के लोकतंत्र भ्रष्टाचार को दूर करने में अथवा कम करने में असफल रहे हैं। देश में लोकतांत्रिक सरकार होने के बावजूद भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर रहा है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है परन्तु भ्रष्टाचार के मुद्दे पर यहाँ लोकतंत्र असफल रहा है।

(ii) लोगों की आवश्यकताओं की ओर कम ध्यान देना—लोकतांत्रिक सरकारें अक्सर लोगों को उनकी जरूरतों के लिए तरसाती हैं तथा जनसंख्या के एक बड़े हिस्से की माँगों की उपेक्षा की जाती है।

(iii) असमानता एवं गरीबी में वृद्धि—लोकतांत्रिक देशों में सरकार से आर्थिक असमानता को कम करने की अपेक्षा की जाती है लेकिन विश्व के सभी लोकतंत्र इस मामले में असफल रहे हैं। अधिकांश लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में मुट्ठीभर धनवान लोग आय और सम्पत्ति में अपने अनुपात से बहुत ज्यादा हिस्सा पाते हैं, जबकि गरीबों को कुछ भी नहीं मिल पाता है। देश की कुल आय में धनवान लोगों का हिस्सा बढ़ता जाता है, लेकिन समाज के सबसे निचले हिस्से के लोगों को जीवनयापन के लिए बहुत कम साधन मिलते हैं।

(iv) आर्थिक संवृद्धि एवं विकास की कमी—लोकतांत्रिक सरकार को शासन के सभी अन्य रूपों से बेहतर माना जाता है। इसलिए इससे बेहतर आर्थिक संवृद्धि एवं विकास की उम्मीद की जाती है। परन्तु दुर्भाग्यवश लोकतंत्र इस मामले में असफल रहा है। यदि हम 1950 से 2000 के बीच के सभी लोकतांत्रिक एवं तानाशाही शासन व्यवस्था के काम-काज की तुलना करें तो इस मामले में तानाशाही व्यवस्था का रिकॉर्ड थोड़ा अच्छा दिखाई देता है।

प्रश्न 5. लोकतंत्र व आर्थिक विकास के मध्य सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—लोकतंत्र—लोकतंत्र वह शासन प्रणाली है जिसमें सत्ता जनता के हाथों में होती है। देश का शासन वयस्क मताधिकार द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाता है जो जनता के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

आर्थिक विकास—आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है जिसमें प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने के साथ-साथ असमानता, निर्धनता व निरक्षता में कमी भी हो अर्थात् लोगों के आर्थिक जीवन में सुधार हो तथा उनका जीवन स्तर ऊँचा हो।

लोकतंत्र व आर्थिक विकास में अन्तर्सम्बन्ध—किसी भी देश का आर्थिक विकास कई कारकों; जैसे—देश की जनसंख्या का आकार, वैश्विक स्थिति, अन्य देशों के साथ सहयोग एवं देश द्वारा तय की गयी आर्थिक प्राथमिकताओं पर निर्भर करता है। लोकतंत्र में लोगों को राजनीतिक क्षेत्र में परस्पर समानता का दर्जा तो मिल जाता है किन्तु आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ आर्थिक असमानता भी बढ़ती जाती है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था वाले देशों में तानाशाही देशों की तुलना में आर्थिक विकास में कमी पायी जाती है, जिसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(i) लोकतंत्र में सरकार लोक-कल्याणकारी कार्यों पर अधिक धन खर्च करती है। अत: उसकी आय का एक बड़ा भाग निर्धनों की देखरेख पर खर्च हो जाता है और विकास के लिए धन कम रह जाता है।

(ii) लोकतांत्रिक व्यवस्था में निर्णय की प्रक्रिया काफी लम्बी होती है। इसमें कई स्तर पर लोग भाग लेते हैं, फलत: इसमें देरी होने के कारण यह लगभग निरर्थक हो जाती है। कभी-कभी तो फैसले लिए ही नहीं जा पाते हैं।

(iii) लोकतांत्रिक व्यवस्था सामंजस्य पर आधारित होती है। इसमें सभी के हितों का ध्यान रखा जाता है। फलस्वरूप प्रभावी फैसले नहीं लिए जाते।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि लोकतंत्र से देश का आर्थिक विकास तो होता है, लेकिन यह आर्थिक असमानता को दूर करने में अधिक सफल नहीं हो पाता है।

प्रश्न 6. लोकतंत्र में नागरिकों की गरिमा के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—"व्यक्ति की गरिमा और आजादी के विषय में लोकतांत्रिक व्यवस्था किसी भी अन्य शासन व्यवस्थाओं से बहुत आगे है।" इस कथन की व्याख्या निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत की जा सकती है—

(i) महिलाओं की गरिमा व स्वतन्त्रता—विश्व के अधिकांश समाज पुरुष समाज रहे हैं इसलिए उन ढाँचों को आसानी से परिवर्तित करना लोकतंत्र के लिए सम्भव नहीं था। इसके बावजूद लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था ने महिलाओं के लिए समानता के अवसर प्रदान किये हैं। आज विश्व के अधिकांश लोकतंत्र महिलाओं के साथ समानता का व्यवहार करते हैं तथा उन्हें सभी अधिकार प्रदान करते हैं।

एक बार जब सिद्धान्त के रूप में महिलाओं के साथ समानता के व्यवहार को स्वीकार कर लिया गया हो तो अब महिलाओं के लिए वैधानिक और नैतिक रूप से अपने प्रति गलत मान्यताओं और व्यवहारों के विरुद्ध संघर्ष करना आसान हो गया है। अलोकतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं में यह सब सम्भव न था क्योंकि वहाँ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं गरिमा को न तो वैधानिक रूप से मान्यता प्राप्त है और न ही नैतिक रूप से।

(ii) जातिगत असमानता—भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था ने कमजोर और भेदभाव की शिकार हुई जातियों के लोगों को समान दर्जे व समान अवसर के दावे को बल दिया है। आज भी जातिगत भेदभाव और दमन के उदाहरण देखने को मिलते हैं, पर उनके पक्ष में कानूनी या नैतिक बल नहीं होता है। सम्भवत: इसी एहसास के चलते लोग अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति अधिक सतर्क हुए हैं।

प्रश्न 7. शिकायतों का बने रहना लोकतंत्र की सफलता की गवाही है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—लोकतंत्र शासन की वह व्यवस्था है जिसमें शासन की अन्तिम शक्ति जनता के हाथों में रहती है। लोकतंत्र शासन की अन्य व्यवस्थाओं से बेहतर है। सैद्धान्तिक रूप में लोकतंत्र को अच्छा माना जाता है। शिकायतों का बने रहना लोकतंत्र की सफलता की गवाही देता है, जो निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट है—

(i) लोकतंत्र की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसकी जाँच-परख और परीक्षा कभी भी समाप्त नहीं होती है।

(ii) ज्यों ही लोकतंत्र एक जाँच पर खरा उतरता है तो अगली जाँच आ जाती है। लोकतंत्र की सकारात्मक विशेषता यह है कि लोग प्रत्येक स्तर पर लोकतंत्र को अच्छा बनाना चाहते हैं। जैसे ही लोगों को लोकतंत्र के लाभ मिलते हैं वे और लाभों की माँग करने लगते हैं। यही कारण है कि जब हम लोगों से लोकतंत्र के कामकाज के बारे में पूछते हैं तो हमेशा लोकतंत्र से जुड़ी अपनी अन्य अपेक्षाओं का पिटारा खोल देते हैं और शिकायतों का अंबार लगा देते हैं। शिकायतों का बने रहना लोकतंत्र की सफलता की गवाही देता है।

(iii) लोकतंत्र ने लोगों को एक मौका दिया है कि वे सत्ता में बैठे हुए लोगों के कामकाज का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें, लोकतंत्र के कामकाज में लोगों का असन्तोष जताना लोकतंत्र की सफलता तो बताता ही है साथ ही वह लोगों के प्रजा से नागरिक बनने की गवाही भी देता है।

(iv) वर्तमान में अधिकांश लोग यह मानकर चलते हैं कि सरकार की चाल-ढाल पर उनके वोट से असर पड़ता है और यह उनके अपने हित पर प्रभाव डालता है।

❑❑

1 विकास

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सामान्यतः किसी देश का विकास किस आधार पर निर्धारित किया जा सकता है ?

(क) प्रतिव्यक्ति आय (ख) औसत साक्षरता स्तर

(ग) लोगों की स्वास्थ्य स्थिति (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 2. निम्नलिखित पड़ोसी देशों में से मानव विकास के लिहाज से किस देश की स्थिति भारत से बेहतर है—

(क) बांग्लादेश (ख) श्रीलंका

(ग) नेपाल (घ) पाकिस्तान

प्रश्न 3. मान लीजिए कि एक देश में चार परिवार हैं। इन परिवारों की प्रति व्यक्ति आय 5,000 रुपये है। अगर तीन परिवारों की आय क्रमशः 4,000, 7,000 और 3,000 रुपये है तो चौथे परिवार की आय क्या है ?

(क) 7,500 रुपये (ख) 3,000 रुपये

(ग) 2,000 रुपये (घ) 6,000 रुपये

उत्तर—1. (घ), **2.** (ख), **3.** (घ)।

प्रश्न 4. विश्व बैंक विभिन्न वर्गों का वर्गीकरण करने के लिए किस प्रमुख मापदण्ड का प्रयोग करता है ? इस मापदण्ड की, अगर कोई सीमाएँ हैं, तो सीमाएँ क्या हैं ?

उत्तर—विश्व बैंक विभिन्न वर्गों का वर्गीकरण करने के लिए प्रति व्यक्ति आय का मापदण्ड प्रयोग करता है। प्रति व्यक्ति आय को औसत आय भी कहा जाता है।

विश्व बैंक द्वारा प्रकाशित विश्व विकास रिपोर्ट के अनुसार देशों का वर्गीकरण करने में इसी मापदण्ड का प्रयोग किया गया है। वे देश जिनकी सन् 2023 में प्रति व्यक्ति आय US डॉलर 63,400 प्रतिवर्ष या उससे अधिक थी, वे समृद्ध माने गये हैं तथा वे देश जिनकी प्रतिव्यक्ति आय US डॉलर 2400 प्रतिवर्ष या इससे कम थी, वे निम्न आय वर्ग वाले देश माने गये हैं।

सीमाएँ—प्रतिव्यक्ति आय मापदण्ड की प्रमुख सीमाएँ निम्नलिखित हैं—

(i) प्रतिव्यक्ति आय के आँकड़े आय के वितरण के बारे में कुछ नहीं बताते हैं अर्थात् यह आय के वितरण की उपेक्षा करता है। (ii) प्रतिव्यक्ति आय का अधिक होना जनकल्याण में वृद्धि का सूचक नहीं है। (iii) प्रतिव्यक्ति आय के अधिक होने के बावजूद यह सम्भव हो सकता है कि देश में कुछ ही लोग अत्यधिक धनवान हों एवं अधिकांश लोग अत्यधिक निर्धन हों।

प्रश्न 5. विकास मापने का यू. एन. डी. पी. का मापदण्ड किन पहलुओं में विश्व बैंक के मापदण्ड से अलग है?

उत्तर—विश्व बैंक के विकास मापने के मापदण्ड के अनुसार प्रतिव्यक्ति आय US डॉलर 63,400 प्रतिवर्ष या उससे अधिक है, वे समृद्ध देश कहलाते हैं जबकि वे देश जिनकी प्रतिव्यक्ति आय US डॉलर 2400 प्रतिवर्ष या इससे कम है, उन्हें निम्न आय वर्ग वाला देश कहा जाता है। महत्त्वपूर्ण होते हुए भी विकास मापने का यह मापदण्ड एक अपर्याप्त एवं दोषपूर्ण मापदण्ड है।

यू. एन. डी. पी. विकास के मापदण्ड के रूप में, मानव विकास सूचकांक का प्रयोग करता है। यू. एन. डी. पी. द्वारा प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट विभिन्न देशों की तुलना करते समय प्रतिव्यक्ति आय के साथ-साथ लोगों के शैक्षिक तथा स्वास्थ्य स्तर को भी आधार बनाती है।

इस प्रकार विश्व बैंक विकास के मापदण्ड के रूप में आय का प्रयोग करता है, जबकि यू. एन. डी. पी. विकास के मापदण्ड के रूप में आय के साथ-साथ शिक्षा व स्वास्थ्य संकेतकों का भी प्रयोग करता है।

प्रश्न 6. हम औसत का प्रयोग क्यों करते हैं ? इनके प्रयोग करने की क्या कोई सीमाएँ हैं ? विकास से जुड़े अपने उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—देशों के बीच तुलना करने के लिए कुल आय एक उपयुक्त माप नहीं है, क्योंकि विभिन्न देशों में जनसंख्या भिन्न-भिन्न होती है इसलिए कुल आय से यह पता नहीं चलता है कि औसत व्यक्ति कितना कमा रहा है। इसका पता औसत आय से ही चलता है। यही कारण है कि हम विकास की माप के लिए औसत या औसत आय का प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त यह दो देशों की आर्थिक स्थिति को जानने का एक अच्छा व सरल मापदण्ड है।

इसके उपयोग की सीमा यह है कि यह हमें लोगों के बीच आय के विभाजन को सही रूप में नहीं दर्शाता है अर्थात् औसत आय से हमें यह पता नहीं चलता है कि यह आय लोगों में कैसे वितरित है। यद्यपि औसत आय तुलना के लिए उपयोगी है, फिर भी यह असमानता को छुपा देती है।

उदाहरण के लिए—माना 'A' और 'B' दो देश हैं और प्रत्येक देश में 5 लोग निवास करते हैं—

देश	नागरिकों की मासिक आय (रुपये में)					
	1	2	3	4	5	औसत आय
देश 'A'	9500	10500	9800	10000	10200	50,000/5 = 10,000
देश 'B'	500	500	500	500	48000	50,000/5 = 10,000

यद्यपि दोनों देशों 'A' और 'B' की प्रतिव्यक्ति आय समान अर्थात् ₹ 10,000 है। तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि दोनों देश समान रूप से विकसित नहीं हैं। अधिकांश लोग 'A' में रहना अधिक पसंद करेंगे क्योंकि इस देश में आय के वितरण में समानताएँ पाई जाती हैं। उपर्युक्त तालिका के अध्ययन में स्पष्ट होता है कि देश में न बहुत अमीर लोग हैं और न ही बहुत निर्धन परन्तु, देश 'B' में 5 में से 4 लोग अर्थात् 80 प्रतिशत लोग बहुत निर्धन हैं तथा 5 में से केवल 1 अर्थात् 20 प्रतिशत लोग बहुत अमीर हैं।

प्रश्न 7. प्रतिव्यक्ति आय कम होने पर भी केरल का मानव विकास क्रमांक हरियाणा से ऊँचा है इसलिए प्रतिव्यक्ति आय एक उपयोगी मापदण्ड बिल्कुल नहीं है और राज्यों की तुलना के लिए इसका उपयोग नहीं करना चाहिए। क्या आप सहमत हैं? चर्चा कीजिए।

उत्तर—नहीं, मैं इस कथन से सहमत नहीं हूँ कि प्रतिव्यक्ति आय एक उपयोगी मापदण्ड नहीं है। प्रतिव्यक्ति आय मानव विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण मापदण्ड है, विश्व का कोई भी देश इसकी उपेक्षा नहीं कर सकता। विश्व बैंक विकास के मापदण्ड के रूप में अर्थात् देशों की तुलना के लिए प्रति व्यक्ति आय का प्रयोग करता है परन्तु इस मापदण्ड की कुछ सीमाएँ भी हैं। यह सच है कि प्रतिव्यक्ति आय मानक उपयुक्त मानव विकास नहीं दर्शाता है। मुद्रा से वे सभी वस्तुएँ व सेवाएँ नहीं खरीदी जा सकतीं जो अच्छे रहन-सहन के लिए आवश्यक हो सकती हैं। उदाहरणस्वरूप; आपके पास उपलब्ध मुद्रा से आप प्रदूषणरहित वातावरण नहीं खरीद सकते। इसलिए केरल की प्रतिव्यक्ति आय कम होने पर भी उनका मानव विकास हरियाणा से अच्छा है क्योंकि केरल के पास हरियाणा की तुलना में अन्य सुविधाएँ, जैसे—अच्छी स्वास्थ्य सेवाएँ, अधिक साक्षरता आदि उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त हरियाणा की तुलना में केरल में प्राथमिक कक्षाओं में विद्यार्थियों की निवल उपस्थिति अनुपात अधिक है।

प्रश्न 8. भारत के लोगों द्वारा ऊर्जा के किन स्रोतों का प्रयोग किया जाता है? ज्ञात कीजिए। अब से 50 वर्ष पश्चात् क्या सम्भावनाएँ हो सकती हैं ?

उत्तर—भारत के लोगों द्वारा ऊर्जा के निम्नलिखित स्रोत प्रयोग किये जाते हैं—

1. परम्परागत स्रोत—(i) कोयला (ii) खनिज तेल (iii) प्राकृतिक गैस (iv) विद्युत।

2. गैर परम्परागत स्रोत—(i) पवन ऊर्जा (ii) सौर ऊर्जा (iii) बायो गैस (iv) भूतापीय ऊर्जा (v) ज्वारीय ऊर्जा (vi) परमाणु ऊर्जा।

आज से 50 वर्ष पश्चात् सम्भवत: ऊर्जा के कुछ स्रोतों पर भारी संकट होगा। पेट्रोलियम उत्पादों की माँग अत्यधिक बढ़ेगी और देश के लिए उनकी आपूर्ति कर पाना सम्भव नहीं हो पायेगा। अपने प्राकृतिक संसाधनों द्वारा पूर्ति न कर पाने के साथ-साथ विश्व में भी इनका भण्डार कम होता जाएगा। इन उत्पादों के मूल्यों में निरन्तर वृद्धि के कारण इनका आयात महँगा होगा फलस्वरूप भुगतान असन्तुलन की स्थिति पैदा होगी। अत: नये-नये ऊर्जा स्रोतों को खोजना शुरू हो जायेगा। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, बायो गैस आदि पर निर्भरता बढ़ जायेगी।

प्रश्न 9. धारणीयता का विषय विकास के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण है?

उत्तर—धारणीयता से आशय है कि हमने विकास का जो स्तर प्राप्त कर लिया है, वह भावी-पीढ़ी के लिए भी बना रहे। यदि विकास मनुष्य को क्षति पहुँचाता है तो इसके दुष्परिणाम भावी-पीढ़ी को भुगतने होंगे।

धारणीयता का विषय विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है, इसके निम्नलिखित कारण हैं—

(i) विश्व स्तर पर हो रहे तीव्र आर्थिक विकास एवं औद्योगीकरण से प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हुआ है। इस अत्यधिक दोहन के कारण सीमित प्राकृतिक संसाधन समाप्त होते जा रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, खनिज तेल सीमित है। यदि यह सीमित संसाधन पूर्णत: समाप्त हो जाते हैं तो भविष्य में सभी देशों का विकास खतरे में पड़ जायेगा।

(ii) यद्यपि खनिज तेल एवं विभिन्न खनिज पदार्थ किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक हैं। परन्तु, इनका प्रयोग पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी को नुकसान पहुँचाता है। ये धरती पर प्रदूषण का कारण बनते हैं एवं भविष्य में सन्तुलन को बाधित करते हैं।

प्रश्न 10. धरती के पास सब लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन एक भी व्यक्ति के लालच को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। यह कथन विकास की चर्चा में कैसे प्रासंगिक है? चर्चा कीजिए।

उत्तर—उपर्युक्त कथन विकास की चर्चा में बहुत प्रासंगिक है, हमारी धरती के पास सब लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हैं। दूसरे शब्दों में, धरती पर मिट्टी, वायु, जल, वन, वन्य प्राणी, खनिज संसाधन आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। परन्तु इन संसाधनों का विवेकपूर्ण एवं सुनियोजित ढंग से विदोहन किया जाये। हम इनका लालची ढंग से अति विदोहन न करें, दुरुपयोग न करें एवं विनाश न करें। यदि ऐसा होता है तो धरती पर इनका अभाव नहीं होगा। परन्तु मानव बहुत लालची प्राणी है। उसका लालच इन साधनों के लिए उसे अन्धा बना देता है। विभिन्न देशों की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति के कारण उनके द्वारा अन्य देशों पर आक्रमण करने की लालसा, उसके संसाधनों को लूटकर ले जाने की इच्छा, स्वयं को विश्व का सर्वेसर्वा बनाने की

इच्छा और इन सबके लिए विनाशकारी परमाणु हथियारों का प्रयोग इन संसाधनों को क्षणभर में राख में परिवर्तित कर देगा परिणामस्वरूप संसाधनों का अभाव हो जाएगा।

अत: हमें आर्थिक विकास में लालची नहीं होना चाहिए। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि विश्व के समस्त देश धरती पर उपलब्ध संसाधनों का विवेकपूर्ण, सुनियोजित एवं मितव्ययी ढंग से उपयोग करें। इसके अतिरिक्त विभिन्न वैज्ञानिक कल्याण अनुसंधानों एवं विधियों की सहायता से नये-नये संसाधनों की खोज करें तभी विश्व का कल्याण सम्भव है।

प्रश्न 11. पर्यावरण में गिरावट के कुछ ऐसे उदाहरणों की सूची बनाइए जो आपने अपने आसपास देखे हों।

उत्तर—मैंने अपने आसपास पर्यावरण में गिरावट के निम्नलिखित उदाहरण देखे हैं—

(i) भूमिगत जलस्तर में कमी—हमारे आसपास भूमिगत जल का अति उपयोग हो रहा है जिसके कारण जल के स्तर में निरन्तर कमी आती जा रही है, जो एक चिंता का विषय है।

(ii) वनों की कटाई—हमारे आसपास वनों की अन्धाधुन्ध कटाई हो रही है, वन क्षेत्र कारखानों, आवासीय भवनों एवं वाणिज्यिक भवनों में परिवर्तित हो गए हैं। जिससे पर्यावरण प्रदूषण बढ़ा है तथा रेगिस्तान के फैलाव का खतरा भी उत्पन्न हो गया है।

(iii) वन्य जीवों का शिकार—शिकारी एवं तस्कर निरन्तर वन्य जीवों का शिकार कर रहे हैं एवं उनके विभिन्न अंगों का व्यापार कर रहे हैं। इससे दुर्लभ वन्य प्राणियों के लुप्त होने का खतरा बढ़ गया है।

(iv) खनन क्रिया से प्रदूषण—हमारे क्षेत्र के आसपास खनिज निकालने की क्रियाएँ भूमि, जल, वायु को प्रदूषित कर रही हैं जिससे पर्यावरण को नुकसान पहुँच रहा है।

(v) वायु प्रदूषण—औद्योगीकरण एवं शहरीकरण से वायु प्रदूषण में वृद्धि हुई है। कल-कारखानों से निकलने वाली विभिन्न प्रकार की गैसें न केवल मानव स्वास्थ्य को वरन् पर्यावरण को भी नुकसान पहुँचा रही हैं।

(vi) जल प्रदूषण—उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट जल, घरेलू मल, उर्वरकों व कीटनाशक दवाइयों के कारण जल प्रदूषण बढ़ा है।

(vii) औद्योगीकरण व शहरीकरण से ध्वनि-प्रदूषण में भी वृद्धि हुई है।

प्रश्न 12. तालिका (1.6 पाठ्य पुस्तक) में दी गई प्रत्येक मद के लिए ज्ञात कीजिए कि कौन-सा देश सबसे ऊपर है और कौन-सा सबसे नीचे।

उत्तर—उपर्युक्त तालिका के आधार पर हम निम्नलिखित निष्कर्ष निकाल सकते हैं—

तालिका 1 : भारत और उसके पड़ोसी देशों के कुछ आँकड़े

देश	सकल राष्ट्रीय आय (स.रा.आ.) प्रतिव्यक्ति आय (अमरीकी डॉलर में) (2011 क्रय शक्ति क्षमता)	जन्म के समय सम्भावित आयु (2017)	विद्यालयी औसत आयु 25 वर्ष या उसके अधिक (2017)	विश्व में मानव विकास सूचकांक (HDI) का क्रमांक (2016)
श्रीलंका	11,899	76.6	11.2	78
भारत	**6,951**	**67.7**	**6.6**	**134**
म्यांमार	4,038	67.3	6.5	144
पाकिस्तान	5,374	66.4	4.4	164
नेपाल	4,026	70.5	4.5	146
बांग्लादेश	6,511	73.7	7.4	129

(i) श्रीलंका की प्रतिव्यक्ति आय 11,899 अमेरिकी डॉलर है जो सर्वाधिक है, नेपाल की प्रतिव्यक्ति आय सबसे कम 2,471 डॉलर है।

(ii) जन्म के समय सम्भावित आयु की दृष्टि से श्रीलंका की स्थिति सर्वोच्च 76.6 वर्ष है जबकि पाकिस्तान की स्थिति निम्नतम 66.4 है।

(iii) 25 वर्ष या उससे अधिक आयु की जनसंख्या की विद्यालय औसत आयु के आधार पर श्रीलंका प्रथम (11.2%) है जबकि नेपाल निम्नतम (4.5%) स्थान पर है।

(iv) उपयुक्त तालिका में मानव विकास सूचकांक की दृष्टि से श्रीलंका का स्थान उच्चतम (78) एवं पाकिस्तान का स्थान निम्नतम (164) है।

प्रश्न 13. नीचे दी गई तालिका में भारत में वयस्कों (15-49 वर्ष आयु वाले) जिनका बी.एम.आई. सामान्य से कम है (बी.एम.आई. $< 18{\cdot}5\ kg/m^2$) का अनुपात दिखाया गया है। यह वर्ष 2015-16 में देश के विभिन्न राज्यों के एक सर्वेक्षण पर आधारित है। तालिका का अध्ययन करके निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए—

राज्य	पुरुष (%)	महिला (%)
केरल	**8·5**	**10**
कर्नाटक	**17**	**21**
मध्य प्रदेश	**28**	**28**
सभी राज्य	**20**	**23**

(क) केरल और मध्य प्रदेश के लोगों के पोषण स्तरों की तुलना कीजिए।

(ख) क्या आप अंदाज लगा सकते हैं कि देश के लगभग हर पाँच में से एक व्यक्ति अल्पपोषित क्यों है, यद्यपि यह तर्क दिया जाता है कि देश में पर्याप्त खाद्य है? अपने शब्दों में विवरण दीजिए।

उत्तर—(क) केरल में अल्पपोषित वयस्कों में पुरुष महिलाओं का प्रतिशत क्रमश: 8·5 व 10 है जबकि मध्य प्रदेश में यह प्रतिशत क्रमश: 17 व 21 है। इसका अभिप्राय है कि केरल की तुलना में मध्य प्रदेश में अल्पपोषण की समस्या पुरुष व महिला दोनों में ही अधिक है।

(ख) हमारे देश के लगभग हर पाँच में से एक व्यक्ति अल्पपोषित है। इसके निम्न कारण हैं—

(i) हमारे देश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली सही ढंग से कार्य नहीं करती जिससे गरीब लोगों को सस्ता खाद्यान्न नहीं मिलता है और वे अल्पपोषित रहते हैं। (ii) देश के अधिकांश लोग इतने गरीब हैं कि वे पौष्टिक भोजन खरीद सकने में समर्थ नहीं हैं। (iii) राशन की दुकानों के विक्रेता घटिया गुणवत्ता वाले अनाज बेचते हैं। (iv) राशन विक्रेताओं द्वारा लाभ कमाने के लिए अनाज को खुले बाजार में बेच दिया जाता है। (v) देश के अनेक भागों में शैक्षिक एवं स्वास्थ्य सेवाओं की कमी है इसलिए अधिकांश लोग पिछड़े हुए गरीब हैं तथा पौष्टिक भोजन नहीं ले पाते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. विकास क्या है? इसके प्रमुख लक्ष्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—**विकास**—विकास एक प्रक्रिया है जिसमें प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि होने के साथ-साथ निर्धनता, असमानता, अशिक्षा एवं बीमारी में कमी भी हो अर्थात् लोगों के आर्थिक स्तर में सुधार हो एवं उनका जीवन-स्तर उच्च हो।

विकास के विभिन्न लक्ष्य—विकास के विभिन्न लक्ष्य निम्नलिखित हैं—

(i) आय में वृद्धि करना—यह विकास का सबसे प्रमुख लक्ष्य है। आय में वृद्धि के फलस्वरूप लोग पहले की तुलना में अधिक अच्छे तरीके से अपना जीवनयापन कर सकते हैं। इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय आय एवं प्रतिव्यक्ति आय दोनों में वृद्धि के लक्ष्य को सम्मिलित किया जाता है। आय में वृद्धि से लोगों के जीवन-स्तर में सुधार होता है।

(ii) काम करने के अधिक दिन एवं बेहतर मजदूरी—विकास का एक अन्य महत्त्वपूर्ण लक्ष्य यह है कि लोगों को काम करने के अधिक दिन उपलब्ध हों अर्थात् नियमित रूप से रोजगार की प्राप्ति हो। उन्हें नियमित रोजगार के साथ-साथ बेहतर मजदूरी भी प्राप्त हो ताकि वे अपना जीवनयापन अच्छे ढंग से कर सकें। लोगों को उनकी उपज का अधिक समर्थन मूल्य मिले।

(iii) शैक्षिक विकास—विकास में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षित व्यक्ति अधिक कार्यकुशल एवं उत्पादक होता है। शिक्षा से व्यक्ति न केवल अपना विकास करता है वरन् राष्ट्र का भी विकास करता है। अत: विकास के अन्तर्गत देश में शैक्षिक सुविधाओं का विकास किया जाना भी एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है।

(iv) समानता का व्यवहार—विकास के अन्तर्गत सभी लोगों के साथ समानता का व्यवहार किया जाना चाहिए। समानता के अन्तर्गत आर्थिक समानता के साथ-साथ सामाजिक व राजनैतिक समानता को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।

(v) सुरक्षा—किसी भी राष्ट्र का विकास इस प्रकार होना चाहिए कि उसमें निवास करने वाले समस्त समुदायों के लोग अपने आपको सुरक्षित समझें।

(vi) स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार—विकास का एक अन्य महत्त्वपूर्ण लक्ष्य यह है कि देश में स्वास्थ्य सुविधाओं का पर्याप्त विकास एवं विस्तार किया जाना चाहिए। स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार से देश में उत्पादन एवं आय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

(vii) सार्वजनिक सुविधाओं का विस्तार—किसी भी देश के विकास का एक अन्य महत्त्वपूर्ण लक्ष्य यह होता है कि देश में सार्वजनिक सुविधाओं का पर्याप्त विस्तार होना चाहिए, जिससे कि लोगों की सामूहिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाना सुनिश्चित हो सके।

प्रश्न 2. राष्ट्रीय विकास क्या है? इसकी देशों व राज्यों के आधार पर तुलना कैसे की जाती है?

उत्तर—**राष्ट्रीय विकास**—राष्ट्रीय विकास का अर्थ है किसी देश के नागरिकों के जीवन स्तर, स्वास्थ्य, शिक्षा और आय में समग्र सुधार, जिसकी तुलना प्रति व्यक्ति आय, साक्षरता दर, शिशु मृत्यु दर और स्वास्थ्य सुविधाओं जैसे मानव विकास सूचकांक के आधार पर की जाती है, जो आय के साथ-साथ शिक्षा और स्वास्थ्य को भी महत्व देता है, जिससे यह पता चलता है कि आय के बावजूद जीवन की गुणवत्ता कैसी है।

देशों और राज्यों की तुलना कैसे की जाती है?

तुलना के लिए कई मापदंड़ों का उपयोग किया जाता है—

1. आय आधारित मापदंड—(i) **प्रति व्यक्ति आय**—कुल आय को जनसंख्या से विभाजित किया जाता है। यह जीवन स्तर का अच्छा सूचक है, लेकिन यह आय के असमान वितरण को छिपा सकता है। (ii) **सकल घरेलू उत्पाद**—प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का उपयोग किया जाता है, जो आर्थिक गतिविधि का माप है।

2. साक्षरता दर—यह शिक्षा के स्तर को दर्शाती है।

3. स्वास्थ्य स्थिति—इसमें शिशु मृत्यु दर और जीवन प्रत्याशा जैसे—आँकड़े शामिल होते हैं।

4. मानव विकास सूचकांक—यह आय, शिक्षा और स्वास्थ्य को मिलाकर एक समग्र सूचकांक है।

5. बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच—स्वच्छता, पेयजल और बिजली जैसी सुविधाओं की उपलब्धता।

उदाहरण के लिए तुलना—केरल बनाम बिहार—केरल की साक्षरता दर और शिशु मृत्यु दर (कम) बेहतर है, जबकि बिहार में शिक्षा का स्तर (कक्षा-8 के बाद पढ़ाई छोड़ने वाले बच्चों की संख्या) चिंताजनक है, जो अलग-अलग राज्यों में विकास की

भिन्नताओं को दर्शाता है।

प्रश्न 3. मानव विकास क्या है? इसके निर्धारक घटकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—मानव विकास लोगों के अवसरों और क्षमताओं का विस्तार करने की प्रक्रिया है, ताकि वे एक लंबा, स्वस्थ और शिक्षित जीवन जी सकें, एक सभ्य जीवन स्तर प्राप्त कर सकें और अपनी पूरी क्षमता का एहसास कर सके; इसके मुख्य निर्धारक घटक हैं-स्वास्थ्य (जीवन प्रत्याशा), शिक्षा (ज्ञान), और आय (जीवन स्तर), जिनके साथ सामाजिक, राजनीतिक स्वतंत्रता और सशक्तिकरण भी महत्वपूर्ण हैं।

मानव विकास के निर्धारक घटक—

1. स्वास्थ्य—स्वस्थ और लम्बी जिंदगी जीने की क्षमता। जन्म के समय जीवन प्रत्याशा से मापा जाता है, जो बताती है कि व्यक्ति औसतन कितने साल जी सकता है।

2. शिक्षा—ज्ञान प्राप्त करना और कौशल विकसित करना। स्कूली शिक्षा के वर्षों (औसतन और अपेक्षित) और साक्षरता दर के आधार पर मापा जाता है।

3- आय और जीवन स्तर—एक सभ्य जीवन जीने के लिए आवश्यक संसाधनों तक पहुँच। यह सकल राष्ट्रीय आय प्रति व्यक्ति से मापा जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण पहलू—

1. सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता—लोगों को अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने और अधिकारों का प्रयोग करने की आजादी।

2. सशक्तिकरण—सभी के लिए, विशेषकर वंचितों और महिलाओं के लिए, अवसरों की समानता सुनिश्चित करना।

3. स्थिरता—यह सुनिश्चित करना कि विकास के लाभ भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी उपलब्ध हों।

संक्षेप में, मानव विकास एक व्यापक अवधारणा है जो लोगों के कल्याण और क्षमताओं पर केन्द्रित है, जिसमें स्वास्थ्य, शिक्षा और आय प्रमुख स्तंभ हैं।

प्रश्न 4. धारणीय विकास क्या है? इसकी आवश्यकता व प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—धारणीय विकास ऐसा विकास है जो वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतें पूरी करने की क्षमता से समझौता नहीं करता, जिसमें आर्थिक प्रगति, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाना जरूरी है। इसकी आवश्यकता जलवायु परिवर्तन, संसाधनों की कमी और बढ़ती असमानता जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए है, जिसके प्रभावों में बेहतर जीवन स्तर, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और भावी पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित भविष्य शामिल है, लेकिन गलत तरीके से लागू करने पर पर्यावरणीय क्षरण और दीर्घकालिक अस्थिरता भी हो सकती है।

धारणीय विकास की आवश्यकता—

(i) संसाधनों का संरक्षण—सीमित प्राकृतिक संसाधनों (जैसे-पानी, खनिज) का अंधाधुंध दोहन रोकने और उन्हें भावी पीढ़ियों के लिए बचाने के लिए।

(ii) **पर्यावरणक्षरण—**ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण और पारिस्थितक तंत्र के विनाश जैसी समस्याओं से निपटने के लिए।

(iii) **सामाजिक न्याय—**सभी लोगों, खासकर गरीबों, की बुनियादी जरूरतों (भोजन, ऊर्जा, जल, आवास) की पूर्ति के लिए।

(iv) **दीर्घकालिक स्थिरता—**अल्पकालिक लाभ के लिए भविष्य को खतरे में डालने से बचने और सतत जीवन शैली अपनाने के लिए।

धारणीय विकास का प्रभाव—

(i) **सकारात्मक प्रभाव—** सभी के लिए बेहतर गुणवत्ता वाला जीवन उपलब्ध हो, जिसमें रोजगार और बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच हो। सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय स्त्रोतों का उपयोग बढ़ाया जाएं। पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण, जल संरक्षण और कचरा प्रबंधन से पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार किया जाए। दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता और हरित नौकरियों का सृजन किया जाए।

(ii) **नकारात्मक प्रभाव—**प्राकृतिक पूँजी का ह्रास, जिससे दीर्घकाल में विनाश हो सकता है (जैसे-नौरू का उदाहरण)। आर्थिक विकास का पर्यावरण पर इतना अधिक बोझ पड़ना कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए कुछ न बचे।

❑❑

2 भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कोष्ठक में दिए गए सही विकल्प का प्रयोग कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) सेवा क्षेत्रक में रोजगार में उत्पादन के समान अनुपात में वृद्धि.......... । (हुई है/नहीं हुई है)

(ख) ......क्षेत्रक के श्रमिक वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते हैं। (तृतीयक/कृषि)

(ग) ....क्षेत्रक के अधिकांश श्रमिकों को रोजगार सुरक्षा प्राप्त होती है। (संगठित/असंगठित)

(घ) भारत में.....अनुपात में श्रमिक असंगठित क्षेत्रक में काम कर रहे हैं। (बड़े/छोटे)

(ङ) कपास एक .....उत्पाद है और कपड़ा एक ..... उत्पाद है। (प्राकृतिक/विनिर्मित)

(च) प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक की गतिविधियाँ ...... हैं। (स्वतन्त्र/परस्पर निर्भर)

उत्तर—(क) नहीं हुई है, (ख) तृतीयक, (ग) संगठित, (घ) बड़े, (ङ) प्राकृतिक, विनिर्मित, (च) परस्पर निर्भर।

प्रश्न 2. सही उत्तर का चयन करें—

(अ) सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक ············के आधार पर विभाजित हैं।

(क) रोजगार की शर्तों

(ख) आर्थिक गतिविधि के स्वभाव

(ग) उद्यमों के स्वामित्व

(घ) उद्यम में नियोजित श्रमिकों की संख्या

(ब) एक वस्तु का अधिकांशतः प्राकृतिक प्रक्रिया से उत्पादन ······· क्षेत्रक की गतिविधि है।

(क) प्राथमिक (ख) द्वितीयक

(ग) तृतीयक (घ) सूचना प्रौद्योगिकी

(स) किसी वर्ष में उत्पादित ········· के मूल्य के कुल योगफल को स. घ. उ. कहते हैं।

(क) सभी वस्तुओं और सेवाओं

(ख) सभी अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं

(ग) सभी मध्यवर्ती वस्तुओं और सेवाओं

(घ) सभी मध्यवर्ती एवं अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं

(द) स. घ. उ. के पदों में वर्ष 2017-18 में तृतीयक क्षेत्रक की हिस्सेदारी ········· प्रतिशत है।

(क) 20 से 30 (ख) 30 से 40

(ग) 50 से 60 (घ) 60 से 70

उत्तर—**(अ)** (ग), **(ब)** (क), **(स)** (ख), **(द)** (घ)।

प्रश्न 3. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—

कृषि क्षेत्रक की समस्याएँ	कुछ सम्भावित उपाय
1. असिंचित भूमि	(अ) कृषि-आधारित मिलों की स्थापना
2. फसलों का कम मूल्य	(ब) सहकारी विपणन समितियाँ
3. कर्ज भार	(स) सरकार द्वारा खाद्यान्नों की वसूली
4. मंदी काल में रोजगार का अभाव	(द) सरकार द्वारा नहरों का निर्माण
5. कटाई के तुरन्त बाद स्थानीय व्यापारियों को अपना अनाज बेचने की विवशता	(य) कम ब्याज पर बैंकों द्वारा साख उपलब्ध कराना

उत्तर—1. (द), 2. (स), 3. (य), 4. (अ), 5. (ब)।

प्रश्न 4. विषम की पहचान करें और बताइए क्यों?

(क) पर्यटन-निर्देशक, धोबी, दर्जी, कुम्हार

(ख) शिक्षक, डॉक्टर, सब्जी विक्रेता, वकील

(ग) डाकिया, मोची, सैनिक, पुलिस कांस्टेबल

(घ) एम. टी. एन. एल., भारतीय रेल, एयर इण्डिया, जेट एयरवेज, ऑल इण्डिया रेडियो।

उत्तर—(क) **पर्यटन निर्देशक** क्योंकि यह तृतीयक क्षेत्रक का है।

(ख) **सब्जी विक्रेता** क्योंकि इसे नियमित रोजगार प्राप्त नहीं होता है।

(ग) **मोची** क्योंकि यह असंगठित क्षेत्रक के अन्तर्गत आता है।

(घ) **जेट एयरवेज** क्योंकि यह निजी क्षेत्रक का उपक्रम है जबकि अन्य राजकीय क्षेत्र के उपक्रम हैं।

प्रश्न 5. एक शोध छात्र ने सूरत शहर में काम करने वाले लोगों से मिलकर निम्न आँकड़े जुटाए—

कार्य स्थान	रोजगार की प्रकृति	श्रमिकों का प्रतिशत
सरकार द्वारा पंजीकृत कार्यालयों और कारखानों में	संगठित	15
औपचारिक अधिकार-पत्र सहित बाजारों में अपनी दुकान, कार्यालय और क्लीनिक		15
सड़कों पर काम करते लोग, निर्माण श्रमिक, घरेलू श्रमिक		20
छोटी कार्यशालाओं में काम करते लोग, जो प्रायः सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं हैं		

तालिका को पूरा कीजिए। इस शहर में असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों की प्रतिशतता क्या है?

उत्तर— **तालिका**

कार्य स्थान	रोजगार की प्रकृति	श्रमिकों का प्रतिशत
सरकार द्वारा पंजीकृत कार्यालयों और कारखानों में	संगठित	15
औपचारिक अधिकार-पत्र सहित बाजारों में अपनी दुकान, कार्यालय और क्लीनिक	असंगठित	15
सड़कों पर काम करते लोग, निर्माण श्रमिक, घरेलू श्रमिक	असंगठित	20
छोटी कार्यशालाओं में काम करते लोग, जो प्रायः सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं हैं।	असंगठित	50
सूरत शहर में असंगठित क्षेत्रक में 85% श्रमिक कार्यरत हैं।		

प्रश्न 6. क्या आप मानते हैं कि आर्थिक गतिविधियों की प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में विभाजन की उपयोगिता है? व्याख्या कीजिए कि कैसे?

उत्तर—हाँ, हम मानते हैं कि आर्थिक गतिविधियों की प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में विभाजन की उपयोगिता है। क्षेत्रों पर आधारित अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण यह प्रदर्शित करता है कि आर्थिक क्रियाएँ तीन प्रकार की होती हैं। प्राथमिक क्षेत्रक के अन्तर्गत वे गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं जो प्राकृतिक संसाधनों के प्रत्यक्ष उपयोग पर आधारित होती हैं; जैसे—कृषि, डेयरी, मत्स्य, वनारोपण आदि।

द्वितीयक क्षेत्रक के अन्तर्गत वे गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं जिसमें प्राकृतिक या प्राथमिक उत्पादों को विनिर्माण प्रक्रिया के माध्यम से अन्य रूपों में परिवर्तित किया जाता है; जैसे—कपास से कपड़ों का निर्माण।

तृतीयक क्षेत्रक के अन्तर्गत वे गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं जो प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रकों के विकास में मदद करती हैं; जैसे—परिवहन, बीमा, बैंकिंग आदि।

यह वर्गीकरण अत्यधिक उपयोगी है क्योंकि इसके द्वारा हमें विकास के साथ-साथ व्यावसायिक स्थिति के बारे में भी ज्ञान प्राप्त होता है। इसके द्वारा हमें निम्नलिखित जानकारी प्राप्त होती है—

(i) आर्थिक क्रियाओं का स्पष्ट विभाजन, (ii) सकल घरेलू उत्पादन में विभिन्न क्षेत्रकों का योगदान, (iii) विभिन्न क्षेत्रकों में कार्यरत श्रमिकों की संख्या, (iv) विभिन्न क्षेत्रकों में उपलब्ध रोजगार का वितरण, (v) विभिन्न क्षेत्रकों का राष्ट्रीय आय में योगदान।

प्रश्न 7. इस अध्याय में आए प्रत्येक क्षेत्रक को रोजगार और सकल घरेलू उत्पाद (स.घ.उ.) पर ही क्यों केन्द्रित करना चाहिए? क्या अन्य वाद-पदों का परीक्षण किया जा सकता है? चर्चा करें।

उत्तर—इस अध्याय में आर्थिक गतिविधियों को विभिन्न क्षेत्रकों में बाँटा गया है; जैसे—प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रक, संगठित व असंगठित क्षेत्रक तथा निजी व सार्वजनिक क्षेत्रक। रोजगार बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह गरीबी जैसी अनेक आर्थिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। वहीं दूसरी तरफ सकल घरेलू उत्पाद राष्ट्रीय आय में प्रत्येक क्षेत्र के योगदान को ज्ञात करने में मदद करता है। हमें अपनी वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए प्रत्येक क्षेत्रक को रोजगार और सकल घरेलू उत्पाद (स.घ.उ.) पर केन्द्रित होना चाहिए क्योंकि सकल घरेलू उत्पाद एवं प्रतिव्यक्ति आय कम होने पर अर्थव्यवस्था का विकास नहीं हो सकता है। अर्थव्यवस्था का विकास न होने की स्थिति में रोजगारों में वृद्धि नहीं होगी। बेरोजगारी व अल्प रोजगार की भयावह समस्या उत्पन्न होगी जो देश के लिए अनेक समस्याओं की जड़ होगी।

प्रश्न 8. जीविका के लिए काम करने वाले अपने आस-पास के वयस्कों के सभी कार्यों की लम्बी सूची बनाइए। उन्हें आप किस तरीके से वर्गीकृत कर सकते हैं? अपने चयन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—मेरे आस-पास रहने वाले लोग विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं। इनकी सूची निम्नलिखित है—

(i) कृषि कार्य, पशुपालन, लकड़ी काटना, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, वनों से कन्द-मूल-फल संग्रह करना आदि।

(ii) विभिन्न वस्त्र मिलों में कार्य करना, कपड़ा बुनना, चीनी, गुड़ व खाण्डसारी उद्योग में काम करना, फर्नीचर उद्योग में काम करना। रेलवे, जहाजरानी एवं इंजीनियरिंग उद्योग में काम करना आदि।

(iii) विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत लोग, जैसे—अध्यापक, डॉक्टर, वकील, क्लर्क, सिपाही, टेलीफोन ऑपरेटर, बैंकिंग व बीमा कम्पनियों में कार्यरत लोग, व्यावसायिक परिवहन व संचार सेवाओं में काम करना।

(iv) दैनिक मजदूरी पर कार्य करने वाले लोग।

(v) घरेलू नौकर।

उपरोक्त कार्यों में संलग्न लोगों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—

(i) प्राथमिक क्षेत्रक में कार्य करने वाले लोग

(ii) द्वितीयक क्षेत्रक में कार्य करने वाले लोग

(iii) तृतीयक क्षेत्रक में कार्य करने वाले लोग।

(i), (ii), व (iii) में संगठित क्षेत्रक में कार्य करने वाले लोग तथा असंगठित क्षेत्रक में कार्य करने वाले लोग।

प्रश्न 9. तृतीयक क्षेत्रक अन्य क्षेत्रकों से कैसे भिन्न है? सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

उत्तर—तृतीयक क्षेत्रक परिवहन, संचार, बीमा, बैंकिंग, भण्डारण व व्यापार आदि से सम्बन्धित सेवाएँ प्रदान करता है। तृतीयक क्षेत्रक को सेवा क्षेत्रक भी कहते हैं। तृतीयक क्षेत्रक अन्य दो क्षेत्रकों से भिन्न है। इसका कारण है कि अन्य दो क्षेत्रक (प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्रक) वस्तुएँ उत्पादित करते हैं जबकि यह क्षेत्रक अपने आप कोई वस्तु उत्पादित नहीं करता है बल्कि इस क्षेत्रक में सम्मिलित क्रियाएँ प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रकों के विकास में माध्यम होती हैं अर्थात् ये प्राथमिक क्रियाएँ उत्पादन प्रक्रिया में मदद करती हैं। उदाहरण के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रक द्वारा उत्पादित वस्तुओं को थोक एवं खुदरा विक्रेताओं को बेचने के लिए ट्रैक्टर, ट्रकों एवं रेलगाड़ी द्वारा परिवहन करने की जरूरत पड़ती है। इन वस्तुओं को कभी-कभी गोदाम या शीतगृह में भण्डारण की भी आवश्यकता होती है। हमें उत्पादन एवं व्यापार में सुविधा के लिए कई लोगों से टेलीफोन से भी बातें करनी होती हैं या पत्राचार करना पड़ता है एवं कभी-कभी बैंक से पैसा भी उधार लेना पड़ता है। इस प्रकार परिवहन, भण्डारण, संचार एवं बैंकिंग प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रकों के विकास में सहायक होते हैं। अत: स्पष्ट है कि तृतीयक क्षेत्रक की गतिविधियाँ, प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रक के विकास में सहायता करती हैं।

प्रश्न 10. प्रच्छन्न बेरोजगारी से आप क्या समझते हैं? शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से उदाहरण देकर व्याख्या कीजिए।

उत्तर—प्रच्छन्न बेरोजगारी या छिपी हुई बेरोजगारी के अन्तर्गत लोग नियोजित प्रतीत होते हैं परन्तु वास्तव में बेरोजगार होते हैं। इस व्यवस्था में लोग आवश्यकता से अधिक संख्या में लगे होते हैं। यदि उन्हें इस व्यवस्था से हटाकर किसी अन्य व्यवस्था में स्थानान्तरित कर दिया जाए तो भी उत्पादन प्रभावित नहीं हो, तो यह स्थिति प्रच्छन्न बेरोजगारी की स्थिति कही जायेगी।

इस प्रकार प्रच्छन्न बेरोजगारी से आशय किसी विशेष आर्थिक क्रिया में उत्पादन हेतु आवश्यकता से अधिक मात्रा में श्रमिकों के लगे होने से है।

शहरी क्षेत्रों के उदाहरण—प्रच्छन्न बेरोजगारी शहरी क्षेत्रों में प्रायः छोटी फुटकर दुकानों एवं छोटे व्यवसायों में लगे परिवारों की स्थिति से भी मापी जाती है। एक शहरी क्षेत्र की एक दुकान में जिसमें केवल दो लोगों की आवश्यकता है, यदि मालिक व 3 नौकर कार्य करते हैं। इसमें 2 नौकर प्रच्छन्न रूप से बेरोजगार हैं क्योंकि इनकी दुकान में आवश्यकता ही नहीं है।

ग्रामीण क्षेत्रों के उदाहरण—ग्रामीण क्षेत्रों में प्रच्छन्न बेरोजगारी प्रायः कृषि क्षेत्र में पायी जाती है। उदाहरण के लिए, किसी किसान के पास 3 हेक्टेयर का एक छोटा-सा खेत है जिसमें कार्य करने के लिए दो लोग पर्याप्त हैं परन्तु उस किसान के परिवार के सभी सात सदस्य इस खेत में लगे रहते हैं। यदि इस कार्य से 5 लोगों को हटा लिया जाए तो कृषि उत्पादन में कोई कमी नहीं आएगी। इस तरह 5 लोग प्रच्छन्न बेरोजगार की श्रेणी में आएँगे क्योंकि उनकी खेत में आवश्यकता ही नहीं है।

प्रश्न 11. खुली बेरोजगारी और प्रच्छन्न बेरोजगारी के बीच विभेद कीजिए।

उत्तर—खुली बेरोजगारी और प्रच्छन्न बेरोजगारी के बीच निम्नलिखित विभेद (अन्तर) हैं—

खुली बेरोजगारी	प्रच्छन्न बेरोजगारी
1. इसके अन्तर्गत एक श्रमिक काम करने के लिए तैयार होता है, परन्तु उसे काम नहीं मिलता।	1. इसके अन्तर्गत श्रमिक काम करता है परन्तु यदि उसे इस काम से हटा दिया जाए तो उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है अर्थात् कोई कमी नहीं आती है।
2. यह स्थाई प्रकृति की होती है।	2. यह अस्थाई प्रकृति की होती है।
3. इस प्रकार की बेरोजगारी प्रायः देश के औद्योगिक क्षेत्रों में पायी जाती है।	3. इस प्रकार की बेरोजगारी प्रायः कृषि क्षेत्र में पाई जाती है।
4. यह बेरोजगारी ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन खेतिहर मजदूरों में भी पाई जाती है।	4. यह बेरोजगारी शहरी क्षेत्रों में छोटी-छोटी दुकानों एवं छोटे व्यवसायों में लगे परिवारों में भी पाई जाती है।

प्रश्न 12. ''भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में तृतीयक क्षेत्रक कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा रहा है।'' क्या आप इससे सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।

उत्तर—नहीं, मैं इस कथन से सहमत नहीं हूँ कि भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में तृतीयक क्षेत्रक कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा रहा है। वास्तव में वर्ष 1973-74 और 2013-14 के बीच चालीस वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में तृतीयक क्षेत्रक ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्ष 2013-14 में भारत में प्राथमिक क्षेत्रक को प्रतिस्थापित करते हुए तृतीयक क्षेत्रक सबसे बड़े उत्पादक क्षेत्रक के रूप में उभरा है। तृतीयक क्षेत्रक का योगदान निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट है—

(i) भारत सरकार की नई आर्थिक नीति से देश में तृतीयक क्षेत्रक का तेजी से विस्तार हुआ है। देश में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार हो रहा है, शिक्षा, आवास एवं स्वास्थ्य सेवाओं में वृद्धि हुई है, बैंकिंग, परिवहन व संचार के विस्तार पर बल दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अनेक नवीन सेवाएँ; जैसे—इंटरनेट कैफे, ए. टी. एम. बूथ, कॉल सेन्टर, सॉफ्टवेयर कम्पनी आदि में कार्यरत लोगों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

(ii) सकल घरेलू उत्पाद (जी. डी. पी.) में तृतीयक क्षेत्रक का योगदान लगातार बढ़ रहा है। अब तृतीयक क्षेत्रक प्राथमिक क्षेत्रक की बजाय भारत में सर्वाधिक उत्पादक क्षेत्रक बन गया है। सन् 1973-74 में सकल घरेलू उत्पाद में तृतीयक क्षेत्रक का हिस्सा लगभग 48 प्रतिशत था जो 2013-14 में बढ़कर लगभग 67 प्रतिशत हो गया है। यद्यपि 1973-74 से 2013-14 के मध्य के 40 वर्षों में तीनों क्षेत्रों के उत्पादन में वृद्धि हुई परन्तु तृतीयक क्षेत्रक में यह वृद्धि सर्वाधिक रही है।

(iii) रोजगार में तृतीयक क्षेत्रक का प्रतिशत भी तीव्र गति से बढ़ा है। सन् 1977-78 में इसका योगदान 18 प्रतिशत था जो सन् 2017-18 में बढ़कर 31 प्रतिशत हो गया। यद्यपि रोजगार की दृष्टि से तृतीयक क्षेत्रक का प्रतिशत योगदान बहुत अधिक नहीं है, परन्तु इसमें वृद्धि दर्ज की गयी है।

(iv) तृतीयक क्षेत्रक की गतिविधियाँ प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्रक के विकास में मदद करती हैं; जैसे—परिवहन, भण्डारण, संचार, बैंक सेवाएँ एवं व्यापार तृतीयक क्षेत्रक की गतिविधियों के उदाहरण हैं। ये गतिविधियाँ वस्तुओं के स्थान पर सेवाओं का सृजन करती हैं।

अतः कहा जा सकता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में तृतीयक क्षेत्रक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

प्रश्न 13. ''भारत में सेवा क्षेत्रक दो विभिन्न प्रकार के लोग नियोजित करता है।'' ये लोग कौन हैं ?

उत्तर—भारत में सेवा क्षेत्रक को दो विभिन्न प्रकार के लोग नियोजित करते हैं। ये लोग हैं—

(i) प्रथम वर्ग में वे लोग आते हैं जिनकी सेवाएँ प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं के उत्पादन में सहायता करती हैं। यह सहायता प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही क्षेत्रकों को प्राप्त होती हैं। उदाहरण के लिए—परिवहन, भण्डारण, संचार, बैंकिंग, व्यापार आदि क्षेत्रकों में नियोजित लोग।

(ii) दूसरे वर्ग में कुछ ऐसे सेवा प्रदाता आते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं के उत्पादन में सहायता नहीं करते। उदाहरण के लिए—अध्यापक, डॉक्टर, वकील, धोबी, मोची, नाई आदि। वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित कुछ नवीन सेवाएँ; जैसे—इन्टरनेट कैफे, ए. टी. एम. बूथ, कॉलसेन्टर, सॉफ्टवेयर

कम्पनी आदि भी महत्त्वपूर्ण हो गई हैं, जो इसी वर्ग में सम्मिलित हैं।

प्रश्न 14. ''असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों का शोषण किया जाता है।'' क्या आप इस विचार से सहमत हैं ? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।

उत्तर—हाँ, मैं इस विचार से सहमत हूँ कि असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों का शोषण किया जाता है। इसके पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये जा सकते हैं—

(i) इस क्षेत्रक में श्रमिकों के संरक्षण के लिए बनाये गये सरकारी नियमों एवं विनियमों का पालन नहीं होता है।

(ii) असंगठित क्षेत्रक में बहुत कम वेतन/मजदूरी दी जाती है और वह भी नियमित रूप से नहीं दी जाती है।

(iii) इस क्षेत्रक में मजदूर सामान्यत: अशिक्षित, अनभिज्ञ व असंगठित होते हैं, इसलिए वे नियोक्ता से मोल-भाव कर अच्छी मजदूरी सुनिश्चित करने की स्थिति में नहीं होते हैं।

(iv) इस क्षेत्रक में अतिरिक्त समय में काम तो लिया जाता है परन्तु अतिरिक्त वेतन नहीं दिया जाता है।

(v) इस क्षेत्रक में सवेतन छुट्टी, अवकाश, बीमारी के कारण छुट्टी का कोई प्रावधान नहीं है।

(vi) इस क्षेत्रक में रोजगार सुरक्षा भी नहीं होती है। नियोक्ता द्वारा कर्मचारियों को बिना किसी कारण काम से हटाया जा सकता है।

(vii) इस क्षेत्रक के अन्तर्गत कुछ मौसमों में जब काम नहीं होता है, तो कुछ लोगों को काम से छुट्टी दे दी जाती है। बहुत से लोग नियोक्ता की पसन्द पर निर्भर होते हैं।

प्रश्न 15. अर्थव्यवस्था में गतिविधियाँ रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर कैसे वर्गीकृत की जाती हैं ?

उत्तर—अर्थव्यवस्था में गतिविधियाँ रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर संगठित एवं असंगठित क्षेत्रकों में वर्गीकृत की जाती हैं—

(i) संगठित क्षेत्रक—संगठित क्षेत्रक में वे उद्यम अथवा कार्य-स्थान आते हैं, जहाँ रोजगार की अवधि नियत होती है और इसलिए लोगों के पास सुनिश्चित काम होता है।

ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं एवं उन्हें राजकीय नियमों व विनियमों का अनुपालन करना होता है।

इन नियमों व विनियमों का अनेक विधियों; जैसे—कारखाना अधिनियम की निश्चित न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, सेवानुदान अधिनियम, दुकान एवं प्रतिष्ठान अधिनियम आदि में उल्लेख किया गया है। यह क्षेत्रक संगठित क्षेत्रक इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इसकी कुछ औपचारिक प्रक्रिया एवं क्रियाविधि होती है। इस क्षेत्रक के अन्तर्गत रोजगार सुरक्षित होता है, काम के घण्टे निश्चित होते हैं, अतिरिक्त कार्य के लिए अतिरिक्त वेतन मिलता है। कर्मचारियों को कार्य के दौरान एवं सेवानिवृति के पश्चात् भी अनेक सुविधाएँ मिलती हैं।

(ii) असंगठित क्षेत्रक—असंगठित क्षेत्रक के अन्तर्गत वे छोटी-छोटी और बिखरी इकाइयाँ सम्मिलित होती हैं जो अधिकांशत: सरकारी नियन्त्रण से बाहर होती हैं। यद्यपि इस क्षेत्रक के नियम और विनियम तो होते हैं परन्तु उनका पालन नहीं होता है। ये अनियमित एवं कम वेतन वाले रोजगार होते हैं। इनमें सवेतन छुट्टी, अवकाश, बीमारी के कारण छुट्टी आदि का कोई प्रावधान नहीं होता है और न ही रोजगार की सुरक्षा। श्रमिकों को बिना किसी कारण काम से हटाया जा सकता है।

प्रश्न 16. संगठित एवं असंगठित क्षेत्रकों में विद्यमान रोजगार परिस्थितियों की तुलना करें।

उत्तर—संगठित एवं असंगठित क्षेत्रकों में विद्यमान रोजगार परिस्थितियों की तुलना निम्नलिखित प्रकार से है—

संगठित क्षेत्रक की रोजगार परिस्थितियाँ	असंगठित क्षेत्रक की रोजगार परिस्थितियाँ
(i) इस क्षेत्रक के उद्योगों एवं प्रतिष्ठानों को सरकार द्वारा पंजीकृत कराना अवश्यक होता है।	(i) इस क्षेत्रक के अन्तर्गत दुकानों व प्रतिष्ठानों को सरकार से पंजीकृत कराना अनिवार्य नहीं है।
(ii) यह क्षेत्रक सरकारी नियमों व उपनियमों के अधीन कार्य करता है। ये नियम व विनियम सभी नियोक्ताओं, कर्मचारियों व श्रमिकों पर समान रूप से लागू होते हैं।	(ii) इस क्षेत्रक के नियम व विनियम तो होते हैं परन्तु उनका अनुपालन नहीं किया जाता है।
(iii) इस क्षेत्रक में काम करने की अवधि व काम के घण्टे निश्चित होते हैं।	(iii) इस क्षेत्रक में काम करने की अवधि व घण्टे निश्चित नहीं होते हैं।
(iv) इस क्षेत्रक में कार्य करने वाले कर्मचारियों, श्रमिकों को मासिक वेतन प्राप्त होता है।	(iv) इस क्षेत्रक में काम करने वाले कर्मचारी/श्रमिक दैनिक मजदूरी प्राप्त करते हैं।
(v) इस क्षेत्रक के अन्तर्गत कर्मचारी मासिक वेतन के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के भत्ते, समर्पित अवकाश का भुगतान, प्रोविडेंट फंड, वार्षिक वेतन वृद्धि आदि सुविधाएँ प्राप्त करते हैं।	(v) इस क्षेत्रक के अन्तर्गत श्रमिकों को दैनिक मजदूरी के अतिरिक्त कोई अन्य भत्ता नहीं मिलता है।
(vi) इस क्षेत्रक के अन्तर्गत कर्मचारियों/श्रमिकों को रोजगार सुरक्षा प्राप्त होती है।	(vi) इस क्षेत्रक के अन्तर्गत कार्यरत कर्मचारियों/श्रमिकों को रोजगार सुरक्षा प्राप्त नहीं होती है।

(vii) इस क्षेत्रक के अन्तर्गत कर्मचारियों/श्रमिकों को नियोक्ता द्वारा एक नियुक्ति पत्र दिया जाता है जिसमें काम की सभी शर्तें एवं दशाएँ वर्णित होती हैं।	(vii) इस क्षेत्रक के अन्तर्गत कर्मचारियों/श्रमिकों को कोई औपचारिक नियुक्ति पत्र नहीं दिया जाता है।
(viii) इस क्षेत्रक के अन्तर्गत कर्मचारियों को कार्यस्थल पर स्वच्छ पानी, स्वास्थ्य एवं कार्य का सुरक्षित वातावरण आदि सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं।	(viii) इस क्षेत्रक के अन्तर्गत कर्मचारियों को इस प्रकार की सुविधाओं का लगभग अभाव देखने को मिलता है।
(ix) इस क्षेत्रक में श्रम संघ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अत: श्रमिकों का शोषण नहीं होता है।	(ix) इस क्षेत्रक में श्रम संघों के अभाव के कारण श्रमिकों का अत्यधिक शोषण होता है।

प्रश्न 17. मनरेगा (महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) 2005 (MNREGA, 2005) के उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—भारत की केन्द्र सरकार ने वर्ष 2005 में भारत के चयनित 200 जिलों (अब 625 जिलों) के ग्रामीण क्षेत्रों में 'काम का अधिकार' लागू करने के लिए एक कानून बनाया है। इस कानून को महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गांरटी अधिनियम, 2005 कहते हैं। इस कानून को बनाने का उद्देश्य उन लोगों को जो कार्य करने योग्य हैं तथा जिन्हें कार्य की आवश्यकता है, सरकार द्वारा एक वर्ष में 100 दिनों का रोजगार का आश्वासन देना है। यदि सरकार इस उद्देश्य की प्राप्ति में असफल रहती है तो वह लोगों को बेरोजगार भत्ता देगी। अत: इसे 'काम का अधिकार' अधिनियम भी कहते हैं।

इस कानून को वर्तमान में देश के समस्त जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में लागू कर दिया गया है तथा इसका नाम बदलकर महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम (मनरेगा) कर दिया गया है।

इस अधिनियम के अन्तर्गत इस तरह के कार्यों को वरीयता दी गयी है जिनमें भविष्य में भूमि से उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी।

प्रश्न 18. अपने क्षेत्र से उदाहरण लेकर सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक की गतिविधियों एवं कार्यों की तुलना तथा वैषम्य कीजिए।

उत्तर—सार्वजनिक और निजी क्षेत्रक की गतिविधियों एवं कार्यों की तुलना तथा वैषम्य निम्नांकित प्रकार से है—

सार्वजनिक क्षेत्रक	निजी क्षेत्रक
1. इस क्षेत्रक के अन्तर्गत अधिकांश परिसम्पत्तियों पर सरकार का स्वामित्व होता है और सरकार ही सभी आवश्यक सेवाएँ उपलब्ध कराती है; जैसे—डाकघर, भारतीय रेलवे आकाशवाणी, इण्डियन एयरलाइन्स आदि।	1. इस क्षेत्रक में परिसम्पत्तियों पर स्वामित्व एवं सेवाओं के वितरण की जिम्मेदारी एकल व्यक्ति या कम्पनी के हाथों में होती है; जैसे—मित्तल पब्लिकेशन्स, टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, रिलायंस इण्डस्ट्रीज लिमिटेड आदि।
2. सार्वजनिक क्षेत्रक का उद्देश्य सार्वजनिक कल्याण में वृद्धि करना होता है।	2. निजी क्षेत्रक की गतिविधियों का उद्देश्य लाभ अर्जित करना होता है।
3. इस क्षेत्रक में उत्पादन एवं वितरण सम्बन्धी समस्त निर्णय सरकार द्वारा निर्धारित नीति के तहत लिये जाते हैं।	3. इस क्षेत्रक में उत्पादन एवं वितरण सम्बन्धी निर्णय निजी स्वामियों अथवा प्रबन्धकों द्वारा लिए जाते हैं।
4. सरकार समाज के लिए आवश्यक सार्वजनिक परियोजनाओं में बहुत अधिक राशि का व्यय करती है; जैसे—सड़क, पुल, नहर, बन्दरगाह आदि का निर्माण करना।	4. निजी क्षेत्रक अपने लाभ के उद्देश्य के कारण बहुत अधिक राशि व्यय करने वाली परियोजनाओं में निवेश नहीं करता है।
5. कई प्रकार की गतिविधियों को पूरा करना सरकार का प्राथमिक दायित्व होता है; जैसे—शिक्षा, स्वास्थ्य, विद्युत आदि। इसलिए सरकार बड़ी संख्या में विद्यालय, महाविद्यालय, अस्पताल, विद्युत परियोजनाएँ आदि चलाती है।	5. निजी क्षेत्रक का ऐसा किसी प्रकार का कोई दायित्व नहीं होता है। यदि वह ऐसी सेवाएँ प्रदान करता है तो इसके लिए वह राशि वसूलता है। उदाहरण के लिए, हमारे क्षेत्र में निजी पब्लिक स्कूल, सरकारी स्कूल की तुलना में बहुत अधिक फीस लेते हैं।

वैषम्य— (i) कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं, जिन्हें सरकारी समर्थन की जरूरत पड़ती है; जैसे—उत्पादन-मूल्य पर बिजली की बिक्री से बहुत से उद्योगों में वस्तुओं की उत्पादन-लागत में वृद्धि हो सकती है। जिससे अनेक इकाइयाँ बंद हो सकती हैं। यहाँ सरकार लागत का कुछ अंश वहन कर सकती है।

(ii) इसी प्रकार, भारत सरकार किसानों से उचित मूल्य पर गेहूँ और चावल खरीदकर गोदामों में भण्डारण कर, राशन-दुकानों के माध्यम से उपभोक्ताओं को कम मूल्य पर बेचती है।

प्रश्न 19. अपने क्षेत्र से एक-एक उदाहरण देकर निम्न तालिका को पूरा कीजिए और चर्चा कीजिए।

	सुव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन	कुव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन
सार्वजनिक क्षेत्रक		
निजी क्षेत्रक		

उत्तर—

	सुव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन	कुव्यवस्थित प्रबंध वाले संगठन
सार्वजनिक क्षेत्रक	पंजाब नेशनल बैंक, भरतपुर	राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम आगार-भरतपुर
निजी क्षेत्रक	सेण्ट सोफिया विद्यालय, मथुरा	साहिल मिष्ठान भण्डार, मथुरा

नोट—विद्यार्थी अपने क्षेत्र का उदाहरण ले सकते हैं।

प्रश्न 20. सार्वजनिक क्षेत्रक की गतिविधियों के कुछ उदाहरण दीजिए और व्याख्या कीजिए कि सरकार द्वारा इन गतिविधियों का कार्यान्वयन क्यों किया जाता है ?

उत्तर—सार्वजनिक क्षेत्रक की गतिविधियों के उदाहरण निम्नलिखित हैं—

(i) भारतीय रेलवे (ii) डाकघर (iii) भारत संचार निगम लिमिटेड (iv) भारतीय जीवन बीमा निगम (v) अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (vi) प्रसार भारती, (vii) भारतीय खाद्य निगम।

ऐसी अनेक वस्तुएँ व सेवाएँ होती हैं जिनकी समाज में सभी सदस्यों को आवश्यकता होती है। सरकार के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह उनकी उचित कीमतों पर आपूर्ति बनाये रखे। निजी क्षेत्रक लाभ प्रेरणा से निर्देशित होता है। अत: वह इन सेवाओं की उचित कीमत पर आपूर्ति नहीं कर पाता है। इसके अतिरिक्त उन क्षेत्रों में विशाल निवेश की जरूरत होती है जो निजी क्षेत्रक की क्षमता से बाहर होता है। ऐसे प्रमुख क्षेत्रों में सड़क, पुल, रेलवे, बाँध आदि का निर्माण है। इन पर किये जाने वाले भारी व्यय को सरकार स्वयं वहन करती है एवं जनसामान्य के लिए इन सुविधाओं को सुनिश्चित करती है।

इन सब कारणों से सरकार द्वारा इन गतिविधियों का कार्यान्वयन किया जाता है।

प्रश्न 21. व्याख्या कीजिए कि किसी देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक कैसे योगदान करता है?

उत्तर—किसी देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्रक निम्नलिखित प्रकार से योगदान करता है—

(i) देश के सुदृढ़ औद्योगिक आधार के निर्माण में सार्वजनिक क्षेत्रक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, (ii) सार्वजनिक क्षेत्रक के विस्तार से रोजगार के अवसरों में पर्याप्त वृद्धि होती है, (iii) सार्वजनिक क्षेत्रक अधिक पूँजी निवेश द्वारा पूँजी निर्माण की दर में वृद्धि करने में सहायक है, (iv) सार्वजनिक क्षेत्रक विकास के लिए वित्तीय संसाधन जुटाता है, (v) यह क्षेत्रक सस्ती दर पर आसानी से वस्तुओं की उपलब्धता को सुनिश्चित करता है, (vi) यह सन्तुलित प्रादेशिक विकास को प्रोत्साहित करता है, (vii) यह आधारभूत संरचनाओं के निर्माण एवं विस्तार द्वारा तीव्र आर्थिक विकास को प्रेरित करता है, (viii) यह अर्थव्यवस्था पर निजी एकाधिकार को नियन्त्रित करता है, (ix) यह लघु व कुटीर स्तरीय उद्योगों को प्रोत्साहित करता है, (x) यह आय व सम्पत्ति की समानता लाता है, (xi) देश के कुछ सार्वजनिक उद्यम विदेशी आयातों पर हमारी निर्भरता को कम करने में सहायक रहे हैं।

प्रश्न 22. असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों को निम्नलिखित मुद्दों पर संरक्षण की आवश्यकता है—मजदूरी, सुरक्षा और स्वास्थ्य। उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर—नि:सन्देह असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों को मजदूरी, सुरक्षा व स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर संरक्षण की आवश्यकता है।

(i) मजदूरी—असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों को बहुत कम मजदूरी दी जाती है। उनका प्राय: शोषण किया जाता है। उन्हें दैनिक मजदूरी के अतिरिक्त कोई भत्ता नहीं दिया जाता है। न ही उनको वार्षिक वेतन वृद्धि दी जाती है। इसके समाधान हेतु राज्य व केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के समान मजदूरी दी जानी चाहिए एवं मजदूरी के अतिरिक्त उन्हें अन्य भत्ते; जैसे— परिवहन, शिक्षा, चिकित्सा एवं आवास भी दिये जाने चाहिए। उनकी मजदूरी में वार्षिक वेतन वृद्धि भी की जानी चाहिए।

(ii) सुरक्षा—असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों को रोजगार की सुरक्षा नहीं होती है, उन्हें अकारण किसी भी समय काम छोड़ने के लिए कहा जा सकता है। इस क्षेत्रक में श्रमिक सामान्यत: ईंट, खदान, पटाखे जैसे अति जोखिम भरे उद्योगों में काम करते हैं इसलिए उन्हें सुरक्षा की अति आवश्यकता होती है। सभी श्रमिकों को रोजगार की सुरक्षा होनी चाहिए। कोई भी नियोक्ता उन्हें मनमाने रूप से नौकरी से बाहर न कर सके। नौकरी से निकालने की प्रक्रिया नियमानुसार होनी चाहिए तथा श्रमिकों को इसके लिए उचित क्षतिपूर्ति दी जानी चाहिए।

कारखानों के अन्दर काम करते समय अथवा काम पर आते और काम समाप्त करके घर लौटते समय होने वाली किसी भी दुर्घटना के लिए उन्हें क्षतिपूर्ति दी जानी चाहिए जैसा कि राज्य एवं केन्द्र सरकार करती है।

(iii) स्वास्थ्य—असंगठित क्षेत्रक के श्रमिक कम मजदूरी की प्राप्ति के कारण पौष्टिक भोजन नहीं ले पाते हैं परिणामस्वरूप उनकी स्वास्थ्य स्थिति बहुत कमजोर होती है। अत: उन्हें संरक्षण

की आवश्यकता है। इस हेतु सभी श्रमिकों व कर्मचारियों को सेवाकाल के दौरान एवं सेवानिवृत्ति के पश्चात् स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए; जैसे—शिक्षकों, डॉक्टरों, लिपिकों आदि की सेवा सुविधाएँ, चिकित्सा सुविधाएँ आदि।

प्रश्न 23. अहमदाबाद में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि नगर के 15,00,000 श्रमिकों में से 11,00,000 श्रमिक असंगठित क्षेत्रक में काम करते थे। वर्ष 1997-98 में नगर की कुल आय 600 करोड़ थी। इसमें से 320 करोड़ रुपये संगठित क्षेत्रक से प्राप्त होती थी। इस आँकड़े को तालिका में प्रदर्शित कीजिए। नगर में और अधिक रोजगार सृजन के लिए किन तरीकों पर विचार किया जाना चाहिए।

उत्तर—तालिका—1997-98 में अहमदाबाद में संगठित और असंगठित क्षेत्रकों में आय एवं रोजगार

अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक	श्रमिकों की संख्या	आय (करोड़ रुपये में)
संगठित	4,00,000	320
असंगठित	11,00,000	280
कुल	15,00,000	600

उपरोक्त तालिका से प्रदर्शित होता है कि अधिकांश श्रमिक (11,00,000) असंगठित क्षेत्रक में कार्य करते हैं, जिनके द्वारा अर्जित आय केवल 280 करोड़ रुपये है। जबकि 4,00,000 श्रमिक संगठित क्षेत्रक में कार्य करते हैं, जिनके द्वारा 320 करोड़ रुपये आय के रूप में प्राप्त किये जाते हैं जो कि असंगठित क्षेत्रक की आय से अधिक है।

नगर में और अधिक रोजगार सृजन के लिए निम्नलिखित तरीकों पर विचार किया जाना चाहिए—

(i) सरकार द्वारा लघु एवं कुटीर उद्योगों के अतिरिक्त कृषि आधारित उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए, (ii) सरकार को कम ब्याज दरों के साथ-साथ आसान शर्तों पर ऋण उपलब्ध कराना चाहिए जिससे लोग अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर सकें, (iii) उत्पादन के क्षेत्र में पूँजी गहन तकनीकों के स्थान पर श्रम गहन तकनीकों को अपनाया जाना चाहिए इससे निश्चय ही रोजगार के अधिक अवसर उत्पन्न होंगे, (iv) प्रत्येक क्षेत्र में निर्माण को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। सड़क, पुल, सम्पर्क मार्ग, विद्यालय भवन, आवासीय बस्तियों के निर्माण, व्यावसायिक भवनों के निर्माण एवं अस्पताल निर्माण आदि पर निवेश किया जाना चाहिए, (v) तृतीयक क्षेत्रक का पर्याप्त मात्रा में विकास किया जाना चाहिए। बैंक, बीमा, डाकघर, परिवहन, संचार, स्वास्थ्य, चिकित्सा, शैक्षणिक सेवाएँ एवं सार्वजनिक पार्क, बाजार व मनोरंजन केन्द्र आदि की पर्याप्त मात्रा में स्थापना की जानी चाहिए।

प्रश्न 24. निम्नलिखित तालिका में तीन क्षेत्रकों का सकल घरेलू उत्पाद (स. घ. उ.) रुपए (करोड़) में दिया गया है—

वर्ष	प्राथमिक	द्वितीयक	तृतीयक
2000	52,000	48,500	1,33,500
2013	8,00,500	10,74,000	38,68,000

(क) वर्ष 2000 एवं 2013 के लिए स. घ. उ. में तीनों क्षेत्रकों की हिस्सेदारी की गणना कीजिए।

(ख) इन आँकड़ों को अध्याय में दिए आलेख-2 के समान एक दण्ड-आलेख के रूप में प्रदर्शित कीजिए।

(ग) दण्ड-आलेख से हम क्या निष्कर्ष प्राप्त करते हैं ?

उत्तर—(क) अग्र तालिका वर्ष 2000 एवं 2013 के लिए स. घ. उ. में तीनों की हिस्सेदारी को दर्शाती है—

वर्ष	जी. डी. पी. में प्राथमिक क्षेत्रक की हिस्सेदारी (प्रतिशत में)	जी. डी. पी में द्वितीयक क्षेत्रक की हिस्सेदारी (प्रतिशत में)	जी. डी. पी. में तृतीयक क्षेत्रक की हिस्सेदारी (प्रतिशत में)
2000	22·22	20·73	57·05
2013	13·94	18·70	67·36

(i) वर्ष 2000 में क्षेत्रकों की स. घ. उ. में हिस्सेदारी

तीनों क्षेत्रकों की स. घ. उ. में कुल हिस्सेदारी

= (52,000 + 48,500 + 1,33,500)

= रु. 2,34,000 करोड़

प्राथमिक क्षेत्रक की हिस्सेदारी $= \frac{52,000}{2,34,000} \times 100$

$= 22.22\%$

द्वितीयक क्षेत्रक की हिस्सेदारी $= \frac{48,500}{2,34,000} \times 100 = 20.73\%$

तृतीयक क्षेत्रक की हिस्सेदारी $= \frac{1,33,500}{2,34,000} \times 100$

$= 57.05\%$

(ii) वर्ष 2013 में क्षेत्रकों की स. घ. उ. में हिस्सेदारी

तीनों क्षेत्रकों की स. घ. उ. में कुल हिस्सेदारी

$= (8,00,500 + 10,74,000 + 38,68,000)$

= रु. 57,42,500 करोड़

प्राथमिक क्षेत्रक की हिस्सेदारी $= \frac{8,00,500}{57,42,500} \times 100$

$= 13.94\%$

द्वितीयक क्षेत्रक की हिस्सेदारी $= \frac{10,74,900}{57,42,500} \times 100$

$= 18.70\%$

तृतीयक क्षेत्रक की हिस्सेदारी $= \frac{38,68,000}{57,42,500} \times 100$

$= 67.36\%$

(ख) दण्ड आरेख द्वारा प्रदर्शन

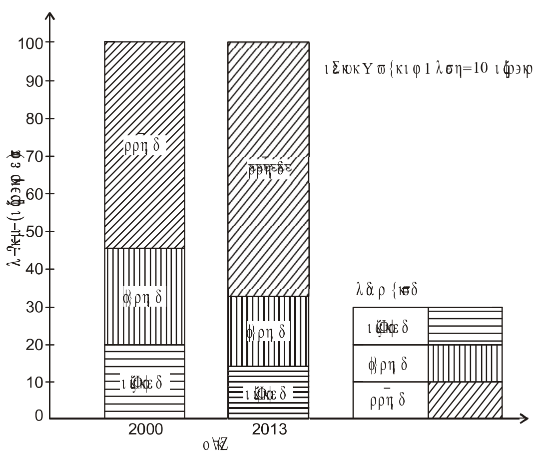

(ग) दण्ड आरेख से हम निम्नलिखित निष्कर्ष निकाल सकते हैं—

(i) सन् 2000 में स. घ. उ. में तृतीयक क्षेत्रक का योगदान सबसे अधिक था, प्राथमिक क्षेत्रक का दूसरा स्थान था जबकि द्वितीयक क्षेत्रक का योगदान सबसे कम था।

(ii) सन् 2013 में स्थितियों में परिवर्तन हुआ। इस वर्ष स. घ. उ. में तृतीयक क्षेत्रक का योगदान सर्वाधिक था, द्वितीय स्थान द्वितीयक क्षेत्रक का था जबकि प्राथमिक क्षेत्रक का योगदान सबसे कम था। इस प्रकार कहा जा सकता है कि स. घ. उ. में प्राथमिक क्षेत्रक की हिस्सेदारी बहुत कम व द्वितीयक क्षेत्रक की कम हुई है जबकि इसमें तृतीयक क्षेत्रक की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. आर्थिक गतिविधि से क्या तात्पर्य है? इसके प्रमुख क्षेत्रकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—आर्थिक गतिविधि से तात्पर्य उन सभी मानवीय क्रियाओं से है जो आय या धन कमाने के उद्देश्य से की जाती हैं, जिनमें वस्तुओं (जैसे—कार, कपड़े) और सेवाओं (जैसे—शिक्षा, बैंकिंग) का उत्पादन, वितरण और उपभोग शामिल होता है, जिसका मुख्य लक्ष्य व्यक्तिगत जरूरतों का पूरा करना और आर्थिक लाभ कमाना है। इन गतिविधियों में श्रम, पूँजी और संसाधनों का उपयोग होता है और इन्हें प्राथमिक (कृषि), द्वितीयक (विनिर्माण), तृतीयक (सेवाएँ) जैसे क्षेत्रों में बाँटा जाता है।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक—अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्रक निम्नलिखित हैं—

(i) प्राथमिक क्षेत्रक—जब हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करते हैं तो इसे प्राथमिक क्षेत्रक की गतिविधियाँ कहा जाता है। प्राथमिक क्षेत्रक को कृषि एवं सहायक क्षेत्रक भी कहा जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में रोजगार की दृष्टि से प्राथमिक क्षेत्रक की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। उदाहरण—गेहूँ की खेती, मछली पालन, वनोपज इकट्ठा करना, खानों से खनिजों का उत्खनन, लकड़ी काटना, पशुपालन आदि।

(ii) द्वितीयक क्षेत्रक—इस क्षेत्रक के अन्तर्गत वे क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं जिनमें प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण प्रक्रिया के माध्यम से अन्य रूपों में परिवर्तित किया जाता है। इस क्षेत्रक में वस्तुएँ सीधे प्रकृति से उत्पादित नहीं होती हैं बल्कि निर्मित की जाती हैं इसलिए विनिर्माण की प्रक्रिया अपरिहार्य है। यह प्रक्रिया किसी कारखाने अथवा घर में संचालित की जा सकती है। इस क्षेत्रक को औद्योगिक क्षेत्रक भी कहा जाता है। उदाहरण—फर्नीचर उद्योग, कागज निर्माण उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, लोहा व इस्पात उद्योग, इंजीनियरिंग उद्योग आदि।

(iii) तृतीयक क्षेत्रक—प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रक के अतिरिक्त अन्य समस्त गतिविधियों को तृतीयक क्षेत्रक में सम्मिलित किया जाता है। इसके अन्तर्गत वे क्रियाएँ आती हैं जो प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रकों के विकास में मदद करती हैं। ये गतिविधियाँ स्वत: वस्तुओं का उत्पादन नहीं करती हैं बल्कि उत्पादन प्रक्रिया में सहयोग करती हैं। इस क्षेत्रक में विभिन्न गतिविधियाँ वस्तुओं की बजाय सेवाओं का सृजन करती हैं। इसलिए इस क्षेत्रक को सेवा क्षेत्रक भी कहा जाता है। उदाहरण—अध्यापक, डॉक्टर, वकील, रेलवे, दूरसंचार, दुकानदार, व्यापार, शिक्षा व स्वास्थ्य आदि।

प्रश्न 2. भारत में तृतीयक क्षेत्रक के बढ़ते महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—यद्यपि 1973-74 और 2013-14 के 40 वर्षों में सभी क्षेत्रकों में उत्पादन में वृद्धि हुई है परन्तु सबसे अधिक वृद्धि तृतीयक क्षेत्रक के उत्पादन में हुई है। परिणामस्वरूप, भारत में प्राथमिक क्षेत्रक को प्रतिस्थापित करते हुए तृतीयक क्षेत्रक सबसे बड़े उत्पादक क्षेत्रक के रूप में उभरा है। भारत में तृतीयक क्षेत्रक के अधिक महत्त्वपूर्ण होने के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(i) बुनियादी सेवाएँ—किसी भी देश में आर्थिक विकास को गति प्रदान करने के लिए कुछ आधारभूत सेवाओं की आवश्यकता होती है। इन सेवाओं में अस्पताल, शैक्षिक संस्थाएँ, डाक व तार सेवा, थाना, न्यायालय, ग्रामीण प्रशासनिक कार्यालय, नगर निगम, रक्षा, परिवहन, बैंक, बीमा आदि प्रमुख हैं। किसी विकासशील देश में इन सेवाओं के प्रबंधन की जिम्मेदारी सरकार की होती है।

(ii) परिवहन व संचार के साधनों का विकास—कृषि एवं उद्योगों के विकास के कारण परिवहन, संचार, भण्डारण, व्यापार आदि सेवाओं का विस्तार होता है। प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रक का विकास जितना अधिक होगा, ऐसी सेवाओं की माँग उतनी ही अधिक होगी।

(iii) नई सेवाएँ—गत कुछ वर्षों से आधुनिकीकरण एवं वैश्वीकरण के कारण सूचना एवं प्रौद्योगिकी पर आधारित कुछ नवीन सेवाएँ महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक होती जा रही हैं; जैसे—ए. टी. एम. बूथ, काल सेंटर, इंटरनेट कैफे, सॉफ्टवेयर कम्पनी आदि। इन सेवाओं के उत्पादन में तीव्र वृद्धि हो रही है।

(iv) अधिक आय अधिक सेवाएँ—हमारे देश में प्रतिव्यक्ति आय बढ़ रही है, जैसे-जैसे आय बढ़ती है तो कुछ लोग अन्य सेवाओं; जैसे—रेस्तरां, शॉपिंग, पर्यटन, निजी अस्पताल, निजी विद्यालय, व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि की माँग प्रारम्भ कर देते हैं। शहरों में इन सेवाओं की माँग बहुत तेजी से बढ़ रही है।

प्रश्न 3. रोजगार के अवसरों में वृद्धि नहीं होने के पीछे प्रमुख कारण कौन से हैं?

उत्तर—रोजगार में वृद्धि न होने के पीछे जनसंख्या वृद्धि, शिक्षा प्रणाली की खामियाँ, तकनीकी बदलाव, आर्थिक नीतियाँ और रोजगार सृजन में धीमी गति जैसे कई प्रमुख कारण हैं, जहाँ आबादी तेजी से बढ़ती है, वहीं नौकरियाँ उतने तेजी से नहीं बढ़तीं और पुरानी शिक्षा प्रणाली नई जरूरतों के हिसाब से कुशल श्रमिक तैयार नहीं कर पाती, जिससे माँग और आपूर्ति के बीच बड़ा अंतर पैदा होता है।

प्रमुख कारण—

1. जनसंख्या वृद्धि—तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण श्रम बल में हर साल लाखों लोग जुड़ते हैं, लेकिन नौकरियों का सृजन उस अनुपात में नहीं हो पाता, जिससे नौकरी के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है।

2. शिक्षा और कौशल में अंतर—मौजूदा शिक्षा प्रणाली अक्सर उद्योगों की जरूरतों के हिसाब से कौशल नहीं सिखा पाती। इसके परिणाम स्वरूप, बहुत से शिक्षित युवा भी नौकरी पाने लायक नहीं होते और कंपनियाँ कुशल श्रमिकों की कमी महसूस करती हैं।

3. तकनीकी प्रगति और स्वचालन—मशीनों और ऑटोमेशन के कारण कई पारंपरिक नौकरियाँ खत्म हो रही हैं या उनमें इंसानों की जरूरत कम हो गई है जिससे संरचनात्मक बेरोजगारी बढ़ती है।

4. आर्थिक नीतियाँ—कई बार आर्थिक नीतियाँ सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करती हैं, न कि रोजगार सृजन पर। कमजोर श्रम प्रधान क्षेत्रों के कारण भी रोजगार के अवसर सीमित हो जाते हैं।

5. औपचारिक रोजगार की कमी—अर्थव्यवस्था में अनौपचारिक क्षेत्र का बड़ा हिस्सा है, जहाँ रोजगार सुरक्षित और नियमित नहीं होता। औपचारिक क्षेत्र में रोजगार वृद्धि की गति धीमी है।

6. कठोर कानून—कुछ क्षेत्रों में कठोर श्रम कानून कंपनियों के लिए नई भर्तियाँ करना मुश्किल बनाते हैं, जिससे रोजगार के अवसर कम हो जाते हैं।

7- आर्थिक उतार-चढ़ाव—मंदी या आर्थिक मंदी के दौरान कंपनिया मुनाफा घटने के कारण नई भर्तियाँ रोक देती हैं या छँटनी करती हैं।

संक्षेप में, यह समस्या सिर्फ भारत की नहीं, बल्कि कई देशों में है और इसके समाधान के लिए शिक्षा, कौशल नीतियों में बड़े बदलाव की जरूरत है ताकि रोजगार सृजन तेज हो सके।

प्रश्न 4. रोजगार के अवसरों में वृद्धि किस प्रकार की जा सकती है? समझाइए।

उत्तर—भारत में रोजगार के अवसरों में वृद्धि मुख्य रूप से कृषि उद्योगों को बढ़ावा देने, ग्रामीण बुनियादी ढाँचे (सड़क, बिजली, पानी) में सुधार, शिक्षा को कौशल आधारित बनाने और प्राथमिक क्षेत्र में छिपी बेरोजगारी को दूर करके की जा सकती है। तकनीकी शिक्षा और छोटे उद्योगों को आसान ऋण प्रदान करना भी इसमें सहायक है।

रोजगार के अवसर बढ़ाने के उपाय— 1. कृषि और ग्रामीण विकास—ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी हुई बेरोजगारी को कम करने के लिए कृषि-आधारित उद्योगों; जैसे—कोल्ड स्टोरेज, दाल मिल और खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को प्रोत्साहित करना चाहिए। **2. शिक्षा और कौशल विकास**—केवल किताबी ज्ञान के बजाय, शिक्षा को व्यावसायिक और तकनीकी कौशल से जोड़ना चाहिए ताकि युवाओं को रोजगार के योग्य बनाया जा सके (जैसे— आई टी आई, कौशल केन्द्र)। **3. छोटे उद्योगों को बढ़ावा**— स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए बैंकों से आसान ऋण और कम ब्याज दर पर पूँजी उपलब्ध करानी चाहिए। **4. बुनियादी ढाँचे में निवेश**— सड़क, रेल और परिवहन के साधनों के विकास से न केवल विकास होता है, बल्कि निर्माण क्षेत्र में भी कई रोगजार पैदा होते हैं। **5. सेवा क्षेत्र का विस्तार**—पर्यटन, आई टी, स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं में विकास से शहर और गाँव दोनों जगह रोजगार के नए अवसर बन सकते हैं।

ये उपाय प्राथमिक क्षेत्र (कृषि) पर निर्भरता कम कर, द्वितीयक (उद्योग) और तृतीयक (सेवा) क्षेत्रों में रोजगार बढ़ाकर अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हैं।

प्रश्न 5. संगठित व असंगठित क्षेत्रकों की तुलना कीजिए।

उत्तर—**(i) संगठित क्षेत्रक**—संगठित क्षेत्रक में वे उद्यम अथवा कार्य-स्थान आते हैं, जहाँ रोजगार की अवधि नियमित होती है और इसलिए लोगों के पास सुनिश्चित काम होता है।

ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं एवं उन्हें राजकीय नियमों व विनियमों का अनुपालन करना होता है।

इन नियमों व विनियमों का अनेक विधियों; जैसे—कारखाना अधिनियम की निश्चित न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, सेवानुदान अधिनियम, दुकान एवं प्रतिष्ठान अधिनियम आदि में उल्लेख किया गया है। यह क्षेत्रक संगठित क्षेत्रक इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इसकी कुछ औपचारिक प्रक्रिया एवं क्रियाविधि होती है। इस क्षेत्रक के अन्तर्गत रोजगार सुरक्षित, काम के घण्टे निश्चित एवं अतिरिक्त कार्य के लिए अतिरिक्त वेतन मिलता है। कर्मचारियों को कार्य के दौरान एवं सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी अनेक सुविधाएँ मिलती हैं।

(ii) असंगठित क्षेत्रक—असंगठित क्षेत्रक के अन्तर्गत वे छोटी-छोटी और बिखरी इकाइयाँ सम्मिलित होती हैं जो अधिकांशत: सरकारी नियन्त्रण से बाहर होती हैं। यद्यपि इस क्षेत्रक के नियम और विनियम तो होते हैं परन्तु उनका पालन नहीं होता है। ये अनियमित एवं कम वेतन वाले रोजगार होते हैं। इनमें सवेतन छुट्टी, अवकाश, बीमारी के कारण छुट्टी आदि का कोई प्रावधान नहीं होता है और न ही रोजगार की सुरक्षा। श्रमिकों को बिना किसी कारण काम से हटाया जा सकता है।

प्रश्न 6. असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों के शोषण व उनके संरक्षण के उपाय बताइए।

उत्तर—**असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों का शोषण**—असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों का निम्न प्रकार से शोषण किया जाता है—

(i) इस क्षेत्रक में श्रमिकों के संरक्षण के लिए बनाये गये सरकारी नियमों एवं विनियमों का पालन नहीं होता है।

(ii) असंगठित क्षेत्रक में बहुत कम वेतन/मजदूरी दी जाती है और वह भी नियमित रूप से नहीं दी जाती है।

(iii) इस क्षेत्रक में मजदूर सामान्यत: अशिक्षित, अनभिज्ञ व असंगठित होते हैं, इसलिए वे नियोक्ता से मोल-भाव कर अच्छी मजदूरी सुनिश्चित करने की स्थिति में नहीं होते हैं।

(iv) इस क्षेत्रक में अतिरिक्त समय में काम तो लिया जाता है परन्तु अतिरिक्त वेतन नहीं दिया जाता है।

(v) इस क्षेत्रक में सवेतन छुट्टी, अवकाश, बीमारी के कारण छुट्टी का कोई प्रावधान नहीं है।

(vi) इस क्षेत्रक में रोजगार सुरक्षा भी नहीं होती है। नियोक्ता द्वारा कर्मचारियों को बिना किसी कारण काम से हटाया जा सकता है।

(vii) इस क्षेत्रक के अन्तर्गत कुछ मौसमों में जब काम नहीं होता है, तो कुछ लोगों को काम से छुट्टी दे दी जाती है। बहुत से लोग नियोक्ता की पसन्द पर निर्भर होते हैं।

असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों के संरक्षण हेतु किये जा सकने वाले उपाय—असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों के संरक्षण हेतु निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं—

(i) ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाओं का विस्तार—भारत में लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण परिवार छोटे व सीमांत किसानों की श्रेणी में हैं जो असंगठित क्षेत्रक के अन्तर्गत आता है। इन किसानों को उन्नत बीजों की समय पर आपूर्ति, कृषि उपकरणों, साख, भण्डारण सुविधा और विपणन की सुविधाओं के माध्यम से सहायता पहुँचाने की आवश्यकता है।

(ii) लघु एवं कुटीर उद्योगों का संरक्षण—सरकार को चाहिए कि वह लघु व कुटीर उद्योगों को कच्चा माल प्राप्त करने एवं उत्पादों के विपणन में सहायता प्रदान करे ताकि वे अधिक आय अर्जित कर अपने श्रमिकों को भी अधिक वेतन एवं सुविधाएँ प्रदान कर सकें।

(iii) न्यूनतम मजदूरी का निर्धारण—सरकार असंगठित क्षेत्रक के लिए न्यूनतम मजदूरी का निर्धारण कर उसे कड़ाई से लागू करे तथा वर्तमान नियमों व कानूनों को कड़ाई से लागू करे।

(iv) सामाजिक सुविधाओं का विस्तार—असंगठित क्षेत्रक में कार्यरत श्रमिकों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के लिए सरकार को सार्वजनिक सुविधाओं का तीव्र गति से विस्तार करना चाहिए।

प्रश्न 7. सार्वजनिक व निजी क्षेत्रकों की तुलना कीजिए।

उत्तर—**सार्वजनिक क्षेत्रक**—सार्वजनिक क्षेत्रक के अन्तर्गत उत्पादन के साधनों पर सरकार का स्वामित्व, प्रबंधन व नियंत्रण होता है। सरकार ही समस्त सेवाएँ उपलब्ध कराती है। इस क्षेत्रक का मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक कल्याण में वृद्धि करना होता है।

निजी क्षेत्रक—निजी क्षेत्रक के अन्तर्गत उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है। इस क्षेत्रक की गतिविधि का उद्देश्य लाभ अर्जित करना होता है।

सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रक की गतिविधियों एवं कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन—सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रक की गतिविधियों एवं कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन निम्न प्रकार से है—

सार्वजनिक क्षेत्रक	निजी क्षेत्रक
1. इस क्षेत्रक के अन्तर्गत अधिकांश परिसम्पत्तियों पर सरकार का स्वामित्व होता है और सरकार ही सभी आवश्यक सेवाएँ उपलब्ध करती है, जैसे—डाकघर, भारतीय रेलवे, आकाशवाणी, इण्डियन एयरलाइन्स आदि।	1. इस क्षेत्रक में परिसम्पत्तियों पर स्वामित्व एवं सेवाओं के वितरण की जिम्मेदारी एकल व्यक्ति या कम्पनी के हाथों में होती है, जैसे—मित्तल पब्लिकेशन्स, टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, रिलायंस इण्डस्ट्रीज लिमिटेड आदि।
2. सार्वजनिक क्षेत्रक का उद्देश्य सार्वजनिक कल्याण में वृद्धि करना होता है।	2. निजी क्षेत्रक की गतिविधियों का उद्देश्य लाभ अर्जित करना होता है।
3. इस क्षेत्रक में उत्पादन एवं वितरण सम्बन्धी समस्त निर्णय सरकार द्वारा निर्धारित नीति द्वारा लिये जाते हैं।	3. इस क्षेत्रक में उत्पादन एवं वितरण सम्बन्धी निर्णय निजी स्वामियों अथवा प्रबन्धकों द्वारा लिए जाते हैं।
4. सरकार समाज के लिए आवश्यक सार्वजनिक परियोजनाओं में बहुत अधिक राशि का व्यय करती है, जैसे—सड़क, पुल, नहर, बन्दरगाह आदि का निर्माण करना।	4. निजी क्षेत्रक अपने लाभ के उद्देश्य के कारण बहुत अधिक राशि व्यय करने वाली परियोजनाओं में निवेश नहीं करता है।
5. कई प्रकार की गतिवधियों को पूरा करना सरकार का प्राथमिक दायित्व होता है; जैसे—शिक्षा, स्वास्थ्य, विद्युत आदि। इसलिए सरकार बड़ी संख्या में विद्यालय, महाविद्यालय, अस्पताल, विद्युत परियोजनाएँ आदि चलाती है।	5. निजी क्षेत्रक का ऐसा किसी प्रकार का कोई दायित्व नहीं होता है यदि वह ऐसी सेवाएँ प्रदान करता है तो इसके लिए वह राशि वसूलता है। उदाहरण के लिए, हमारे क्षेत्र में निजी पब्लिक स्कूल, सरकारी स्कूल की तुलना में बहुत अधिक फीस लेते हैं। ❑❑

3 मुद्रा और साख

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. जोखिम वाली परिस्थितियों में ऋण कर्जदार के लिए और समस्याएँ खड़ी कर सकता है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—अधिक जोखिम वाली परिस्थितियों में ऋण कर्ज़दार की समस्याओं को हल करने के स्थान पर उन्हें और अधिक बढ़ा देता है। इस तथ्य को निम्नलिखित उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) यदि व्यक्ति ने साहूकार, महाजन अथवा किसी गाँव के ब्याजखोर व्यक्ति से ऋण लिया है, तो इसके लिए उसने ऋण लेने से पूर्व किसी वस्तु, भूमि, भवन, पशु, आभूषण आदि को ऋणाधार के रूप में ऋणदाता के पास अवश्य रखा होगा, जिसकी कीमत ऋण में दी गयी राशि व ब्याज़ से कहीं अधिक होती है। यह गिरवी रखी गयी सम्पत्ति एक निश्चित समय की गारण्टी होती है, जब तक कि ऋणी व्यक्ति ऋण अदा नहीं कर देता। निर्धारित समय-सीमा समाप्त होने के बाद ऋणदाता बंधक सम्पत्ति को बेचने का अधिकार रखता है। जिससे कि एक ओर तो ऋणी को आर्थिक क्षति होती है, वहीं दूसरी ओर उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा भी गिरती है।

(ii) कभी-कभी ऋणी को ऋण अदा करने के लिए अपनी फसल को भी कम कीमतों पर बेचकर भारी हानि उठानी पड़ती है।

(iii) ऋण अदा न कर पाने पर यदि ऋणदाता न्यायालय चला जाता है तो मुकदमों आदि पर कर्ज़दार को भारी व्यय करना पड़ता है।

(iv) यदि ऋणी को कर्ज़ अदा करने के लिए बार-बार ऋण लेना पड़े तो वह स्वत: ही ऋण-जाल में फँसता चला जाता है, जिससे जीवन भर बाहर निकलना उसके लिए मुश्किल हो जाता है।

प्रश्न 2. मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को किस प्रकार सुलझाती है? अपनी ओर से उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर—वस्तु विनिमय प्रणाली में जहाँ मुद्रा का उपयोग किये बिना वस्तुओं का सीधे ही विनिमय अर्थात् आदान-प्रदान किया जाता है वहाँ आवश्यकताओं का दोहरा संयोग होना एक आवश्यक विशेषता होती है। इसके विपरीत ऐसी

अर्थव्यवस्था जहाँ मुद्रा का उपयोग होता है, वहाँ मुद्रा विनिमय प्रक्रिया में एक मध्यस्थ की भूमिका में कार्य करती है तथा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को समाप्त कर देती है।

उदाहरण—सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि दोहरे संयोग की समस्या क्या है। माना एक किसान सरसों के बदले गुड़ लेना चाहता है, सबसे पहले सरसों विक्रेता किसान को ऐसे दुकानदार को ढूँढ़ना होगा जो न केवल गुड़ बेचना चाहता है बल्कि वह उसके बदले सरसों भी खरीदना चाहता हो अर्थात् दोनों पक्ष एक-दूसरे से वस्तुएँ खरीदने-बेचने पर सहमति रखते हों। इसे ही आवश्यकताओं का दोहरा संयोग कहा जाता है अर्थात् एक व्यक्ति जो वस्तु बेचने की इच्छा रखता है, वही वस्तु दूसरा व्यक्ति खरीदने की इच्छा रखता हो। वस्तु विनिमय प्रणाली के अन्तर्गत जहाँ मुद्रा का उपयोग किए बिना वस्तुओं का विनिमय होता है वहाँ आवश्यकताओं का दोहरा संयोग होना अनिवार्य विशिष्टता है परन्तु साथ ही दोहरे संयोगों का मिलना एक महत्त्वपूर्ण समस्या भी है। मुद्रा द्वारा इस समस्या का समाधान हो जाता है। मुद्रा महत्त्वपूर्ण मध्यवर्ती भूमिका का निर्वाह करके आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को समाप्त कर देती है। अत: अब सरसों विक्रेता किसान के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह ऐसे गुड़ विक्रेता दुकानदार को तलाश करे जो न केवल उसकी सरसों खरीदे अपितु साथ-साथ वह उसको गुड़ भी बेचे।

अब किसान किसी भी क्रेता को मुद्रा के बदले सरसों बेच सकता है और सरसों के बेचने से प्राप्त मुद्रा से बाजार से अपनी जरूरत के अनुसार कोई भी वस्तु या सेवा खरीद सकता है।

प्रश्न 3. अतिरिक्त मुद्रा वाले और जरूरतमंद लोगों के बीच बैंक किस तरह मध्यस्थता करते हैं ?

उत्तर—अतिरिक्त मुद्रा वाले और जरूरतमंद लोगों के बीच बैंक निम्न प्रकार से मध्यस्थता करते हैं—

(i) बैंक अतिरिक्त मुद्रा वाले लोगों से मुद्रा प्राप्त करके उनका खाता खोलता है तथा जमाओं पर ब्याज भी प्रदान करता है। लोगों को आवश्यकतानुसार इसमें से धन निकालने की सुविधा भी उपलब्ध होती है।

(ii) बैंक इस जमाराशि को अन्य जरूरतमंद लोगों के लिए ऋण देने में प्रयोग करते हैं। बैंक नकद के रूप में लोगों की जमाओं का एक छोटा हिस्सा ही अपने पास रखते हैं। इसे किसी एक दिन में जमाकर्ताओं द्वारा नकद निकालने की सम्भावना को देखते हुए रखा जाता है। बैंक जमाराशि के अधिकांश भाग का जरूरतमंद लोगों को ऋण देने में प्रयोग करते हैं। इस प्रकार बैंक अतिरिक्त मुद्रा वाले लोग एवं जरूरतमंद लोगों के बीच मध्यस्थता करते हैं।

प्रश्न 4. 10 रुपये के नोट को देखिए। इसके ऊपर क्या लिखा है? क्या आप इस कथन की व्याख्या कर सकते हैं?

उत्तर—यदि हम 10 रुपये के नोट को देखें तो उसके ऊपर यह स्पष्ट लिखा होता है—

भारतीय रिजर्व बैंक

केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रत्याभूत

मैं धारक को 10 रुपये अदा करने का वचन देता हूँ।

इस कथन का तात्पर्य यह है कि भारतीय रिजर्व बैंक को भारत में केन्द्रीय सरकार की ओर से करेंसी नोट जारी करने का अधिकार है। इस पर भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर होते हैं। करेंसी केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रत्याभूत है अर्थात् भारतीय कानून भुगतान के माध्यम के रूप में 10 रुपये के प्रयोग को वैध बनाता है जिसे भारत में लेन-देन के व्यवस्थापनों में इन्कार नहीं किया जा सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक 10 रुपये के नोट के धारक को प्रत्येक परिस्थिति में 10 रुपये देने का वायदा करता है। इससे लोगों में विश्वसनीयता पैदा होती है।

प्रश्न 5. हमें भारत में ऋण के औपचारिक स्रोतों को बढ़ाने की क्यों जरूरत है ?

उत्तर—ऋण के औपचारिक स्रोतों के अन्तर्गत बैंकों व सहकारी समितियों से लिए गए ऋण आते हैं। हमें भारत में ऋण के औपचारिक स्रोतों को निम्नलिखित कारणों से बढ़ाने की जरूरत है—

(i) ऋणदाताओं की तुलना में अधिकांश अनौपचारिक ऋणदाता; जैसे—साहूकार, व्यापारी आदि ऋणों पर अधिक ऊँची ब्याज माँगते हैं। (ii) अनौपचारिक ऋणदाता अपना ऋण वसूलने करने के लिए प्रत्येक अनुचित साधन अपना सकते हैं। इन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता है। (iii) अनौपचारिक क्षेत्र में ऋणदाताओं की गतिविधियों की देखरेख करने वाली कोई संस्था नहीं है जबकि औपचारिक क्षेत्र में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा ऋणों के औपचारिक स्रोतों की कार्यप्रणाली पर नजर रखी जाती है। (iv) वे लोग जो ऋण लेकर अपना कोई उद्यम शुरू करना चाहते हैं, वे अनौपचारिक स्रोतों से ऋण लेने की अधिक लागत के कारण ऐसा नहीं कर पाते हैं। (v) ऋण के औपचारिक स्रोतों से लोग साहूकार, व्यापारी, भूस्वामी आदि से बच सकते हैं जो लोगों को सदैव अपने चंगुल में फँसाने का अवसर ढूँढ़ते रहते हैं। (vi) इन सब कारणों को देखते हुए भारत में ऋण के औपचारिक स्रोतों को बढ़ाने की जरूरत है।

प्रश्न 6. गरीबों के लिए स्वयं सहायता समूहों के संगठनों के पीछे मूल विचार क्या हैं ? अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।

उत्तर—गरीबों के लिए स्वयं सहायता समूहों के संगठन के पीछे मूल विचार यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों के गरीबों विशेषकर महिलाओं को छोटे-छोटे स्वयं सहायता समूहों में संगठित करना और उनकी बचत पूँजी को एकत्रित करना है।

स्वयं सहायता समूह के अन्तर्गत 15-20 लोग एक समूह बना लेते हैं। वे नियमित रूप से मिलते हैं एवं अपनी बचतों को इकट्ठा करते हैं। यह बचत धीरे-धीरे बढ़ती चली जाती हैं। ये समूह अपने सदस्यों को ऋण देकर उनकी जरूरतों को पूरा करते हैं। इस ऋण की जरूरत से लोग अपना छोटा-मोटा रोजगार प्रारम्भ कर सकते हैं। बचत व ऋण गतिविधियों सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण निर्णय समूह के सदस्यों द्वारा स्वयं लिये जाते हैं। समूह दिए जाने वाले ऋण, उसका लक्ष्य, उसकी रकम ब्याज दर एवं वापस लौटाने की अवधि आदि के बारे में निर्णय करता है। ऋणाधार के बिना बैंक भी स्वयं सहायता समूहों को ऋण देने को तैयार हो जाते हैं।

इस पर स्वयं सहायता समूह अपने सदस्यों को उचित ब्याज दर पर ऋण प्रदान करके उन्हें स्वावलम्बी बनाने में योगदान देते हैं। इसके अतिरिक्त समूह की बैठकों के माध्यम से वह विभिन्न प्रकार के सामाजिक विषयों; जैसे—स्वास्थ्य, पोषण, घरेलू हिंसा आदि विषयों पर चर्चा कर पाते हैं।

प्रश्न 7. क्या कारण है कि बैंक कुछ कर्जदारों को कर्ज देने के लिए तैयार नहीं होते ?

उत्तर—निम्नलिखित कारणों से बैंक कुछ कर्जदारों को कर्ज देने के लिए तैयार नहीं होते हैं—

(i) बैंक उन लोगों को ऋण देना नहीं चाहते हैं जिनके पास समर्थक ऋणाधार नहीं होते हैं।

(ii) कुछ लोग अपनी नौकरी के विषय में बैंकों को ब्यौरा उपलब्ध नहीं कराते हैं।

(iii) कुछ लोग बैंकों को अपना वेतन सम्बन्धी अभिलेख उपलब्ध नहीं कराते हैं।

(iv) जिन कर्जदारों ने अपने पुराने कर्ज का भुगतान नहीं किया है, बैंक उन्हें पुन: कर्ज देने के लिए तैयार नहीं होते हैं।

प्रश्न 8. भारतीय रिजर्व बैंक अन्य बैंकों की गतिविधियों पर किस तरह नजर रखता है ? यह जरूरी क्यों है ?

उत्तर—भारतीय रिजर्व बैंक अन्य बैंकों की गतिविधियों पर निम्नलिखित प्रकार से नजर रखता है—

(i) भारतीय रिजर्व बैंक इस बात का ध्यान रखता है कि बैंक अपनी जमाओं का एक न्यूनतम नकद हिस्सा अपने पास रख रहे हैं या नहीं। (ii) भारतीय रिजर्व बैंक यह भी नजर रखता है कि बैंक न केवल लाभ कमाने वाले व्यवसायियों एवं व्यापारियों को ही ऋण उपलब्ध नहीं करा रहे बल्कि छोटे किसानों, छोटे उद्योगों, छोटे कर्जदारों आदि को भी ऋण प्रदान कर रहे हैं। (iii) समय-समय पर, बैंकों द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक को यह जानकारी देनी पड़ती है कि वे कितना व किनको ऋण दे रहे हैं और उनकी ब्याज की दरें क्या हैं।

प्रश्न 9. विकास में ऋण की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर—किसी भी देश के विकास में ऋण की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। व्यक्ति और राष्ट्र दोनों को विभिन्न आर्थिक क्रियाओं के लिए ऋणों की आवश्यकता होती है। ऋण उद्योगों के स्वामियों को उत्पादन के कार्यशील खर्चों एवं समय पर उत्पादन पूरा करने में सहायता प्रदान करता है। इससे उनकी आय में वृद्धि होती है। अनेक लोग विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं; जैसे—कृषि, व्यवसाय, लघु उद्योगों की स्थापना अथवा वस्तुओं का व्यापार आदि करने के लिए ऋण लेते हैं। इस प्रकार सस्ता और सामर्थ्य के अनुकूल ऋण किसी भी देश के विकास में अति लाभदायक सिद्ध होता है।

प्रश्न 10. मानव को एक छोटा व्यवसाय करने के लिए ऋण की जरूरत है। मानव किस आधार पर यह निश्चित करेगा कि उसे यह ऋण बैंक से लेना चाहिए या साहूकार से? चर्चा कीजिए।

उत्तर—मानव निम्नलिखित आधार पर निश्चित करेगा कि उसे ऋण बैंक से लेना चाहिए या साहूकार से—

(i) ब्याज की दर—मानव यह देखेगा कि बैंक अथवा साहूकार में से किसके ऋणों पर कितनी ब्याज दर है जिसकी ब्याज दर कम होगी, मानव उससे ही ऋण लेगा।

(ii) ऋण की शर्तें—मानव यह देखेगा कि बैंक या साहूकार में से किसकी ऋण की शर्तें सरल हैं अथवा कठोर, कागजी कार्यवाही अधिक तो नहीं है एवं ऋण की अदायगी की किश्तें आसान हैं या नहीं। प्राय: साहूकार की तुलना में बैंकों की ऋण की शर्तें सरल, कागजी कार्यवाही कम एवं ऋण अदायगी सरल है। इसके अतिरिक्त बैंकों की ब्याज दरें भी कम हैं। इन सब बातों को देखते हुए मानव अपना व्यवसाय करने के लिए साहूकार की अपेक्षा बैंक से ऋण लेना अधिक पसंद करेगा।

प्रश्न 11. भारत में 80 प्रतिशत छोटे किसान हैं, जिन्हें खेती करने के लिए ऋण की जरूरत होती है।

(क) बैंक छोटे किसानों को ऋण देने से क्यों हिचकिचा सकते हैं ?

(ख) वे दूसरे स्रोत कौन-से हैं, जिनसे छोटे किसान कर्ज ले सकते हैं ?

(ग) उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए कि किस तरह ऋण की शर्तें छोटे किसानों के प्रतिकूल हो सकती हैं।

(घ) सुझाव दीजिए कि किस तरह छोटे किसानों को सस्ता ऋण उपलब्ध कराया जा सकता है।

उत्तर—(क) बैंक छोटे किसानों को ऋण देने में इसलिए हिचकिचाते हैं क्योंकि उनके पास बैंक ऋण के लिए ऋणों के विरुद्ध गारंटी के रूप में समर्थक ऋणाधार और उचित कागजातों का अभाव होता है। इसके अतिरिक्त किसान फसल की अनिश्चितता के कारण ऋणों का समय पर भुगतान नहीं कर पाते हैं।

(ख) साहूकार, भू-स्वामी, व्यापारी, मित्र, रिश्तेदार, स्वयं सहायता समूह अथवा सहकारी समिति आदि से छोटे किसान कर्ज ले सकते हैं।

(ग) ऋण की शर्तें निम्न प्रकार से छोटे किसानों के लिए प्रतिकूल हो सकती हैं—

उदाहरणस्वरूप, यदि कोई व्यक्ति अनौपचारिक स्रोतों अर्थात् साहूकार आदि से अपनी जमीन गिरवी रखकर ऊँची ब्याज दर पर ऋण लेता है तथा फसल खराब हो जाने पर समय पर ऋण का भुगतान नहीं कर पाता है तो इस स्थिति में साहूकार उसकी जमीन को बेचकर ऋण की राशि का भुगतान प्राप्त कर सकता है अथवा किसान को ही अपनी जमीन का एक टुकड़ा बेचना पड़ सकता है। इस तरह किसान की स्थिति पहले से अधिक बदतर हो जाती है।

(घ) स्वयं सहायता समूह, सहकारी समितियों एवं बैंकों द्वारा छोटे किसानों को सस्ता ऋण उपलब्ध कराया जा सकता है। क्योंकि इनसे प्राप्त होने वाला ऋण अन्य स्रोतों की तुलना में कम ब्याज दर पर प्राप्त होता है जिसकी आसानी से एक लम्बे समय पश्चात् अदायगी की जा सकती है।

प्रश्न 12. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(क) ………… परिवारों की ऋण की अधिकांश जरूरतें अनौपचारिक स्रोतों से पूरी होती हैं।

(ख) ………… ऋण की लागत ऋण का बोझ बढ़ाती है।

(ग) ………… केन्द्रीय सरकार की ओर से करेंसी नोट जारी करता है।

(घ) बैंक ………… पर देने वाले ब्याज से ऋण पर अधिक ब्याज लेते हैं।

(ङ) ………… वह सम्पत्ति है जिसका मालिक कर्जदार होता है जिसे वह ऋण लेने के लिए गारण्टी के रूप में इस्तेमाल करता है, जब तक ऋण चुकता नहीं हो जाता।

उत्तर—(क) ग्रामीण (ख) ऊँची ब्याज दर (ग) भारतीय रिजर्व बैंक (घ) जमाओं (ङ) समर्थक ऋणाधार।

प्रश्न 13. सही उत्तर का चयन करें—

(क) स्वयं सहायता समूह में बचत और ऋण सम्बन्धित अधिकतर निर्णय लिए जाते हैं—

(i) बैंक द्वाराए, (ii) सदस्यों द्वारा (iii) गैर सरकारी संस्था द्वारा

उत्तर—(ii) सदस्यों द्वारा।

(ख) ऋण के औपचारिक स्रोतों में शामिल नहीं है—

(i) बैंक, (ii) सहकारी समिति, (iii) नियोक्ता

उत्तर—(iii) नियोक्ता।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. विनिमय क्या है? विनिमय के माध्यम के रूप में मुद्रा की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर—विनिमय वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान है, और मुद्रा इस प्रक्रिया को सरल बनाने का एक माध्यम है, जिसे सभी स्वीकार करते हैं; यह आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को खत्म करती है, जिससे खरीद और बिक्री अलग-अलग हो सकती है, व्यापार सुगम होता है और अर्थव्यवस्था में लेन-देन तेजी से होते हैं, जिससे आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ती हैं।

विनिमय के माध्यम के रूप में मुद्रा की भूमिका—

1. सामान्य स्वीकृति—मुद्रा एक ऐसा माध्यम है जिसे समाज में सभी लोग वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने या ऋण चुकाने के लिए स्वीकार करते हैं।

2. दोहरे संयोग की समस्या का अन्त—मुद्रा को आने से आपको अपनी जरूरत की वस्तु के बदले सीधे दूसरी वस्तु ढूँढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती। आप अपनी वस्तु बेचकर पैसे लेते हैं और फिर उस पैसे से अपनी पसंद की कोई भी वस्तु खरीद सकते हैं, जिससे खरीद और बिक्री अलग-अलग हो जाती है।

3. लेन-देन को आसान बनाना—यह लेन-देन को सरल, तेज और कुशल बनाता है, जिससे समय और मेहनत बचती है।

4. बाजार का विस्तार—मुद्रा ने बाजार के दायरे को बढ़ाया है, जिससे ऑनलाइन और दूरस्थ लेन-देन भी संभव हुए हैं।

5. आर्थिक विकास को बढ़ावा—व्यापार और वाणिज्य को बढ़ाया देकर, मुद्रा ने अर्थव्यवस्था के समग्रस्तर को ऊपर उठाया है और उत्पादन को बाजारोन्मुख बनाया है।

संक्षेप में, मुद्रा एक सर्वाभौमिक स्वीकार्य माध्यम है जो वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान को सुगम बनाता है, जिससे आधुनिक अर्थव्यवस्थाएँ सुचारू रूप से काम कर पाती हैं।

प्रश्न 2. वस्तु विनिमय प्रणाली व मौद्रिक प्रणाली की परस्पर तुलना कीजिए।

उत्तर—वस्तु विनिमय प्रणाली में वस्तु के बदले वस्तु का लेन-देन होता है, जो 'दोहरे संयोग की आवश्यकता' जैसे समस्याओं से जूझती है और असुविधाजनक है, जबकि मौद्रिक प्रणाली में मुद्रा (पैसे) का उपयोग होता है, जिससे लेन-देन सरल, तेज और व्यापक हो जाता है, क्योंकि मुद्रा मूल्य के माप, विनिमय के माध्यम और मूल्य के संचय का काम करती है, जिससे जटिल व्यापार भी आसान हो जाते हैं और यह आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं का आधार है।

वस्तु विनिमय प्रणाली	मौद्रिक प्रणाली
मूल सिद्धांत—एक वस्तु को दूसरी वस्तु या सेवा के बदले सीधे बदलना (जैसे-चावल के बदले गेहूँ) **प्रमुख समस्या**—आवश्यकताओं का दोहरा संयोग। आपको वह व्यक्ति ढूँढ़ना होता है जिसे आपके पास जो है, उसकी जरूरत हो, और जिसके पास वह हो जो आपको चाहिए। **कठिनाइयाँ**—(i) **असुविधाजनक**—लेन-देन के लिए सही साथी ढूँढ़ना मुश्किल। (ii) **मूल्य का निर्धारण कठिन**— वस्तुओं के सापेक्ष मूल्य को मापना मुश्किल (जैसे- एक पूरी गाय को आधा करना) (iii) **विभाज्यता की समस्या**—वस्तुओं को छोटे भागों में बाँटना मुश्किल (जैसे- एक पूरी गाय को आधा करना) (iv) **भंडारण की समस्या**— वस्तुओं को भविष्य के लिए सहेजना मुश्किल (जैसे-अनाज खराब हो सकता है।) (v) **सीमित अर्थव्यवस्था**—बड़े पैमाने पर व्यापार संभव नहीं हो सकता।	**मूल सिद्धांत**—विनिमय के माध्यम के रूप में मुद्रा (पैसे) का उपयोग करना, जिसे सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होती है। **प्रमुख लाभ**—(i) **विनिमय का माध्यम**—मुद्रा लेन-देन को आसान और तेज बनाती है, आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की जरूरत नहीं होती (ii) **मूल्य का मापक**—सभी वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य मुद्रा में व्यक्त किया जा सकता है, जिससे तुलना आसान हो जाती है। (iii) **मूल्य का संचय**—धन को भविष्य के लिए बचाया जा सकता है। (iv) **सुवाह्यता और विभाज्यता**—मुद्रा हल्की, ले जाने में आसान और छोटी इकाइयों में विभाजित हो सकती है। (v) **आधुनिक अर्थव्यवस्था का आधार**—जटिल व्यापार, बचत, ऋण और निवेश को संभव बनाती है।

संक्षेप में, वस्तु विनिमय प्रणाली आदिम और सरल है, जबकि मौद्रिक प्रणाली आधुनिक, कुशल और आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है, जो व्यापार को सरल, तेज और विश्वसनीय बनाती है।

प्रश्न 3. बैंक की भूमिका का जमा व ऋण गतिविधियों के संदर्भ में वर्णन करें।

उत्तर—बैंक की भूमिका जमा और ऋण गतिविधियों के संदर्भ में जमाकर्ताओं (पैसे बचाने वालों) और उधारकर्ताओं (पैसे की जरूरतवालों) के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करना है, जहाँ वे सुरक्षित रूप से जमा स्वीकार करते हैं और उस पैसे का उपयोग विभिन्न जरूरतों (घर, व्यवसाय, कृषि) के लिए ऋण देने में करते हैं, जिससे आय अर्जित करते हैं और अर्थव्यवस्था में धन के प्रवाह को बनाए रखते हैं।

जमा गतिविधियाँ—(i) **सुरक्षित मंच**—बैंक लोगों को अपनी बचत (बचत खाते, सावधि जमा) सुरक्षित रखने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करते हैं। (ii) **ब्याज**—जमाकर्ताओं को उनकी जमा राशि पर ब्याज मिलता है, जिससे बचत की आदत को बढ़ावा मिलता है। (iii) **सुविधा**—चेक, डेबिट कार्ड और ऑनलाइन बैंकिंग जैसी सुविधाएँ प्रदान करते हैं, जिससे धन का प्रबंधन आसान हो जाता है।

ऋण गतिविधियाँ—(i) **मध्यस्थता**—बैंक उन लोगों से जमा (पैसे) लेते हैं जिनके पास अतिरिक्त पैसा है और उन्हें उन लोगों को उधार देते हैं जिन्हें इसकी आवश्यकता होती है (जैसे—घर, कार, व्यवसाय के लिए)। (ii) **आय का स्रोत**— बैंक जमाकर्ताओं को दिए गए ब्याज से अधिक ब्याज उधारकर्ताओं से वसूलते हैं; इस अंतर से उनकी आय होती है। (iii) **आर्थिक विकास**—ऋण प्रदान करके, बैंक व्यवसायों को बढ़ने, उत्पादन करने और रोजगार पैदा करने में मदद करते हैं, जिससे आर्थिक विकास होता है।

संक्षेप में, बैंक पैसे को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने (जमा से ऋण तक) और वित्तीय प्रणाली को सुचारू रूप से चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रश्न 4. बैंकों की ऋण उत्पादन में सकारात्मक भूमिका का वर्णन करें।

उत्तर—हमारी दिन-प्रतिदिन की क्रियाओं में व्यापक लेन-देन किसी-न-किसी रूप में ऋण द्वारा ही होता है। ऋण किसानों को अपनी फसल उगाने में मदद करता है। यह उद्यमियों के लिए व्यावसायिक इकाइयों की स्थापना, समय पर उत्पादन को पूरा करने एवं उत्पादन के कार्यशील खर्चों को पूरा करने में सहायक होता है। इससे उनकी आय में वृद्धि होती है। ऋण देश के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान में बैंकों द्वारा ऋण के अन्य स्रोतों के मुकाबले सस्ती दर पर अपने ग्राहकों को ऋण प्रदान किया जाता है। बैंक जमा रकम का एक छोटा हिस्सा अपने पास नकद रूप में रखकर शेष जमा राशि के एक बड़े भाग को ऋण देने के लिए प्रयोग करते हैं। विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिए ऋण की बहुत अधिक माँग रहती है। बैंक जमा धनराशि का लोगों की ऋण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रयोग करते हैं। लोग बैंकों से सस्ती दर पर ऋण प्राप्त कर उत्पादन कार्यों में लगाते हैं तथा अधिक लाभ प्राप्त करते हैं। उदाहरण—सोहन का

जूते बनाने का कारखाना है। उसके पास शहर के एक बड़े व्यापारी से 5000 जोड़ी जूतों की माँग आती है जिसे एक महीने के अन्दर पूरा करना है। उत्पादन के कार्य को समय पर पूर्ण करने के लिए सोहन को सिलाई व चिपकाने के काम के लिए अतिरिक्त मजदूर रखने की आवश्यकता है तथा उसे कच्चा माल भी खरीदना है। अत: सोहन को इस कार्य के लिए अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है। वह बैंक की औपचारिकताओं को पूर्ण करके उससे ऋण ले लेता है। समय पर शहर के व्यापारी को जूते बनाकर दे देता है। इस प्रकार सोहन उत्पादन के लिए कार्यशील पूँजी की जरूरत को ऋण के द्वारा पूरा करता है। ऋण उसे उत्पादन के कार्यशील खर्चों तथा उत्पादन को समय पर पूरा करने में सहायता प्रदान करता है। इस प्रकार सोहन बैंक ऋण द्वारा अपनी कमाई बढ़ा लेता है। इस प्रकार बैंक ऋण उत्पादन में सकारात्मक भूमिका निभाते हैं।

प्रश्न 5. बैंक द्वारा ऋण प्रदान करने की शर्तों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर— साख की स्थितियाँ—

प्रथम स्थिति—एक स्थिति में ऋण (साख) आय बढ़ाने में सहयोग करता है, जिससे व्यक्ति की स्थिति पहले से बेहतर हो जाती है।

द्वितीय स्थिति—दूसरी स्थिति में फसल बर्बाद होने के कारण ऋण व्यक्ति को अपने जाल में फँसा लेता है। जहाँ से बाहर निकलना काफी कष्टदायक होता है। आमदनी में वृद्धि की बजाय कर्जदार की स्थिति पहले से बदतर हो जाती है। ऋण उपयोगी होगा या नहीं, यह परिस्थितियों के खतरों एवं हानि होने पर प्राप्त सहयोग की सम्भावना पर निर्भर करता है।

बैंकों से ऋण लेने की आवश्यक शर्तें—

बैंकों से ऋण लेने की आवश्यक शर्तें निम्नलिखित हैं—

(i) सर्वप्रथम ऋण लेने वाले व्यक्ति को यह प्रमाण-पत्र देना होगा कि यह देख लिया जाए कि उसे कितना ऋण दिया जाए, जिसे वह आसानी से उतार सके।

(ii) यदि वह व्यक्ति कहीं नौकरी कर रहा हो तो उसे अपनी आय के विषय में ब्यौरा उपलब्ध कराना होगा।

(iii) बैंक कर्जदार से समर्थक ऋणाधार की माँग कर सकता है, जिसमें भूमि, पशु, सम्पत्ति एवं बैंकों में जमा-पूँजी आदि सम्मिलित होती है।

(iv) बैंक कर्जदार से किसी ऐसे व्यक्ति की गारंटी माँग सकता है जो उसके कर्ज न चुकाने पर रकम वापस कर सके।

प्रश्न 6. भारत में ऋण के अनौपचारिक क्षेत्रों का वर्णन करें।

उत्तर—गरीबों की तुलना में अमीर परिवारों को औपचारिक ऋणों का अधिक हिस्सा मिलता है क्योंकि अमीर परिवारों के पास ऋण लेने हेतु समर्थक ऋणाधार होता है तथा उन परिवारों की ऋण चुकाने की क्षमता भी अधिक होती है।

जिस प्रकार से साहूकार, महाजन आदि गरीबों का शोषण करते हैं, जबकि औपचारिक स्रोतों द्वारा कर्ज लिए जाने पर उनका शोषण नहीं किया जाता है। गरीबों को उचित व कम ब्याज़ दर पर ऋण प्रदान किया जाता है। इसी प्रकार से अमीरों को ऋण उचित ब्याज दरों पर प्रदान कर औपचारिक संस्थाएँ, बहुत से उद्योगपतियों की उनकी विनियोग संबंधी समस्याओं को दूर करने में मदद करती हैं। जिससे लोगों को रोजगार की प्राप्ति होती है तथा राष्ट्रीय उत्पादन व आय में भी वृद्धि होती है।

औपचारिक क्षेत्र की ऋणों के सृजन में भागीदारी बढ़ाने हेतु दो उपाय इस प्रकार से हैं—

(i) औपचारिक स्रोतों को गैर-उत्पादक उद्देश्यों के लिए भी ऋण प्रदान करना चाहिए ।

(ii) औपचारिक स्रोतों को ऋण के दस्तावेज संबंधी प्रक्रिया सरल कर देनी चाहिए, जिससे कि सभी जरूरतमंद लोग जरूरत के समय जल्द से जल्द ऋण प्राप्त कर सकें।

प्रश्न 7. औपचारिक व अनौपचारिक ऋण क्षेत्रों की तुलना कीजिए।

उत्तर—ऋण के स्रोत—भारत में ऋण प्रदान करने वाले स्रोतों को दो भागों में बाँटा जा सकता है—

(i) औपचारिक ऋण स्रोत—भारत में औपचारिक ऋण स्रोतों में व्यापारिक बैंक, सहकारी समितियाँ, ग्रामीण बैंक आदि को सम्मिलित किया जाता है। इन स्रोतों द्वारा कम ब्याज दर पर लम्बे समय के लिए ऋण उपलब्ध करवाया जाता है।

(ii) अनौपचारिक ऋण स्रोत—भारत में बड़ी संख्या में ऋण अनौपचारिक स्रोतों द्वारा उपलब्ध करवाये जाते हैं। अनौपचारिक स्रोतों में साहूकार, महाजन, व्यापारियों, रिश्तेदारों एवं मित्रों को सम्मिलित किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश छोटे कृषक एवं मजदूर आज भी भारत के अनौपचारिक स्रोतों पर निर्भर हैं।

अनौपचारिक क्षेत्रक ऋणों की कमियाँ—अनौपचारिक क्षेत्रक ऋणों की प्रमुख कमियाँ निम्नलिखित हैं—

(i) भारत में अनौपचारिक ऋण स्रोतों द्वारा ऊँची दर पर ऋण दिया जाता है।

(ii) अनौपचारिक स्रोतों द्वारा अत्यन्त कठोर शर्तों पर ऋण दिया जाता है।

(iii) ऋण न चुकाने की स्थिति में ऋणदाता, कृषकों का अनाज सस्ते में खरीद लेते हैं तथा कई बार उन्हें अपने खेतों अथवा घरों पर बिना परिश्रम के कार्य करवाते हैं।

औपचारिक क्षेत्रक ऋण निम्न प्रकार से बेहतर हैं—

(i) औपचारिक क्षेत्रक ऋण में ऋण के वे स्रोत सम्मिलित होते हैं जो सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं। इनमें बैंक व सहकारी समितियाँ प्रमुख हैं।

(ii) भारतीय रिजर्व बैंक ऋण के औपचारिक स्रोतों के कामकाज पर निगरानी रखता है।

(iii) ऋण के औपचारिक स्रोतों द्वारा ऋण प्रदान किये जाने का उद्देश्य लाभ कमाने के साथ-साथ सामाजिक भी होता है।

(iv) इन स्रोतों से कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध करवाए जाते हैं।

(v) ऋण के औपचारिक स्रोत ऋण लेने वाले के समक्ष कोई अनुचित शर्त नहीं लगाते हैं।

(vi) औपचारिक स्रोतों द्वारा कर्जदारों का शोषण नहीं किया जाता है।

प्रश्न 8. स्वयं सहायता समूह क्या है? इनकी भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर—(i) हाल के वर्षों में लोगों ने गरीबों को उधार देने के कुछ नए तरीके अपनाने की कोशिश की है। इनमें से एक विचार ग्रामीण क्षेत्रों के गरीबों विशेषकर महिलाओं को छोटे-छोटे स्वयं सहायता समूहों में संगठित करने एवं उनकी बचत पूँजी को एकत्रित करने पर आधारित है।

(ii) एक विशेष सहायता समूह में एक-दूसरे के पड़ौसी 15-20 सदस्य होते हैं जो नियमित रूप से मिलते हैं और बचत करते हैं।

(iii) स्वयं सहायता समूहों का प्रमुख उद्देश्य गरीब लोगों की बचत पूँजी को एकत्रित करना होता है।

(iv) प्रतिव्यक्ति बचत 25 रुपये से लेकर 100 रुपये या उससे अधिक भी हो सकती है। यह परिवारों की बचत करने की क्षमता पर निर्भर करता है।

(v) स्वयं सहायता समूह अपने सदस्यों को कम ब्याज दर पर ऋण प्रदान करते हैं। यह साहूकार द्वारा लिये गये ब्याज से कम होता है।

(vi) एक या दो वर्षों के पश्चात् अगर समूह नियमित रूप से बचत करता है तो समूह बैंक से ऋण लेने के योग्य हो जाता है।

(vii) बैंकों द्वारा ऋण समूह के नाम पर दिया जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य सदस्यों के लिए स्वरोजगार के अवसरों का सृजन करना है।

(viii) सदस्यों को छोटे-छोटे ऋण अपनी गिरवी भूमि को छुड़ाने हेतु, कार्यशील पूँजी की जरूरतों, जैसे-बीज, खाद, बाँस व कपड़ा खरीदने के लिए, घर बनाने तथा सिलाई मशीन, हथकरघा व पशु आदि खरीदने के लिए दिये जाते हैं।

(ix) स्वयं सहायता समूह के अन्तर्गत बचत व ऋण गतिविधियों से सम्बन्धित निर्णय समूह के सदस्य स्वयं लेते हैं। समूह ही दिये जाने वाले ऋण, उसका लक्ष्य, उसकी रकम, ब्याज-दर, वापस लौटाने की अवधि आदि के बारे में निर्णय करता है।

(x) स्वयं सहायता समूहों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें से अधिकांश समूह महिलाओं द्वारा संगठित किए गए हैं। ये समूह महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर करने में मदद करते हैं। समूह की नियमित बैठकों के माध्यम से लोगों को एक मंच मिलता है, जहाँ वह विभिन्न प्रकार के सामाजिक विषयों; जैसे—स्वास्थ्य, पोषण व घरेलू हिंसा आदि पर आपस में चर्चा कर पाते हैं।

❑❑

4 वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं ? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—विभिन्न देशों के मध्य परस्पर सम्बन्ध एवं तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया ही वैश्वीकरण कहलाती है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं का समन्वय किया जाता है, जिससे वस्तुओं और सेवाओं, प्रौद्योगिकी, पूँजी एवं श्रम का इनके मध्य प्रवाह हो सके।

वैश्वीकरण के अन्तर्गत विदेशी व्यापार अवरोधक हटा लिये जाते हैं जिससे पूँजी व श्रम का स्वतन्त्र रूप में आवागमन होता है, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ता है, आयात-निर्यात में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त उत्पादन व उत्पादकता का स्तर बढ़ता है।

प्रश्न 2. भारत सरकार द्वारा विदेशी व्यापार एवं विदेशी निवेश पर अवरोधक लगाने के क्या कारण थे ? इन अवरोधकों को सरकार क्यों हटाना चाहती थी ?

उत्तर—भारत सरकार ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् विदेशी व्यापार एवं विदेशी निवेश पर अवरोधक लगा दिए थे। ये अवरोधक सन् 1991 तक लगे रहे। सरकार ने विदेशी प्रतिस्पर्धा से देश में उत्पादकों की रक्षा करने के लिए यह प्रतिबन्ध लगाए। सन् 1950 एवं 1960 के दशक में भारतीय उद्योग अपनी प्रारम्भिक अवस्था में था। इस अवस्था में आयातों से प्रतिस्पर्धा इन उद्योगों को बढ़ने नहीं देती। यही कारण था कि भारत सरकार ने आयातों को केवल मशीनरी, उर्वरक, खनिज तेल जैसी आवश्यक वस्तुओं तक ही सीमित रखा और विदेश व्यापार व विदेशी निवेश पर अवरोधक लगाया। इन अवरोधकों को सरकार इसलिए हटाना चाहती थी क्योंकि सन् 1991 तक भारतीय उत्पादक विश्व के उत्पादकों से प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हो गये थे। अब यह महसूस किया जाने लगा था कि प्रतिस्पर्धा से देश के उत्पादकों के प्रदर्शन में सुधार होगा क्योंकि उन्हें अपनी गुणवत्ता में सुधार करना आवश्यक होगा।

प्रश्न 3. श्रम कानूनों में लचीलापन कंपनियों की कैसे मदद करेगा ?

उत्तर—श्रम कानूनों में लचीलापन कंपनियों की निम्नलिखित प्रकार से मदद करेगा—

(i) श्रम कानूनों में लचीलेपन के कारण कम्पनियाँ श्रमिकों को अस्थाई रूप से रोजगार में लगाएँगी जिससे कि उन्हें श्रमिकों को पूरे वर्ष का भुगतान न करना पड़े। (ii) कम्पनियाँ श्रमिकों से अधिक घण्टे एवं अत्यधिक माँग की अवधि में रात में भी काम कराएँगी। इस प्रकार वे श्रम लागतों में कमी कर अधिक लाभ कमाएँगी।

प्रश्न 4. दूसरे देशों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ किस प्रकार उत्पादन पर नियन्त्रण स्थापित करती हैं ?

उत्तर—दूसरे देशों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ निम्न प्रकार से उत्पादन पर नियन्त्रण स्थापित करती हैं—

(i) संयुक्त उत्पादन द्वारा—कभी-कभी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कुछ देशों की स्थानीय कम्पनियों के साथ संयुक्त रूप से उत्पादन करती हैं। संयुक्त उत्पादन से स्थानीय कम्पनी को दोहरा लाभ प्राप्त होता है। प्रथम, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अतिरिक्त निवेश के लिए धन प्रदान कर सकती हैं जैसे कि तीव्र उत्पादन के लिए मशीनें खरीदना। दूसरा, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ उत्पादन की नवीनतम प्रौद्योगिकी अपने साथ ला सकती हैं।

(ii) स्थानीय कम्पनियाँ खरीद कर—बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ स्थानीय कम्पनियों को खरीदकर अपने उत्पादन का विस्तार करती हैं। अपार सम्पदा वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ यह आसानी से कर सकती हैं।

(iii) छोटे उत्पादकों को उत्पादन का आर्डर देना—बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ एक अन्य तरीके से भी उत्पादन नियन्त्रित करती हैं। विकसित देशों की बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ छोटे उत्पादकों को उत्पादन का आर्डर देती हैं। वस्त्र, जूते-चप्पल एवं खेल का सामान ऐसे उद्योग हैं जहाँ विश्वभर में बड़ी संख्या में छोटे उत्पादकों द्वारा उत्पादन किया जाता है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को इन उत्पादों की आपूर्ति की जाती है। ये कम्पनियाँ इन वस्तुओं को अपने ब्रांड नाम से उपभोक्ताओं को बेच देती हैं।

प्रश्न 5. विकसित देश, विकासशील देशों से उनके व्यापार और निवेश का उदारीकरण क्यों चाहते हैं ? क्या आप मानते हैं कि विकासशील देशों को भी बदले में ऐसी माँग करनी चाहिए ?

उत्तर—विकसित देश, विकासशील देशों से उनके व्यापार और निवेश का उदारीकरण इसलिए चाहते हैं ताकि वे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा विदेशी व्यापार व विदेशी निवेश के माध्यम से विकासशील देशों में अपने व्यवसाय का विस्तार कर सकें। इसके अतिरिक्त विकसित देश ऊँची दर का लाभ अर्जित करने के लिए विकासशील देशों में निवेश करना चाहते हैं।

विकासशील देशों को भी बदले में विकसित देशों द्वारा अनुचित ढंग से अपनाये गये व्यापार अवरोधक को हटाने, उनके बाजार तक पहुँच तथा अधिक आर्थिक सहायता की माँग करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त विकासशील देश समान हितों वाले अन्य विकासशील देशों के साथ मिलकर विकसित देशों के प्रभाव का विरोध कर सकते हैं तथा उचित व सही नियमों के लिए वे विश्व व्यापार संगठन व अन्य संगठनों से बातचीत कर सकते हैं।

प्रश्न 6. 'वैश्वीकरण का प्रभाव एक समान नहीं है।' इस कथन की अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।

उत्तर—वैश्वीकरण का प्रभाव एक समान नहीं है यह बिल्कुल सत्य है। यह सभी के लिए लाभप्रद नहीं है। कुछ वर्गों पर इसका अनुकूल प्रभाव पड़ा है जबकि कुछ वर्गों पर इसका प्रतिकूल एवं हानिकारक प्रभाव भी पड़ा है। अनेक लोग वैश्वीकरण से प्राप्त लाभों से वंचित भी रह गये हैं।

उपर्युक्त कथन की व्याख्या निम्न प्रकार की जा सकती है—

(i) सकारात्मक प्रभाव—विभिन्न वर्गों पर वैश्वीकरण के निम्नलिखित सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं—

(i) स्थानीय व विदेशी उत्पादकों के मध्य प्रतिस्पर्धा से उपभोक्ताओं विशेषकर शहरी क्षेत्र में रह रहे धनी वर्ग के उपभोक्ताओं को लाभ हुआ है। इन उपभोक्ताओं के समक्ष पहले से अधिक विकल्प हैं। वे अब अनेक वस्तुओं और सेवाओं की उत्कृष्टता, गुणवत्ता तथा कम कीमत से लाभान्वित हो रहे हैं। परिणामस्वरूप, ये लोग पहले की तुलना में आज अपेक्षाकृत उच्चतम जीवन स्तर का आनन्द प्राप्त कर रहे हैं।

(ii) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने शहरी क्षेत्रों में सेलफोन, मोटर गाड़ियाँ, इलेक्ट्रोनिक उत्पादों, ठण्डे पेय पदार्थों, जंक खाद्य पदार्थों एवं बैंकिंग जैसी सेवाओं के निवेश में रुचि दिखाई है जिससे शहरी क्षेत्रों में पढ़े-लिखे लोगों एवं कुशल श्रमिकों के लिए बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं।

(iii) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को कच्चे माल की आपूर्ति करने वाली स्थानीय कम्पनियों के लाभ में वृद्धि हुई है।

(iv) प्रमुख भारतीय कम्पनियों द्वारा नवीनतम तकनीकी व उत्पादन प्रणाली अपनाये जाने के कारण बढ़ती प्रतिस्पर्धा से लाभ हुआ है। कुछ भारतीय कम्पनियों ने विदेशी कम्पनियों के साथ सहयोग कर लाभ अर्जित किया है।

(v) वैश्वीकरण ने कुछ वृहत् भारतीय कम्पनियों को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के रूप में उभरने के योग्य बनाया है।

(ii) नकारात्मक प्रभाव—विभिन्न वर्गों पर वैश्वीकरण के निम्नलिखित नकारात्मक प्रभाव पड़े हैं—

(i) वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव भी पड़े हैं। कुछ छोटे उद्योगों; जैसे—बैटरी, संधारण, प्लास्टिक, खिलौने, टायर, डेयरी उत्पाद एवं खाद्य तेल आदि को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण बहुत नुकसान झेलना पड़ा है।

(ii) कई उद्योग बन्द हो गये जिसके कारण अनेक श्रमिक बेरोजगार हो गये हैं।

(iii) वैश्वीकरण तथा प्रतिस्पर्धा के दबाव ने श्रमिकों के जीवन में बहुत परिवर्तन ला दिया है। बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के कारण अधिकांश नियोक्ता आजकल श्रमिकों को रोजगार देने में लचीलापन पसंद करते हैं। इसका अर्थ है कि अब श्रमिकों का रोजगार सुनिश्चित एवं सुरक्षित नहीं रह गया है।

(iv) नियोक्ता श्रम लागतों में निरन्तर कटौती कर रहे हैं वे कम वेतन पर श्रमिकों से अधिक समय काम ले रहे हैं।

(v) वैश्वीकरण ने धनिक एवं निर्धन वर्ग के मध्य अन्तर में और अधिक वृद्धि की है।

प्रश्न 7. व्यापार और निवेश नीतियों का उदारीकरण, वैश्वीकरण प्रक्रिया में कैसे सहायता पहुँचाता है ?

उत्तर—व्यापार और निवेश नीतियों का उदारीकरण, वैश्वीकरण प्रक्रिया में अग्रलिखित प्रकार से सहायता पहुँचाता है—

(i) व्यापार अवरोधकों का हटना—उदारीकरण की नीति के अन्तर्गत भारत सरकार ने वस्तुओं और सेवाओं के आयात और निर्यात से विभिन्न प्रतिबन्धों को हटा लिया है। अब बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में वस्तुओं का आयात करने के लिए एवं भारतीय कम्पनियाँ विदेशों में वस्तुओं तथा सेवाओं का निर्यात करने के लिए स्वतंत्र हैं। इसके अतिरिक्त विदेशी कम्पनियाँ भारत में अपने कार्यालय एवं कारखाने स्थापित कर सकती हैं।

(ii) निवेश का उदारीकरण—इस नीति के अन्तर्गत बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में निवेश करने के लिए स्वतंत्र हैं। अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने सेलफोन, मोटरगाड़ी, बैंकिंग, ठण्डे पेय पदार्थों व इलेक्ट्रोनिक उत्पादों आदि क्षेत्र में निवेश किया है। भारत सरकार व राज्य सरकारें भी विभिन्न सुविधाएँ प्रदान कर देश में निवेश हेतु बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को आमन्त्रित कर रही हैं। देश में विदेशी निवेश निरन्तर बढ़ रहा है।

(iii) सूचना व संचार प्रौद्योगिकी का विकास—उदारीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप भारत में सूचना व प्रौद्योगिकी का पर्याप्त विकास हुआ है जिससे वैश्वीकरण को बढ़ावा मिला है। सूचना व संचार प्रौद्योगिकी ने अन्य देशों में सेवाओं के उत्पादन के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

प्रश्न 8. विदेश व्यापार विभिन्न देशों के बाजारों के एकीकरण में किस प्रकार मदद करता है ? यहाँ दिए गए उदाहरण से भिन्न उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर—विदेशी व्यापार विभिन्न देशों के बाजारों के एकीकरण में निम्नलिखित प्रकार से मदद करता है—

(i) सभी देश लगभग एक-दूसरे पर निर्भर हो गए हैं। प्रत्येक देश को वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात करना पड़ता है। (ii) विदेश व्यापार घरेलू बाजारों से बाहर के बाजारों में पहुँचने के लिए एक अवसर प्रदान करता है। उत्पादक केवल अपने देश के बाजारों में ही अपने उत्पाद नहीं बेच सकते हैं बल्कि विश्व के अन्य देशों के बाजारों से भी प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। (iii) इसी प्रकार-दूसरे देशों में उत्पादित वस्तुओं का आयात कर सकते हैं। इससे क्रेताओं के समक्ष उन वस्तुओं के घरेलू उत्पादन के अन्य विकल्पों का विस्तार होता है। (iv) विदेश व्यापार के खुलने से वस्तुओं का एक बाजार से दूसरे बाजार में आवागमन होता है। बाजार में वस्तुओं के विकल्पों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हो जाती है। (v) दो बाजारों में एक ही वस्त्र का मूल्य एक समान होने लगता है। (vi) इस प्रकार विदेशी व्यापार में दो देशों के उत्पादक एक-दूसरे से हजारों मील दूर होकर भी एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं।

उदाहरण—भारत में सूती व ऊनी वस्त्रों का पर्याप्त मात्रा में उत्पादन होता है। भारत में किसी भी अन्य देश द्वारा इनकी माँग करने पर इन वस्तुओं का निर्यात किया जा सकता है। वहीं दूसरी तरफ, भारत में खनिज तेल की कमी है। अत: भारत खनिज तेल उत्पादक देशों से इसका आयात कर सकता है।

इस प्रकार विदेशी व्यापार विभिन्न देशों के बाजारों के एकीकरण में मदद करता है।

प्रश्न 9. वैश्वीकरण भविष्य में जारी रहेगा। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आज से बीस वर्ष बाद विश्व कैसा होगा ? अपने उत्तर का कारण दीजिए।

उत्तर—नि:सन्देह वैश्वीकरण भविष्य में भी जारी रहेगा। आज से लगभग 20 वर्ष पश्चात् सम्पूर्ण विश्व एक बड़े बाजार के रूप में दिखाई देगा। इसके निम्नलिखित कारण हैं—

(i) सम्पूर्ण विश्व में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का अत्यधिक विस्तार होगा। (ii) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का विस्तार विश्व बाजारों को एक-दूसरे के निकट ले आएगा। (iii) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा विदेशी निवेश में अत्यधिक वृद्धि होगी। (iv) श्रम की गतिशीलता बढ़ने से कुशल व अकुशल श्रमिक समस्त विश्व में फैल जाएँगे। (v) विभिन्न देशों के मध्य विदेशी व्यापार में अत्यधिक वृद्धि होगी। (vi) अधिकाधिक वस्तुओं, सेवाओं, निवेश व प्रौद्योगिकी का विभिन्न देशों के मध्य आवागमन बढ़ेगा। (vii) विभिन्न देशों में लोगों का वृहत स्तर पर आवागमन होगा। (viii) सांस्कृतिक मूल्यों के आदान-प्रदान में वृद्धि होगी। (ix) रोजगार में वृद्धि होगी। सम्भवत: बेरोजगारी का समापन हो जायेगा। (x) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा का लाभ प्राप्त होगा। (xi) लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा।

प्रश्न 10. मान लीजिए कि आप दो लोगों को तर्क करते हुए पाते हैं—एक कह रहा है कि वैश्वीकरण ने हमारे देश के विकास को क्षति पहुँचाई है, दूसरा कह रहा है कि वैश्वीकरण ने भारत के विकास में सहायता की है। इन लोगों को आप कैसे जवाब दोगे ?

उत्तर—दो व्यक्तियों को वैश्वीकरण के पक्ष व विपक्ष में तर्क करता हुआ पाने पर मैं कहूँगा कि वैश्वीकरण ने एक ओर हमारे देश के विकास को कोई क्षति नहीं पहुँचायी है क्योंकि वैश्वीकरण विकास के लिए अति आवश्यक है। वैश्वीकरण ने रोजगार का सृजन किया है, इससे धनी उपभोक्ता, उत्पादक, कुशल व अच्छे पढ़े-लिखे श्रमिक अधिक लाभान्वित हुए हैं। देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ा है। उत्पादन व उत्पादकता का स्तर बढ़ा है, परिवहन व संचार की कम लागत के कारण विदेशी व्यापार का हिस्सा बढ़ा है, वैश्वीकरण ने देश की अर्थव्यवस्था को अधिक प्रतियोगी बनाया है। अत: भारत विदेशी प्रतिस्पर्धा के समक्ष ठहरने में समर्थ हो गया है। वहीं दूसरी ओर वैश्वीकरण के कुछ दुष्प्रभाव भी पड़े हैं। कई छोटे उत्पादक व श्रमिक बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के कारण विपरीत रूप से प्रभावित हुए हैं। कई छोटे कारखाने बन्द हो गये हैं। वे वैश्वीकरण के लाभों से लाभान्वित नहीं हुए हैं।

अत: भारत सरकार को चाहिए कि वह वैश्वीकरण को अधिक न्यायसंगत बनाने का प्रयास करे। न्यायसंगत वैश्वीकरण सभी के लिए समान अवसरों का सृजन करने के साथ-साथ यह भी सुनिश्चित करेगा कि इसके लाभों में सभी की उपयुक्त हिस्सेदारी हो।

प्रश्न 11. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

दो दशक पहले की तुलना में भारतीय खरीददारों के पास वस्तुओं के अधिक विकल्प हैं। यह ·········· की प्रक्रिया से नजदीक से जुड़ा हुआ है। अनेक दूसरे देशों में उत्पादित वस्तुओं को भारत के बाजारों में बेचा जा रहा है। इस का अर्थ है कि अन्य देशों के साथ ············ बढ़ रहा है। इससे भी आगे भारत में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा उत्पादित ब्रांडों की बढ़ती संख्या हम बाजारों में देखते हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में निवेश कर रही हैं क्योंकि ············। जबकि बाजार में उपभोक्ताओं के लिए अधिक विकल्प इसलिए बढ़ते ·············· और ··········· के प्रभाव का अर्थ है उत्पादकों के बीच अधिकतम ·····················।

उत्तर—दो दशक पहले की तुलना में भारतीय खरीददारों के पास वस्तुओं के अधिक विकल्प हैं। यह **वैश्वीकरण** की प्रक्रिया से नजदीक से जुड़ा हुआ है। अनेक दूसरे देशों में उत्पादित वस्तुओं को भारत के बाजारों में बेचा जा रहा है। इसका अर्थ है कि अन्य देशों के साथ **विदेशी व्यापार** बढ़ रहा है। इससे भी आगे भारत में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा उत्पादित ब्रांडों की बढ़ती संख्या हम बाजारों में देखते हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में निवेश कर रही हैं क्योंकि **उन्हें लाभ कमाने की आशा है।** जबकि बाजार में उपभोक्ताओं के लिए अधिक विकल्प हैं इसलिए बढ़ते **विदेशी व्यापार** और **विदेशी निवेश** के प्रभाव का अर्थ है उत्पादकों के बीच अधिकतम **प्रतिस्पर्धा।**

प्रश्न 12. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—

(क) बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ छोटे उत्पादकों से सस्ते दरों पर खरीदती हैं।
(ख) आयात पर कर और कोटा का उपयोग, व्यापार नियमन के लिए किया जाता है।
(ग) विदेशों में निवेश करने वाली भारतीय कम्पनियाँ।
(घ) आई. टी. ने सेवाओं के उत्पादन व प्रसार में सहायता की है।
(ङ) अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने उत्पादन करने के लिए निवेश किया है।

उत्तर—(क)—(ब), (ख)—(य), (ग)—(द), (घ)—(स), (ङ)—(अ)।

प्रश्न 13. सही विकल्प का चयन कीजिए—

(अ) वैश्वीकरण के विगत दो दशकों में द्रुत आवागमन देखा गया है—
(क) देशों के बीच वस्तुओं, सेवाओं और लोगों का
(ख) देशों के बीच वस्तुओं, सेवाओं और निवेशों का
(ग) देशों के बीच वस्तुओं, निवेशों और लोगों का

(आ) विश्व के देशों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा निवेश का सबसे अधिक सामान्य मार्ग है—
(क) नये कारखानों की स्थापना
(ख) स्थानीय कम्पनियों को खरीद लेना
(ग) स्थानीय कम्पनियों से साझेदारी करना

(इ) वैश्वीकरण ने जीवन स्तर के सुधार में सहायता पहुँचाई है—
(क) सभी लोगों के
(ख) विकसित देशों के लोगों के
(ग) विकासशील देश के श्रमिकों के
घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—अ-(ख), आ-(ख), इ-(ख)।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. बहुराष्ट्रीय कम्पनी क्या है? इनकी कार्यप्रणाली को समझाइए।

उत्तर—बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ—बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ वे कम्पनियाँ होती हैं जो एक से अधिक देशों में अपनी औद्योगिक इकाइयाँ व कार्यालय स्थापित करती हैं। ये कम्पनियाँ एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण व स्वामित्व रखती हैं। इन कम्पनियों में पूँजी निवेश अधिक होता है। इन कम्पनियों की इकाइयों का आकार विशाल होता है तथा उत्पादन की माँग व पूर्ति बड़े पैमाने पर होती है।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा दूसरे देशों में अपने उत्पादन पर नियंत्रण—बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ दूसरे देशों में अपने उत्पादन पर निम्न प्रकार से नियंत्रण स्थापित करती हैं—

(i) संयुक्त उत्पादन द्वारा—कभी-कभी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कुछ देशों की स्थानीय कम्पनियों के साथ संयुक्त रूप से उत्पादन करती हैं। संयुक्त उत्पादन से स्थानीय कम्पनी को दोहरा लाभ प्राप्त होता है।

(ii) स्थानीय कम्पनियाँ खरीद कर—बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ स्थानीय कम्पनियों को खरीदकर अपने उत्पादन का विस्तार करती हैं। अपार सम्पदा वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ यह आसानी से कर सकती हैं।

(iii) छोटे उत्पादकों को उत्पादन का आर्डर देना—बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ एक अन्य तरीके से भी उत्पादन नियन्त्रित करती हैं। विकसित देशों की बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ छोटे उत्पादकों को उत्पादन का आर्डर देती हैं। वस्त्र, जूते-चप्पल एवं खेल का सामान ऐसे उद्योग हैं जहाँ विश्वभर में बड़ी संख्या में छोटे उत्पादकों द्वारा उत्पादन किया जाता है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को इन उत्पादों की आपूर्ति की जाती है। ये कम्पनियाँ इन वस्तुओं को अपने ब्रांड नाम से उपभोक्ताओं को बेच देती हैं।

प्रश्न 2. वैश्वीकरण से क्या तात्पर्य है? विश्व के देशों को एकीकृत करने में इसकी भूमिका वर्णन करें।

उत्तर—वैश्वीकरण का अर्थ—विभिन्न देशों के मध्य परस्पर सम्बन्ध एवं तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया ही वैश्वीकरण कहलाती

है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं का समन्वय किया जाता है जिससे वस्तुओं और सेवाओं, प्रौद्योगिकी, पूँजी एवं श्रम का इनके मध्य प्रवाह हो सके। वैश्वीकरण के अन्तर्गत विदेशी व्यापार अवरोधक हटा लिये जाते हैं, जिससे पूँजी व श्रम का स्वतंत्र रूप से आवागमन होता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ता है, आयात-निर्यात में वृद्धि होती है तथा उत्पादन व उत्पादकता का स्तर बढ़ता है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप विश्व के विभिन्न देशों के मध्य सम्पर्क बढ़ता है विश्व के देशों को एकीकृत होने में सुलभता हुई है।

प्रश्न 3. वैश्वीकरण को सक्षम बनाने वाले कारणों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

उत्तर—वैश्वीकरण को सक्षम बनाने वाले मुख्य कारकों में तकनीकी प्रगति (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, इंटरनेट), परिवहन में सुधार (तेज और सस्ता माल परिवहन), व्यापार उदारीकरण (मुक्त व्यापार समझौते, कम टैरिफ), पूँजी और निवेश का प्रवाह और सांस्कृतिक आदान-प्रदान शामिल हैं जो देशों के बीच वस्तुओं, सेवाओं, सूचनाओं और विचारों के आदान-प्रदान को आसान बनाते हैं, जिससे दुनिया एक-दूसरे से जुड़ती है।

वैश्वीकरण को सक्षम बनाने वाले प्रमुख कारक

1. तकनीकी प्रगति—इंटरनेट, मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने भौगोलिक दूरियों को खत्म कर दिया है, जिससे दुनिया के किसी भी कोने से तुरंत जानकारी साझा करना संभव है। कंप्यूटर और इंटरनेट ने व्यापार, वित्त, शिक्षा और मनोरंजन को वैश्विक बना दिया है।

2. परिवहन में सुधार—कंटेनर जहाजों, तेज ट्रेनों और हवाई यात्रा ने माल और लोगों के लिए दुनिया की यात्रा करना सस्ता और तेज बना दिया है। इससे बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उत्पादन के विभिन्न हिस्सों को दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में फैला सकती हैं (जैसे-भारत कॉल सेंटर, चीन में विनिर्माण)।

3. व्यापार और निवेश—उदारीकरण के तहत सरकारों द्वारा व्यापार पर लगे प्रतिबंधों को हटाने से देशों के बीच व्यापार बढ़ा है। मुक्त व्यापार समझौतों ने टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं को कम किया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ विभिन्न देशों में निवेश करती हैं, जिससे आर्थिक संबंध मजबूत होते हैं।

4. वित्तीय खुलापन—वित्तीय बाजारों के खुलने से पूँजी का एक देश से दूसरे देश में जाना आसान हो गया है, जिससे निवेश और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

5. सांस्कृतिक आदान-प्रदान—दुनिया में मीडिया, फिल्में और यात्रा के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों का मिलना -जुलना बढ़ा है, जिससे विचार, फैशन और जीवन शैली का प्रसार हुआ है (जैसे-शॉपिंग मॉल, मल्टीप्लेक्स)।

6. अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ—विश्व व्यापार संगठन, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक जैसी संस्थाओं ने वैश्विक आर्थिक नियमों को स्थापित करने और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने में मदद की है।

7. सूचना का हस्तांतरण—वैश्विक पत्रकारिता के माध्यम से दुनिया भर की समस्याओं, प्रथाओं और जीवन स्थितियों के बारे में जानकारी फैलती है, जिससे जागरूकता बढ़ती है (जैसे-जलवायु परिवर्तन)।

इन सभी कारकों ने मिलकर दुनिया को एक-दूसरे से जोड़ दिया है, जिससे वैश्वीकरण की प्रक्रिया संभव और तीव्र हुई है।

प्रश्न 4. विश्व व्यापार संगठन क्या है? इसके गठन व कार्यों का उल्लेख करें।

उत्तर—विश्व व्यापार संगठन एक अंतर्राष्ट्रीय निकाय है जो वैश्विक व्यापार के नियमों को निर्धारित करता है, व्यापार को सुगम बनाता है और सदस्य देशों के बीच व्यापार विवादों को सुलझाता है; इसकी स्थापना 1995 में टैरिफ और व्यापार पर सामान्य समझौतों का प्रबंधन, वार्ताओं के लिए मंच प्रदान करना और विवाद निपटान तंत्र चलाना शामिल हैं।

विश्व व्यापार संगठन का गठन—द्वितीय विश्व युद्ध के बाद व्यापार प्रतिबंधों को कम करने और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए 1948 में (GATT) लागू हुआ था। उरुग्वे दौर की वार्ताओं के बाद 1 जनवरी 1995 को विश्व व्यापार संगठन की स्थापना हुई, जिसने टैरिफ और व्यापार पर सामान्य समझौता (GATT) का स्थान लिया। इसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में है। इसके सदस्य देशों की संख्या 164 है, जो विश्व व्यापार का बड़ा हिस्सा कवर करते हैं।

विश्व व्यापार संगठन के कार्य—

(i) व्यापार समझौतों का प्रशासन—यह विश्व व्यापार संगठन समझौतों के प्रशासन और उनके कार्यान्वयन की निगरानी करता है। **(ii) व्यापार वार्ता के लिए मंच**—यह सदस्य देशों को व्यापार से संबंधित मुद्दों पर बातचीत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। **(iii) विवाद निपटान**—यह सदस्य देशों के बीच व्यापारिक मतभेदों को सुलझाने के लिए एक विवाद निपटान तंत्र प्रदान करता है। **(iv) तकनीकी सहायता**— यह विकासशील देशों को व्यापार क्षमता निर्माण के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करता है। **(v) पारदर्शिता**—विश्व व्यापार संगठन यह सुनिश्चित करता है कि सदस्य देशों की व्यापार नीतियाँ पारदर्शी और अनुमानित हों। **(vi) वैश्विक व्यापार को सुगम बनाना**—इसका मुख्य लक्ष्य व्यापार बाधाओं को कम करना, निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना और वैश्विक आर्थिक विकास में योगदान करना है।

प्रश्न 5. भारत में वैश्वीकरण के प्रभावों का उल्लेख करें।

उत्तर—भारत में वैश्वीकरण के प्रभावों में आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, विदेशी निवेश में वृद्धि, और आईटी व सेवा विस्तार शामिल

है, साथ ही सांस्कृतिक आदान-प्रदान, शहरीकरण, जीवन-शैली में बदलाव और कुछ सामाजिक व पर्यावरणीय चुनौतियों (जैसे-असमानता और स्वास्थ्य समस्याएँ) में वृद्धि देखी गई है, जिससे समग्र रूप से अर्थव्यवस्था, समाज और संस्कृति पर गहरा असर पड़ा है।

वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव—

(i) आर्थिक विकास और विदेशी प्रत्यक्ष निवेश—विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में वृद्धि हुई, जिससे कार्पोरेट, खुदरा और तकनीकी क्षेत्रों में निवेश बढ़ा और आर्थिक विकास को गति मिली। **(ii) रोजगार सृजन—**सूचना प्रौद्योगिकी, बिजनेस प्रोसेस, आउटसोर्सिंग और ई-कॉमर्स जैसे क्षेत्रों में नए रोजगार के अवसर पैदा हुए। **(iii) उद्योगों का विस्तार—**विनिर्माण और औद्योगिकीकरण को बढ़ावा मिला, जिससे भारत दुनिया के लिए एक बड़ी "आउटसोर्सिंग राजधानी" बन गया। **(iv) प्रौद्योगिकी और परिवहन—**सूचना प्रौद्योगिकी और परिवहन के क्षेत्र में अभूतपूर्व सुधार हुए। **(v) जीवन-शैली में बदलाव—**वैश्विक खाद्य शृंखलाओं, रेस्तरां और मनोरंजन के स्रोतों तक पहुँच बढ़ी, जिससे जीवन-शैली में बदलाव आया और महिलाओं के लिए समानता के अवसर बढ़े। **(vi) वैश्विक पहचान—**भारत की वैश्विक भूमिका और प्रभाव बढ़ा है और निर्यातोन्मुख अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव आया है।

नकारात्मक प्रभाव—(i) आय असमानता—विभिन्न आय वर्ग के लोगों के बीच आय असमानता बढ़ी है, जिससे कुछ लोग और समुदाय पीछे रह गए। **(ii) सामाजिक चुनौतियाँ—**शहरीकरण बढ़ने से भीड़भाड़, प्रदूषण और अपर्याप्त स्वच्छता जैसी समस्याएँ बढ़ीं; फास्ट फूट और निष्क्रिय जीवन-शैली से बीमारियाँ (मोटापा, मधुमेह) बढ़ीं। **(iii) पारंपरिक आजीविका को नुकसान—**विकास परियोजनाओं और संसाधनों के निष्कर्षण से आदिवासी समुदायों और पारंपरिक आजीविका को नुकसान हुआ। **(iv) वैश्विक जोखिम—** आतंकवाद, साइबर अपराध और संक्रामक रोगों (जैसे-कोविड-19) के तेजी वैश्विक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। **(v) सांस्कृतिक प्रभाव—**पश्चिमी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण स्थानीय संस्कृतियों पर दबाव बढ़ा है।

संक्षेप में, वैश्वीकरण ने भारत के लिए कई अवसर पैदा किए, लेकिन साथ ही नई सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी खड़ी कीं, जिससे देश के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं।

प्रश्न 6. निष्पक्ष वैश्वीकरण के लिये आवश्यक दशाओं का वर्णन करें।

उत्तर—निष्पक्ष वैश्वीकरण के लिए ऐसी दशाएँ आवश्यक हैं जहाँ सभी कानूनों का पालन हो, छोटे उत्पादकों को समर्थन मिले और अमीर-गरीब के बीच की खाई न बढ़े, जिससे सभी को लाभ हो जिसके लिए सरकारों को नीतियों में समानता लानी होगी और विश्व व्यापार संगठन (WTO) जैसे मंचों पर निष्पक्ष नियमों के लिए काम करना होगा।

निष्पक्ष वैश्वीकरण के लिए आवश्यक दशाएँ

1. समान अवसर और समावेशी नीतियाँ—सरकार को ऐसी नीतियाँ बनानी चाहिए, जो सिर्फ शक्तिशाली लोगों को नहीं, बल्कि देश के सभी नागरिकों और अर्थव्यवस्थाओं को लाभ पहुँचाएँ। विकासशील देशों को भी वैश्विक व्यापार और निवेश में बराबरी का मौका मिलना चाहिए।

2. मजबूत श्रम कानून और श्रमिकों के अधिकार—यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि सभी देशों में श्रम कानूनों का ठीक से पालन हो और श्रमिकों को उनके अधिकार मिलें, जैसे उचित मजदूरी और काम करने की सुरक्षित स्थिति।

3. छोटे उत्पादकों और व्यवसायों का समर्थन—छोटे उत्पादकों को तब तक समर्थन देना चाहिए जब तक के वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए पर्याप्त मजबूत न हो जाएँ, ताकि वे बाजार से बाहर न हों।

4. व्यापार और निवेश बाधाओं का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग—सरकारें अपने लोगों के हितों की रक्षा के लिए व्यापार और निवेश बाधाओं का उपयोग कर सकती हैं, खासकर जब तक वे सक्षम न हो जाएँ।

5. निष्पक्ष वैश्विक नियमों के लिए बातचीत—विश्व व्यापार संगठन जैसे मंचों पर निष्पक्ष नियमों के लिए बातचीत करना और विकसित देशों के प्रभुत्व का विरोध करना आवश्यक है।

6. सामाजिक न्याय और मानव कल्याण—वैश्वीकरण का लक्ष्य केवल आर्थिक विकास न होकर, सभी के कल्याण और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना होता चाहिए, जैसा कि अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा जोर दिया गया है।

7. वंचित वर्गों का समावेशन—समाज के गरीब, उपेक्षित और शोषित वर्गों को विकास की मुख्यधारा में लाना जरूरी है, ताकि वे भी वैश्वीकरण के लाभों से वंचित न रहें।

इन दशाओं को सुनिश्चित करके ही वैश्वीकरण को सभी के लिए न्याय संगत और फायदेमंद बनाया जा सकता है, न कि केवल कुछ शक्तिशाली वर्गों के लिए।

❑❑

5 उपभोक्ता अधिकार

पाठ्य-पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. बाजार में नियमों तथा विनियमों की आवश्यकता क्यों पड़ती है ? कुछ उदाहरणों के द्वारा समझाएँ।

उत्तर—बाजार में उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए नियमों व विनियमों की आवश्यकता होती है। जिसके निम्नलिखित कारण हैं—

(i) कमजोर उपभोक्ता—बाजार में व्यक्तिगत उपभोक्ता स्वयं को प्राय: कमजोर स्थिति में पाते हैं। खरीदी गई वस्तु या सेवा के बारे में जब भी कोई शिकायत होती है तो विक्रेता समस्त उत्तरदायित्व क्रेता पर डालने का प्रयास करता है। ऐसी स्थिति में अधिकतर उपभोक्ताओं का शोषण होता है।

(ii) उपभोक्ता का शोषण—बाजार में उपभोक्ताओं का शोषण कई रूपों में होता है। उदाहरण के लिए; कई बार बेईमान दुकानदार उचित वजन से कम वजन तोलते हैं अथवा व्यापारी उन शुल्कों को जोड़ देते हैं जिनका वर्णन पहले नहीं किया गया हो अथवा मिलावटी वस्तुएँ व दोषपूर्ण वस्तुएँ बेच देते हैं। ऐसी स्थिति में उपभोक्ताओं के हितों की सुरक्षा हेतु नियमों-विनियमों की आवश्यकता होती है।

(iii) अनुचित बाजार—जब उत्पादक कम संख्या में एवं अधिक शक्तिशाली होते हैं तो बाजार का संचालन उचित ढंग से नहीं हो पाता है। विशेष रूप से यह स्थिति तब होती है, जब इन वस्तुओं का उत्पादन बड़ी कम्पनियाँ कर रही होती हैं। अधिक पूँजी वाली, शक्तिशाली और समृद्ध कम्पनियाँ

विभिन्न प्रकार से चालाकीपूर्ण तरीके से बाजार को प्रभावित कर उपभोक्ताओं का शोषण करती हैं।

(iv) गलत सूचना—उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए अधिकांश बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ समय-समय पर मीडिया व अन्य संकेतों के माध्यम से गलत सूचनाएँ उपलब्ध कराती हैं; जैसे—एक कम्पनी पाउडर वाला दूध बेचती है

और यह दावा करती है कि उसका उत्पाद माँ के दूध से बेहतर है तो यह सरासर झूठ होगा। इसी प्रकार एक सिगरेट निर्माता कम्पनी विज्ञापन के माध्यम से यह बताती है कि सिगरेट मानव शरीर में सुस्ती को समाप्त करती है जबकि वास्तविक रूप से सिगरेट पीने से कैंसर होता है।

इन सब कारणों से उपभोक्ताओं के हितों की सुरक्षा हेतु बाजार में नियमों व विनियमों की आवश्यकता पड़ती है।

प्रश्न 2. भारत में उपभोक्ता आन्दोलन की शुरुआत किन कारणों से हुई ? इसके विकास के बारे में पता लगाएँ।

उत्तर—भारत में उपभोक्ता आन्दोलन की शुरुआत निम्नलिखित कारणों से हुई—

(i) उपभोक्ताओं का असन्तोष, (ii) बाजार में उपभोक्ताओं को शोषण से बचाने के लिए किसी कानून का न होना, (iii) अत्यधिक खाद्य पदार्थों की कमी, (iv) जमाखोरी, (v) कालाबाजारी, (vi) खाद्य पदार्थों एवं खाद्य तेलों में मिलावट।

इन सब कारणों की वजह से सन् 1960 के दशक में व्यवस्थित रूप से उपभोक्ता आन्दोलन की शुरुआत हुई। 1970 के दशक तक उपभोक्ता संस्थाएँ व्यापक स्तर पर उपभोक्ता अधिकार से सम्बन्धित आलेखों के लेखन एवं प्रदर्शनों के आयोजन का कार्य करने लगी थीं। उन्होंने सड़क यात्री परिवहन से अत्यधिक भीड़भाड़ एवं राशन की दुकानों में होने वाले अनुचित कार्यों पर ध्यान रखने के लिए उपभोक्ता दलों का गठन किया। हाल ही में भारत में उपभोक्ता दलों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि देखी गयी है।

24 दिसम्बर, 1986 में भारत सरकार द्वारा एक बड़ा कदम उठाया गया। इस वर्ष उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 पारित किया गया जो COPRA के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रश्न 3. दो उदाहरण देकर उपभोक्ता जागरूकता की जरूरत का वर्णन करें।

उत्तर—उपभोक्ता जागरूकता की जरूरत निम्न उदाहरणों द्वारा स्पष्ट हो सकती है—

(i) उपभोक्ता द्वारा रसोई में रोजाना काम आने वाले मसालों की खरीददारी बाजार से की जाती है। मुकेश द्वारा बाजार से मसाले खरीदे गये उनमें मिलावट पायी गयी। मुकेश ने उपभोक्ता अदालत में इसकी शिकायत की। उपभोक्ता अदालत ने दुकानदार को दोषी ठहराकर हर्जाना देने का आदेश दिया।

(ii) लोकेश ने बाजार से प्रसिद्ध पेय पदार्थ कम्पनी की एक शीतल पेय की बोतल खरीदी। उस बोतल में उसे कुछ गंदगी दिखाई दी। लोकेश ने सम्बन्धित दुकानदार को दिखाया तो उसने बोतल को वापस करने से मना कर दिया। लोकेश के पास शीतल पेय बोतल क्रय का कैशमीमो उपलब्ध था। उसने जिला उपभोक्ता मंच में शिकायत की। मंच द्वारा दुकानदार व सम्बन्धित कम्पनी को दोषी माना और जुर्माना लगाकर उस राशि को 1 महीने के भीतर लोकेश को देने का आदेश दिया।

उपर्युक्त उदाहरणों की भाँति अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिनमें उत्पादक एवं विक्रेताओं द्वारा उपभोक्ताओं का शोषण किया जा रहा है। इसका मुख्य कारण उपभोक्ता की अशिक्षा एवं अज्ञानता है। आज भी अनेक उपभोक्ताओं को अपने अधिकारों का ज्ञान नहीं है न ही इससे सम्बन्धित कानूनों की जानकारी है। फलस्वरूप वे शोषण का शिकार हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में उपभोक्ताओं को जागरूक बनाना अत्यंत आवश्यक है। जब तक उपभोक्ता स्वयं जागरूक नहीं बनेंगे उन्हें शोषण से नहीं बचाया जा सकता है।

प्रश्न 4. कुछ ऐसे कारकों की चर्चा करें जिनमें उपभोक्ताओं का शोषण होता है ?

उत्तर—उपभोक्ताओं के शोषण के लिए उत्तरदायी कारक निम्नलिखित हैं—

(i) माँग व पूर्ति में असन्तुलन—जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि के कारण माँग की तुलना में वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धि कम होने के कारण माँग व पूर्ति में असन्तुलन अधिक हो जाता है। ऐसी स्थिति में व्यवसायी घटिया वस्तुओं का उत्पादन कर उपभोक्ता से ऊँचा मूल्य वसूलते हैं।

(ii) अशिक्षा एवं अज्ञानता—भारत में उपभोक्ता शोषण का एक प्रमुख कारण उपभोक्ता का अशिक्षित होना व उपभोक्ता अधिकार से अनभिज्ञ होना है। बहुत अधिक संख्या में उपभोक्ता वस्तुओं की गुणवत्ता की पहचान भी नहीं कर पाते हैं। इस वजह से उपभोक्ताओं का शोषण होता है।

(iii) उपभोक्ता की उदासीनता—भारत में उपभोक्ताओं के असंगठित होने के कारण एवं अपने अधिकारों के प्रति जानकारी व सजग नहीं होने के कारण वह अपने अधिकारों के प्रति उदासीन रहता है। जिन उपभोक्ताओं को कुछ जानकारी होती भी है तो संगठन के अभाव में उनकी प्रवृत्ति समझौतावादी हो जाती है।

(iv) गलत जानकारी—कई कम्पनियाँ उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए विज्ञापनों पर बहुत अधिक धन खर्च करती हैं। ये उपभोक्ताओं को अपने उत्पादन की गलत जानकारियाँ देती हैं।

(v) सीमित जानकारी—उपभोक्ताओं को उत्पादों के लिखित पक्षों; यथा—मूल्य, गुणवत्ता, बनावट, प्रयोग की शर्तों आदि की जानकारी न होने के कारण उपभोक्ता गलत वस्तु का चयन कर लेते हैं और शोषण का शिकार हो जाते हैं।

(vi) लम्बी वैधानिक प्रक्रिया—सभी शिक्षित एवं अशिक्षित उपभोक्ता विक्रेताओं के अनुचित व्यवहार के विरुद्ध अपव्ययी एवं जटिल वैयक्तिक प्रक्रिया को अपनाने से घबराते हैं। अत: विक्रेता इस बात का लाभ उठाकर उपभोक्ताओं का भरपूर शोषण करते हैं।

प्रश्न 5. उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम, 1986 के निर्माण की जरूरत क्यों पड़ी ?

उत्तर—उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम, 1986 के निर्माण की जरूरत निम्न कारणों से पड़ी—

(i) उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों एवं कर्त्तव्यों की जानकारी देना।

(ii) उपभोक्ताओं के हितों का संरक्षण करना।

(iii) वस्तुओं के मूल्यों पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिए।

(iv) उत्पादकों को उनकी गुणवत्ता युक्त वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु।

(v) व्यापारियों द्वारा की जाने वाली जमाखोरी व कालाबाजारी को रोकने हेतु।

(vi) उत्पादकों व विक्रेताओं द्वारा खाद्य पदार्थों एवं खाद्य तेल में मिलावट को रोकने हेतु।

(vii) विक्रेताओं द्वारा निर्धारित माप-तोल व बाटों का प्रयोग करने तथा ग्राहकों से अनुचित कीमतों को वसूलने से रोकने हेतु।

(viii) उत्पादकों, व्यापारियों, दुकानदारों व वितरकों के अनुचित व्यवहारों के विरुद्ध उन्हें न्यायालय में सजा दिलाने व उपभोक्ताओं के हितों की हानि की क्षतिपूर्ति करने के लिए।

प्रश्न 6. अपने क्षेत्र के बाजार में जाने पर उपभोक्ता के रूप में अपने कुछ कर्त्तव्यों का वर्णन करें।

उत्तर—एक उपभोक्ता को शोषण से मुक्त होने के लिए निम्न कर्त्तव्यों का पालन किया जाना आवश्यक है—

(i) हमें माल खरीदने से पहले वस्तुओं व सेवाओं के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(ii) हमें प्राय: अधिकृत दुकान से ही सामान खरीदना चाहिए।

(iii) हमें डिब्बाबंद या पैक ब्राण्ड पर लगे लेबल पर आवश्यक सूचनाएँ तथा ब्राण्ड का नाम, उसमें प्रयुक्त संघटक, उत्पादक का नाम व पता, शुद्ध वजन या माप, बैच नम्बर, पैकिंग तिथि एवं उपभोग योग्यता की अन्तिम तिथि आदि अनिवार्य रूप से देख लेनी चाहिए।

(iv) हमें वस्तुओं को क्रय करते समय आई.एस.आई., एगमार्क, एफ.पी.ओ., हॉलमार्क आदि मानक एवं प्रमाणन की मोहर लगे उत्पादों को ही खरीदने में प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिए।

(v) हमें वस्तुएँ खरीदने से पहले यह भी सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि वस्तु का माप-तौल पूरा हो और इसके लिए प्रमाणित बाँट या माप ही प्रयोग में लिये गये हैं एवं माप-तौल सेन्टीमीटर-मीटर, ग्राम-किलोग्राम, लीटर में है।

(vi) जिन वस्तुओं के लिए राजनियम द्वारा मूल्य निर्धारित हैं अगर व्यापारी ने मूल्य सूची जारी की है तो उसमें अधिक मूल्य उपभोक्ता द्वारा नहीं दिया जाना चाहिए।

(vii) हमें वस्तु के विज्ञापन में बताई गई विशेषताओं का यथार्थ स्थिति से मिलान कर गारण्टी या वारण्टी की शर्तों को ठीक से समझकर ही माल खरीदना चाहिए।

(viii) हमारा यह भी कर्त्तव्य है कि दुकानदार से सामान खरीदने पर कैशमीमो या वाउचर अवश्य प्राप्त कर लें।

(ix) हमें सरकार द्वारा उपभोक्ता संरक्षण हेतु बनाये गये नियमों-कानूनों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए।

प्रश्न 7. मान लीजिए, आप शहद की एक बोतल और बिस्किट का एक पैकेट खरीदते हैं। खरीदते समय आप कौन-सा लोगो या शब्द चिह्न देखेंगे और क्यों ?

उत्तर—मैं शहद की एक बोतल एवं बिस्किट का एक पैकेट खरीदता हूँ तो मुझे एगमार्क या ISI का चिह्न देखना चाहिए क्योंकि उत्पाद पर लोगो होने का अर्थ है कि यह प्रमाणित है तथा इसमें मिलावट, घटिया किस्म अथवा मात्रा की कमी की कोई गुंजाइश नहीं है तथा यह उत्पाद प्रयोग करने के योग्य है।

प्रश्न 8. भारत में उपभोक्ताओं को समर्थ बनाने के लिए सरकार द्वारा किन कानूनी मापदण्डों को लागू करना चाहिए ?

उत्तर—भारत में उपभोक्ताओं को समर्थ बनाने के लिए सरकार द्वारा निम्नलिखित कानूनी मापदण्डों को लागू करना चाहिए—

(i) उपभोक्ता के अधिकारों को प्रोत्साहित एवं संरक्षित करने के लिए जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरों पर त्रिस्तरीय न्यायिक तन्त्र की स्थापना की गयी है। इनके माध्यम से उपभोक्ताओं की शिकायतों को सरल, तीव्र एवं कम खर्च में दूर किया जाता है।

(ii) सरकार उत्पादों के मानकीकरण द्वारा उत्पादों की गुणवत्ता में कमी एवं उत्पादों के मानकों से उपभोक्ताओं की सुरक्षा करती है।

(iii) भारत सरकार ने उत्पादों की गुणवत्ता एवं मानकता को निर्धारित करने के लिए भारतीय मानक ब्यूरो, एगमार्क, हॉलमार्क जैसे विश्वसनीयता के चिह्न अंकित करने का प्रावधान किया है।

(iv) सरकार द्वारा आवश्यक वस्तुओं के वितरण के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली को अपनाया गया है। इस प्रणाली के माध्यम से उचित मूल्य की दुकानों से गरीब लोगों को उचित मूल्य पर आवश्यक सामग्री उपलब्ध करायी जाती है।

(v) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 कुछ विशिष्ट वस्तुओं को छोड़कर सभी वस्तुओं व सेवाओं पर लागू होता है। सरकार को इन सभी को कड़ाई से लागू करना चाहिए, तभी उपभोक्ता के हितों का संरक्षण हो सकता है।

प्रश्न 9. उपभोक्ताओं के कुछ अधिकारों को बताएँ और प्रत्येक अधिकार पर कुछ पंक्तियाँ लिखें।

उत्तर—उपभोक्ताओं के प्रमुख अधिकार निम्नलिखित हैं—

(i) सुरक्षा का अधिकार—इसके अन्तर्गत उपभोक्ताओं को ऐसे माल के क्रय-विक्रय के विरुद्ध संरक्षण पाने का अधिकार प्रदान किया गया है, जो जीवन व सम्पत्ति के लिए हानिकारक हैं। उपभोक्ता को किसी भी वस्तु या सेवा के क्रय या उपभोग से बीमार होने, चोट लगने या किसी भी व्यक्ति के अविवेकपूर्ण इस्तेमाल से होने वाली हानि के विरुद्ध सुरक्षा पाने का अधिकार है।

(ii) सूचना पाने का अधिकार—उपभोक्ता को यह अधिकार प्रदान किया गया है कि उसे माल की गुणवत्ता, मात्रा, क्षमता, शुद्धता, मानक एवं मूल्यों के बारे में सूचना प्रदान की जाये, यदि ये सूचनाएँ माल के उत्पादक द्वारा नहीं लिखी गयी हैं, तो उपभोक्ता इन सूचनाओं को प्राप्त करने का अधिकार रखता है।

(iii) चुनाव का अधिकार—इस अधिकार के तहत उपभोक्ता बाजार में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं में से किसी का भी चयन कर सकता है। वह किसी भी व्यवसायी द्वारा उत्पादित माल की किसी भी किस्म को अपनी इच्छा से पसन्द कर सकता है।

(iv) क्षतिपूर्ति निवारण का अधिकार—इस अधिकार के अन्तर्गत उपभोक्ता को व्यवसायी द्वारा किये जाने वाले प्रतिबन्धात्मक एवं अनुचित व्यवहार के कारण होने वाली हानि की क्षतिपूर्ति कराने का अधिकार दिया गया है।

(v) प्रतिनिधित्व का अधिकार—उपभोक्ता को वस्तु या सेवा सम्बन्धी किसी भी शिकायत को उचित मंच पर प्रस्तुत करने का अधिकार है। एक उपभोक्ता के रूप में अनुचित व्यापारिक व्यवहार के होने पर उपभोक्ता को अदालतों में जाने का अधिकार है। इस हेतु त्रिस्तरीय न्यायिक तन्त्र की व्यवस्था की गई है।

(vi) उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार—इस अधिकार के अन्तर्गत उपभोक्ता को वस्तुओं, सेवाओं एवं उनके उपयोग की विधि आदि के सम्बन्ध में जानकारी या शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार होता है। यह अधिकार उपभोक्ताओं को जागरूक उपभोक्ता बने रहने के लिए ज्ञान तथा क्षमता प्रदान करने का अधिकार है।

प्रश्न 10. उपभोक्ता अपनी एकजुटता का प्रदर्शन कैसे कर सकते हैं ?

उत्तर—उपभोक्ता अपनी एकजुटता का प्रदर्शन निम्न प्रकार कर सकते हैं—

(i) उपभोक्ता संगठनों का निर्माण करके।

(ii) उपभोक्ता अदालतों में शिकायत दर्ज कराके।

(iii) बेईमान उत्पादकों, दुकानदारों, व्यापारियों आदि द्वारा किये जाने वाले अनुचित कार्यों के विरुद्ध प्रदर्शन, प्रचार एवं घेराव करके।

(iv) उपभोक्ता संरक्षण समितियों में भागीदारी करके।

(v) धोखाधड़ी करने वाली कम्पनियों के विरुद्ध संयुक्त रूप से आवाज उठाकर।

प्रश्न 11. भारत में उपभोक्ता आन्दोलन की प्रगति की समीक्षा करें।

उत्तर—भारत में उपभोक्ता आन्दोलन की प्रगति को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

(i) भारत में सामाजिक बल के रूप में उपभोक्ता आन्दोलन का जन्म, अनैतिक और अनुचित व्यवसाय कार्यों से उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने व प्रोत्साहित करने की आवश्यकता के साथ हुआ।

(ii) देश में खाद्य पदार्थों की अत्यधिक कमी, जमाखोरी, कालाबाजारी, खाद्य पदार्थों एवं खाद्य तेल में मिलावट की वजह से सन् 1960 के दशक में व्यवस्थित रूप में उपभोक्ता आन्दोलन का जन्म हुआ।

(iii) सन् 1970 के दशक तक उपभोक्ता संस्थाएँ वृहत स्तर पर उपभोक्ता अधिकार से सम्बन्धित आलेखों के लेखन एवं प्रदर्शनों के आयोजन का कार्य करने लगी थीं। उन्होंने सड़क यात्री परिवहन में अत्यधिक भीड़-भाड़ तथा राशन की दुकानों में होने वाले अनुचित कार्यों पर निगरानी रखने के लिए उपभोक्ता दल बनाया।

(iv) व्यापारियों द्वारा उपभोक्ताओं के शोषण के अनेक मामले सामने आने पर हाल में ही भारत में उपभोक्ता दलों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है।

(v) सन् 1986 में भारत सरकार ने एक बड़ा एवं प्रभावी कदम उठाया और सरकार ने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम पारित किया। यह COPRA के नाम से जाना जाता है।

(vi) भारत में उपभोक्ता आन्दोलन की गति धीमी है। कोपरा अधिनियम के 30 वर्ष बाद भी भारत में उपभोक्ता ज्ञान धीरे-धीरे फैल रहा है।

प्रश्न 12. निम्नलिखित को सुमेलित करें—

(1) एक उत्पाद के घटकों का विवरण

(क) सुरक्षा का अधिकार

(2) एगमार्क

(ख) उपभोक्ता मामलों में सम्बन्ध

(3) स्कूटर में खराब इंजन के कारण हुई दुर्घटना
(ग) अनाजों और खाद्य तेलों का प्रमाण
(4) जिला उपभोक्ता अदालत विकसित करने वाली एजेंसी
(घ) उपभोक्ता कल्याण संगठनों की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था
(5) उपभोक्ता इंटरनेशनल
(ङ) सूचना का अधिकार
(6) भारतीय मानक ब्यूरो
(च) वस्तुओं और सेवाओं के लिए मानक

उत्तर—1. (ङ), 2. (ग), 3. (क), 4. (ख), 5. (घ), 6. (च)।

प्रश्न 13. सही या गलत बताएँ—

(क) कोपरा केवल सामानों पर लागू होता है।

(ख) भारत विश्व के उन देशों में से एक है जिनके पास उपभोक्ताओं की समस्याओं के निवारण के लिए विशिष्ट अदालतें हैं।

(ग) जब उपभोक्ता को ऐसा लगे कि उसका शोषण हुआ है, तो उसे जिला उपभोक्ता अदालत में निश्चित रूप से मुकदमा दायर करना चाहिए।

(घ) जब अधिक मूल्य का नुकसान हो, तभी उपभोक्ता अदालत में जाना लाभप्रद होता है।

(ङ) हॉलमार्क, आभूषणों की गुणवत्ता बनाये रखने वाला प्रमाण है।

(च) उपभोक्ता समस्याओं के निवारण की प्रक्रिया अत्यन्त सरल और शीघ्र होती है।

(छ) उपभोक्ता को मुआवजा पाने का अधिकार है, जो क्षति की मात्रा पर निर्भर करती है।

उत्तर—(क) गलत, (ख) सही, (ग) सही, (घ) गलत, (ङ) सही, (च) गलत, (छ) सही।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. बाजार में उपभोक्ता की सुरक्षा के लिए नियमों की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर—बाजार में उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए नियमों की आवश्यकता इसलिए होती है क्योंकि विक्रेता अक्सर धोखाधड़ी (जैसे-मिलावट, कम तौलना, गलत विज्ञापन) करते हैं, जबकि उपभोक्ता असंगठित और जानकारी के बिना होते हैं, जिससे उनका शोषण होता है; नियम निष्पक्षता और पारदर्शिता लाते हैं, गलत प्रथाओं को रोकते हैं और उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा करते हैं, उन्हें सही और सुरक्षित उत्पाद सुनिश्चित करने में मदद करते हैं।

नियमों की आवश्यकता के मुख्य कारण

1. शोषण से बचाव—बाजार में अक्सर विक्रेता शक्तिशाली होते हैं और उपभोक्ता कमजोर, जिससे मिलावट, कम तौलना या खराब गुणवत्ता वाले उत्पाद बेचे जाते हैं; नियम इस शोषण को रोकते हैं।

2. अनुचित व्यापार प्रथाओं पर रोक—नियम कालाबाजारी, जमाखोरी और भ्रामक विज्ञापनों (झूठे दावे) जैसी गतिविधियों पर अंकुश लगाते हैं, जो उपभोक्ताओं को गुमराह करते हैं।

3. गुणवत्ता और सुरक्षा सुनिश्चित करना—आई एस आई या एगमार्क जैसे चिह्न और वजन-माप के कानून उत्पादों की गुणवत्ता और सही मात्रा की गारंटी देते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है (जैसे-एक्सपायरी दवाएँ)।

4. जानकारी और जागरूकता—ये नियम उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करते हैं और उन्हें यह जानने में मदद करते हैं कि शिकायत करने और मुआवजे का दावा करने के लिए क्या करना है।

5. बाजार में पारदर्शिता और अनुशासन—नियम व्यापार को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाते हैं, जहाँ व्यवसायों को जवाबदेह ठहराया जा सके।

6. कानूनी सहायता प्रदान करना—जब कोई समस्या होती है, तो उपभोक्ता संरक्षण कानून उपभोक्ताओं को न्यायालयीन सहायता और शिकायत निवारण मंच प्रदान करते हैं, जैसाकि उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम (जैसे 2019) में है।

प्रश्न 2. उपभोक्ता आंदोलन व अधिकारों को स्पष्ट करें।

उत्तर—उपभोक्ता आंदोलन उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा और बाजार में निष्पक्ष व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए एक सामाजिक पहल है, जो उन्हें भ्रामक विज्ञापन, घटिया गुणवत्ता और शोषण से बचाने के लिए सशक्त बनाता है; इसके प्रमुख अधिकारों में सुरक्षा, सूचित होने, चुनने, सुने जाने, निवारण और शिक्षा का अधिकार शामिल हैं, जिन्हें भारत में 1986 के उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम द्वारा कानूनी रूप दिया गया है, जिससे उपभोक्ता अदालतों के माध्यम से न्याय मिल सके।

उपभोक्ता आंदोलन—यह उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा, उनके शोषण को रोकने और बाजार में नैतिक व पारदर्शी प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए एक संगठित सामाजिक आंदोलन है। भारत में इसकी शुरुआत 1960 के दशक में खाद्यान्न की कमी, मिलावट और जमाखोरी जैसी समस्याओं के कारण हुई, जिसके बाद 1986 में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम (COPRA) पारित हुआ।

उपभोक्ता आंदोलन का उद्देश्य—(i) उपभोक्ता अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाना। (ii) अनुचित व्यापारिक प्रथाओं और धोखाधड़ी को रोकना। (iii) सरकार पर मजबूत कानून बनाने के लिए दबाव डालना। (vi) उपभोक्ताओं को सशक्त बनाना ताकि वे सूचित निर्णय ले सकें।

उपभोक्ता अधिकार—भारत में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 (और बाद के संशोधनों) द्वारा उपभोक्ताओं को निम्नलिखित छह अधिकार दिए गए हैं—

1. सुरक्षा का अधिकार—जीवन और संपत्ति के लिए खतरनाक वस्तुओं और सेवाओं से सुरक्षा का अधिकार।

2. सूचित होने का अधिकार—उत्पाद की गुणवत्ता, मात्रा, शुद्धता, मूल्य और मानक के बारे में जानकारी पाने का अधिकार।

3. चुनने का अधिकार—विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं में से चुनाव करने का अधिकार।

4. सुने जाने का अधिकार—उपभोक्ता के हितों पर उचित विचार किए जाने और उन्हें मंच दिए जाने का अधिकार।

5. निवारण का अधिकार—अनुचित व्यापार प्रथाओं या शोषण के खिलाफ शिकायत दर्ज करने और निवारण पाने का अधिकार।

6. उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार—जीवन भर एक जागरूक उपभोक्ता बने रहने के लिए ज्ञान और कौशल प्राप्त करने का अधिकार।

सशक्तिकरण और निवारण—(i) उपभोक्ता आंदोलन ने "जागो ग्राहक जागो" जैसे अभियानों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाई है और जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर उपभोक्ता आयोगों की स्थापना की है, जिससे उपभोक्ताओं को त्वरित और सस्ता न्याय मिल सके। (ii) यह आंदोलन उपभोक्ताओं को जागरूक और सशक्त बनाता है, जिससे वे बाजार में 'सोच-समझकर' निर्णय ले सकें और अपने अधिकारों के लिए खड़े हो सकें।

प्रश्न 3. उपभोक्ता संरक्षण सम्बन्धी सुरक्षा, चयन, निवारण रूपी अधिकारों का वर्णन करें।

उत्तर—उपभोक्ता संरक्षण के मुख्य अधिकार हैं-सुरक्षा का अधिकार (खरनाक उत्पादों से बचाव), चयन का अधिकार (विभिन्न विकल्पों में से चुनने की स्वतंत्रता), और निवारण का अधिकार (दोषपूर्ण उत्पादों या अनुचित व्यापार प्रथाओं के लिए क्षतिपूर्ति पाने का अधिकार), जो उपभोक्ताओं को शोषण से बचाने और उन्हें बाजार में सशक्त बनाने के लिए हैं, जिससे तहत उन्हें सूचना का अधिकार, सुनवाई का अधिकार और उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार भी प्राप्त हैं, जो भारत के उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 और 2019 के तहत सुनिश्चित किए गए हैं।

1. सुरक्षा अधिकार—यह अधिकार उपभोक्ताओं को स्वास्थ्य या जीवन के लिए हानिकारक वस्तुओं और सेवाओं से सुरक्षा प्रदान करता है, जैसे-आईएसआई मार्क वाले सुरक्षित उत्पाद, गैर विषाक्त खिलौने, विश्वसनीय चिकित्सा उपकरण और सुरक्षित खाद्य पदार्थ)

2. चयन का अधिकार—उपभोक्ताओं को प्रतिस्पर्धी कीमतों पर विभिन्न प्रकार के उत्पादों और सेवाओं तक पहुँच का अधिकार है, ताकि वे अपनी पसंद के अनुसार चुनाव कर सकें; जैसे-एक ही उत्पाद के कई ब्रांडों की उपलब्धता, जिससे उपभोक्ता अपनी जरूरत और बजट के अनुसार चुनाव कर सके।

3. निवारण का अधिकार—उपभोक्ताओं को दोषपूर्ण उत्पादों, खराब सेवाओं या अनुचित व्यापार प्रथाओं (जैसे-भ्रामक विज्ञापन) के खिलाफ शिकायत करने और उचित मुआवजा (जैसे-धन वापसी, प्रतिस्थापन) पाने का अधिकार है; जैसे-खराब इलैक्ट्रॉनिक उपकरण के लिए धन वापसी या नया उत्पाद प्राप्त करना या किसी सेवा में कमी के लिए मुआवजा माँगना।

अन्य महत्वपूर्ण अधिकार—

(i) सूचना का अधिकार—उत्पादों की गुणवत्ता, मात्रा, मूल्य और अन्य विवरणों के बारे में पूरी और सटीक जानकारी प्राप्त करना। **(ii) सुनवाई का अधिकार**—उपभोक्ताओं को अपनी शिकायतों को व्यक्त करने और निवारण प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर मिलना। **(iii) उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार**—जीवन भर एक जागरूक उपभोक्ता बने रहने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करना। **उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम**—भारत में, ये अधिकार उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 (और बाद में 2019) के तहत दिए गए हैं, जो जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर उपभोक्ता विवाद निवारण आयोगों के माध्यम से इन अधिकारों को लागू करता है।

प्रश्न 4. भारत में उपभोक्ता संगठनों के उदय के कारणों का वर्णन करें।

उत्तर—भारत में उपभोक्ता संगठनों के प्रारम्भ के लिए उत्तरदायी कारक निम्नलिखित हैं—(i) भारत में सामाजिक बल के रूप में उपभोक्ता आंदोलन का जन्म अनैतिक एवं अनुचित व्यवसाय कार्यों से उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने की आवश्यकता के साथ हुआ। (ii) देश में अत्यधिक खाद्य पदार्थों की कमी, जमाखोरी, कालाबाजारी, खाद्य पदार्थों में एवं तेलों में मिलावट के कारण से 1960 के दशक में व्यवस्थित रूप में उपभोक्ता आन्दोलन का जन्म हुआ। (iii) 1970 के दशक तक उपभोक्ता संस्थाएँ वृहत स्तर पर उपभोक्ता अधिकार से सम्बन्धित आलेखों एवं प्रदर्शनों के आयोजन का कार्य करने लगी थीं। उन्होंने सड़क यात्री परिवहन में अत्यधिक भीड़-भाड़ एवं राशन की दुकानों में होने वाले अनुचित कार्यों पर निगरानी रखने के लिए उपभोक्ता दल बनाये। (iv) पिछले कुछ वर्षों से भारत में उपभोक्ता दलों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। ऐसा इसलिए हुआ कि व्यापारियों द्वारा उपभोक्ताओं के शोषण के अनेक मामले लगातार हमारे समक्ष आते जा रहे हैं। (v) उपभोक्ता आन्दोलन वृहत स्तर पर उपभोक्ताओं के हितों के खिलाफ एवं अनुचित व्यवसाय शैली को सुधारने के लिए व्यावसायिक कंपनियों एवं सरकार दोनों पर दबाव डालने में सफल हुआ। 1986 में भारत सरकार द्वारा एक बड़ा कदम उठाया गया जिसे उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम, 1986 के नाम से जाना जाता है। 24 दिसम्बर, 1986 को भारत की संसद ने उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम पारित किया जो कोपरा (COPRA) नाम से जाना जाता है। (vi) कोपरा के अन्तर्गत उपभोक्ता विवादों के निपटारे के लिए जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरों या एक त्रिस्तरीय न्यायिक तंत्र की स्थापना की गयी है।

प्रश्न 5. कोपरा क्या है? इसके पक्ष में तर्कों का वर्णन कीजिए।

उत्तर— हाँ, कोपरा प्रभावकारी है। इसके पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये जा सकते हैं —(i) कोपरा (COPRA) अधिनियम ने केन्द्र और राज्य सरकारों में उपभोक्ता मामले के अलग विभागों

को स्थापित करने में मुख्य भूमिका अदा की है। (ii) विज्ञापनों के माध्यम से सरकार नागरिकों को उपभोक्ता सुरक्षा सम्बन्धी कानूनी प्रक्रिया के बारे में अवगत कराती है, जिससे नागरिक कानूनों का प्रयोग कर सकें। (iii) जब हम विभिन्न वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदते समय, उपभोक्ता के रूप में अपने अधिकारों के प्रति सचेत होंगे, तब हम अच्छे और बुरे में फर्क करने तथा श्रेष्ठ का चुनाव करने में सक्षम होंगे। कोपरा के माध्यम से इस प्रकार की जागरूकता का विकास हुआ है। (iv) एक जागरूक उपभोक्ता बनने के लिए निपुणता और ज्ञान प्राप्त करने की जरूरत होती है। हम अपने अधिकारों के प्रति कैसे सजग रहें इसके लिए उपभोक्ता कानून बनाये गये हैं। (v) कोपरा के माध्यम से विभिन्न उपभोक्ता अदालतों एवं मंचों का गठन किया गया है जिससे उपभोक्ता आसानी से एवं कम खर्च में न्याय प्राप्त कर सकते हैं। (vi) अब उपभोक्ता की तरफ से कोई उपभोक्ता संगठन भी उत्पाद की शिकायत करके क्षतिपूर्ति दिला सकता है। (vii) कोपरा के द्वारा अब उपभोक्ता वस्तु के खराब होने पर आसानी से क्षतिपूर्ति प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न 6. उपभोक्ता का शोषण किस प्रकार किया जाता है? इसकी रोकथाम के उपायों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— बाजार में उपभोक्ताओं का निम्न प्रकार से शोषण किया जाता है— (i) विक्रेता प्राय: वस्तुओं की उचित ढंग से माप-तौल नहीं करते तथा माप-तौल में कमी करते हैं। (ii) कई अवसरों पर विक्रेता ग्राहकों से वस्तुओं के निर्धारित खुदरा मूल्य से अधिक राशि वसूलते हैं। (iii) बाजार में प्राय: घी, खाद्य पदार्थ, मसालों आदि में मिलावट होती है। (iv) कई बार विक्रेता या उत्पादक उपभोक्ताओं को गलत या अधूरी जानकारी देकर धोखे में डाल देते हैं। उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए सरकार द्वारा निर्मित 1986 का उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम (Consumer Protection Act, COPRA) सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इसके अन्तर्गत दंड देने के स्थान पर उपभोक्ताओं की क्षतिपूर्ति की व्यवस्था की गई है। उपभोक्ताओं की शिकायतों के समाधान अथवा उपभोक्ता-विवादों के निपटारे हेतु सरकार द्वारा उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 में त्रिस्तरीय न्यायिक व्यवस्था है जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय आयोग, राज्य स्तर पर राज्य आयोग तथा जिला स्तर पर जिला उपभोक्ता मंच (फोरम) की स्थापना की गयी है। यह न्यायिक व्यवस्था उपभोक्ताओं के लिए बहुत ही उपयोगी एवं व्यावहारिक है। इस व्यवस्था से उपभोक्ताओं को त्वरित एवं सस्ता न्याय प्राप्त होता है और समय एवं धन की बचत होती है।

❑ ❑